सिर्रुल ख़िलाफ़ः

(ख़िलाफ़त का रहस्य)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

SIRRUL KHILAFAH
(IN HINDI)

BY
HAZRAT MIRZA GHULAM AHMAD QADIANI
MASIH MAU'UD[AS]

सिर्रुलख़िलाफ़त

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : सिर्रुलख़िलाफ़त
Name of book : Siruul-Khilafat
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक : डा अन्सार अहमद पी.एच.डी, पीजीडीटी, आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph.D, PGDT Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग : नादिया परवेज़ा
Typing Setting : Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) अक्टूबर 2018 ई०
Edition. Year : 1st Edition (Hindi) October 2018
संख्या, Quantity : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम
व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

प्राक्कथन

नज़ारत इशाअत रब्वाह को जमाअत के लोगों की सेवा में सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलात वस्सलाम की बहुचर्चित पुस्तक "सिर्रुलख़िलाफ़त" उर्दू अनुवाद के साथ प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

وَمَا تَوْفِيْقُنَا اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ

हज़रत अक़्दस की पुस्तक "सिरुलख़िलाफ़त" की अरबी मूल इबारत का अनुवाद आदरणीय मौलाना मुहम्मद सईद साहिब अन्सारी मुरब्बी सिलसिला ने किया था। अरबिक बोर्ड रब्वाह ने इस अनुवाद पर पुन: विचार किया जिस के बाद अहबाव-ए-जमाअत के लाभ तथा हित के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

हकम-व-अदल हज़रत मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक "सिरुलख़िलाफ़त" जो कि सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में है 1894 ई. में लिखी और रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 8 में सम्मलित है। अहले सुन्नत और अहले तशीअ (शिया) के मध्य विवाद का कारण ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के बारे में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक में सारगर्भित बहस की है। आपने ठोस तर्कों द्वारा सिद्ध किया है कि चारों ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन सच पर थे तथापि हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] समस्त आदरणीय सहाबा से ऊंची शान रखते थे और आप इस्लाम के लिए आदमे सानी थे और वास्तविक अर्थों में आप आयत इस्तख्लाफ के पात्र थे तथा शेष आदरणीय सहाबा[रज़ि॰] की खूबियों का भी आप ने वर्णन किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी इस पुस्तक में महदी के प्रकटन की आस्था का वर्णन करके अपने महदी होने के दावे पर विस्तारपूर्वक बहस की

है। अतः ख़िलाफ़त के मसअले पर यह एक बहुमूल्य पुस्तक है।

इस पुस्तक का एक भाग अरबी भाषा में है। अरबी भाग की मूल इबारत और उसके सामने उर्दू अनुवाद दर्ज है तथा पाठकों की सुविधा के लिए "सिर्रुलख़िलाफ़त" का उर्दू भाग भी प्रकाशन में सम्मिलित है।

अरबी भाग के अनुवाद के सिलसिले में अरबिक बोर्ड ने बड़ी मेहनत से काम किया है। अल्लाह तआला उनको उत्तम प्रतिफल दे। बोर्ड के सदस्यों के नाम निम्नलिखित है:-

मुकर्रम मिर्ज़ा मुहम्मद दीन नाज़ साहिब

मुकर्रम मौलाना मुबश्शिर अहमद काहलों साहिब

मुकर्रम हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब

मुकर्रम मुनीर अहमद साहिब बिस्मिल साहिब

मुकर्रम रफ़ीक अहमद नासिर साहिब

मुकर्रम नवीद अहमद सईद साहिब

मुकर्रम अब्दुर्रज़्ज़ाक फ़राज़ साहिब

मुकर्रम राना नय्यर अहमद साहिब

मुकर्रम फ़हीम अहमद ख़ालिद साहिब

मुकर्रम मुहम्मद यूसुफ़ शाहिद साहिब सेक्रेटरी अरबिक बोर्ड

इस अनुवाद की कम्पोज़िंग और सैटिंग मुकर्रम मुदस्सिर अहमद साहिब शाहिद मुरब्बी सिलसिला ने की है जबकि प्रूफ़ रीडिंग का काम मुकर्रम मुहम्मद यूसुफ़ साहिब शाहिद मुरब्बी सिलसिला ने किया है और मुकर्रम मिर्ज़ा मुहम्मद दीन साहिब नाज़ सदर अरबिक बोर्ड ने फ़ायनल प्रूफ़ चैक किया। अल्लाह तआला पुस्तक की तैयारी में सहयोग करने वाले सब सहयोगियों को अच्छा प्रतिफ़ल प्रदान करे। आमीन

ख़ालिद मसऊद

नाज़िर इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिया रब्वाह

सिर्रुलख़िलाफ़त

(ख़िलाफ़त का रहस्य)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

يا مُعطىَ الإيمان والعقل والفكر، نحضُر عتبتك بطيّبات الحمد والشكر، ونُدانى حضرتك بتحيات التمجيد والتقديس والذكر، ونطلب وجهك بقصوى الطلب، ونسعى إليك فى الطرب والكرب۔ نحفد إليك ولا نشكو الاءين، ونؤمن بك ولا نأخذ فى كيف وأين۔ وجئناك منقطعين من الاسباب، ومستبطنين أحزانا للقاعدين على السراب، والغافلين عن الماء المَعين وطرق الصواب

हे ईमान, बुद्धि और सोच-विचार प्रदान करने वाले! हम प्रशंसा एवं कृतज्ञता के पवित्र वाक्यों के साथ तेरी चौखट पर उपस्थित होते हैं और तेरे यशोगान, पवित्रता तथा तेरे स्मरण के उपहार लेकर तेरे दरबार के निकट आते हैं और बहुत ही इच्छापूर्वक तेरी प्रसन्नता के अभिलाषी हैं। प्रसन्नता और बेचैनी में तेरी ओर दौड़ते हैं और लपकते हुए आते हैं और किसी थकान की शिकायत नहीं करते। हम तुझ पर ईमान लाते हैं और किसी बहस में नहीं पड़ते तथा उन लोगों के लिए जो मृग-तृष्णा (सराब) पर जमे बैठे हैं और जारी पानी और सन्मार्गों से लापरवाह हैं।

والمستكبرين ، الذين يبلعون الريق، ويرفضون
الكأس والإبريق، ويُعادون الصادقين۔ يتركون الحقائق
لأوهام، وما كانت ظنونهم إلا كمُخْلِفة أو جَهام،
ولا يجيئون أهل المعارف إلا متكاسلين، ولا ينظرون
الحق إلّا لاعبين۔ وهجمَتْهم أوهامهم كالبلاء المفاجى
فى الليل الداجى، فصار العقل كالظلف الواجى، فسقطوا
على أنفسهم مُكبّين۔ والتحصهم تعصّبُهم إلى الإنكار،
وأسفوا على الواعظين، وولّوا الدبر كالفرار۔ وامتلؤوا
حشنة وحقدًا، ونقضوا عهدًا وعقدًا، وطفقوا يسبّون
الناصحين۔ وما كان فيهم إلا مادّةُ غباوة، رُكِّبَ بإثاوة،

और उन अहंकारियों के लिए जो (मारिफ़त) के प्याले और सुराही को ठुकरा कर थूक निगल रहे हैं और सत्यनिष्ठों से दुश्मनी करते हैं हम समस्त सामान को अलग करते हुए और उनके शोक अपने पेटों में पालते हुए तेरे दरबार में उपस्थित होते हैं। वे भ्रमों की वास्तविकताएं छोड़ देते हैं। उनके भ्रम केवल उस बादल के समान हैं जिसमें पानी नहीं होता। वे लोग मारिफ़त के पास आलसी लोगों की भांति आते हैं और सच को केवल खिलंडरों जैसी दृष्टि से देखते हैं। उनके भ्रमों ने उन पर ऐसा प्रहार किया है जैसे किसी घोर अंधेरी रात में कोई अचानक विपत्ति आ जाए, जिसके परिणामस्वरूप (उनकी) बुद्धि ऐसी हो गयी है जैसे किसी जानवर का घायल घिसा हुआ पैर। इसी कारण वे अपने मुंह के बल गिरे हुए हैं। उनके द्वेष से उन्हें इन्कार पर विवश किया और उन्होंने नसीहत करने वालों पर शोक और क्रोध को अभिव्यक्त किया, पलायन का मार्ग अपनाने वालों के समान पीठ फेरी, वे द्वेष और वैर से भर गए और उन्होंने प्रतिज्ञा एवं वादे तोड़ दिए और अपने शुभचिन्तकों को गालियां देने लगे, उनमें मंद बुद्धि के तत्व के अतिरिक्त जिसमें चुगली करने की मिलावट है और कुछ भी नहीं।

فأداروا رحى الفتن من عداوة، وسفَا تُرْبَهم ريحُ شقاوة، فبعدوا عن حق وحلاوة، وجلَوا عن أوطان الصدق تائهين. كثرت الفتن من حؤول طبائعهم، وخُدع الناس من اختداعهم. ربِّ فارحم أُمّة محمد وأصلِحْ حالهم، وطهِّرْ بالهم وأَزِلْ بَلبالهم، وصلّ وسلّم وبارِك على نبيّك وحبيبك محمد خاتم النبيين، وخير المرسلين، وآله الطيبين الطاهرين، وأصحابه عمائد الملّة والدين، وعلى جميع عبادك الصالحين. آمين.

أما بعد فاعلم أيها الأخ الفطن، أن هذه الأيام أيامٌ تتولد فيه الفتن كتولُّد الدود في الجيفة المنتنة، وتضطرم فيه

तो उन्होंने दुश्मनी के कारण उपद्रवों की चक्की चलाई और दुर्भाग्य की आंधी ने उनकी धूल उड़ा दी, जिसके कारण वे सच और (उसकी) मिठास से दूर हो गए और परेशानी की अवस्था में सच्चाई के देशों से निर्वासित किए गए। उनके स्वभावों के बदल जाने से उपद्रवों की भरमार हो गई और उनकी धोखेबाज़ी के कारण लोग धोखा खा गए। हे प्रतिपालक! उम्मते मुहम्मदिया पर रहम कर और उनकी हालत ठीक कर दे, उनके दिल पवित्र कर दे, उनकी बेचैनी को दूर कर दे और अपने नबी तथा अपने हबीब खातमुन्नबिय्यीन और ख़ैरुल मुर्सलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेज तथा उन पर बरकतें उतार और उन की पवित्र एवं शुद्ध सन्तान और अपने सहाबा[रज़ि॰] पर जो मिल्लत और मज़्हब (धर्म) के स्तंभ है और इसी प्रकार अपने समस्त नेक बन्दों पर दरूद, सलाम और बरकतें उतार। आमीन।

तत्पश्चात हे बुद्धिमान भाई! जान ले कि यह वह युग है जिसमें फ़ित्ने (उपद्रव) बदबूदार मुर्दार में कीड़ों के जन्म लेने की भांति पैदा हो रहे हैं, और इस (युग) में इच्छाएं सूखी लकड़ियों में आग के भड़कने की तरह भड़क रही हैं। मैं इस युग के चक्रवातों तथा इस समय की अत्यन्त तीव्र हवाओं के कारण

الاهواء كاضطرام النيران من الخُشُب اليابسة۔ وأرى الإسلام في خطرات من إعصار هذا الزمان، وصراصر هذا الاوان۔ قد انقلب الزمن واشتدت الفتن، وازورّت مُقْلتا الكاذبين مغضبين على الصادقين، واحمرّت وجنتا الطالحين على الصالحين۔ وما كان تعبُّسهم إلا لعداوة الحق وأهله، فإن أهل الحق يفضح الخؤونَ ويُنجي الخلق مِن وَحْله، ولا يصبر على كلمات الظالم وجورِه، بل يرد عليه من فوره، ويصول على كل مريب لتكشيفِ مَعيبٍ، وهتكِ سترِ المدلّسين۔ وكذٰلك كنتُ ممن أسلمَتْهم محبّةُ الحق إلى طعن المعادين، وانجرَّ أمرهم من حماية الصدق إلى تكفير المكفرين۔

وتفصيل ذٰلك أن الله إذا أمرني وبشّرني بكوني مجدّدَ هذه المائة، والمسيحَ الموعود لهذه الامة،

इस्लाम को खतरों में (घिरा हुआ) देखता हूं। समय बदल गया; फ़ित्नों ने ज़ोर पकड़ लिया ईमानदारों पर प्रकोप के जोश से झूठों की आंखें टेढ़ी हो गईं और नेक लोगों पर अभागे लोगों के गाल लाल हो गए, उस क्रोध से उनके माथे पर बल पड़ना केवल सच और सच्चे लोगों से शत्रुता के कारण है। इसलिए कि सच्चा आदमी बेईमान के दोषों पर से पर्दा हटाता है और लोगों को उसके उस दलदल से बचाता है और वह अत्याचारी की बातों तथा उसके अत्याचार एवं अन्याय को सहन नहीं करता बल्कि उसे तुरन्त उत्तर देता है और प्रत्येक सन्देह में डालने वाले पर उसके दोष प्रकट करने और पाखंडियों का पर्दा चाक (फ़ाड़ना) करने के लिए आक्रमण करता है। इसी प्रकार मैं भी उन में से हूं जिन्हें सच के प्रेम ने शत्रुओं की भत्र्सना के सुपुर्द कर दिया, जिन का मामला सच्चाई की सहायता के कारण काफ़िर कहने वालों की कुफ्रबाज़ी तक जा पहुंचा है।

विवरण इस का यह है कि जब अल्लाह ने मुझे मामूर किया और इस सदी के मुजद्दिद तथा इस उम्मत के लिए मसीह मौऊद होने की मुझे ख़ुशख़बरी दी

وأخبرتُ المسلمين عن هذه الواقعة، فغضبوا غضبا شديدا كالجهَلة، وساءوا ظنًّا من العجلة، وقالوا كذّاب ومن المفترين۔ وكلما جئتُهم بثمار من طيبات الكَلِم، أعرضوا إعراض البَشِم، حتى غلظوا لى فى الكلام، ولسعونى بحُمَة الملام۔ ونصحت لهم وبلّغت حق التبليغ مرارا، وأعلنتُ لهم وأسررت لهم إسرارًا، فلم تزل سحبُ نصاحتى تبدو كالجَهام، ونخبُ مواعظى تزيد شقوة اللئام، حتى زادوا اعتداءً وجفاءً، وطبع الله على قلوبهم فاشتدوا دناءةً وداءً، وكانوا على أقوالهم مصرّين۔ ولعنونى وكذّبونى وكفّرونى وافتروا من عند أنفسهم أشياء، ففعل الله ما شاء، وأرَى المكذّبين أنهم كانوا كاذبين۔ وطردنى كل رجل

और मैंने मुसलमानों को इसकी सूचना दी तो वे मूर्खों के समान अत्यन्त प्रकोपी हुए और जल्दबाज़ी के कारण कुधारणा की तथा कहने लगे कि यह महा झूठा है। और झूठ गढ़ने वालों में से है और जब भी मैं उनके पास पवित्र बातों के फल लेकर आया तो उन्होंने इस प्रकार मुंह फेर लिया जिस प्रकार अपाचकता (बदहज़मी) का रोगी (भोजन से) मुंह मोड़ लेता है। यहां तक कि उन्होंने मुझ से कड़े शब्दों में बात की (गालियां दीं) तथा भर्त्सना के डंक से मुझे घायल किया। मैंने उनकी भलाई की और मैंने उन्हें प्रत्यक्ष तौर पर तब्लीग़ (धर्म का सन्देश पहुंचाया) के पशचात् गुप्त तौर भी तब्लीग़ की और कई बार तब्लीग़ का कर्त्तव्य पूरा किया परन्तु मेरी भलाई के बादल जल रहित मेघ के समान रहे और मेरी उत्तम नसीहतें उन भत्र्सना करने वालों को कठोरता में बढ़ाती रहीं, यहां तक कि वे अत्याचार एवं अन्याय में बहुत बढ़ गए और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी फिर वे कमीनगी और रोग में बढ़ते गए तथा अपनी बातों पर अड़े रहे और उन्होंने मुझ पर लानत की, मुझे झुठलाया, काफ़िर ठहराया और बहुत सी बातें अपनी ओर से बना लीं। फिर अल्लाह ने वही कुछ किया जो उसने चाहा! उसने झुठलाने वालों

وَحُدانی، إلا الذی دعانی وهدانی، فحفظنی بلمحاتِ ناظرِہ، وربّانی بعنایات خاطرہ، وجعلنی من المحفوظین۔ وبینما أنا أفرّ من سهام أهل السُنّة، وأسمع منهم أنواع الطعن واللعنة، إذ وصلنی بعض المکاتیب من بعض أعزة الشیعة وعلماء تلك الفرقة وسألونی عن أمر الخلافة، وأمارات خاتم الائمّة، وکانوا من طلباء الحق والاهتداء بل بعضهم یظنون بی ظن الاحبّاء، ویتخذوننی من النصحاء، ویذکروننی بخلوص أصفی وقلب أزکی، فکتبوا المکاتیب بشوقٍ أَبْهٰی وحِرّةٍ عُظمٰی، وقالوا حَیَّ هَلْ بکتاب أشفٰی، یشفینا ویروینا ویهب لنا برهانا أقوی ثم أرسلوا إلیّ خطوطا تترٰی،

को दिखा दिया कि वे झूठे हैं। हर व्यक्ति ने मुझे धिक्कारा और मेरा पीछा किया उस ख़ुदा तआला के अतिरिक्त जिसने मुझे पुकारा और मेरा मार्ग दर्शन किया फिर अपनी दया-दृष्टि से मेरी रक्षा की। और अपनी व्यक्तिगत मेहरबानियों से मुझे प्रशिक्षण दिया और मुझे सुरक्षित लोगों में से बना दिया तथा ठीक उस समय जब मैं अहले सुन्नत के तीरों से बचने का प्रयास कर रहा था और उनकी ओर से भिन्न-भिन्न प्रकार की भर्त्सनाएं सुन रहा था कि कुछ सम्माननीय शिया लोग तथा इस फ़िर्के के उलमा की ओर से मुझे कुछ पत्र प्राप्त हुए, (जिन में) उन्होंने मुझ से ख़िलाफ़त के बारे में और ख़ातमुलअइम्मा के लक्षणों के बारे में पूछा था और वे सच्चाई और मार्गदर्शन के अभिलाषी थे। बल्कि उनमें से कई लोग मेरे बारे में मित्रों के समान सुधारणा रखते थे तथा मुझे अपना शभचिन्तक समझते थे और अत्यन्त शुद्ध निष्कपटता और पवित्र दिल के साथ मेरी चर्चा करते। तब उन्होंने अत्यधिक रुचि और बड़े प्रेम से मुझे पत्र लिखे और कहा कि शीघ्र कोई ऐसी आवश्यकतानुसार और रोग मुक्त करने वाली पुस्तक लिखें जो हमें स्वस्थ करे तथा हमें तरोताज़ा करे और हमें सुदढ़ प्रमाण उपलब्ध करे। फिर उन्होंने मुझे

حتی وجدتُ فیھا ریح کبدٍ حَرّیٰ، فتذکرتُ قصّتی الاولی، وانثنیتُ أقدِّم رِجلا وأؤخِّر أخریٰ، حتی قوّانی ربی الاغنٰی، وألقٰی فی روعی ما ألقٰی، فنھضتُ لشھادۃ الحق الاجلٰی، ولا أخاف إلا اللّٰہ الاعلٰی، واللّٰہ کاف لعبادہ المتوکلین۔

واعلم أن أھل السُنۃ عادَونی فی شَرْخِ شأنی، والشیعۃ کلّمونی فی إقبال زمانی، وإنی سمعتُ من الاولین کلمات کبیرۃ، وسأسمع من الآخرین أکبر منھا، وسأصبر إن شاء اللّٰہ حتی یأتینی نصر ربّی، ھو معی حیثما کنتُ؛ یرانی ویرحمنی وھو أرحم الراحمین۔ ورأیت أکثر أحزاب الشیعۃ لا یخافون عند تطاوُل الالسنۃ ولا یتّقون دیّان الآخرۃ،

निरन्तर इतने पत्र भेजे कि मैंने उन में (सच के लिए) हार्दिक तड़प की गंध पाई। जिस पर मुझे अपने बारे में (अहले सुन्नत का) पिछला आचरण याद आ गया। जिसके परिणामस्वरूप मैं एक क़दम आगे बढ़ाता तो दूसरा कदम पीछे हटाता। यहां तक कि मेरे नि:स्पृह प्रतिपालक ने मुझे शक्ति प्रदान की और जो चाहा मेरे दिल में डाला, जिस पर मैं एक स्पष्ट सच की गवाही देने के लिए उठ खड़ा हुआ और मैं अपने महान एवं सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा के अतिरिक्त किसी से नहीं डरता और अल्लाह अपने भरोसा करने वाले बन्दों के लिए पर्याप्त है।

तू जान ले कि अहले सुन्नत ने मेरे पद के प्रारंभ में मुझ से शत्रुता की और शिया लोगों ने मेरे यश के समय में मुझे चिरके लगाए। निस्सन्देह मैंने पहलों से बड़ी बातें सुनीं और जो बातें मैं इन दूसरों से सुनूंगा वे उन से भी बढ़ कर होंगी और इन्शाअल्लाह मैं सब्र करूंगा उस समय तक कि मेरे रब्ब की सहायता मेरे पास आ जाए। मैं जहां भी हूं वह मेरे साथ है। वह मुझे देखता और मुझ पर रहम (दया) करता है और वह सब रहम करने वालों से अधिक रहम करने वाला है। मैंने शियों के अधिकांश गिरोहों को देखा है कि वे गालियां देते समय नहीं डरते और न ही आखिरत के प्रतिफल एवं दण्ड के मालिक से डरते हैं और न तो

ولا یجمعون نشوب الحقیقة، ولا یذوقون لبوب الطریقة، ولا یفکرون کالصلحاء، ولا یتخیرون طرق الاھتداء، فرأیتُ تفھیمھم علی نفسی حقًّا واجبًا ودَینًا لازمًا، لا یسقط بدون الاداء۔ فکتبتُ ھذہ الرسالة العُجالة، لعلّ اللّٰہ یصلح شأنھم ویُبدل الحالة، ولابیّن لھم ما اختلفوا فیہ، وأخبرھم عن سرّ الخلافة، وإن کان تألیفی ھذا کولد الإضافة، وما ألّفتُھا إلا ترحّمًا علی الغافلین والغافلات، وإنّما الاعمال بالنیات۔ وأتیقن أن ھذہ الرسالة تُحفِظ کثیرا من ذوی الحرارة، فإن الحق لا تخلو من المرارة، وسأسمع من علماء الشیعة أنواع اللعنة، کما سمعتُ من أھل السُنة۔ فیا ربّ

वे सच्चाई की दौलत एकत्र करते हैं और न ही आत्मशुद्धि के मग़ज़ से परिचित हैं। और न वे सदाचारी लोगों की तरह सोचते हैं और न वे हिदायत के मार्गों को अपनाते हैं। इसलिए मैंने उन को समझाना अपने ऊपर अनिवार्य अधिकार और आवश्यक क़र्ज़ समझा जो अदा किए बिना गिरा हुआ नहीं होता। इसलिए मैंने बहुत शीघ्रता के साथ यह पुस्तक लिखी कि शायद अल्लाह उनकी हालत सुधार दे और उनकी स्थिति बदल दे और ताकि मैं उनके लिए उन मामलों को जिनमें उन्होंने मतभेद किया स्पष्ट करूं और उन्हें ख़िलाफ़त के रहस्य (राज़) से अवगत करूं। यद्दपि मेरी इस पुस्तक की हैसियत बुढ़ापे की सन्तान के समान है और मैंने इसे केवल लापरवाह पुरुषों तथा स्त्रियों पर रहम करते हुए लिखा है। वास्तव में समस्त कर्मों का दारोमदार नीयतों पर है और मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक बहुत से गर्म स्वभाव रखने वाले लोगों को क्रोध दिलाएगी क्योंकि सच कड़वाहट से ख़ाली नहीं होता और मुझे शिया उलेमा से भी उसी प्रकार कई प्रकार की भर्त्सना सुननी पड़ेगी जिस प्रकार मैंने अहले सुन्नत लोगों से सुनी। अत: हे मेरे रब्ब! केवल तुझ पर ही भरोसा है और केवल तेरे पास हम अपनी फ़रियाद (दुहाई) लेकर आए हैं। तेरे अस्तित्व के अतिरिक्त कोई

لا تـوكُّلَ إلّا عليـك، ولا نشـكو إلّا إليـك، ولا ملجـأ إلّا ذاتـك، ولا بضاعـة إلّا آياتـك، فـإن كنـتَ أرسـلتنى بأمـرك لإصـلاح زُمـرك، فأدرِكْـنى بنصـرك، وأيِّـدْنى كمـا تُؤيّـد الصادقـين۔ وإن كنـتَ تحبّـنى وتختـارنى فـلا تُخـزِنى كالملعونـين المخذولـين۔ وإن تركتـنى فمـن الحافـظ بعـدك وأنـت خـير الحافظـين؟ فـادرَأْ عـنى الضـرّاء، ولا تُشْـمت بى الاعـداء، وَانْصـرنى عـلى قـوم كافريـن۔

أمّـا الرّسـالة فهـى مشـتملة عـلى تمهيـد وبابَـين، وفيهـا هدايـات لذوى العينـين ولقـوم متّقـين۔ واسـأل الله أن يضـع فيهـا بَرَكـة، ويضمّخهـا بعطـر التأثـير رحمـة، ولا علـم لنـا إلا مـا علّمَنـا وهـو خـير المعلّمـين۔

★

अन्य शरण नहीं। और न ही तेरे निशोनों के अतिरिक्त कोई और पूंजी है। अत: यदि तू ने अपने आदेश से अपने बन्दों के सुधार के लिए मुझे भेजा है तो फिर अपनी सहायता के साथ मेरे पास आ और उसी प्रकार मेरा समर्थन कर जिस प्रकार तू सत्यनिष्ठों का समर्थन करता है। यदि तुझे मुझ से प्रेम है और तू ने ही मुझे चुना है तो मुझे बे-यार-मददगार लानतियों के समान बदनाम न करना। यदि तू ने मुझे छोड़ दिया तो तेरे अतिरिक्त अन्य कौन रक्षक होगा और तू अति उत्तम रक्षक है। तू समस्त कष्टों को मुझ से दूर कर दे और शत्रुओं को मेरी हंसी उड़ाने का अवसर न दे तथा काफ़िरों के विरुद्ध मेरी सहायता कर।

यह पुस्तक भूमिका और दो अध्यायों पर आधारित है और इसमें प्रतिभाशाली तथा सयंमी (मुत्तक़ी) क़ौम के लिए निर्देश हैं। अल्लाह से मेरी दुआ है कि वह इसमें बरकत रख दे और रहमत (दया) करते हुए इस प्रभाव रूपी इत्र (सुगंध) से सुगंधित कर दे। हमें उतना ही ज्ञान है जो उसने सिखाया और वही सबसे उत्तम शिक्षक है।

★

اَلتَّمْهِيْد

أيها الأعزة اعلموا، رحمكم الله، أنى امرؤٌ عُلّمتُ من حضرة الله القدير، ويسّرنى ربى لكل دقيقة، ونجانى من اعتياص المسير، وعافانى وصافانى وأسرَا بى من بيت نفسى إلى بيته العظيم الكبير. فلما وصلتُ القِبلةَ الحقيقية بعد قطع البرارى والبحار. وتشرفت بطواف بيته المختار، وخصّصنى لطفُ ربى بتجديد المدارك وإدراك الأسرار، وكان ربى خِدْنى ووَدُودى، واستودعتُه كلَّ وجودى، وأخذتُ من لدنه كلَّ علم من الدقائق والأسرار، وصُبّغتُ منه فى جميع الأنظار والأفكار، صرفتُ عنان التوجه إلى كل نزاع كان بين

(भूमिका)

हे आदरणीय सज्जनो! अल्लाह तुम पर दया (रहम) करे। जान लो कि मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं कि मुझे शक्तिमान और बलवान ख़ुदा की चौखट से ज्ञान सिखाया गया और मेरे रब्ब ने हर बारीक रहस्य मेरे लिए आसान कर दिया तथा हर सफर की कठिनाइयों से मुझे बचाया और आराम प्रदान किया, मेरे साथ शुभ प्रेम किया और मुझे मेरे नफ़्स के घर से अपने महान एवं विशाल घर की ओर ले गया। फिर जब मैं रेगिस्तानों और समुद्रों को पार करने के पश्चात् वास्तविक किब्ल: तक पहुंचा और उसके चुने हुए घर को तवाफ़ (परिक्रमा) का मुझे गौरव प्राप्त हुआ और मेरे रब्ब की मेहरबानी ने मेरी योग्यताओं को चमक प्रदान करने के नवीनीकरण के साथ तथा रहस्यों तक पहुंचने के लिए मुझे विशिष्ट कर लिया और मेरा रब्ब, मेरा मित्र और मेरा प्रेमी बन गया, और मैंने अपना पूर्ण अस्तित्व उसके सुपुर्द कर दिया और मैंने उसकी चौखट से बारीकियों एवं रहस्यों का प्रत्येक ज्ञान प्राप्त कर लिया और समस्त दृष्टिकोणों तथा विचारधाराओं में मैं उसकी ओर से रंगीन किया गया तो मैंने क़ौम-व-मिल्लत के फ़िर्कों के मध्य हर

فِـرَق القـوم والمـلة، وفتّشـتُ فی کل أمـر مـن السـبب والعـلة، ومـا ترکـتُ موطنـا مـن مواطـن البحـث والتدقيـق، إلا واسـتخرجتُ أصـله عـلى وجـه التحقيـق۔ وعرفـتُ أن النـاس مـا أخطـأوا فی فصـل القضايـا، ومـا وقعـوا فی الخطايـا، إلا لميلـهم إلى طـرف مـع الذهـول عـن طـرف آخـر، فإنـهم کـبّروا جهـة واحـدة بغـير علـم وحسـبوا مـا خالفهـا أصغـر وأحقـر۔ وکان مـن عـادات النفـس أنهـا إذا کانـت مغمـورة فی حُـبّ شیء مـن المطلوبـات، فتنسٰـى أشـياء يخالفـه، ولا تسـمع نصاحـة ذوی المواسـاة، بـل ربّمـا يعاديـهم ويحسـبهم کالاعـداء، ولا يحاضـر مجالسـهم ولا يصغـى إلى کلماتـهم لشـدة الغطـاء۔ ولهـذه المفاسـد علـل وأسـباب وطـرق وأبـواب، وأکـبر عـلله

मतभेद वाली बात की ओर अपने ध्यान की लगाम मोड़ दी और हर मामले के कारण जब उस की छान-बीन की और बहस एवं सोच-विचार का कोई स्थान नहीं छोड़ा। परन्तु जांच-पड़ताल की दृष्टि से इस बात की वास्तविकता को मैंने प्रकट कर दिया और मुझे यह ज्ञात हो गया कि लोगों ने अपने मुकद्दमों के फैसले में जो ग़लतियां कीं और जिन ग़लतियों को शुरू किया उसका केवल और केवल यह कारण था कि वे लापरवाही के कारण एक ओर से हट कर दूसरी ओर झुक गए और जाने बिना केवल एक पहलू को बड़ा (अहम) बना लिया और उसके विपरीत पहलू को छोटा और तुच्छ समझा। यह नफ़्स की आदत है कि जब वह किसी वांछित वस्तु के प्रेम में डूबा हुआ हो तो वह उन चीज़ों को जो उसकी विरोधी हों भूल जाया करता है और हमदर्दी करने वालों की नसीहत को नहीं सुनता बल्कि कभी उनसे शत्रुता करने लगता है तथा उन्हें शत्रुओं के समान समझता है। न वह उनकी मज्लिस में उपस्थित होता और न ही दिल पर मोटे पर्दे के कारण वह उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनता है तथा उन ख़राबियों के कई कारण, तरीक़े और मार्ग हैं। उनका सबसे बड़ा कारण हृदय की कठोरता,

قساوة القلوب، والتمايل على الذنوب، وقلة الالتفات إلى محاسبات المَعادِ، وصحبة الخادعين والكاذبين من أهل العناد، وإذا رسخوا فى جهلهم فتدخُل العثرات فى العادات، وتكون للنفوس كالمرادات، فنعوذ بالله من عثرات تنتقل إلى عادات وتُلحق بالهالكين. وربما كانت هذه العادات مستتبعة لتعصبات راسخة من مجادلات. والمجادلات النفسانية سمٌّ قاتِل لطالب الحق والرشاد، وقلما ينجو الواقع فى هذه الوهاد. وقد تكون العلل المفسدة والموجبات المضلّة مستترة، ومن العيون مخفية، حتى لا يراها صاحبها ويحسب نفسه من المصيبين المنصفين. وحينئذ يسعى إلى المشاجرات، ويشتد فى الخصومات*، وربما يحسب خيالا طفيفا ورأيا

पापों की ओर झुकाव, आख़िरत के दिन की ओर कम ध्यान देना और शत्रुओं में से छल करने वालों तथा झूठों के साथ मेल-जोल है। और जब वे अपनी मूर्खता में दृढ़ हो जाते हैं तो बहुत सी ग़लतियां उनकी आदतों में प्रवेश कर जाती हैं और वे प्राणों के लिए दिल की कामनाओं के समान हो जाती हैं। तो हमें ऐसी ग़लतियों से जो आदतें बन जाएं और तबाह होने वालों से मिला दें अल्लाह की शरण मांगते हैं, कभी ये आदतें मुबाहसों के कारण दृढ़ हो चुके द्वेषों (पक्षपातों) को जन्म देती हैं और स्वार्थ सिद्धि, मुबाहसे, सच्चाई और हिदायत के अभिलाषी के लिए घातक विष हैं और इस गड्ढे में गिरने वाला व्यक्ति कम ही बचता है। कभी फ़साद पैदा करने वाले और पथ-भ्रष्ट (गुमराह) करने वाले कारण गुप्त और आंखों से छुपे होते हैं कि वह व्यक्ति भी जिसमें ये बातें मौजूद हों उन्हे देख नहीं पाता और स्वयं को उन लोगों में से समझता है जो सही राय वाले और न्याय करने वाले हैं तो उस समय वह मतभेदों की ओर लपकता और ऐसे झगड़ों में कठोरता का व्यवहार करता है और कभी वह तुच्छ विचार तथा कमज़ोर राय को ऐसे अटल प्रमाण के समान समझने लगता

ضعيفا كأنه حجة قوية لا دحوض لها، فيميس كالفرحين۔ وسبب كل ذٰلك قلّةُ التدبر وعدم التبصّر، والخلوُّ عن العلوم الصادقة، وانتقاشُ صُورِ الرسوم الباطلة، والانتكاسُ على شهوات النفس بكمال الجنوح والحرمان من مذوقات الروح وعجزُ النظر عن الطموح والإخلادُ إلى الارض والسقوط عليها كعَمِين۔

وهذه هى العلل التى جعلت الناس أحزابا، فافترقوا وأكثرهم تخيّروا تبابًا، وكذّبوا الحق كِذّابًا، بل لعنوا أهله كالمعتدين، وصالوا كخريجِ مارِق على المحسنين، ونظروا إلى أهل الحق بتشامخ الانوف، وتغيظ القلب المؤوف، وحسبوا أنفسهم من العلماء والادباء، وسحبوا

है कि जिसका खण्डन नहीं किया जा सकता। तो वह ख़ुशियां मनाने वालों की तरह झूमने लगता है।और यह सब कुछ सोच-विचार की कमी, विवेकहीनता, सच्ची विद्याओं से वंचित रहना तथा ग़लत रस्मों के चित्र (मस्तिष्क पर) अंकित होने तथा कामवासना संबंधी इच्छाओं पर पूर्णरूप से झुक जाने में रूहानी रुचि से वंचित रहने, उच्चाशय पर नज़र रखने से थकावट, ज़मीन (भौतिक वस्तुओं) की ओर झुकाव और उस पर अंधों की तरह गिर पड़ने के कारण है।

यही वे कारण हैं जिन्होंने लोगों को गिरोह के गिरोह कर दिया है और वे फ़िर्क़ों में बंट गए हैं और उनमें से अधिकांश (लोगों) ने तबाही को ग्रहण कर लिया और सच को बुरी तरह से झुठलाया बल्कि उन्होंने अत्याचार करने वालों की तरह सच्चों पर लानत डाली। धर्म से निकल जाने वाले उद्दण्ड की तरह उपकारियों पर आक्रमण किया तथा उन्होंने सच्चों की ओर अहंकारपूर्ण ढंग नाक-भौं चढ़ा कर और ग़ुस्से में भरे विकृत दिल के साथ देखा और उन्होंने स्वयं को उलेमा तथा साहित्यकारों में से समझा तथा उन्होंने अहंकार का दामन घसीटा। हालांकि वे भाषण देने में निपुण नहीं थे। उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें

ذيـل الخيـلاء، ومـا كانـوا مـن المفلقـين۔ ومنـهم الذيـن
نالـهم مـن الله حـظّ مـن المعرفـة، ورزق مـن الحـق والحكمـة،
وفتَـح الله عيونـهم وأزال ظنونـهم، فـرأوا الحقائـق محدقـين۔
ومنـهم قـوم أخطـأوا فى كل قـدم، ومـا فرّقـوا بـين وجـود
وعـدم، ومـا كانـوا مُسـتبصرين۔ أصـرّوا عـلى مركـوزات
خطراتـهم، وخطـوات خطيّاتـهم، ولبـاس سـيّئَاتهم وكانـوا قومًـا
مفسـدين۔ وإذا نزعـوا عـن المِـراس بعـد مـا نزعـوا لاءَ البـأس،
ويئسـوا مـن الجِحـاس، مالـوا ميـلة واحـدة إلى الإيـذاء بالتحقـير
والازدراء، وبنحـت البهتـان والافـتراء والتوهـين۔ وكلمـا
خضعـتُ لـهم بالـكلام مالـوا إلى الإرهـاق والإيـلام، وكادوا
يقتلونـنى لـو لـم يعصمـنى ربى الحفيـظ المعـين۔ فلمـا زاغـوا

अल्लाह की ओर से मारिफ़त और सच और दूरदर्शिता में से हिस्सा मिला। और अल्लाह ने उनकी आंखें खोलीं और उनके सन्देह और शंकाएं दूर कीं तो उन्होंने वास्तविकताओं को समस्त पहलुओं से परिधी में लेते हुए देखा और उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने हर क़दम पर ग़लती की और अस्तित्व के होने और अस्तित्व के न होने में अन्तर न किया और वे प्रतिभाशाली न थे। वे बातें जिन पर उनके विचार केन्द्रित हैं और अपने ग़लत कार्यों और बुराइयों के लिबास पर अटल रहे और वे उपद्रवी क़ौम हैं। युद्ध की शक्ति छीन ली जाने के पश्चात् जब वे मुकाबले से अलग हो गए और प्रतिरक्षा करने से निराश हो गए तो उन्होंने तुरन्त तिरस्कार पूर्ण कष्ट देना, इल्ज़ाम लगाना, झूठ गढ़ना तथा अपमान की ओर ध्यान कर लिया। मैंने जब भी उनसे विनम्रतापूर्वक बात की वे अत्याचार, अन्याय तथा कष्ट पहुंचाने पर तुल गए और यदि मेरे रब्ब ने जो मेरा रक्षक तथा सहायक है मुझे बचाया न होता तो निकट था कि वे मुझे क़त्ल कर देते। फिर जब वे टेढे हो गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को भी टेढ़ा कर दिया और उन्हें गुनाहों में बढ़ा दिया तथा उन्हें अंधेरों में भटकते हुए छोड़ दिया।

أزاغ الله قلوبهم وزاد ذنوبهم، وتركهم فی ظلمات متخبطین۔ فنهضتُ بأمر الله الکریم، وإذن الله الرحیم، لإزیل الاوهام وأداوی السقام، فاستشاطوا من جهلهم غضبًا، وأوغلوا فی أثری زرایةً وسبًّا، وفتحوا فتاوی التکفیر ودفاتر الدقاریر، وصالوا علیّ بأنواع التزویر، ولدغونی بلسان نضناض، وداسونی کرضراض۔ وطالما نصحتُ فما سمعوا، وربما دعوتُ فما توجهوا، وإذا ناضلوا ففرّوا، وإذا أخطأوا فأصرّوا وما أقرّوا، وما کانوا خائفین۔ واجترءوا علی خیانات فما ترکوها وما ألغوها، حتی إذا الحقائق اختفت، وقضیة الدین استعجمت، وشموس المعارف أفَلتْ وغرَبتْ، ومعارف الملة اغتربت وتغرّبت، والدواهی اقتربت ودنت

फिर मैं कृपालु और दयालु ख़ुदा के आदेश एवं आज्ञा से भ्रमों के निवारण और बीमारियों के उपचार के लिए उठ खड़ा हुआ, जिस पर वे अपनी मूर्खता के कारण बहुत क्रोधित हुए तथा दोष निकालने और गालियों के साथ मेरे पीछे पड़ गए और कुफ्र के फ़त्वे और झूठ बोलने के दफ़्तर खोल दिए और नाना प्रकार से झूठ बोलकर मुझ पर प्रहार किया और ज़हरीले सांप की जीभ की भांति मुझे डसा और कंकड़ों को रोंदने की तरह मुझे रोंदा। कभी मैंने नसीहत की परन्तु उन्होंने नहीं सुनी और मैंने कई बार उन्हें बुलाया परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान न दिया और जब उन्होंने मुकाबला किया तो भाग गए। जब ग़लती की तो इक़रार की बजाए हठधर्मी की और इक़रार न किया तथा वे डरने वाले न हुए। उन्होंने बेईमानी पर दिलेरी दिखाई और न तो उन्हें छोड़ा और न ही उन्हें निरर्थक ठहराया। यहां तक कि जब वास्तविकताएं छुप गईं, धर्म का मामला संदिग्ध हो गया, मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) के सूर्य ओझल हो गए और अस्त हो गए, धर्म के मआरिफ़ देश से निकल गए और ग़ायब (लुप्त) हो गए, संकट बहुत निकट आ गए और उन्होंने विजय पा ली। धर्म एवं ईमानदारी का घर खाली हो गया तथा शान्ति एवं सुरक्षा घबराकर भाग गए।

وغلبت، وبيتُ الدين والديانة خلا، والامن والإيمان أجفلا،
ورأيت أن الغاسق قد وقب، ووجه المحجّة قد انتقب، فألّفتُ
كُتبًا لتأييد الدين، وأترعتُها من لطائف الاسرار والبراهين،
فما انتفعوا بشیء من العظات، بل حسبوها من الكلِم
المُحفِظات، وما كانوا منتهين۔ ثم إذا رأوا أن الحجة وردت،
والنار المضرمة بردت، وما بقی جمرةٌ من جمر الشبهات،
فركنوا إلى أنواع التحقيرات، وقالوا مِن أشراط المجدّد
الداعی إلى الإسلام، أن يكون من العلماء الراسخين والفضلاء
الكرام، وهذا الرجل لا يعلم حرفا من العربية، ولا شيئًا
من العلوم الادبية، وإنا نراه من الجاهلين، وكانوا فی قولهم
هذا من الصادقين۔ فدعوتُ ربی أن يُعلّمنی إن شاء، فاستجاب

और मैंने देखा कि अंधकार छा गया है तथा मार्ग अंधकारमय हो गया है। तब मैंने धर्म के समर्थन में कई पुस्तकें लिखीं और उन को रहस्यों एवं प्रमाणों के बारीक भेदों से भर दिया परन्तु फिर भी उन्होंने उन नसीहतों से कुछ लाभ न उठाया बल्कि उन्हें भड़काने वाली बातें समझा और वे न रुके। फिर जब उन्होंने देखा कि प्रमाण स्थापित हो गया है और भड़कती हुई आग ठण्डी पड़ गई है तथा सन्देहों एवं शंकाओं के अंगारों में से कोई एक अंगारा भी शेष नहीं रहा तो फिर वे भिन्न-भिन्न प्रकार की तिरस्कारपूर्ण बातों की ओर झुके और यह कहा कि इस्लाम की ओर दावत देने वाले मुजद्दिद की निशानियों में से एक यह है कि वह प्रकाण्ड विद्वानों और प्रतिष्ठित उलेमा में से होगा। और यह तो ऐसा व्यक्ति है कि अरबी का एक अक्षर नहीं जानता और न ही इसे साहित्य संबंधी विद्याओं से कुछ परिचय है और हम इसे मूर्ख समझते हैं और वे अपने इस कथन में सच्चे भी थे। फिर मैंने अपने रब्ब से दुआ की कि यदि उसकी इच्छा हो तो वह मुझे (अरबी) सिखा दे। अत: उसने मेरी दुआ स्वीकार की और मैं उसके फ़ज़्ल से भाषाविद, सुवक्ता और (कलाम का) विशेषज्ञ बन गया।फिर

لی الدعــاء، فأصبحــتُ بفضــله عــارف اللســان، وملیــح البیــان، ثــم ألّفــتُ کتابَــین فی العربیــة مأمــورًا مــن الحضــرة الاحدیــة، وقلــتُ یــا معشــر الاعــداء، إن کنتــم مــن العلمــاء والادبــاء، فأْتــوا بمثلهــا یــا ذوی الدعــاوی والریــاء إن کنتــم صادقــین۔ ففــرّوا واختفــوا کالذی ادّان عنــد صفــر الیدیــن، ومــا أفــاق إلا بعــد إنفــاق العــین، فمــا قــدر عــلی الاداء بعــد التطــوق بالدَّیــن، ولازَمــه مســتحقّه وجــدَّ فی تقاضــی اللُجَــین، فمــا کان عنــده إلّا مواعیــد المَــین؛ کذلــك یخــزی الله قومًــا متکبریــن۔

والعجــب أنــهم مــع هــذا الخــزی والذلّة، وهتــك الاســتار والنکبــة، مــا رجعــوا إلی التوبــة والانکســار، ومــا اختــاروا طریــق الابــرار والاخیــار، ومــا صلــح القلــب

मैंने ख़ुदा-ए-वाहिद (एकमात्र ख़ुदा) के आदेश से दो पुस्तकें अरबी में लिखीं और मैंने कहा- हे दुश्मनों के गिरोह! हे बड़े-बड़े दावे करने वालो और दिखावा करने वालो यदि तुम उलेमा और साहित्यकारों में से हो। और (अपने दावे में) सच्चे हो तो इन पुस्तकों के सदृश लाओ। इस पर वे भाग गए और उस क़र्ज़दार व्यक्ति की तरह छुप गए जो कंगाल हो और (अपना) चांदी-सोना (धन-दौलत) ख़र्च करने के बाद ही उसे होश आया हो और क़र्ज़ का तौक़ (लोहे की गोल हंसली) पहन लेने के बाद उसकी अदायगी पर समर्थ न हो और उसका क़र्ज़ देने वाला पीछे पड़ कर उस से अपना माल मांग रहा हो तथा उस क़र्ज़दार के पास झूठे वादों के अतिरिक्त और कुछ न हो। इस प्रकार अल्लाह अंहकारी क़ौम को लज्जित करता है।

आश्चर्य की बात है कि इतनी बदनामी, अनादर, दोष प्रकट करने और निर्धनता के बावजूद भी उन्होंने तौबा और विनय की ओर रुजू (लौटना) नहीं किया और न ही नेक और सदाचारी लोगों का आचरण ग्रहण किया और न बिगड़े हुए दिल ठीक हुए, न पंक्तियों में बिखराव पैदा हुआ और न ही वे शर्मिन्दा

المــؤوف ومــا تقوضــت الصفــوف، ومــا ســعوا إلى الحــق نادمــين،
بــل لــوَوا عــنى العِــذار، وأبــدوا التعبــس والازورار، و كانــوا إلى
الشــر مبادريــن۔ ورأيتــهم فى سلاســل بخلــهم كالاسير، ومــا
نصحــتُ لــهم نصحــا إلا رجعــتُ يائســا مــن التأثــير، حــتى تذكــرتُ
قصــة القــردة والخنازيــر، واغرورقــت عينــاى بالدمــوع إذ رأيــتُ
ذوى الابصــار كالضريــر، وإنى مــع ذلــك لســتُ مــن اليائســين۔
وقيّــض القــدر لهتــك أســتارهم وجــزاء فجّارهــم أنــهم عــادَوا
الصادقــين وآذَوا المنصوريــن، وحســبوا الجــدّ عبثًــا والحــق
باطــلًا، فكانــوا مــن المعرضــين۔ وإنى أراهــم فى لددٍ وخصــامٍ مُــذْ
أعــوامٍ، ومــا أرى فيــهم أثــر التائبــين۔ فــأردتُ أن أتركــهم وأُعــرض
عــن الخطــاب، وأطــوى ذكرهــم كطــيّ الســجلّ للكتــاب،

हो कर सच की ओर दौड़ कर आए। बल्कि वे मुझ से विमुख हो गए और अभद्रता और उपेक्षा अभिव्यक्त की और वे बुराई में बड़ी तीव्रता से बढ़ रहे थे मैंने उन्हें उनकी कंजूसी की ज़ंजीरों में क़ैदी की तरह जकड़ा हुआ पाया और उन्हें मैंने जो भी नसीहत की उसके प्रभावी होने से निराश ही होकर लौटा यहां तक कि मुझे बन्दरों और सुअरों का क़िस्सा याद आया और जब मैंने देखने वालों (आंख वालों) को अंधों की तरह पाया तो मेरी आंखें आंसुओं से भर गईं। इसके बावजूद भी मैं निराश नहीं। तक़्दीर (प्रारब्ध) ने उनके दोषों को प्रकट करने तथा उनके दुष्कर्मों का उन्हें दण्ड देने का निर्णय कर लिया है। उन लोगों ने सच्चों से शत्रुता की और समर्थित लोगों को कष्ट पहुंचाए। गंभीरता को व्यर्थ और सच को झूठ जाना और वे मुंह फेरने वाले ही थे। कई वर्षों से मैं उन्हें झगड़ों और विवादों में पड़े देख रहा हूं और मैंने उन में तौबा करने वालों का कोई लक्षण नहीं पाया। इसलिए मैंने इरादा कर लिया कि मैं उन्हें छोड़ दूं और (उनको) सम्बोधित करने से बचूं और उनकी चर्चा की पंक्ति इस प्रकार लपेट दूं जिस प्रकार वही के खातों को समेटा जाता है।

وأتوجه إلى الصالحين۔ ولو أن لی ما یوجّههم إلى الحق والصواب لفعلتُه، ولکنی ما أری تدبیرا فی هذا الباب، وکلما دعوتهم فرجعوا متدهدهین، وکلما قدتهم فقهقروا مقهقهین۔ بید أنی أری فی هذه الایام أن بعض العلماء من الکرام رجعوا إلى وانتثرت عقود الزهام، وزال قلیل من الظلام، وتبرء وا من خُبث أقوال الاعداء، وأدهشهم الإدلاج فی اللیلة اللیلاء، وجاء ونی کالسعداء فقلت بَخٍ بَخٍ لهٰذا الاهتداء، وهداهم ربّهم إلٰی عین الصواب من ملامح السراب، فوافَونی مخلصین، وشربوا من کأس الیقین، وسُقوا من ماء معین، وأرجو أن یکمل اللّٰہ رشدهم

और नेक लोगों की ओर ध्यान दूं। यदि मुझे कोई ऐसी चीज़ उपलब्ध हो तो जो उन्हें सच और सही की ओर ध्यान दिलाने वाली होती तो मैं अवश्य कर गुज़रता। परन्तु इस बारे में मुझे कोई यत्न दिखाई नहीं दिया। मैंने जब भी उन्हें सच की तरफ़ बुलाया तो वे लुढ़कते हुए वापस लौट गए और जब भी मैंने उन्हें आगे की ओर खींचा वे कहकहे लगाते हुए पिछले क़दमों पर चलने लगे। यद्दपि मैं उन दिनों में देखता हूं कि प्रतिष्ठित लोगों में से कुछ उलेमा ने मेरी ओर रुजू किया और उनकी शत्रुता की गांठे खुल गईं और किसी सीमा तक अंधकार दूर हो गए तथा उन्होंने शत्रुओं की गन्दी बातों से अप्रसन्नता व्यक्त की और घोर अंधकारमय रात में सफर करने ने उन्हें भयभीत कर दिया और वे भाग्यशाली लोगों की तरह मेरे पास आए और उस हिदायत पा जाने पर मैंने उन्हें शाबाशी दी और उनके रब्ब ने मृग तृष्णा की चमक से सच्चाई के झरने की ओर उन का मार्ग-दर्शन किया। तो वे निष्कपटतापूर्वक मेरे पास आए और उन्होंने विश्वास के प्याले से पिया तथा वे शुद्ध पानी से तृप्त किए गए। मैं आशा करता हूं कि अल्लाह उनको पूर्ण हिदायत देगा।

ويجعلهم من العارفين۔ كذلك أدعو لنظّارة هذا الكتاب، أن يوفقهم الله لهم لتخيُّر طرق الصواب، ومَن بلغ أشُدَّه فى نشأة روحانية، فسيقبل دعوتى بتفضلات ربّانية، وقد سوّيت كلماتى لكل من يصغى إلى عظاتى، والله يعلم مجالبها ويدرى طالبها، ولا تتخطى نفس فطرتها، ولا تترك قريحة شاكلتها، ولا يهتدى إلا من كان من المهتدين۔

اعلموا، رحمكم الله، أن قومًا من الذين قالوا نحن أتباع أهل البيت ومن الشيعة قد تكلموا فى جماعةٍ من أكابر الصحابة وخلفاء رسول الله صلى الله عليه وسلم وأئمة الملّة، وغلَوا فى قولهم وعقيدتهم، ورموهم بالكفر والزندقة، ونسبوهم إلى الخيانة والغضب والظلم والغىّ،

और उन्हें आरिफ़ों (अध्यात्म ज्ञानियों) में से बनाएगा। इसी प्रकार मैं इस पुस्तक के पाठकों के लिए दुआ करता हूं कि अल्लाह उन्हे सही मार्ग ग्रहण करने की सामर्थ्य प्रदान करे और जो कोई भी रूहानी उत्पत्ति में युवावस्था को पहुंचेगा तो वह ख़ुदा की अनुकंपाओं (फ़ज़्लों) के परिणामस्वरूप मेरे बुलाने को स्वीकार करेगा। मैंने हर उस व्यक्ति के लिए जो मेरी नसीहतों पर कान धरता है (सुनता है) अपने इन वाक्यों को क्रम दिया है और अल्लाह खूब जानता है कौन सा उन का अभिलाषी है। कोई व्यक्ति अपने स्वभाव को फलांग नहीं सकता और न कोई तबियत अपने आचरण को छोड़ सकती है और हिदायत पाने वाले ही हिदायत पाएंगे।

अल्लाह तुम पर रहम (दया) करे। जान लो कि इन लोगों में से जिन्होंने यह कहा कि हम अहले बैत के अनुयायी हैं और शिया हैं। एक वर्ग ऐसा है जिन्होंने महान सहाबा[रज़ि॰] की एक जमाअत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ों तथा मिल्लत के इमामों के बारे में भत्र्सना की है और अपने कथन तथा अपनी आस्था में अतिशयोक्ति की है और उन पर काफ़िर और नास्तिक होने के झूठे आरोप

وما انتهوا إلى هذا الزمان وما فاءَ مَنشَرُهم إلى الطيّ، وما كانوا منتهين۔ بل استحلَوا ذِكرَ سبِّهم، وتخيَّروه فى كل خبّهم، وحسبوه من أعظم الحسنات بل من ذرائع الدرجات، ولعنوهم واستجادوا هٰذا العمل وشدوا عليه الإمل، وظنوا أنه من أفضل أنواع الصالحات والقربات، وأقرب الطرق لابتغاء مرضاة الله وأكبر وسائل النجاة للعابدين۔ وإنى لبِثتُ فيهم بُرهةً من الزمان، ويسّر لى ربّى كل وقت الامتحان، وكنتُ أتوجس ما كانوا يُسرّون فى هذا الباب، وأُصغى إلى كل طرق الاختلاب۔ وقيّض القدر لحسن معرفتى أن عالما منهم كان من أساتذتى، فكنت فيهم ليلا ونهارًا، وجادلتهم مرارًا،

लगाए हैं और उन की ओर बेईमानी प्रकोप, अन्याय तथा विद्रोह को सम्बद्ध किया है। और वे इस समय तक इस से नहीं रुके और उनका यह प्रोपेगण्डा समाप्त होने में नहीं आया और वे नहीं रुक रहे बल्कि उन्होंने अपने गालियां देने को वैध समझा है और हर मैदान में उसे अपनाया है तथा इसे नेकियों में से सबसे बड़ी नेकी बल्कि दर्जे प्राप्त करने का एक माध्यम समझा है। उन्होंने उन सहाबा पर लानत की और इस काम को बहुत अच्छा समझा और इस पर आशाएं लगईं और यह समझा कि यह कार्य विभिन्न प्रकार की नेकियों तथा ख़ुदा के सानिध्यों के माध्यमों मे से सर्वश्रेष्ठ माध्यम है और अल्लाह को प्रसन्न करने का निकटतम मार्ग तथा इबादत करने वालों के लिए मुक्ति का सबसे बड़ा माध्यम है। मैंने कुछ समय उनमें गुज़ारा है और मेरे रब्ब ने हर परीक्षा के समय मेरे लिए आसानी पैदा कर दी और इस विषय के बारे में जो कुछ वे छुपा रहे थे, मैं उसे महसूस कर रहा था और उनके धोखा देने के प्रत्येक ढंग पर मेरा ध्यान केन्द्रित था। मेरे ज्ञान और मारिफ़त की अच्छाई के लिए प्रारब्ध (तक़्दीर) ने यह प्रबंध किया कि उनका एक विद्वान मेरे शिक्षकों में से था मैं उनमें दिन-रात रहा और उनसे बहुत बार मुबाहसा किया।

وما كان أن تتوارى عنى خبيئتهم أو يخفى على رؤيتهم، فوجدتُ أنهم قوم يُعادون أكابر الصحابة، ورضوا بغشاوة الاسترابة. ورأيت كل سعيهم فى أن يفرُط إلى الشيخَين ذمٌّ، أو يلحقهما وصمٌ، فتارة كانوا يذكرون للناس قصة القرطاس، وتارة يشيرون إلى قضية الفَدَك، ويزيدون عليه أشياء من الإفك، وكذلك كانوا مجترئين على افترائهم وسادرين فى غلوائهم، وكنتُ أسمع منهم ذمّ الصحابة وذمّ القرآن وذمّ أهل الله وجميع ذوى العرفان، وذمّ أُمّهات المؤمنين. فلما عرفت عُود شجرتهم وخبيئة حقيقتهم أعرضتُ عنهم وحُبِّبَ إلىّ الانزواء، وفى قلبى أشياء. وكنتُ أتضرع فى حضرة قاضى الحاجات، ليزيدنى علمًا فى هذه الخصومات،

उनकी आन्तरिक स्थिति मुझ से छुपी नहीं रह सकती थी और न उन का प्रत्यक्ष मुझ पर छुपा था। मुझे यह ज्ञात हो गया कि वे लोग बुज़ुर्ग सहाबा[रज़ि०] से शत्रुता रखते हैं और वे सन्देहों एवं शंकाओं के पर्दों पर राज़ी हैं। मैंने देखा कि उनका पूर्ण प्रयास यह होता है कि वे शैख़ेन (हज़रत अबू बक्र[रज़ि०] और हज़रत उमर[रज़ि०]) की ओर हर बुराई सम्बद्ध हो और उन दोनों पर धब्बा लगे। कभी तो वे लोगों से क़िस्सा-ए-क़िर्तास की बात करते हैं और कभी वे किस्सा-ए-फिदक की ओर संकेत करते हैं तथा उस पर बहुत सी झूठी बातों की बढ़ोतरी करते हैं और इस प्रकार वे अपने झूठ पर दुस्साहस करते रहे और जोश में लापरवाह होकर बढ़ते रहे। मैं उनसे सहाबा[रज़ि०], क़ुर्आन, वलियों, समस्त आरिफ़ों तथा उम्महातुल मोमिनीन की निन्दाजनक बातें सुनता था परन्तु जब मैं उन की वास्तविकता और उन की वास्तविकता का रहस्य जान गया तो मैंने उन से विमुखता की और मुझे एकान्तवास में रहना प्रिय हो गया और मेरे दिल में बहुत सी बातें थीं। मैं (अल्लाह) आवश्यकताएं पूर्ण करने वाले के दरबार में निरन्तर यह आर्तनाद करता रहा कि वह इन बहसों में मेरे ज्ञान में वृद्धि कर दे।

فعُلِّمتُ رشدًا من الكريم الحكيم، وهُديتُ إلى الحق من الله العليم، وأخذتُ عن رب الكائنات وما أخذتُ عن المحدثات، ولا يكمل رجل فی مقام العلم وصحة الاعتقادات إلا بعدما يلقى العلوم من لدن خالق السماوات، ولا يَعصمُ من الخطأ إلا الفضل الكبير من حضرة الكبرياء، ولا يبلغ أحدٌ إلى حقيقة الامور ولو أفنى العمر فيها إلى الدهور، إلا بعد هبوب نسيم العرفان من الله الرحمن، وهو المعلِّم الاعظم والحكيم الاعلم، يُدخل من يشاء فی رحمته، ويجعل من يشاء من العارفين۔ و كذلك مَنَّ الله علیّ ورزقنی من العلوم النخب، وجعل لی نورًا يتبع الشياطين كالشهب، وأخرجنی من ليلة حالكة الجلباب إلٰى نهار ما غشّاه قطعة من الرَباب،

इस पर मुझे कृपालु, दूरदर्शी ख़ुदा की ओर से सन्मार्ग और मार्ग दर्शन की शिक्षा दी गई और सर्वज्ञ ख़ुदा की ओर से सच्चाई की ओर मेरा मार्ग-दर्शन किया गया और यह मैंने कायनात के प्रतिपालक से पाया। लोगों की बातों से ग्रहण नहीं किया। हर व्यक्ति ज्ञान के स्थान और सही आस्थाओं में केवल आकाशों के स्रष्टा द्वारा प्रदत्त विद्याओं की प्राप्ति के पश्चात ही पूर्ण होता है और ख़ुदा तआला की महान कृपा ही ग़लती से सुरक्षित रखती है और कोई व्यक्ति चाहे लम्बे समय तक लम्बी अपनी समस्त आयु फ़ना कर दे वह कृपालु ख़ुदा की मारिफ़त की समीर के चलने के बिना मामलों की वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकता। वही सबसे बड़ा शिक्षक और सब से अधिक ज्ञान रखने वाला दूरदर्शी है। वह जिसे चाहता है आरिफ़ों में से बना देता है। इसी प्रकार अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया और मुझे उच्च कोटि की विद्याएं प्रदान कीं और ऐसा प्रकाश दिया जो उल्काओं की भांति शैतानों का पीछा करता है। वह मुझे घोर अंधकार से निकाल कर ऐसे प्रकाशमान दिन की ओर ले आया, जिसे सफेद बादल के टुकड़े ने ढांका हुआ नहीं था।

وطــرَد كلّ مانــع عــن البــاب، فأصبحــت بفضــله مــن المحفوظــين۔ وأُعطيــتُ مِــن فــهمٍ يخــرق العــادة، ومِــن نــور ينــير الفطــرة، ومِــن أســرار تعجــب الطالبــين۔ وصبّــغ الله علومــى بلطائــف التحقيــق، وصفاهــا كصفــاء الرحيــق، و كل قضيــة قضــى بهــا وجــدانى أرانيهــا الله فى كتابــه ليزيــد اطمينــانى، ويتقــوّى إيمــانى، فأحاطــت عيــنى ظهــر الآيــات وبطنهــا وظعاينهــا وظعنهــا، وأُعطيــتُ فراســة المحدّثــين۔ وأعطــانى ربى أنــواع فــهم جديــد لــكل زكــى وســعيد، ليصلــح المفاســد الجديــدة ويهــدى الطبائــع الســعيدة، ومــن يهــدى إلا هــو، وهــو أرحــم الراحمــين۔ نظــر الزمــان ووجــد أهــله قــد أضاعــوا الإيمــان، واختــاروا الكــذب والبهتــان،

और उसने अपने दरबार से हर रोकने वाले को मार भगाया और (इस प्रकार) मैं उसकी कृपा से सुरक्षित हो गया। मुझे विलक्षण (ख़ारिक़ आदत) विवेक प्रदान किया गया और ऐसा प्रकाश दिया गया जो स्वभाव को प्रकाशमान कर देता है और ऐसे रहस्य प्रदान किए गए जो सत्याभिलाषियों को पसन्द आते हैं। अल्लाह ने मेरी विद्याओं को जांच-पड़ताल के सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्यों से अवगत किया। तथा उन्हें शुद्ध शराब की तरह शुद्ध किया और प्रत्येक समस्या में मेरे विवेक ने जो फैसला किया उसे अल्लाह ने अपनी किताब में मुझे दिखा दिया ताकि मेरी सन्तुष्टि में वृद्धि हो और मेरा ईमान शक्ति पाए। तो मेरी आंख ने आयतों के बाह्य एवं आन्तरिक तथा उन के चरितार्थों तथा गुप्त खूबियों को अपनी परिधि में ले लिया और मुझे मुहद्दसों जैसी प्रतिभा प्रदान की गई तथा मेरे रब्ब ने मुझे प्रत्येक पवित्र एवं भाग्यशाली के लिए नवीन विवेक की नाना प्रकार की कृपाएं कीं ताकि वह नवीन खराबियों का निवारण करे और नेक स्वभावों का मार्ग-दर्शन करे। उसके अतिरिक्त और कौन हिदायत दे सकता है और वह सब दयालुओं से अधिक दयालु है। उसने युग पर दृष्टि डाली और युग के लोगों को इस स्थिति में पाया

مَـن ائتُمـن منـهم خـان، ومـن تكلـم مـان، فنفـخ فی روعـی أسـرارًا عظيمـة، و كلمـات قديمـة، وجعلـنی مـن وُرثـاء النبيـين، وقـال إنـك مـن المأمور يـن لتنـذر قومـا مـا أُنـذر آباؤهـم ولتسـتبين سـبيل المجرمـين۔

الباب الأول فی الخلافة

اعلـم، سـقاك الله كأس الفكـر العميـق، أنی عُلّمـتُ مـن ربی فی أمـر الخلافـة عـلی وجـه التحقيـق، وبلغـتُ عمـق الحقيقـة كأهـل التدقيـق، وأظهـر عـلیّ ربی أن الصِدّيـق والفـاروق وعثمـان، كانـوا مـن أهـل الصـلاح والإيمـان،

कि वे ईमान खो चुके थे और उन्होंने झूठ तथा झूठे आरोपों को अपना लिया था। उन में से जिन के सुपुर्द भी कोई अमानत की गई उस ने ख़यानत (बेईमानी) की और जिसने बात की उसने झूठ बोला। फिर उस (ख़ुदा) ने मेरे दिल में महान रहस्यों तथा पुराने वाक्य इल्क़ा किए और मुझे नबियों का वारिस बना दिया और फ़रमाया-कि तू मामूरों में से है ताकि तू उस क़ौम को डराए जिन के बाप-दादों को नहीं डराया गया था। और ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए।

ख़िलाफ़त के बारे में प्रथम अध्याय

जान ले। अल्लाह तुझे गहरे विचार का प्याला पिलाए। मुझे मेरे रब्ब की ओर से ख़िलाफ़त के बारे में अन्वेषण की दृष्टि से शिक्षा दी गयी है और मैं अन्वेषकों की तरह उस वास्तविकता के मर्म तक पहुंच गया तथा मेरे रब्ब ने मुझ पर यह प्रकट किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सदाचारी और मोमिन थे तथा उन लोगों में से थे जिन्हें

وكانوا من الذين آثرهم الله وخُصّوا بمواهب الرحمان، وشهد على مزاياهم كثير من ذوى العرفان۔ تركوا الاوطان لمرضاة حضرة الكبرياء، ودخلوا وطيس كل حرب وما بالوا حَرَّ ظهيرة الصيف وبرد ليل الشتاء، بل ماسوا فى سبل الدين كفتية مترعرعين، وما مالوا إلى قريب ولا غريب، وتركوا الكل لله ربّ العالمين۔ وإن لهم نشرًا فى أعمالهم، ونفحات فى أفعالهم، وكلها ترشد إلى روضات درجاتهم وجنات حسناتهم۔ ونسيمهم يُخبر عن سرّهم بفوحاتها، وأنوارهم تظهر علينا بإناراتها فاستدِلّوا بتأرُّجِ عَرفهم على تبلُّج غُرفهم، ولا تتبِعوا الظنون مستعجلين۔ ولا تتكأوا على بعض الاخبار، إذ فيها

अल्लाह ने चुन लिया और जो कृपालु ख़ुदा की अनुकंपाओं से विशिष्ट किए गए और अधिकांश मारिफ़त रखने वालों ने उनकी ख़ूबियों की गवाही दी। उन्होंने बुज़ुर्ग एवं सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए देश-त्याग किया प्रत्येक युद्ध की भट्टी में प्रविष्ट हुए और गर्मी के मौसम की दोपहर की गर्मी तथा सर्दियों की रात की ठंडक की परवाह न की बल्कि नवोदित युवकों की तरह धर्म के मार्गों पर अपनी चाल में लीन हो गए और अपनों तथा ग़ैरों की ओर न झुके तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा के लिए सब को अलविदा कह दिया। उन के कर्मों में सुगंध तथा उनके कार्यों में खुशबू है और यह सब कुछ उनके पदों के उद्दानों तथा उनकी नेकियों की पुष्प वाटिकाओं की ओर मार्ग-दर्शन करता है और उनकी सवेरे की मृदुल-मंद समीर अपने सुगंधित झोकों से उन के रहस्यों का पता देती है और उनके प्रकाश अपनी पूर्ण आभाओं से हम पर प्रकट होते हैं। तो तुम उनके पदों की चमक-दमक का उनकी सुगंध से पता लगाओ और जल्दबाज़ी करते हुए कुधारणाओं का अनुकरण मत करो तथा कुछ रिवायतों का सहारा न लो क्योंकि उनमें बहुत ज़हर और बड़ी अतिशयोक्ति

سمّ كثير و غلوّ كبير لا يليق بالاعتبار، و كم منها يشابه ريحًا قُلّبًا، أو برقًا خُلّبًا، فاتّقِ الله ولا تكن من متّبعيها، ولا تكن كمثل الذى يحب العاجلة و يبتغيها، و يذَرُ الآخرة و يُلغيها۔ ولا تترك سبل التقوى والحلم، ولا تَقْفُ ما ليس لك به علم، ولا تكن من المعتدين۔ واعلم أن الساعة قريب والمالك رقيب، و سيوضع لك الميزان، و كما تدين تُدان، فلا تظلم نفسك و كن من المتقين۔ ولا أجادلكم اليوم بالإخبار، فإنها لها أذيال كالبحر الذخار، ولا يُخرج منها الدررَ إلّا ذو الابصار، والناس يكذّبون بعضهم بعضا عند ذكر الآثار، فلا ينتفعون منها إلا قليل من الاحرار، وإنما أقول لكم ما عُلّمتُ من ربى لعل الله يهديكم إلى الاسرار۔ و إنى أُخبرتُ أنهم

है तथा वे विश्वसनीय नहीं होतीं। उनमें से बहुत सारी रिवायतें उथल-पुथल करने वाली आंधी और वर्षा का धोखा देने वाली बिजली के समान हैं। अत: अल्लाह से डरो और उन (रिवायतों) का अनुकरण करने वालों में से न बन। और उस व्यक्ति के समान मत हो जो संसार से प्रेम करता और उसका अभिलाषी है तथा आख़िरत को छोड़ता और उसे मिथ्या ठहराता है। संयम और शालीनता के मार्गों को न छोड़े और जिस बात का ज्ञान न हो उसका अनुसरण न कर और अन्याय करने वालों में से न हो और यह जान ले कि प्रलय निकट है और मालिक ख़ुदा देख रहा है, तेरे लिए (तेरे कर्मों की) तराज़ू लगा दी जाएगी और जैसा करोगे वैसा भरोगे। अपनी जान पर ज़ुल्म न कर और संयमियों में से हो जा। मैं इस समय तुम्हारे साथ रिवायतों के संबंध में बहस नहीं करूंगा, क्योंकि अपार सागर के समान उनके दामन फैले हुए हैं और उन से केवल प्रतिभाशाली लोग ही मोती निकाल सकते हैं। रिवायतों तथा आसार का वर्णन करते समय लोग एक-दूसरे को झुठलाते हैं और कुछ सुशील लोग ही लाभ उठाते हैं और मैं तुम्हें वही कुछ कहता हूं जिसकी मेरे रब्ब ने मुझे शिक्षा दी। शायद अल्लाह इन

من الصالحين، ومن آذاهم فقد آذى الله وكان من المعتدين، ومن سبّهم بلسان سليط وغيظ مستشيط، وما انتهى عن اللعن والطعن وما ازدجر من الفحش والهذيان، بل عزا إليهم أنواع الظلم والغصب والعدوان، فما ظلم إلا نفسه، وما عادىٰ إلا ربّه، وإن الصحابة من المبرّئين. فلا تجترئوا على تلك المسالك، فإنها من أعظم المهالك، وليعتذر كل لعّان من فرطاته، وليتّق الله ويوم مؤاخذاته، وليتّق ساعة تهيِّج أسف المخطئين، وتُرِى ناصية العادين. وأَيمُ الله إنه تعالى قد جعل الشيخَين والثالث الذى هو ذو النُّورَين، كأبواب للإسلام وطلائع فوج خير الانام، فمن أنكر شأنهم وحقّر برهانهم،

रहस्यों की ओर तुम्हारा मार्ग-दर्शन कर दे। मुझे बताया गया है कि वे (हिदायत पाने वाले) सदाचारियों में से थे जिसने उन्हें कष्ट पहुंचाया तो उस ने वास्तव में अल्लाह को कष्ट पहुंचाया और वह सीमा से बाहर निकलने वाला हो गया। और जिसने गालियां देकर तथा क्रोध एवं प्रकोप से उत्तेजित होकर उन्हें गालियां दीं और लानत-मलामत से न रुका और न ही अश्लील बातें करने तथा बकवास करने से रुका बल्कि हर प्रकार अन्याय, अधिकार हनन करना तथा अत्याचार उनकी ओर सम्बद्ध किया तो उसने वास्तव में स्वयं पर ही अत्याचार किया और केवल अपने रब्ब से ही शत्रुता की। सहाबा[रज़ि॰] इन झूठे आरोपों से बरी हैं। अत: ऐसे मार्गों पर चलने का साहस न करो, क्योंकि ये सब बहुत बड़ी तबाही के मार्ग हैं। इसलिए हर लानत डालने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने अन्यायों से तौबा कर ले और अल्लाह और उसके अपराध की पकड़ के दिन से डरे तथा उस घड़ी से डरे जो अपराधियों के अफ़सोस में अशान्ति पैदा कर देगी और शत्रुता करने वालों का मस्तक दिखा देगी और ख़ुदा की क़सम ख़ुदा ने दोनों शेखों (अबू बक्र[रज़ि॰] तथा उमर[रज़ि॰]) को और तीसरे जो ज़ुन्नूरैन हैं प्रत्येक को इस्लाम के दरवाज़े तथा ख़ैरुलअनाम (मुहम्मद रसूलुल्लाह

وما تأدّب معهم بل أهانهم، وتصدى للسب وتطاوُل اللسان، فأخاف عليه من سوء الخاتمة وسلب الإيمان۔ والذين آذوهم ولعنوهم ورموهم بالبهتان، فكان آخر أمرهم قساوة القلب وغضب الرحمان۔ وإنى جربتُ مرارا وأظهرتها إظهارًا، أن بغض هٰؤلاء السادات من أكبر القواطع عن الله مظهرِ البركات، ومن عاداهم فتُغلَق عليه سُدَدُ الرحمة والحنان، ولا تُفتح له أبواب العلم والعرفان، ويتركه الله فى جذبات الدنيا وشهواتها، ويسقط فى وهاد النفس وهوّاتها، ويجعله من المبعدين المحجوبين۔ وإنهم أُوذوا كما أُوذى النبيون، ولُعنوا

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेना का हरावल दस्ता बनाया है। तो जो व्यक्ति उनकी श्रेष्ठता से इन्कार करता है और उनके ठोस तर्क को तुच्छ समझता है और उनके साथ आदर पूर्वक व्यवहार नहीं करता बल्कि उनका अनादर करता है तथा उन्हें बुरा-भला कहने पर तत्पर रहता और गालियां देता है। मुझे उसके बुरे अंजाम और ईमान के समाप्त हो जाने का भय है और जिन्होंने उनको दुख दिया उनकी निन्दा की और झूठे आरोप लगाए तो दिल की कठोरता और कृपालु (रहमान) ख़ुदा का प्रकोप उन का अंजाम हुआ। मेरा अनेकों बार का अनुभव है और मैं इस को स्पष्ट तौर पर अभिव्यक्त भी कर चुका हूं कि इन सादात से शत्रुता और द्वेष रखना बरकतें प्रकट करने वाले ख़ुदा से सर्वाधिक संबंध विच्छेद करने का कारण है और जिसने भी इन से शत्रुता की तो ऐसे व्यक्ति पर रहमत (दया) और हमदर्दी के समस्त मार्ग बन्द कर दिए जाते हैं और उसके लिए ज्ञान और इर्फ़ान के दरवाज़े खोले नहीं जाते और ख़ुदा उन्हें संसार के आनन्दों तथा कामवासना संबंधी इच्छाओं के गड्ढों में गिरा देता है और उसे (अपनी चौखट से) दूर रहने वाला तथा वंचित कर देता है। उन्हें (ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन को) उसी प्रकार कष्ट दिया गया जिस प्रकार नबियों को दिया गया और उन पर लानतें डाली गईं जिस प्रकार रसूलों पर

كمـا لُعـن المرسـلون، فحقّـق بذٰلـك ميراثـهم للرسـل، وتحقّـقَ جزاؤهـم كأئمـة النِحـل والملـل فى يـوم الدّيـن۔ فـإن مؤمنـا إذا لُعـن و كُفـر مـن غـير ذنـب، ودُعـى بهجـو وسـبّ مـن غـير سـبب، فقـد شـابهَ الانبيـاء وضاهـى الاصفيـاء، فسـيُجزى كمـا يُجـزى النبيـون، ويـرى الجـزاء كالمرسـلين۔ ولا شـك أن هـؤلاء كانـوا عـلى قـدم عظيـم فى اتبـاع خـير الانبيـاء، وكانـوا أُمّـةً وسـطًا كمـا مدحـهم ذو العـزّ والعـلاء، وأيدهـم بـروح منـه كمـا أيّـد كل أهـل الاصطفـاء۔ وقـد ظهـرت أنـوار صدقـهم وآثـار طهارتـهم كأجـلى الضيـاء، وتبـين أنـهم كانـوا مـن الصادقـين۔ ورضـى الله عنـهم ورضـوا عنـه، وأعطاهـم مـا لـم يُعـطَ أحـد مـن العالمـين۔ أَهُـم كانـوا منافقـين؟ حاشـا و كلا، بـل جـلّ

डाली गईं। इस प्रकार उन का रसूलों का वारिस होना सिद्ध हो गया तथा क़यामत के दिन उन का बदला क़ौमों और मिल्लतों के इमामों जैसा निश्चित हो गया। क्योंकि जब मोमिन पर किसी दोष/अपराध के बिना लानत डाली जाए। और काफ़िर कहा जाए और अकारण उसकी निन्दा की जाए तथा उसे बुरा-भला कहा जाए तो वह नबियों के समान हो जाता है और (अल्लाह के) चुने हुए लोगों के सदृश बन जाता है फिर उसे बदला दिया जाता है जैसा नबियों को बदल दिया जाता है और रसूलों जैसा प्रतिफल पाता है। ये लोग निस्सन्देह नबियों में सर्वश्रेष्ठ के अनुकरण में महान स्थान पर आसीन थे और जैसा कि बुज़ुर्ग-और सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने उन की प्रशंसा की वे एक श्रेष्ठ उम्मत थे और उसने स्वयं अपनी रूह से उनका ऐसा ही समर्थन किया जैसे वह अपने समस्त चुने हुए बन्दों का समर्थन करता है और वास्तव में उनकी सच्चाई के प्रकाश और उनकी पवित्रता के लक्षण पूरी चमक-दमक के साथ प्रकट हुए और यह खुल कर स्पष्ट हो गया कि वे सच्चे थे। अल्लाह उन से और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए तथा उसने उन्हें वह कुछ दिया जो संसार में किसी अन्य को न दिया गया था। क्या वे मुनाफ़िक (कपटी) थे ऐसा कदापि न

معروفهم وجلی، وإنهم کانوا طاهرین۔ لا عیب کتطلّب مثالبهم وعثراتهم، ولا ذنب کتفتیش معائبهم وسیئاتهم، واللّٰه إنهم کانوا من المغفورین۔ والقرآن یحمدهم ویُثنی علیهم و یبشرهم بجنّات تجری من تحتها الانهار، ویقول إنهم أصحاب الیمین والسابقون والاخیار والابرار، ویسلّم بسلام البرکات علیهم، ویشهد أنهم کانوا من المقبولین۔ ولا شك أنهم قوم أدحضوا المودّات للإسلام، وعادَوا القوم لمحبة خیر الانام، واقتحموا الاخطار لمرضاة الرب العلام، والقرآن یشهد أنهم آثروا مولاهم وأکرموا کتابه إکرامًا، وکانوا یبیتون لربّهم سُجّدًا وقیامًا، فأی ثبوت قطعی علی ما خالفه القرآن؟ والظن لا

था बल्कि वास्तविकता यह है कि उनकी नेकियां महान और चमकदार थीं। वे निस्सन्देह सदाचारी थे। उन के दोष और ग़लतियों की खोज करने से बड़ा कोई दोष नहीं तथा उनकी भूलों और बुराइयों की तलाश से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं। ख़ुदा की क़सम वे सब क्षमा प्राप्त लोग थे। क़ुर्आन उनकी प्रशंसा तथा यशोगान करता और उन्हें ऐसे स्वर्गों की ख़ुश ख़बरी देता है जिनके दामन (आंचल) में नहरें बहती हैं और फ़रमाता है कि वे अस्हाबुल यमीन और साबिक़ीन (अर्थात् दायीं ओर वाले तथा पहले लोग) और नेक एवं सदाचारी लोग हैं और भले हैं। वह उन्हें बरकतों से भरा सलाम प्रस्तुत करता और उसकी गवाही देता है कि वे मान्य लोग थे। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वे ऐसे लोग थे जिन्होंने इस्लाम के लिए समस्त प्रेमों को ठुकरा दिया और ख़ैरुल अनाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम के लिए अपनी क़ौम से शत्रुता मोल ली और ग़ैबों (परोक्षों) को सर्वाधिक जानने वाले ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए ख़तरों में घुस गए। क़ुर्आन इस बात की गवाही देता है कि उन्होंने अपने मौला को प्राथमिकता दी, उसकी किताब (क़ुर्आन) का अत्यधिक सम्मान किया और वे अपने रब्ब

يُساوى اليقين أيها الظانّ۔ أتقوم على جهة يبطله الفرقان؟ فأَخْرِجْ لنا إن جاءك البرهان ولا تتبع ظنون الظانين۔ ووالله إنهم رجال قاموا فى مواطن الممات لنصرة خير الكائنات، وتركوا لله آباءهم وأبناءهم ومزّقوهم بالمرهفات، وحاربوا الأحبّاء فقطعوا الرؤوس، وأعطوا لله النفائس والنفوس، وكانوا مع ذلك باكين لقلة الأعمال ومتندمين۔ وما تمضمضت مُقلتهم بنوم الراحة، إلا قليل من حقوق النفس للاستراحة، وما كانوا متنعمين۔ فكيف تظنون أنهم كانوا يظلمون ويغصبون، ولا يعدلون ويجورون؟ وقد ثبت أنهم

के लिए सज्दों में खड़े होकर रातें गुज़ारते थे। क़ुर्आन के विरोध में तुम्हारे पास कौन सा ठोस सबूत है? हे अनुमान का अनुकरण करने वाले! अनुमान विश्वास के बराबर नहीं हुआ करता क्या तू उस पहलू पर खड़ा होता है जिसे फ़ुर्क़ान (हमीद) झुठला रहा है। यदि तुझे कोई तर्क सूझता है तो हमारे सामने प्रस्तुत कर और अनुमान लगाने वालों के अनुमानों का अनुकरण न कर। ख़ुदा की क़सम वे ऐसे लोग हैं जो कायनात (ब्रह्माण्ड) में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की सहायता के लिए मृत्यु के मैदानों में डट गए और उन्होंने अल्लाह के लिए अपने बापों और बेटों को छोड़ दिया और उन्हें तेज़ धार वाली तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अपने प्रियजनों से युद्ध किया और उन के सर काट दिए और ख़ुदा के मार्ग में अपने उत्तम माल और प्राण न्योछावर किए। परन्तु इसके बावजूद वे अपने कर्मों की कमी पर रोते और बहुत शर्मिन्दा थे, उनकी आंख ने भरपूर नींद का आनन्द नहीं लिया परन्तु बहुत थोड़ा जो आराम की दृष्टि से जान का अनिवार्य अधिकार है, वे नेमतों के रसिया नहीं थे। फिर तुम कैसे सोचते हो कि वे अन्याय करते थे, माल हड़पते थे न्याय नहीं करते थे और अत्याचार-व-अन्याय करते थे। यह सिद्ध हो चुका है कि वे कामवासना

خرجوا من الاهواء ، وسقطوا فی حضرة الکبریاء ، و کانوا قومًا فانین۔ فکیف تسبّون أیها الاعداء؟ وما هذا الارتیاء الذی یأباه الحیاء؟ فاتقوا اللّٰه وارجعوا إلی رفق وحلم، ستُسألون عما تظنون بغیر علم وبرهان مبین۔ لا تنظروا إلی ذلاقتی ومرارة مذاقتی، وانظروا إلی دلیل عرضتُعلیکم وأمعِنوا فیه بعینیکم، فإنکم تبعتم ظنون الظانین، وترکتم کتابا یهب الحق والیقین، وما بعد الحق إلّا ضلال مبین۔ و کیف یُنسَب إلی الصحابة ما یُخالف التقوی وسُبله، ویُباین الورع وحُلله، مع أن القرآن شهد بأن اللّٰه حبَّب إلیهم الإیمان، و کرَّه إلیهم الکفر والفسوق والعصیان، وما

संबंधी इच्छाओं से बाहर आ चुके थे और वे हमेशा ख़ुदा में फ़ना (लीन) लोग थे। हे शत्रुओ! तुम उन्हें कैसे गालियां देते हो और यह कैसी समझ है जिसका लज्जा इन्कार करती है। अत: ख़ुदा से डरो, नर्मी और सहनशीलता की ओर लौटो। जानकारी तथा सहनशीलता की ओर लौटो। जानकारी तथा स्पष्ट तर्क के बिना तुम जो अनुमान लगाते हो उसके बारे में तुम से अवश्य पूछा जाएगा। तुम मेरी ज़बान (जीभ) की तेज़ी और मेरी शैली की कटुता न देखो बल्कि उस तर्क पर विचार करो जो मैंने तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया है और उस पर गहरी दृष्टि डालो, क्योंकि तुम केवल कुधारणा करने वालों के विचारों के पीछे लगे रहे हो और तुम ने उस किताब को छोड़ दिया जो सच और विश्वास प्रदान करती है। सच को छोड़ कर खुली गुमराही के अतिरिक्त कुछ नहीं। सहाबा की ओर वे बातें क्यों कर सम्बद्ध की जा सकती हैं जो संयम और उसके मार्गों की विरोधी और तक़्वा तथा उसके लिबासों के विपरीत हैं, जबकि क़ुर्आन ने यह गवाही दी है कि अल्लाह ने उनके लिए ईमान को प्रिय बना दिया और क़ुफ़्र, पाप, तथा अवज्ञा को अप्रिय और उनमें से किसी को भी आपसी झगड़ा तो कहां आपस में लड़ाई पर तत्पर होने के बावजूद काफ़िर नहीं ठहराया बल्कि

كَفَّرَ أحدا منهم مع وقوع المقاتلة، فضلا عن المشاجرة، بل سمّى كلَّ أحد من الفريقين مسلمين، وقال

وَاِنۡ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اقۡتَتَلُوۡا فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَهُمَا فَاِنۡۢ بَغَتۡ اِحۡدٰٮهُمَا عَلَى الۡاُخۡرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىۡ تَبۡغِىۡ حَتّٰى تَفِىۡٓءَ اِلٰٓى اَمۡرِ اللّٰهِ بَيۡنَهُمَا بِالۡعَدۡلِ وَاَقۡسِطُوۡا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَةٌ فَاَصۡلِحُوۡا بَيۡنَ اَخَوَيۡكُمۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا يَسۡخَرۡ قَوۡمٌ مِّنۡ قَوۡمٍ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا خَيۡرًا مِّنۡهُمۡ وَلَا نِسَآءٌ مِّنۡ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُنَّ خَيۡرًا مِّنۡهُنَّ وَلَا تَلۡمِزُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ وَلَا تَنَابَزُوۡا بِالۡاَلۡقَابِ بِئۡسَ الِاسۡمُ

अल्लाह ने उन के दोनों पक्षों को मुसलमान का नाम दिया है और फ़रमाया-

और यदि मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों में सुलह करा दो। फिर यदि सुलह हो जाने के बाद उनमें से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिलकर उस चढ़ाई करने वाले के विरुद्ध युद्ध करो यहां तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आएं फिर यदि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए तो न्याय के साथ (दोनों लड़ने वालों) में सुलह करा दो और न्याय को दृष्टिगत रखो। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। मोमिनों का परस्पर रिश्ता केवल भाई-भाई का है। अतः तुम अपने भाइयों के बीच जो आपस में लड़ते हों सुलह करा दिया करो और अल्लाह का तक्वा (संयम) धारण करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। हे मोमिनो! कोई क़ौम किसी क़ौम से उसे तुच्छ समझ कर हंसी-मज़ाक न किया करे, संभव है कि वह उन से अच्छा हो और न (किसी क़ौम की) स्त्रियां दूसरी (क़ौम की) स्त्रियों को तुच्छ समझकर उन से हंसी ठट्ठा किया करें। संभव है कि वे (दूसरी क़ौम या स्थितियों वाली) स्त्रियां उन से अच्छी हों और न तुम एक-दूसरे पर कटाक्ष किया करो और न एक-दूसरे को बुरे नामों से याद किया करो, क्योंकि

الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ

فانظر إلى ما قال الله وهو أصدق الصادقين۔ إنك تُكفِّر المؤمنين لبعض مشاجرات، وهو يسمّى الفريقين مؤمنين مع مقاتلات ومحاربات، ويُسميهم إخوة مع بغى البعض على البعض ولا يُسمى فريقا منهم كافرين، بل يغضب على الذين يتنابزون بالالقاب، ويلمزون أنفسهم ولا يسترون

ईमान के बाद आज्ञाकारिता से निकल जाना एक बहुत ही बुरे नाम का पात्र बना देता है (अर्थात् पापी का) और जो भी तौबा न करे वह अत्याचारी होगा। हे ईमान वालो! बहुत से अनुमानों से बचते रहा करो क्योंकि कुछ अनुमान पाप (गुनाह) बन जाते हैं और जासूसी से काम न लिया करो और तुम में से कोई अपने मुर्दे भाई का मांस खाना पसन्द करेगा (यदि तुम्हारी ओर यह बात सम्बद्ध की जाए तो) तुम उसे अप्रिय समझोगे। अल्लाह का संयम धारण करो। अल्लाह बहुत ही तौबा स्वीकार करने वाला (और) बारम्बार रहम करने वाला है। (अलहुजुरात - 10 से 13)

अत: अल्लाह के आदेश पर विचार करो अल्लाह सब से अधिक सच्चा है। तू मोमिनों को उन के कुछ झगड़ों के कारण काफ़िर ठहराता है हालांकि वह उनकी आपसी लड़ाइयों तथा युद्ध के बावजूद हर दो पक्षों को मोमिन ठहराता है तथा कुछ के कुछ (लोगों) के विरुद्ध उद्दण्डता करने के बावजूद उन का नाम भाई-भाई रखता है। वह उनमें से किसी पक्ष को काफ़िर नहीं ठहराता बल्कि वह उन लोगों से अप्रसन्नता व्यक्त करता है जो एक-दूसरे को बुरे नामों से याद करते हैं और अपनों के दोषों को नहीं छुपाते और हंसी-ठट्ठा, चुगली और कुधारणा करते हैं और उनकी बुराइयां की टोह में लगे रहते हैं बल्कि वे उन बुराइयां करने वाले

كالاحباب، ويسخرون ويغتابون ويظنون ظن السوء ويمشون متجسّسين۔ بل يُسمى مرتكب هذه الامور فسوقا بعد الإيمان، ويغضب عليه كغضبه على أهل العدوان، ولا يرضى بعباده أن يسبّوا المؤمنين المسلمين، هذا مع أنه يُسمى فى هذه الآيات فريقًا من المؤمنين باغين ظالمين، وفريقا من الآخرين مظلومين، ولٰكن لا يسمى أحدًا منهما مرتدين۔ وكفاك هذه الهداية إن كنتَ من المتقين، فلا تُدخِل نفسك تحت هذه الآيات، ولا تبادر إلى المهلكات، ولا تقعد مع المعتدين۔ وقال الله فى مقام آخر فى مدح المؤمنين.

والزمهم كلمة التقوى وكانوا احق بها واهلها

فانظر كلمات رب العالمين۔ أتُسمِّى قوما فاسقين

व्यक्ति के लिए ईमान ले आने के बाद पापी नाम रखता है। और वह ऐसे व्यक्ति पर उसी प्रकार अप्रसन्न होता है जैसे वह अत्याचार करने वालों पर अप्रसन्न होता है तथा वह अपने बन्दों के लिए पसन्द नहीं करता कि वे मोमिनों मुसलमानों को गाली दें बावजूद इसके कि वे उन आयतों में मोमिनों के एक पक्ष को बाग़ी और अत्याचारी तथा दूसरे पक्ष के लागों को अत्याचार पीड़ित ठहराता है, परन्तु वह उन में से किसी पक्ष को मुर्तद नहीं ठहराता। यदि तू मुत्तक़ी (संयमी) है तो तेरे लिए यह मार्ग-दर्शन पर्याप्त है इसलिए स्वयं को इन आयतों की चपेट में न ला और तबाही की बातों की ओर जल्दी न कर और सीमा से बाहर जाने वालों के साथ मत बैठ। अल्लाह ने एक अन्य स्थान पर मोमिनों की प्रशंसा में फ़रमाया है-

والزمهم كلمة التقوى وكانوا احق بها واهلها*

समस्त लोकों के प्रतिपालक की बातों पर विचार कर। क्या तू उन लोगों को पापी कहता है जिनका नाम अल्लाह ने मुत्तक़ी रखा। फिर महा प्रतापी ख़ुदा

*अल्लाह ने उन्हें संयम की पद्धति पर दृढ़ रखा और वे निस्सन्देह उसके अधिकारी और पात्र थे। (अलफ़त्ह-27)

سماهم الله متقين؟ ثم قال عزّ وجلّ فی مدح صحابة خاتم النبيين۔

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ

فانظر كيف سمّى كل من عاداهم كافرًا، وغضب عليهم، فاخش الله واتق الذى يغيظ بالصحابة كافرين، وتدبَّرْ فى هذه الآيات وآيات أخرى لعل الله يجعلك من المهتدين۔

ने ख़ातमुन्नबिय्यीन के सहाबा की प्रशंसा में फ़रमाया-

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और वे लोग जो उसके साथ हैं क़ाफ़िरों के मुक़ाबले पर बहुत कठोर हैं (और) आपस में अत्यन्त रहम (दया) करने वाले हैं। तू उन्हे रुकू करते हुए और सज्द: करते हुए देखेगा। वे अल्लाह ही से फ़ज़्ल (कृपा) और खुशी चाहते हैं। सज्दों के असर से उन के चेहरों पर उन की निशानी है। यह उनका उदाहरण है जो तौरात में है और इंजील में उनका उदाहरण एक खेती की तरह है जो अपनी कोंपिल निकाले सुदृढ़ करे फिर वह मोटी हो जाए और अपने डंठल पर खड़ी हो, किसानों को प्रसन्न कर दे ताकि उन के कारण काफ़िरों को क्रोध दिलाए। (अलफ़तह-30)

अत: विचार करो कि उसने किस प्रकार उन से शत्रुता करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का नाम काफ़िर रखा और उन पर क्रोधित हुआ। अत: अल्लाह से डर और उस अस्तित्व से भय कर जो सहाबा के कारण काफ़िरों को ग़ुस्सा दिलाता है और उन आयतों तथा दूसरी आयतों पर विचार कर। शायद अल्लाह तुझे हिदायत

ومن تظنّ من الشيعة أن الصدّيق أو الفاروق غصَب الحقوق، وظلم المرتضى أو الزهراء، فترَك الإنصاف وأحبَّ الاعتساف، وسلَك مسلك الظالمين إن الذين تركوا أوطانهم وخلانهم وأموالهم وأثقالهم لله ورسوله، وأُوذوا من الكفار وأُخرِجوا من أيدى الأشرار، فصبروا كالأخيار والأبرار، واستُخلِفوا فما أترعوا بيوتِهم من الفضة والعَين، وما جعلوا أبنائهم وبناتهم ورثاء الذهب واللُّجَين، بل ردّوا كل ما حصل إلى بيت المال، وما جعلوا أبناءهم خلفاءهم كأبناء الدنيا وأهل الضلال، وعاشوا فى هذه الدنيا فى لباس الفقر والخصاصة، وما مالوا إلى التنعم كذوى الإمرة والرياسة أيُظَنّ فيهم أنهم كانوا

प्राप्त लोगों में से बना दे।

शिया लोगों में से जो यह विचार करता है कि (अबू बक्र) सिद्दीक़[रज़ि०] या (उमर) फ़ारूक[रज़ि०] ने (अली) मुर्तज़ा[रज़ि०] या (फ़ातिमा) अज़्ज़ुहरा[रज़ि०] के अधिकारों का हनन किया और उन पर अन्याय किया तो ऐसे व्यक्ति ने इन्साफ़ को छोड़ा। और अत्याचार से प्रेम किया और अत्याचारियों का मार्ग अपनाया। निस्सन्देह वे लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के लिए अपने देश, प्रिय मित्र और माल-व-सामान छोड़े और जिन्हें काफ़िरों की ओर से कष्ट दिए गए और जो फ़साद प्रिय लोगों के हाथों के घिरे हुए परन्तु (फिर भी) उन्हें अच्छे और नेक लोगों के समान सब्र किया और वे ख़लीफ़ा बनाए गए तो उन्होंने (फिर भी) घरों को चांदी-सोने से नहीं भरा और न अपने बेटों तथा बेटियों को सोने और चांदी का वारिस बनाया बल्कि जो कुछ प्राप्त हुआ वह बैतुलमाल को दे दिया और उन्होंने सांसारिक लोगों तथा गुमराहों की तरह अपने बेटों को अपना ख़लीफ़ा नहीं बनाया। उन्होंने इस संसार में कंगाली, दरिद्रता की हालत में जीवन व्यतीत किया और वे अमीरों तथा धनाढ्य लोगों की तरह ऐश्वर्य की ओर न झुके। क्या

ينهبون أموال الناس بالتطاولات ويميلون إلى الغصب والنهب والغارات؟ أكان هذا أثر صحبة رسول الله خيرِ الكائنات وقد حمدهم الله وأثنى عليهم رب المخلوقات؟ كلا بل إنه زكّى نفوسهم وطهّر قلوبهم، ونوّر شموسهم، وجعلهم سابقين للطيبين الآتين ولا نجد احتمالا ضعيفا ولا وهما طفيفا يُخبر عن فساد نياتهم، أو يشير إلى أدنى سيئاتهم، فضلا عن جزم النفس على نسبة الظلم إلى ذواتهم، ووالله إنّهم كانوا قومًا مقسطين ولو أنهم أُعطوا واديا من مال من غير حلال فما تَفَلوا عليه وما مالوا كأهل الهوىٰ، ولو كان ذهبا كأمثال الرُبىٰ، أو كمقدار الأرضين ولو

उनके बारे में यह विचार किया जा सकता है कि वे अत्याचार पूर्वक लोगों के माल छीनने वाले थे? और हक़ छीनने, लूट मार करने और क़त्ल व गारत की ओर रूचि रखने वाले थे क्या सरवरे कायनात (ब्रह्माण्ड के सरदार) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र संगत का यह प्रभाव था? हांलाकि समस्त कायनात के प्रतिपालक ख़ुदा ने उन की प्रशंसा और यशोगान किया। वास्तविकता यह है कि (अल्लाह) ने उनके नफ्सों को शुद्ध किया और उनके दिलों को पवित्रता प्रदान की और उन के अस्तित्वों को प्रकाशमान किया और भविष्य में आने वाले पवित्र लोगों का पेशवा बनाया। और हम कोई कमज़ोर संभावना तथा सतही विचार भी नहीं पाते जो उनकी नीयतों की खराबी की सूचना दे या उनकी तुच्छ बुराई की ओर संकेत करता हो, कहां यह कि उन के अस्तित्व की ओर अन्याय सम्बद्ध करने का कोई दृढ़ इरादा करे। ख़ुदा की क़सम वे इन्साफ़ करने वाले लोग थे। यदि उन्हें हराम माल की घाटी भी दी जाती तो वे उस पर थूकते भी नहीं और नहीं लालचियों की तरह, उसकी ओर झुकते चाहे सोना पर्वतों जितना या सात पृथ्वियों जितना होता। यदि उन्हें हलाल माल मिलता तो वे उसे प्रतिष्ठवान (ख़ुदा) के मार्ग में अवश्य ख़र्च करते।

وجدوا حلالا من المال لانفقوه فی سبل ذی الجلال ومهمات الدین فکیف نظن أنهم أغضبوا الزهراء لأشجار، وآذوا فلذة النبی کأشرار، بل للإحرار نیّات، ولهم علی الحق ثبات، وعلیهم من الله صلوات، والله یعلم ضمائر المتقین وإن کان هذا من نوع الإیذاء فما نجا أسد الله الفتی من هذا، بل هو أحد من الشرکاء، فإنه اختطب بنت أبا الجهل وآذی الزهراء فإیاك والاعتداء، وخُذِ الاتقاء ودَعِ الاعتداء ولا تتناولْ فُضالة الذین زاغوا عن المحجّة، وأعرضوا عن الحق بعد رؤیة أنوار الحجّة، وکانوا علی الباطل مصرّین وإنی أدلّك إلی صراط تنجیك من شبهات، فتدبَّرْ ولا ترکَنْ إلی جهلات وأقول لله وأرجو أن تنیب، ولو أسمع من بعضکم

अत: हम यह कैसे सोच सकते हैं कि उन्होंने कुछ वृक्षों के लिए (फ़ातिमा) अज़्ज़ुहरा^रज़ि॰ को नाराज़ कर दिया और जिगर गोश-ए-नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (नबी की पुत्री) को उपद्रवी लोगों के समान कष्ट दिया बल्कि शरीफ लोग नेकनीयत होते और सच पर अटल होते हैं और अल्लाह की ओर से उन पर रहमतें उतरती हैं तथा अल्लाह संयमियों के अन्त:करण को खूब जानता है। और यदि यह कष्ट पहुंचाने का कोई प्रकार है तो फिर इस से जवां मर्द ख़ुदा का शेर (हज़रत अली^रज़ि॰) भी नहीं बचे बल्कि वह भी बराबर के भागीदार ठहरते हैं क्योंकि उन्होंने अबूजहल की बेटी को निकाह का पैग़ाम भेजा और (हज़रत फ़ातिमा) अज़्ज़ुहरा^रज़ि॰ को दुख दिया। इसलिए अन्याय से बचो और तक़्वा धारण करो और सीमा से बाहर जाना छोड़ दो और उन लोगों का बचा हुआ न खाओ जो सीधे मार्ग से हट गए और स्पष्ट तर्कों के देखने के बावजूद उन्होंने सच से मुंह फेर लिया और झूठ पर अड़े रहे। मैं तुम्हें एक ऐसा मार्ग बताता हूं जो तुम्हें सन्देहों से मुक्ति देगा इसलिए सोच-विचार से काम लो और मूर्खों वाली बातों की ओर मत झुको! और मैं अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं चाहे मुझे तुम में

التثريب، ولا يهتدى عبد إلّا إذا أراد الله هداه، ولا يرتوى أحدٌ إلا من سُقياه إنه يرى قلبى وقلوبكم، وينظر قدمى وأسلوبكم، ويعلم ما فى صدور العالمين

فاعلم أيها العزيز أن حزبًا من علماء الشيعة ربما يقولون إن خلافة الإصحاب الثلاثة ما ثبت من الكتاب والسُنّة، وأما خلافة سيدنا المرتضٰى وأسد الله الاتقى فثبت من وجوه شتى وبرهان أجلى، فلزم من ذلك أن يكون الخلفاء الثلاثة غاصبين ظالمين آلتين، فإن خلافتهم ما ثبتت من خاتم النبيين وخير المرسلين

أما الجواب فلا يخفى على المتدبرين الفارهين

से कुछ से भर्त्सना सुननी पड़े और मैं आशा रखता हूं कि तुम (सच की ओर) झुकोगे। कोई बन्दा हिदायत नहीं पा सकता जब तक कि अल्लाह तआला उसे हिदायत देने का इरादा न कर ले और उसी के पिलाने से ही बन्दा तृप्त होता है वह मेरे दिल को और तुम्हारे दिल को भी देख रहा है और उसकी दृष्टि मेरे आगे कदम बढ़ाने और तुम्हारे ढंग पर है और वह समस्त लोकों के सीनों की बातों को जानता है।

हे प्रिय! जान लो कि शिया उलेमा में से कुछ लोग प्राय: यह कहते हैं कि अस्हाब-ए-सलास: (हज़रत अबू बक्र रज़ि॰, हज़रत उमर रज़ि॰, और हज़रत उस्मान रज़ि॰) की ख़िलाफ़त किताब और सुन्नत से सिद्ध नहीं है। रही सब से बढ़ कर मुत्तक़ी (संयमी) ख़ुदा के शेर, हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ि॰ की ख़िलाफ़त तो वे कई दृष्टिकोणों तथा स्पष्ट तर्कों से सिद्ध है। इसलिए इस से यह अनिवार्य ठहरा कि तीनों ख़लीफ़े अन्याय करने वाले तथा अधिकार का हनन करने वाले थे। इसी आधार पर उन की ख़िलाफ़त ख़ातमुन्नीबय्यीन और ख़ैरुलमुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध नहीं होती।

उत्तर- सोच-विचार करने वाले बुज़ुर्ग और अल्लाह के संयम संबधी

وعباد الله المتقين، أن ادعاء ثبوت خلافة سيدنا المرتضى صلفٌ بحتٌ ما لحقه من الصدق سنا وزورةُ طيف، وليس معه شهادة من كتاب ربنا الأعلىٰ، وليس فی أيدی الشيعة شمّةٌ علی ثبوت هذا الدعوی، فلا شك أن خلافته عاری الجلدة من حلل الثبوت، وبادی الجردة كالسبروت، ولو كان علیٌّ بحرَ الأنوار ومستغنيا عن النعوت فلا تُجادل من غير حق، ولا تستثفر بفويطتك فی الرياغة، ولا تُرِنا تُرّهات البلاغة، ولا تقفُ طرق المتعسفين وإنی والله لطالما فكرت فی القرآن وأمعنتُ فی آيات الفرقان، وتلقيتُ أمر الخلافة بوسائل التحقيق، وأعددت له الأهَبَ كلها للتدقيق، وصرفتُ ملامح عينی إلی كل الأنحاء، ورميتُ مرامی لحظی

आचरण करने वाले बन्दों पर यह बात गुप्त नहीं कि सय्यिदिना (हज़रत अली^{रज़ि०}) मुर्तज़ा^{रज़ि०} की ख़िलाफ़त के सबूत का यह दावा करना केवल डींग मारना है जिसमें सच्चाई का कोई प्रकाश नहीं। और ऐसा अनुमान से दूर विचार है जिसके समर्थन में हमारे बुज़ुर्ग और सर्वश्रेष्ठ प्रतिपालक की किताब से कोई गवाही सिद्ध मौजूद नहीं कि उन (अली^{रज़ि०}) की ख़िलाफ़त सबूत के लिबास से ख़ाली मात्र और एक ऐसे मुहताज फक़ीर के समान है जिसका नंग ज़ाहिर और बाहर हो। चाहे हज़रत अली^{रज़ि०} प्रकाशों के सागर हों और प्रशंसा एवं ख़ूबी के वर्णन से निःस्पृह हों इसलिए व्यर्थ बहस न करो और अपनी लंगोटी कसकर अखाड़े में मत उतरो और हमारे सामने अपनी झूठी सुबोधता की अभिव्यक्ति मत करो तथा अत्याचारियों के मार्गों को न अपनाओ अल्लाह की क़सम मैंने बार-बार क़ुर्आन में विचार किया तथा फ़ुर्क़ान (हमीद) की आयतों को गहरी नज़र से देखा और ख़िलाफ़त के मामले से संबंधित जांच-पड़ताल के समस्त माध्यम अपनाए और इस बारे में जांच-पड़ताल तथा बारीकियों को देखने के लिए हर प्रकार की तैयारी की और हर ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई तथा अपनी जांच-पड़ताल संबंधी

إلى جميع الإرجاء، فما وجدتُ سيفًا قاطعًا فى هذا المصافّ كآية الاستخلاف، واستبنتُ أنها من أعظم الآيات، والدلائل الناطقة للإثبات، والنصوص الصريحة من رب الكائنات، لكل من يريد أن يحكم بالحق كالقضاة، وأتيقن أنه من طاب خِيمُه، وأُشرِبَ ماء الإمعان أديمُه، يقبلها شاكرا، ويحمد الله ذاكرا، على ما هداه وأخرجه من الضالّين

وإن آيات الفرقان يقينية وأحكامها قطعية، وأما الإخبار والآثار فظنية وأحكامها شكية، ولو كانت مروية من الثقات ونحارير الرواة ولا تنظروا إلى نضرة حليتها وخضرة دوحتها، فإن أكثرها ساقطة فى الظلمات، وليست بمعصومة من مس أيدى ذوى الظلامات، وقد عسر اشتيارها

दृष्टि के तीर हर ओर चलाए परन्तु मैंने इस मैदान में ख़िलाफ़त की आयत से बढ़कर कोई धारदार तलवार नहीं पाई और मुझ पर यह वास्तविकता खुली कि यह आयत ख़िलाफ़त के सबूत में महानतम आयत और बोलने वाला तर्क है। और हर उस व्यक्ति के लिए जो न्यायधीशों के समान सच और सच्चाई से फैसला करना चाहे, यह आयत कृपालु कायनात के प्रतिपालक की ओर से स्पष्ट आदेशों में से है और मुझे विश्वास है कि हर वह व्यक्ति जो नेक स्वभाव है तथा सोच-विचार करना उस की घुट्टी और स्वभाव में शामिल है वह उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करेगा और इस बात को याद रखते हुए अल्लाह की प्रशंसा करेगा कि उसने उसे सही मार्ग दिखाया और उसे गुमराहों से निकाला।

फ़ुर्क़ान (हमीद) की आयतें निश्चित और उसके आदेश अटल हैं यद्यपि ख़बरें और आसार काल्पनिक हैं और उनके आदेश सन्देह पर आधारित हैं चाहे वे कितने ही विश्वसनीय लोगो और फन के माहिर रावियों से रिवायत किए गए हों। इसलिए तुम उन के प्रत्यक्ष रूप की सुन्दरता और सौन्दर्य तथा उनके वृक्ष की हरियाली को मत देखो, क्योंकि उन में से अधिकतर अंधकारों में पड़ी हुई हैं और अंधकार में रहने

مــن مشــار النحــل، وإنمــا أُخــذت مــن النهــل هــذا حــال أكثــر الاحاديــث كمــا لا يخفــى عــلى الطيّــب والخبيــث، فبــأى حديــث بعــد كتــاب الله تؤمنــون؟ وإذا حصحــص الحــق فأيــن تذهبــون؟ ومــاذا بعــد الحق إلا الضــلال، فاتقــوا الضــلال يــا معشــر المســلمين وقــد قلــتُ مــن قبــلإن الآثــار مــا كفلــت التــزام اليقينيــات، بــل هــى ذخــيرة الظنيــات والشــكيات، والوهميــات والموضوعــات، فمــن تــرك القــرآن واتــكأ عليهــا فيســقط فى هُــوة المهلــكات ويلحــق بالهالكــين إنمــا الاحاديــث كشــيخ بــالى الريــاش بــادى الارتعــاش، ولا يقــوم إلا بهــراوة الفرقــان وعصــا القــرآن، فكيــف يُــرجى منهــا اكتنــاز الحقائــق وخــزنُ نشــبِ

वालों की काट-छांट से सुरक्षित नहीं। उनकी वास्तविकता ज्ञात करना शहद के छत्ते में से शहद निकालने से भी अधिक कठिन है और ये सरसरी तौर पर ले ली गई हैं। अधिकांश हदीसों का यही हाल है जैसा कि प्रत्येक अच्छे और बुरे व्यक्ति पर छुपा हुआ नहीं। फिर ख़ुदा की किताब के बाद तुम किस बात पर ईमान लाओगे। जब सच प्रकट हो गया तो फिर कहां जा रहे हो। सच के बिना तो गुमराही ही गुमराही है। इसलिए हे मुसलमानों के गिरोह! गुमराही से बचो। मैं पहले कह चुका हूं कि समस्त रिवायतें निश्चित बातों की अनिवार्य तौर पर गारंटी नहीं बल्कि वे तो काल्पनिक, सन्देहात्मक, अनुमानित, और कृत्रिम बातों का संग्रह और भण्डार हैं। अत: जिसने क़ुर्आन को छोड़ा और उन (रिवायतों) पर भरोसा किया तो वह तबाहियों के गड्ढे में गिरेगा और तबाह होने वालों में शामिल हो जाएगा। हदीसों का हाल उस बूढ़े व्यक्ति जैसा है जिसका बहुमूल्य लिबास गला-सड़ा हो चुका हो और (उसके) शरीर पर कंपन का रोग हो और वह फ़ुर्क़ान (क़ुर्आन) की लाठी और क़ुर्आन के डण्डे के बिना खड़ा न हो सकता हो। तो इस श्रेष्ठ इमाम क़ुर्आन के बिना उन हदीसों से वास्तविक बातों के एकत्र करने और बारीकियों के ख़ज़ानें संकलित करने की आशा कैसे की जा सकती है। यही

الدقائق من دون هذا الإمام الفائق؟ فهذا هو الذی یؤوی الغریب و یُطهّر المعیب، و یفتتح النطق بالدلائل الصحیحة والنصوص الصریحة، و کله یقین و فیه للقلوب تسکین و هو أقوی تقریرًا و قولا، و أوسع حفاوة و طولا، ومَن ترکه ومال إلی غیره کالعاشق، فتجاوز الدّین والدّیانة ومرق مروق السهم الراشق، و من غادر القرآن و أسقطه من العین، وتبع روایات لا دلیل علی تنزّهها من المَین، فقد ضل ضلالا مبینا، و سیصطلی لظی حسرتین، و یریه الله أنه کان علی خطأ مبین فالحاصل أن الأمن فی اتباع القرآن، والتباب کل التباب فی ترك الفرقان ولا مصیبة کمصیبة الإعراض عن کتاب الله عند ذوی العینَین، فاذکروا عظمة هذا الرزء و إن جلّ لدیکم

वह (क़ुर्आन) है जो ग़रीब रिवायतों को शरण देता है और दोष की ओर संबंध रखने वाली हदीसों को पवित्र करता तथा सही तर्कों और स्पष्ट आदेशों से उनके कलाम को स्पष्ट करता है तथा क़ुर्आन तो सर्वथा यकीन है इसमें दिलों के लिए सन्तोष है, और वह शब्दों एवं वर्णन में अत्यन्त शक्तिशाली तथा व्याख्या एवं विस्तार में विशालतम है। जिसने उसे छोड़ा और कमज़ोर प्रेमी की तरह किसी और की ओर झुक गया तो वह धर्म और ईमानदारी की सीमाओं का अतिक्रमण कर गया और तीव्र गति से निकलने वाले तीर की तरह (कमान) से निकल गया और जिसने क़ुर्आन को छोड़ा और उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा और ऐसी रिवायतों का अनुकरण किया जिन के झूठ से पवित्र होने का कोई तर्क न था तो वह खुली-खुली गुमराही में पड़ गया और वह अवश्य दो हसरतों के शोलों में जलेगा तथा ख़ुदा उसे दिखाएगा कि वह स्पष्ट ग़लती पर था। अत: सारांश यह कि सर्वांगपूर्ण अमन और शान्ति क़ुर्आन के अनुकरण करने में और पूर्णतम तबाही फ़ुर्क़ान (हमीद अर्थात् क़ुर्आन) के छोड़ने में है। और विवेकवान लोगों के नज़दीक अल्लाह की किताब से विमुख होने के संकट जैसा कोई अन्य

رزئُ الحسَين، و كونوا طلاب الحق يا معشر الغافلين

والآن نذكر الآيات الكريمة والحجج العظيمة على خلافة الصدّيق لنريك ثبوته على وجه التحقيق، فإن طريق الارتياب قطعة من العذاب، ومن تبع الشبهات فأوقع نفسه فى المهلكات، وأما قطع الخصومات فلا يكون إلا باليقينيات، فاسمع منى ولا تبعد عنى، وأدعو الله أن يجعلك من المتبصرين

قال الله عزّ وجلّ فى كتابه المبين

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا

संकट नहीं। इसलिए इस संकट की भयंकरता को याद रखो यद्यपि (इमाम) हुसैन[रज़ि०] का संकट तुम्हारे नज़दीक बड़ा है। हे लापरवाह लोगों के गिरोह! सच के अभिलाषी बन जाओ।

अब हम सिद्दीक़ (अक़बर[रज़ि०]) की ख़िलाफ़त पर पवित्र आयतें और शक्तिशाली तर्कों का वर्णन करते हैं ताकि हम जांच-पड़ताल करने की दृष्टि से तुम्हें इसका सबूत प्रस्तुत करें। क्योंकि सन्देह का मार्ग अज़ाब का एक टुकड़ा है। जो व्यक्ति सन्देहों के पीछे चलता है वह स्वयं को तबाही में डालता है और झगड़े तो केवल असंदिग्ध बातों से ही चुकाए जाते हैं इसलिए मेरी सुनो और मुझ से दूर न रहो और मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह तुम्हें विवेकशील बनाए।

महा प्रतापी अल्लाह ने अपनी किताब-ए-मुबीन (पवित्र क़ुर्आन) में फ़रमाया है-

अनुवाद :- तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कार्य किए उनसे अल्लाह ने अटल वादा किया है कि उन्हें अवश्य पृथ्वी में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उसने उन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उन के धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया अवश्य शान तथा वैभव प्रदान करेगा और

وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

هذا ما بشّر ربّنا للمؤمنين، وأخبر عن علامات المستخلفين، فمن أتى الله للاستماحة، وما سلك مسلك الوقاحة، وما شد جبائر التلبيس على ساعد الصراحة، فلا بد له من أن يقبل هذا الدليل، ويترك المعاذير والاقاويل، ويأخذ طرق الصالحين

وأما تفصيله ليبدو عليك دليله فاعلموا يا أولى الالباب والفضل اللباب، أن الله قد وعد فى هذه الآيات

उनकी भय की हालत के बाद अवश्य उन्हें अमन की हालत में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी को भागीदार नहीं बनाएंगे और जो इसके बाद भी नाशुक्री करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाए। हरगिज़ न सोच कि वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया वे (मोमिनों को) पृथ्वी में विवश करते फिरेंगे, जबकि उनका ठिकाना आग है और बहुत ही बुरा ठिकाना है। (अन्नूर 56 से 58)

मोमिनों के लिए हमारे रब्ब ने ये ख़ुशख़बरियां दी हैं और ख़लीफ़ों के लक्षण बताए हैं। फिर जो व्यक्ति ख़ुदा के सामने क्षमा का याचक हो कर आता है और निर्लज्जता के मार्ग का अनुसरण नहीं करता तथा स्पष्ट बातों की कलाई पर सच छुपाने की पट्टियां नहीं बांधता तो ऐसे व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह इस तर्क को स्वीकार करे और अनुचित बहाने तथा व्यर्थ बातें छोड़ दे और नेक लोगों के मार्गों को अपनाए।

जहां तक तुम पर इस तर्क की स्पष्टता के लिए विवरण का संबंध है तो हे बुद्धि और श्रेष्ठता रखने वालो! जान लो कि अल्लाह ने समस्त मुसलमान

للمسلمين والمسلمات أنه سيستخلفنّ بعض المؤمنين منهم فضلًا ورحمًا، ويبدّلنّهم من بعد خوفهم أمنًا، فهذا أمر لا نجد مصداقه على وجه أتمَّ وأكملَ إلا خلافة الصدّيق، فإن وقت خلافته كان وقت الخوف والمصائب كما لا يخفى علىٰ أهل التحقيق فإن رسول الله صلى الله عليه وسلم لما تُوفّي نزلت المصائب على الإسلام والمسلمين، وارتد كثير من المنافقين، وتطاولت ألسنة المرتدين، وادعى النبوة نفرٌ من المفترين، واجتمع عليهم كثير من أهل البادية، حتى لحق بمسيلمة قريبٌ من مائة ألف من الجهَلة الفجَرة، وهاجت الفتن وكثرت المحن، وأحاطت البلايا قريبا وبعيدا، وزُلزل المؤمنون زلزالا شديدا هنالك ابتُلِيت كل نفس من الناس، وظهرت حالات مُخوفة مدهشة الحواسّ، وكان المؤمنون

पुरुषों तथा स्त्रियों से इन आयतों में यह वादा किया है कि वह उनमें से अपने फ़ज़्ल और रहम (कृपा और दया) से कुछ मोमिनों को अवश्य ख़लीफ़ा बनाएगा तथा उन के भय को अवश्य अमन की हालत में बदल देगा। इस बात का सर्वांगपूर्ण तौर पर चरितार्थ (मिस्दाक़) हम हज़रत सिद्दीक़ (अकबर रज़ि॰) की ख़िलाफ़त को ही पाते हैं। क्योंकि जैसा अन्वेषण कर्ताओं से यह बात छुपी हुई नहीं कि आप की ख़िलाफ़त का समय भय और कष्टों का समय था। अत: जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वर्गवास हुआ तो इस्लाम और मुसलमानों पर संकट टूट पड़े। बहुत से मुनाफ़िक़ मुर्तद हो गए और मुर्तदों की ज़बानें लम्बी हो गईं और झूठ गढ़ने वालों के एक समूह ने नुबुव्वत का दावा कर दिया और अधिकतर ख़ानाबदोश उनके चारों ओर एकत्र हो गए, यहां तक कि मुसैलिमा कज़्ज़ाब के साथ एक लाख के लगभग मूर्ख और दुष्चरित्र लोग मिल गए और फ़ित्ने भड़क उठे तथा संकट बढ़ गए और आफ़तों (विपदाओं) ने दूर और निकट को घेर लिया और मोमिनों पर एक भयंकर भूकम्प छा गया। उस समय समस्त लोग आज़माए गए और भयावह तथा होश उड़ाने वाली

مضطرین کأن جَمْرًا أُضرمت فی قلوبهم أو ذُبحوا بالسکّین وکانوا یبکون تارۃ من فراق خیر البریۃ، وأخری من فتن ظہرت کالنیران المحرقۃ، ولم یکن أثرًا من أمن، وغلبت المفتتنون کخضراءِ دِمَنٍ، فزاد المؤمنون خوفًا وفزعًا، وملئت القلوب دہشا وجزعا ففی ذلک الاوان جُعِل أبو بکر رضی اللّٰہ عنہ حاکم الزمان وخلیفۃ خاتم النبیین فغلب علیہ ہمٌّ وغمٌّ من أطوار رآہا، ومن آثار شاہدہا فی المنافقین والکافرین والمرتدین، وکان یبکی کمرابیع الربیع، وتجری عبراتہ کالینابیع، ویسأل اللّٰہ خیر الإسلام والمسلمین

وعن عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا قالت لما جُعل أبی خلیفۃ

परिस्थितियां प्रकट हो गईं और मोमिन ऐसे विवश थे कि जैसे उनके दिलों में आग के अंगारे दहकाए गए हों या वे छुरी से ज़िब्ह कर दिए गए हों। कभी तो वे ख़ैरुलबरीय: (मख़लूक़ में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वियोग (जुदाई) और कभी उन फ़ित्नों के कारण जो जलाकर भस्म कर देने वाली आग के रूप में प्रकट हुए थे रोते। अमन का किंचिनमात्र तक न था। फ़ित्न: फैलाने वाले गन्दगी के ढेर पर उगी हुई हरियाली की तरह छा गए थे। मोमिनों का भय और उनकी घबराहट बहुत बढ़ गई थी और दिल भय और बेचैनी से भर गए थे। ऐसे (संवेदनशील) समय में (हज़रत) अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु समय के शासक और (हज़रत) ख़ातमुन्नबिय्यीन के ख़लीफ़ा बनाए गए। मुनाफ़िकों, काफ़िरों और मुर्तदों के जिन रवैयों और चाल चलन को आपने देखा उन से आप रंज-व-ग़म में डूब गए और आप इस प्रकार रोते जैसे सावन की झड़ी लगी हो और आप के आंसू बहते हुए झरने की तरह बहने लगे और आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) (अपने) अल्लाह से इस्लाम तथा मुसलमानों की भलाई की दुआ मांगते।

(हज़रत) आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से रिवायत है। आप फ़रमाती हैं

وفوّض الله إليه الإمارة، فرأى بمجرد الاستخلاف تموُّجَ الفتن من كل الأطراف، ومَوْرَ المتنبئين الكاذبين، وبغاوة المرتدين المنافقين فصُبّت عليه مصائب لو صُبّت على الجبال لانهدت وسقطت وانكسرت فی الحال، ولكنه أُعطى صبرا كالمرسلين، حتى جاء نصر الله وقُتل المتنبئون وأُهلك المرتدون، وأُزيل الفتن ودفُع المحن، وقُضى الامر واستقام أمر الخلافة، ونجّى الله المؤمنين من الآفة، وبدّل من بعد خوفهم أمنا، ومكّن لهم دينهم وأقام على الحق زمنا وسود وجوه المفسدين، وأنجز وعده ونصر عبده الصدّيق، وأباد الطواغيت والغرانيق، وألقى الرعب فی قلوب الكفار، فانهزموا ورجعوا وتابوا

कि जब मेरे पिता ख़लीफ़ा बनाए गए और अल्लाह ने उन्हें अमारत के पद पर आसीन किया तो ख़िलाफ़त के प्रारंभ में ही आप ने हर ओर से उपद्रवों को लहरें मारता हुआ तथा नुबुव्वत के झूठे दावेदारों की दौड़-धूप और मुनाफ़िक मुर्तदों की बग़ावत (विद्रोह) को देखा और आप पर इतने कष्ट टूटे कि यदि वे पर्वतों पर टूटते तो वे पृथ्वी में अन्दर घुस जाते तथा गिरकर तुरन्त चूर-चूर हो जाते परन्तु आप को रसूलों जैसा सब्र प्रदान किया गया, यहां तक कि अल्लाह की सहायता आ पहुंची और झूठे नबी क़त्ल और मुर्तद मार दिए गए। फ़ित्ने दूर कर दिए गए और कष्ट छट गए तथा मामले का फैसला हो गया और ख़िलाफ़त का मामला सुदृढ़ हुआ तथा अल्लाह ने मोमिनों को संकट से बचा लिया और उनकी भय की स्थिति को अमन में बदल दिया और उनके लिए उनके धर्म को वैभव (शानो शौकत) प्रदान किया और एक संसार को सच पर स्थापित कर दिया और उपद्रवियों के चेहरे काले कर दिए और अपना वादा पूरा किया तथा अपने बन्दे (हज़रत अबूबक्र) सिद्दीक़[रज़ि०] की सहायता की और उद्दण्ड सरदारों तथा बुतों को नष्ट और बरबाद कर दिया तथा काफ़िरों के दिलों में ऐसा रोब डाल दिया कि वे पराजित हो गए और (अन्ततः) उन्होंने रुजू करके (लौटकर)

و كان هذا وعد من الله القهار، وهو أصدق الصادقين فانظر كيف تم وعد الخلافة مع جميع لوازمه وإماراته في الصدّيق، وادعُ الله أن يشرح صدرك لهذا التحقيق، وتدبَّرْ كيف كانت حالة المسلمين في وقت استخلافه وقد كان الإسلام من المصائب كالحريق، ثم ردّ الله الكرّة على الإسلام وأخرجه من البِير العميق، وقُتِل المتنبئون بأشدّ الآلام، وأُهلكَ المرتدون كالانعام، وآمن الله المؤمنين من خوفٍ كانوا فيه كالميتين و كان المؤمنون يستبشرون بعد رفع هذا العذاب، ويهنّئون الصدّيق ويتلقونه بالترحاب، ويحمدونه ويدعون له من حضرة ربّ الارباب، وبادروا إلى تعظيمه وآداب تكريمه،

तौबा की और यही ख़ुदा का वादा था वह सब सच्चों से बढ़कर सच्चा है। अत: विचार कर कि किस प्रकार खिलाफ़त का वादा अपनी पूर्णा अनिवार्यताओं तथा लक्षणों के साथ (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीक़[रज़ि॰] के अस्तित्व में पूरा हुआ। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह इस जांच-पड़ताल के लिए तुम्हारा सीना खोल दे। विचार करो कि आप के ख़लीफ़ा होने के समय मुसलमानों की क्या हालत थी। इस्लाम संकटों के कारण आग से जले हुए व्यक्ति के समान (संवेदनशील हालत में) था। फिर अल्लाह ने इस्लाम को उसकी शक्ति लौटा दी और उसे गहरे कुएं से निकाला तथा नुबुव्वत के झूठे दावेदार कष्टदायक अज़ाब से मारे गए और मुर्तद चौपायों की तरह मार दिए गए तथा अल्लाह ने मोमिनों को उस भय से जिसमें वे मुर्दों के समान थे अमन प्रदान किया। इस कष्ट के दूर होने के बाद मोमिन प्रसन्न होते थे और (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीक[रज़ि॰] को मुबारकबाद देते और मर्हब: (बहुत खूब) कहते हुए उन से मिलते थे। आप की प्रशंसा करते और समस्त स्वामियों के स्वामी (ख़ुदा) के दरबार से आप के लिए दुआएं करते थे। आपके मान-सम्मान के शिष्टाचारों का पालन करने के लिए लपकते थे और उन्होंने आप के प्रेम को अपने दिल की गहराई में दाखिल कर लिया और वे

وأدخلوا حبَّه فی تامورهم، واقتدوا به فی جمیع أمورهم، وکانوا له شاکرین وصقلوا خواطرهم، وسقوا نواضرهم، وزادوا حبًّا، وودّوا وطاوعوه جهدًا وجِدًّا، وکانوا یحسبونه مبارکًا ومؤیّدا کالنّبیین وکان هذا کُلّهٗ من صدق الصدّیق والیقین العمیق ووالله إنه کان آدم الثانی للإسلام، والمظهر الاول لانوار خیر الانام، وما کان نبیا ولکن کانت فیه قُوی المرسلین؛ فبصدقه عادت حدیقة الإسلام إلی زخرفه التام، وأخذ زینتَه وقُرّتَه بعد صدمات السهام، وتنوعت أزاهیره وطُهّرت أغصانه من القَتام، وکان قبل ذلك کمیتٍ نُدِبَ، وشرید جُدِبَ، وجریح نُوِّبَ وذبیح جُوِّبَ، وألیمِ أنواعِ تعبٍ،

अपने समस्त मामलों में आप का अनुकरण करते थे और वे आपके आभारी थे। उन्होंने अपने दिलों को रोशन और चेहरों को हरा-भरा किया तथा वे प्रेम और मुहब्बत में बढ़ गए और पूर्ण प्रयास एवं परिश्रम से आप का आज्ञापालन किया। वे आप को एक मुबारक अस्तित्व और नबियों को समान समर्थन प्राप्त समझते थे। और यह सब कुछ (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीक[रज़ि॰] की सच्चाई और गहरे विश्वास के कारण से था। ख़ुदा की क़सम आप इस्लाम के लिए द्वितीय आदम और सृष्टि में सर्वोत्तम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रकाशों के प्रथम द्योतक (मज़्हर) थे। आप नबी तो न थे किन्तु आप में रसूलों की शक्तियां मौजूद थी। आप[रज़ि॰] की इस सच्चाई के कारण से ही इस्लाम का चमन अपनी पूरी सुन्दरताओं की ओर लौट आया और तीरों के आघात के पश्चात् शोभायमान और हरा भरा हो गया और उसके नाना प्रकार के मनोरम फूल खिले और उसकी शाखाएं धूल एवं मिट्टी से साफ़ हो गईं जबकि इस से पहले उसकी हालत ऐसे मुर्दे के समान हो गई थी जिस पर रोया जा चुका हो और (उसकी हालत) सूखा ग्रस्त (दुर्भिक्ष ग्रस्त) जैसी और कष्ट के शिकार की भांति और ज़िब्ह किए गए ऐसे जानवर के समान जिस के मांस को टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो, हो गई थी।

وحريقِ هاجرةٍ ذاتِ لهبٍ، ثم نجّاه الله من جميع تلك البليّات، واستخلصه من سائر الآفات، وأيّده بعجائب التأييدات حتى أَمَّ الملوكَ ومَلِكَ الرقاب، بعدما تكسَّرَ وافترش التراب، فزُمّتْ ألسنة المنافقين وتهلّلَ وجه المؤمنين وكل نفس حمدت ربه وشكرت الصدّيق، وجاءته مطاوعًا إلّا الزنديق، والذى كان من الفاسقين وكان كل ذلك أجرَ عبدٍ تخيَّرَه الله وصافاه ورضى عنه وعافاه، والله لا يضيع أجر المحسنين

فالحاصل أن هذه الآيات كلّها مُخبرة عن خلافة الصدّيق، وليس لها محملٌ آخر فانظر على وجه التحقيق، واخش الله ولا تكن من المتعصبين ثم انظر أن هذه الآيات

और (उसकी हालत) भिन्न-भिन्न प्रकार की दौड़-धूपों के मारे हुए और तीव्र गर्मी वाली दोपहर के जलाए हुए की भांति थी। फिर अल्लाह ने उसे उन समस्त कष्टों से मुक्ति प्रदान की और उन समस्त आपदाओं से उसे छुटकारा दिलाया और अदभुत से अदभुत समर्थनों द्वारा उसकी सहायता की यहां तक कि इस्लाम अपनी हताशा और धूल में लथड़े होने के बाद बादशाहों का इमाम और गर्दनों (जनसामान्य) का मालिक बन गया। तो मुनाफ़िकों की ज़ुबानें गूंगी हो गईं और मोमिनों के चेहरे चमक उठे। हर व्यक्ति ने अपने रब्ब की प्रशंसा और सिद्दीक़ (अकबर रज़ि०) का धन्यवाद अदा किया। नास्तिक तथा जो पापी थे उनके अतिरिक्त हर व्यक्ति आप के पास आज्ञाकारी होकर आ गया। और यह सब उस बन्दे का प्रतिफल था जिसे अल्लाह ने चुना। उसे अपना प्रेमी बनाया और उस से प्रसन्न हुआ। उसे कुशलता प्रदान की और अल्लाह उपकार करने वालों के प्रतिफ़ल को नष्ट नहीं करता।

अत: सारांश यह कि ये सब आयतें सिद्दीक़ (अकबर रज़ि०) की ख़िलाफ़त की ख़बर देती हैं और उन्हें किसी अन्य पर चरितार्थ नहीं किया जा सकता। इसलिए अन्वेषण की दृष्टि से विचार कर और अल्लाह से डर तथा पक्षपात करने वालों

كانت من الانباء المستقبلة لتزيد إيمان المؤمنين عند ظهورها، وليعرفوا مواعيد حضرة العزة، فإن الله أخبر فيها عن زمان حلول الفتن ونزول المصائب على الإسلام بعد وفاة خير الانام، ووعد أنه سيستخلف فى ذلك الزمن بعضا من المؤمنين ويؤمنهم من بعد خوفهم، ويمكّن دينه المتزلزل ويهلك المفسدين ولا شك أن مصداق هذا النبأ ليس إلا أبو بكر وزمانه، فلا تنكر وقد حصحص بُرهانه إنه وجد الإسلام كجدار يريد أن ينقضّ من شر أشرار، فجعله الله بيده كحصن مشيد له جدران من حديد، وفيه فوج مطيعون كعبيد فانظر هل تجد من ريب فى هذا، أو يسوغ عندك إتيان نظيره من زُمر آخرين؟

में से न बन। फ़िर यह भी तो देखो कि ये आयतें भविष्य की भविषयवाणियां थीं ताकि उन के प्रकटन के समय मोमिनों के ईमान में वृद्धि हो और वह ख़ुदा तआला के वादों को पहचान लें निस्सन्देह अल्लाह ने इन (आयतों) में सृष्टि में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निधन के पश्चात् इस्लाम पर उपद्रवों के आने तथा संकटों के उतरने के समय को सूचना दी थी और यह वादा किया था कि वह ऐसे समय एन मोमिनों में से किसी को ख़लीफ़ा बनाएगा और उन के भय के बाद उन्हें अमन प्रदान करेगा और अपने डगमगाते धर्म को दृढ़ता प्रदान करेगा और फ़साद फ़ैलाने वालों को मार देगा। निस्सन्देह इस भविष्यवाणी का पूर्ण चरितार्थ हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] और आप के युग के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। जब इस बात का तर्क स्पष्ट हो गया है तो फिर इन्कार न कर। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि॰] ने इस्लाम को एक ऐसी दीवार की तरह पाया जो बुरे लोगों की बुराई के कारण गिरना ही चाहती थी। तब अल्लाह ने आप के हाथों से उसे एक ऐसे सुदृढ़ क़िले की तरह बना दिया जिसकी दीवारें लोहे की हों और जिसमें दासों की तरह आज्ञाकारी सेना हो। अत: विचार कर। क्या तू इसमें कोई सन्देह पाता है? या फिर इस का

وإنی أعلم أن بعض الشیعة یخاصم أهل السُنّة فی هذا المقام، وقد تمادت أیام الخصام، وربما انتهی الامر من مخاصمة إلی ملاکمة ومقاتلة، وأفضتْ إلی محاکمة ومرافعة وأتعجب علی الشیعة وسوء فهمهم، وأتأوّه لإفراطِ وهمهم، قد تجلّت لهم الآیات وظهرت القطعیات، فیفرّون ممتعضین ولا یتفکرون کالمنصفین فها أنا أدعوهم إلی أمرٍ یفتح عینهم، وسواء بیننا وبینهم، أن نحاضر فی مضمار، ونتضرع فی حضرة رب قهار، ونجعل لعنة اللّٰه علی الکاذبین

فإن لم یظهر أثر دعائی إلی سَنة، فأقبل لنفسی کل عقوبة، وأُقرّ بأنهم کانوا من الصادقین، ومع ذلك أعطی لهم خمسة آلاف من الدراهم المروجة، وإن لم أُعطِ فلعنة اللّٰه علیّ

उदाहरण तू दूसरे गिरोंहों में से प्रस्तुत कर सकता है?

मैं जानता हूं कि कुछ शिया इस अवसर पर अहले सुन्नत से झगड़ते हैं और यह झगड़ा एक लम्बी अवधि पर फैला हुआ है और कभी यह मामला बहस-मुबाहसे से बढ़कर हाथा-पाई और क़त्ल एवं लूटमार तक जा पहुंचता है। मुझे शिया (लोगों) और उनकी ग़लत सोच पर आश्चर्य होता है और उनके भ्रम की अधिकता पर मैं आहें भरता हूं कि उनके लिए बहुत से निशान प्रकट हुए और ठोस तर्क प्रकट हुए। इसके बावजूद वे नाराज़ हो कर भाग जाते हैं और इन्साफ़ से काम लेने वालों की तरह सोच-विचार नहीं करते। लीजिए अब मैं उन्हें एक ऐसी बात की ओर बुलाता हूं जो उनकी आखें खोल देगी और जो हमारे और उनके बीच समान है। यह कि हम दोनों पक्ष एक मैदान में उपस्थित हों और महाप्रकोपी रब्ब के सामने रोएं और विलाप करें और झूठों पर अल्लाह की लानत डालें।

यदि फिर भी एक वर्ष तक मेरी दुआ का असर प्रकट न हो तो मैं अपने लिए हर दण्ड स्वीकार कर लूंगा और इक़रार कर लूंगा कि वे सच्चे थे। इसके अतिरिक्त मैं उन्हें पांच हज़ार रुपए सिक्का राइजुलवक्त (समय की प्रचलित

إلى يوم الآخرة وإن شاءوا فأجمع لهم تلك الدراهم فى مخزن دولة البريطانة، أو عند أحد من الاعزّة بيد أنى لا أُخاطب كلّ أحد من العامّة، إلا الذى ينسج رسالة على منوال هذه الرسالة وما اخترتُ هذا المنهج إلّا لاعلم أن المباهل المناضل من أهل الفضيلة والفطنة، لا من الجهَلة الغُمر الذين ليس لهم حظ وافر من العربية، فإن الذى حل محلّ الانعام لا يستحق أن يؤثَر للإنعام، والذى هو كالجِمال، لا يليق أن يجلس فى مجالس الحسن والجَمال، ومن تعرض للمنافثة لا بد له من المشابهة فمن لم يكن مثلى أنبلَ الكُتّاب فليس هو عندى لائقا للخطاب ثم لما بلغتُ قُنّةَ هذا المقام المنيع، فضلا

मुद्रा) भी दूंगा और यदि यह राशि न दूं तो क़यामत के दिन तक मुझ पर अल्लाह की लानत हो, और यदि वे चाहें तो मैं यह रक़म बर्तानिया सरकार के ख़ज़ाने में या प्रतिष्ठत लोगों में से किसी के पास जमा करा दूंगा। यद्यपि मेरे सम्बोधित जनसामान्य नहीं हैं। केवल वह व्यक्ति है जो मेरी इस पुस्तक की पद्धति पर पुस्तक लिखी और मैंने यह तरीका केवल इसलिए अपनाया है ताकि मुझे यह मालूम हो सके कि प्रतिद्वन्द्वी मुबाहला करने वाला व्यक्ति (वास्तव में) श्रेष्ठ और बुद्धिमान लोगों में से है। ऐसे अनपढ़ों और मूर्खों में से नहीं जिन्हें अरबी भाषा से बहुत अधिक भाग नहीं मिला। क्योंकि वह व्यक्ति जो जानवरों के स्तर पर हो वह इस योग्य नहीं कि उसे इनाम के लिए तर्जीह (प्रधानता) दी जाए, और जो व्यक्ति ऊंटों की भांति है वह इस योग्य नहीं कि वह सुन्दरता एवं सौन्दर्य की मज्लिसों में बैठे और जो व्यक्ति मुकाबले के लिए आए उसके लिए आवश्यक है कि वह अपने मुकाबला करने वाले के समान हो। तो जो व्यक्ति मेरे समान उत्तम लेखक न हो वह मेरे नज़दीक सम्बोधन करने योग्य नहीं। फिर जब शक्तिमान और स्रष्टा ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं इस सर्वोच्च पद के अन्तिम शिखर तक जा पहुंचा हूं तो मैं यह पसन्द करूंगा कि इस सम्मान में

من القدير البديع، أحبُّ أن أرى مثلى فى هذه الكرامة، وأكره أن أناضل كل أحد من العامة، فإنه فيه كسر شأنى، وعار لعلوّ مكانى، فلا أكلّمه أبدًا، بل أعرض عن الجاهلين

وعُلّمتُ أن الصدّيق أعظم شأنا وأرفع مكانا من جميع الصحابة، وهو الخليفة الاوّل بغير الاسترابة، وفيه نزلت آيات الخلافة، وإن كنتم زعمتم يا عِدا الثقافة أن مصداقها غيره بعد عصره فأْتوا بفصّ خبره إن كنتم صادقين وإن لم تفعلوا ولن تفعلوا فلا تكونوا أعداء الاخيار، واقطعوا خصاما متطائر الشرار وما كان لمؤمن أن يركن إلى اشتطاط اللدد، ولا يدخل باب الحق مع انفتاح السدد وكيف تلعنون رجلا

मेरा कोई दर्जे में बराबर हो और नहीं चाहूंगा कि हर अच्छे-बुरे से मुकाबला करूं क्योंकि उसमें मेरे लिए शर्म की बात है। इसलिए मैं ऐसे व्यक्ति से कभी बात नहीं करूंगा बल्कि जाहिलों से विमुख रहूंगा।

और मुझे ज्ञान दिया गया है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक[रज़ि०] शान में समस्त सहाबा[रज़ि०] में बहुत महान और मर्तबे में सबसे श्रेष्ठ थे और निस्सन्देह प्रथम ख़लीफा थे तथा आप के बारे में ही ख़िलाफ़त की आयतें उतरीं। परन्तु हे सभ्यता के शत्रुओ! यदि तुम यह समझते हो कि इस खिलाफ़त का आप के काल के बाद आप के अतिरिक्त कोई और चरितार्थ था तो कोई निश्चित और ठोस भविष्यवाणी प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो परन्तु यदि ऐसा न कर सको और कदापि ऐसा न कर सकोगे तो फिर (ख़ुदा के) चुने हुए लोगों के दुश्मन मत बनो और ऐसे झगड़े को छोड़ दो जो आपस में फूट डालने वाला हो और किसी मोमिन को यह शोभा नहीं देता कि वह झगड़ा करने में कठोरता की ओर झुके और रास्ते खुल जाने के बावजूद सच्चाई के दरवाज़े में प्रवेश न कर। तुम ऐसे व्यक्ति पर कैसे लानत करते हो जिसके दावे को अल्लाह ने सिद्ध कर दिया और उस ने अल्लाह से सहायता मांगी तो अल्लाह ने उसकी सहायता की और उसकी

أثبت اللّٰه دعواه، وإذا استَعْدی فأعْداه وأری الآیاتِ لعَدْواه*،
وطَرَّ مکر الماکرین، وهو نجّی الإسلام من بلاءٍ هاضَ
وجورٍ فاضَ، وقتَل الأفعی النضناضَ، وأقام الأمن والأمان،
وخیّب کل من مان، بفضل اللّٰه رب العالمین

وللصدّیق حسنات أُخری وبرکات لا تُعدّ ولا تُحصٰی، وله
منَنٌ علی أعناق المسلمین، ولا ینکرها إلا الذی هو أوّل المعتدین
وکما جعله اللّٰه موجبا لِلأمن المؤمنین ومِطفاءً لنیران الکافرین
والمرتدین، کذٰلك جعله مِن أوّل حُماة الفرقان وخدام القرآن
ومُشیعی کتاب اللّٰه المبین فبذل سعیه حق السعی فی جمع القرآنِ

* ورد فی اقرب الموارد: استعداه: استغاثه واستنصره، یقال: استعدیت علی فلان الامیر فأعدانی أی استعنت بهٖ علیه فأعانی علیه۔ والعدوی بمعنی المعونة۔ (الناشر)

मदद के लिए निशान दिखाए और अशुभ चिन्तकों के यत्नों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और आप (अबू बक्र रज़ि॰) ने इस्लाम को हताश कर देने वाली परीक्षा तथा अत्याचार एवं अन्याय को बाढ़ से बचाया और फुंकारने वाले अजगर को मार दिया। आपने अमन और शान्ति स्थापित की और समस्त लोकों के प्रतिपालक की कृपा (फ़ज़्ल) से हर झूठे को असफल और निराश किया।

और हज़रत (अबूबक्र) सिद्दीक रज़ि॰ की और बहुत सी खूबियां तथा अगणित और असीम बरकतें हैं और मुसलमानों की गर्दनें आप रज़ि॰ के उपकार की आभारी हैं और इस बात का इन्कार केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो प्रथम श्रेणी का अत्याचार करने वाला हो। जिस प्रकार अल्लाह ने आप को मोमिनों के लिए अमन का कारण तथा मुर्तदों और काफ़िरों की आगें बुझाने वाला बनाया। उसी प्रकार आप को प्रथम श्रेणी का फ़ुर्क़ान का सहायक, क़ुर्आन का सेवक और अल्लाह की किताब मुबीन का प्रसार करने वाला बनाया। अत: आप ने क़ुर्आन जमा करने और कृपालु ख़ुदा के प्रेमी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से उसका वर्णन किया हुआ क्रम मालूम करने में पूरा प्रयास व्यय कर दिया और धर्म की हमदर्दी में आप रज़ि॰ की आंखें एक जारी झरने के बहने से भी अधिक आंसुओं से भर

واستطلاع ترتيبه من محبوب الرحمنِ، وهملتْ عيناه لمواساة الدين ولا همول عين الماء المعين وقد بلغت هذه الاخبار إلى حد اليقين، ولكن التعصب تعقَّرَ فِطنَ المتدبرين وإن كنت تريد أصل الواقعات ولبّ النكات، فاربأ بنفسك أن تنظر بحيث يغشاك درن التعصبات وإياك وطرق التعسفات، فإن النصَفَة مفتاح البركات، ولا ترحض عن القلب قشف الظلمة إلّا نور العدل والنصفة وإن العلوم الصادقة والمعارف الصحيحة رفيعة جدًّا كعرش حضرة الكبرياء، والنصفة لها كسُلّم الارتقاء، فمن كان يرجو حل المشكلات وقُنية النكات، فليعمل عملًا صالحا ويتّق التعسّفَ والتعصبات وطرق الظالمين

ومن حسنات الصدّيق ومزاياه الخاصة أنه خُصّ

गईं। और ये रिवायतें तो विश्वास की सीमा तक पहुंची हुई हैं परन्तु पक्षपात ने सोचने वालों की प्रतिभा को नष्ट कर दिया है। यदि तू घटनाओं की वास्तविकता, रहस्यों का मार्ग मालूम करना चाहता है तो अपने आप को इस तौर से देखने से बचा कि तुझ पर पक्षपातों का मैल चढ़ जाए और ज़ुल्म के मार्गों से बच क्योंकि न्याय समस्त बरकतों की कुंजी है तथा केवल और केवल न्याय का प्रकाश ही दिल के अंधकार के मैल-कुचैल को धो सकता है। और यह कि सच्चे ज्ञान और सही मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) ख़ुदा तआला के अर्श की तरह बहुत ही बुलन्द हैं और न्याय उन (ज्ञानों) तक पहुंचने के लिए एक सीढ़ी के समान है। इसलिए जो व्यक्ति इन कठिनाइयों का हल करना तथा इन रहस्यों को पाने का अभिलाषी है तो उसे चाहिए कि वह नेक कर्म करे और अन्याय, पक्षपात तथा अत्याचारियों के मार्गों से बचे।

और (हज़रत) अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि॰] की खूबियों और विशिष्ट अच्छाइयों में से एक विशेष बात यह भी है कि हिजरत के सफर में आप को सहचारता के लिए विशेष किया गया और मख़्लूक (सृष्टि) में से सर्वोत्तम व्यक्ति (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कठिनाइयों में आप उनके साथी थे और आप कष्टों के

لمرافقة سفر الهجرة، وجُعل شريك مضائق خير البرية وأنيسه الخاص في باكورة المصيبة ليثبت تخصّصه بمحبوب الحضرة وسرُّ ذلك أنّ الله كان يعلم بأن الصدّيق أشجع الصحابة ومن التقاة وأحبّهم إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم ومن الكُماة، وكان فانيا في حُبّ سيّد الكائنات، وكان اعتاد من القديم أن يمونه ويراعي شؤونه، فأسلى به الله نبيَّه في وقتٍ عبوس وعيش بوسٍ، وخُصّ باسم الصدّيق وقربِ نبي الثقلَين، وأفاض الله عليه خلعة ثَانِيَ اثْنَيْنِ، وجعله من المخصوصين

प्रारंभ से ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विशेष मित्र बनाए गए थे ताकि ख़ुदा के आशिक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ आप[रज़ि॰] का विशेष संबंध सिद्ध हो और इसमें भी रहस्य यह था कि अल्लाह तआला को यह भली भांति मालूम था कि सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] सहाबा में से अधिक बहादुर, संयमी और उन सबसे अधिक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रिय और योद्धा थे और यह कि सम्पूर्ण कायनात के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में फ़ना थे। आप[रज़ि॰] प्रारंभ से ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आर्थिक सहायता करते और आप की अहम बातों का ध्यान रखते। अत: अल्लाह तआला ने कष्दायक समय और कठिन परिस्थितियों में अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आप[रज़ि॰] के द्वारा सांत्वना दी और अस्सिद्दीक़ के नाम और जिन्नों एवं इन्सानों (दोनों वर्ग) के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सानिध्य से विशिष्ट किया और अल्लाह तआला ने आप को सानियुस्नैन के बहुमूल्य उपाधि से सुशोभित किया और अपने अति विशिष्ट बन्दों में से बनाया।

इसके अतिरिक्त (हज़रत अबू बक्र) सिद्दीक़[रज़ि॰] अनुभवी और प्रतिभाशाली लोगों में से थे। आप[रज़ि॰] ने बहुत से जटिल मामलों और उन की कठिनाइयों को देखा और कई युद्धों में सम्मलित हुए और उनकी युद्ध की चालों को देखा

ومع ذٰلك كان الصدّيق من المجربين ومن زمر المتبصّرين رأى كثيرا من مغالق الامور وشدائدها، وشهد المعارك ورأى مكايدها، ووطئ البوادى وجلامِدَها، و كم من مهلكة اقتحمها و كم من سبل العوج قومها و كم من ملحمة قدمها و كم من فتن عدمها و كم من راحلة أنضاها فى الاسفار، وطوى المراحل حتى صار من أهل التجربة والاختبار و كان صابرًا على الشدائد ومن المرتاضين فاختاره الله لرفاقته مورد آياته، وأثنى عليه لصدقه وثباته، وأشار إلى أنه كان لرسول الله صلى الله عليه وسلم أوّل الاحبّاء، وخُلِقَ من طينة الحرّية وتفوَّقَ درَّ الوفاء، ولاجل ذلك اختُيِرَ عند خطب خشّى وخوف غشّى، والله عليم حكيم يضع الامور فى مواضعها، ويُجرى المياه من منابعها، فنظر إلى

तथा आप[रज़ि०] ने कई रेगिस्तान और पर्वत मालाएं रोंदीं और कितने ही तबाही के स्थान थे जिन में आप निस्संकोच घुस गए, और कितने टेढ़े मार्ग थे जिन को आप[रज़ि०] ने प्रशस्त (सीधा) किया और कई युद्धों में आप[रज़ि०] अग्रसर हुए और कितने ही फ़ित्ने थे जिन को आप ने मिटाया और कितनी ही सवारियां थीं जिन को आप[रज़ि०] ने सफरों में दुब्ला (कमज़ोर) किया और बहुत से मर्हले तय किए यहां तक कि अनुभवी और प्रतिभाशाली बन गए। आप कष्टों पर सब्र करने वाले और मेहनती थे। अत: अल्लाह तआला ने आप को अपनी आयतों के उतरने के स्थान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मित्रता के लिए चुना और आप की श्रद्धा एवं दृढ़ता के कारण आप की प्रशंसा की। यह संकेत था इस बात का कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रियजनों में से सब से बढ़ कर हैं आप आज़ादी के ख़मीर से पैदा किए गए और वफ़ा आप की घुट्टी में थी। इस कारण से आप को भयानक अहम मामले और होश उड़ाने वाले भय के समय चुना गया और अल्लाह बहुत जानने वाला तथा हिक्मत वाला है। वह समस्त बातों को तथा अवसर एवं यथास्थान रखता और पानियों को उनके (यथास्थिति) मुख्य झरनों (उद्गमों) से जारी करता है तो उसने इब्ने अबी कुहाफ़ा पर कृपा दृष्टि डाली और उस पर विशेष उपकार

ابن أبی قحافة نظرةً، ومنّ علیه خاصة، وجعله من المتفردین، وقال وهو أصدق القائلین

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

فتدبَّرْ فی هذه الآیات فهما وحزما، ولا تُعرض عمدا وعزما، وأحسِنِ النظر فیما قال رب العالمین

ولا تلج مقاحم الاخطار بسبّ الاخیار والابرار وأحبّاء

किया और उसे एक अनुपम व्यक्ति बना दिया और अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह बात करने वालों में सब से सच्चा है।

यदि तुम इस (रसूल) की सहायता न भी करो तो अल्लाह (पहले भी) उसकी सहायता कर चुका है। जब उसे उन लोगों ने जिन्होंने कुफ्र किया (देश से) निष्कासित कर दिया था इस हाल मे कि वह दो में से एक था जब वे दोनों गुफ़ा में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर, निस्सन्देह अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह तआला ने उस पर अपनी सांत्वना उतारी और उसकी ऐसी सेनाओं से सहायता की जिन को तुम ने कभी नहीं देखा और उसने उन लोगों की बात नीची कर दिखाई जिन्होंने कुफ्र किया था और बात अल्लाह ही की विजयी होती है और अल्लाह पूर्ण अधिकार वाला और बहुत हिकमत वाला है। (अत्तौब:-40)

इसलिए इन आयतों पर बुद्धि और विवेक से विचार कर और जान बूझ कर और निश्चयपूर्वक उन से मुंह न फेर तथा समस्त लोकों के कथन पर ठीक प्रकार से विचार कर।

और चुने हुए नेक और प्रकोपी ख़ुदा के प्रियजनों को गालियां देकर खतरों से भरपूर क़त्लघरों में न घुस क्योंकि ख़ुदा के सानिध्य को प्राप्त करने का

القهّار، فإن أنفَسَ القربات تخيُّرُ طرق التقاة والإعراض عن المهلكات، وأمتنَ أسبابِ العافية كفُّ اللسان والتجنب من السبّ والغيبة، والاجتناب من أكل لحم الإخوة انظر إلى هذه الآية الموصوفة، أتُثنى على الصدّيق أو تجعله مورد اللوم والمعتبة؟ أتعرف رجلا آخر من الصحابة الذى حُمد بهذه الصفات بغير الاسترابة؟ أتعرف رجلا سُمّى ثَانِيَ اثْنَيْنِ وسُمى صاحبًا لنبى الثقلين، وأُشرِكَ فى فضل إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا، وجُعِل أحدٌ من المؤيّدين؟ أتعلم أحدًا حُمّد فى القرآن كمثل هذه المحمدة، وسُفر زحام الشبهات عن حالاته المخفية، وثبت فيه بالنصوص الصريحة لا الظنية الشكّيّة أنه من المقبولين؟

उत्तम उपाय संयम के मार्गों को ग्रहण करना और तबाही के स्थानों से बचना है और कुशलता का सुदृढ़ कारण ज़ुबान पर क़ाबू रखना गाली-गलौज और पीठ पीछे बुराई करने से बचना और भाइयों का मांस खाने (पीठ पीछे बुराई करने) से दूर रहना है। (क़ुर्आन करीम) की इस कथित आयत पर विचार कर। क्या यह आयत हज़रत सिद्दीक़[रज़ि॰] की प्रशंसा और स्तुति करती है या भर्त्सना और क्रोध का पात्र ठहराती है? क्या सहाबा में से किसी अन्य व्यक्ति को तुम जानते हो कि जिसकी इन (प्रशंसनीय) विशेषताओं के साथ किसी सन्देह या शंका के बिना प्रशंसा की गई हो? क्या तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति की जानकारी है जिसे सानियुस्नैन (दो में से एक) का नाम दिया गया। और दोनों लोकों के साथी का नाम दिया गया हो और उस अच्छाई में भागीदार किया गया हो कि اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (निस्सन्देह अल्लाह हमारे साथ है (अत्तौब:-40) और उसे दो समर्थन प्राप्त लोगों में से एक ठहराया गया हो, क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जिसकी क़ुर्आन में उस जैसी प्रशंसा की गई हो। और जिसकी गुप्त परिस्थितियों से सन्देहों की भीड़ को दूर कर दिया हो और जिस के बारे में स्पष्ट आदेशों से न कि काल्पनिक, सन्देहजनक बातों से यह सिद्ध हो कि वे ख़ुदाई दरबार के मान्य लोगों में से हैं। ख़ुदा की क़सम इस

و واللّٰه، ما أرى مثل هذا الذكر الصريح ثابت بالتحقيق الذى مخصوص بالصدّيق لرجل آخر فى صحف رب البيت العتيق فإن كنت فى شك ممّا قلت، أو تظن أنى عن الحق ملتُ، فأْت بنظير من القرآن، وأرِنا لرجل آخر تصريحًا من الفرقان، إن كنت من الصادقين

والله إن الصدّيق رجل أُعطى من الله حلل الاختصاص، وشهد له الله أنه من الخواص، وعزا معيّةَ ذاتِه إليه، وحَمِدَه وشَكَرَه وأثنى عليه، وأشار إلى أنه رجل لم يطبْ له فراق المصطفٰى، ورضى بفراق غيره من القربى، وآثر المولى وجاءه يسعى، فساق إلى الموت ذَوْدَ الرغبة، وأزجى كل هوى

प्रकार का स्पष्ट वर्णन जो जांच-पड़ताल द्वारा प्रमाणित हो जो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक[रज़ि॰] से विशिष्ट है, मैंने खाना का'बा के रब्ब की पुस्तकों में किसी अन्य व्यक्ति के लिए नहीं देखा। तो यदि तुझे मेरी इस बात के बारे में सन्देह हो या तुम्हारा यह गुमान हो कि मैंने सच्चाई की उपेक्षा की है तो क़ुर्आन से कोई उदाहरण प्रस्तुत करो और हमें दिखाओ कि फ़ुर्क़ान हमीद ने किसी और व्यक्ति के लिए ऐसा स्पष्टीकरण किया है यदि तुम सच्चों में से हो।

अल्लाह की क़सम सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] ख़ुदा का वह मर्द हैं जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से विशिष्ट उपाधियाँ प्रदान की गईं और अल्लाह ने उन के लिए यह गवाही दी कि वे विशेष चुने हुए लोगों में से हैं और अपने आपके साथ को आप[रज़ि॰] की ओर सम्बद्ध किया हो तथा आप की प्रशंसा और गुणगान किया और आप के महत्त्व को जाना और यह संकेत किया कि आप ऐसे व्यक्ति हैं कि जिन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई पसन्द न आई। हां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त अन्य परिजनों और निकट संबंधियों की जुदाई पर आप राज़ी हो गए। आप ने अपने आक़ा को प्राथमिकता दी और उनकी ओर दौड़े चले आए फिर पूर्ण इच्छा के साथ आप ने स्वयं को

المهجة استدعاه الرسول للمرافقة، فقام ملبّيا للموافقة، وإذ همّ القوم بإخراج المصطفٰى، جاء ه النبی حبیب الله الاعلٰى، وقال إنی أُمرتُ أن أهاجر وتهاجر معی ونخرج من هذا المأوی، فحمدلَ الصدّيق على ما جعله الله رفیق المصطفٰی فی مثل ذلك البلوىٰ، وكان ينتظر نصرة النبی المبغیِّ عليه إلٰى أن آلت هذه الحالة إليه، فرافقه فی شجون من جدّ ومجون، وما خاف قتل القاتلين ففضيلته ثابتة من جليّة الحكم والنص المحكم، وفضله بيّن بدليل قاطع، وصدقه واضح كصبح ساطع إنه ارتضٰی بنعماء

मौत के मुंह में डाल दिया और प्रत्येक तामसिक इच्छाओं को आप ने अपने मार्ग से हटा दिया। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को अपनी मित्रता के लिए बुलाया तो सहमति में लबैक (मैं उपस्थित हूं) कहते हुए उठ खड़े हुए और जब क़ौम ने हज़रत (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निकालने का इरादा किया तो बुज़ुर्ग और सर्वश्रेष्ठ शक्तिमान, प्रतापी अल्लाह के प्रेमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप के पास आए और फ़रमाया-मुझे आदेश दिया गया है कि मैं हिजरत (प्रवास) करूं और तुम मेरे साथ हिजरत करोगे और हम इकट्ठे इस बस्ती से निकलेंगे। तो इस पर हज़रत सिद्दीक़[रज़ि॰] ने अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ा कि ऐसे कठिन समय में अल्लाह ने उन्हें मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथी बनने का सौभाग्य प्रदान किया। वे पहले ही से नबी मज़्लूम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता के प्रतीक्षक थे। यहां तक कि जब नौबत यहां तक पहुंच गई तो आप[रज़ि॰] ने पूर्ण गंभीरता और अंजाम से लापरवाह हो कर चिन्ता एवं शोक में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया और क़ातिलों के क़त्ल के षडयन्त्र से भयभीत न हुए। अतएव आप की श्रेष्ठता स्पष्ट और सुदृढ़ और स्पष्ट आदेश से सिद्ध है और आप की बुज़ुर्गी ठोस तर्क से स्पष्ट है और आप की सच्चाई प्रकाशमान दिन की तरह चमकदार है। आपने आख़िरत की नेमतों को पसंद

الآخـرة وتـرك تنعـم العاجـلة، ولا يبلـغ فضائـله أحـد مـن الآخريـن

وإن سـألت أن الله لِـمَ آثـرَه لصـدر سلسـلة الخلافـة، وأىّ سـر كان فيـه مـن ربّ ذى الرأفـة، فاعلـم أن الله قـد رأى أن الصدّيـق رضـى الله عنـه وأرضـى آمـنَ مـع رسـول الله صلعـم بقلـب أسـلم فى قـوم لـم يسـلم، وفى زمـان كان نـبى الله وحيـدًا، وكان الفسـاد شـديدا، فـرأى الصدّيـق بعـد هـذا الإيمـان أنـواع الذلة والهـوان ولعـن القـومِ والعشـيرة والإخـوان والخـلّان، وأُوذى فى سـبيل الله الرحمـان، وأُخـرج مـن وطنـه كمـا أُخـرج نـبى الإنـس ونـبى الجـان، ورأى مِحنًـا كثـيرة مـن الاعـداء، ولعنًـا ولومًـا مـن الاحبـاء، وجاهـدَ بمـاله ونفسـه فى حضـرة العـزّة، وكان يعيـش

किया और दुनिया के ऐश व आराम को त्याग दिया। दूसरों में से कोई भीआप[रज़ि॰] की इन खूबियों तक नहीं पहुंच सकता।

यदि तुम यह पूछो कि अल्लाह ने ख़िलाफ़त के सिलसिले के प्रारंभ के लिए आप को क्यों प्रधानता दी और इस में मेहरबान ख़ुदा की क्या हिकमत थी? तो जानना चाहिए कि अल्लाह ने यह देखा कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] एक ग़ैर मुस्लिम क़ौम में पूर्ण स्वस्थ दिल के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए हैं और ऐसे समय में ईमान लाए जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिल्कुल अकेले थे और बहुत घोर उपद्रव था। तो हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] ने इस ईमान लाने के बाद भिन्न-भिन्न प्रकार का अपमान और बदनामी देखी तथा क़ौम, खानदान, कबीले, दोस्तों और भाई बन्धुओं की डांट-डपट देखी। कृपालु ख़ुदा के मार्ग में आप को कष्ट दिए गए और आप को उसी प्रकार मातृ भूमि से निकाल दिया गया जिस प्रकार जिन्नों तथा इन्सानों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकाला गया था। आपने शत्रुओं की ओर से लानत-मलामत देखी, आप ने ख़ुदा के दरबार में अपने माल और जान से जिहाद किया। आप सम्मान

كالإذلّة، بعدما كان من الاعزّة ومن المتنعمين وأُخرج فى سبيل الله، وأُوذى فى سبيل الله، وجاهد بأمواله فى سبيل الله، فصار بعد الثراء كالفقراء والمساكين فأراد الله أن يُريه جزاء الايام التى قد مضت عليه، ويبدّله خيرا مما ضاع من يديه، ويُريه أجر ما رأى ابتغاءً لمرضاة الله، والله لا يُضيع أجر المحسنين فاستخلفه ربه ورفع له ذكره وأسّلى، وأعزّه رحمة منه وفضلا، وجعله أمير المؤمنين

اعلموا، رحمكم الله، أن الصحابة كلهم كانوا كجوارح رسول الله صلعم وفخر نوع الإنسان، فبعضهم كانوا كالعيون وبعضهم كانوا كالآذان، وبعضهم كالايدى

और नेमतों में पोषण पाने के बावजूद साधारण लोगों के समान जीवन व्यतीत करते थे। आप ख़ुदा के मार्ग में (वतन) से निकाले गए, आप ख़ुदा के रास्ते में सताए गए, आप ने ख़ुदा के मार्ग में अपने माल से जिहाद किया और धन-दौलत रखने के बाद आप फ़क़ीरों और दरिद्रों की तरह हो गए। अल्लाह ने यह इरादा किया कि आप को गुज़रे हुए दिनों का प्रतिफल प्रदान करे। और जो आप के हाथ से निकल गया उस से उत्तम बदला दे और ख़ुदा की प्रसन्नता चाहने के लिए जिन कष्टों से आप का सामना हुआ उनका बदला आप पर प्रकट करे और अल्लाह उपकार करने वालों के प्रतिफल को कभी नष्ट नहीं करता। इसलिए आपके रब्ब ने आप को ख़लीफ़ा बना दिया और आप के लिए आप की चर्चा को बुलन्द किया तथा आप को सांत्वना दी और अपने फ़ज़्ल (कृपा) और रहम (दया) से सम्मान प्रदान किया और आप को अमीरुलमोमिनीन (मोमिनों का अमीर) बना दिया।

अल्लाह तआला आप लोगों पर दया करे। जान लो कि समस्त सहाबा[रज़ि०] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंगों एवं अवयवों की तरह थे और मानव जाति के गर्व थे। कृपालु ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए उन में से कुछ आंखों जैसे थे, कुछ कानों की तरह और कुछ उनमें

وبعضهم كالأرجل من رسول الرحمان، و كلّ ما عملوا من عمل أو جاهدوا من جهد فكانت كلها صادرة بهذه المناسبات، و كانوا يبغون بها مرضاة رب الكائنات رب العالمين فالذى يقول أن الأصحاب الثلاثة كانوا من الكافرين والمنافقين أو الغاصبين فلا يُكفّر إلا كلهم أجمعين لأن الصحابة كلهم كانوا بايعوا أبا بكر ثم عمر ثم عثمان رضى الله عنهم وأرضى، وشهدوا المعارك والمواطن بأحكامهم العظمى، وأشاعوا الإسلام وفتحوا ديار الكافرين فما أرى أجهلَ مِن الذى يزعم أن المسلمين ارتدوا كلهم بعد وفاة رسول الله صلى الله عليه وسلم، كأنه يكذب كل مواعيد نصرة الإسلام التى مذكورة فى

से हाथों की तरह और कुछ पैरों की तरह थे। उन सहाबा[रज़ि०] ने जो भी कार्य किए या जो भी प्रयास किए वे सब कुछ उन अंगों की अनुकूलता से जारी हुए और उन का उद्देश्य उस से केवल कायनात और समस्त लोकों के रब्ब की प्रसन्नता था और जो व्यक्ति यह कहता है कि तीनों साथी (सहाबा) काफ़िर, मुनाफ़िक़ या हड़पने वाले थे बल्कि वह सब को ही काफ़िर ठहराता है। क्योंकि सब सहाबा[रज़ि०] ने हज़रत अबू बक्र की, फिर हज़रत उमर की और फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम व युर्ज़ा की बैअत की थी। इन (ख़लीफ़ों) के महान आदेशों का पालन करते हुए वे युद्धों और लड़ाइयों में शामिल हुए और उन्होंने इस्लाम का प्रचार किया और काफ़िरों के देशों पर विजयी हुए। मेरी दृष्टि में उस व्यक्ति से अधिक मूर्ख कोई नहीं जो यह सोचता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निधन के पश्चात् समस्त मुसलमान मुर्तद हो गए थे। इस प्रकार जैसे वह उन समस्त वादों को झुठलाता है जो इस्लाम की सहायता के बारे में अल्लाम (बहुत जानने वाले) ख़ुदा की किताब में वर्णित हैं। अत: पवित्र है हमारा रब्ब जो मिल्लत (इस्लाम) और धर्म का रक्षक है। शियों की बहुसंख्या

كتاب الله العلام، سبحان ربنا حافظ الملة والدين هذا قول أكثر الشيعة، وقد تجاوزوا الحد فى تطاول الإلسنة، وغضّوا من الحق عينهم، فكيف ينتظم الوفاق بيننا وبينهم؟ وكيف يرجع الامر إلى ودادٍ، وإنهم لفى وادٍ ونحن فى وادٍ؟ والله يعلم أنّا من الصادقين

يا حسرة عليهم إنهم لا يستفيقون من غَشْى التعصبات، ولا يكفكفون من البهتانات أعجبنى شأنهم وما أدرى ما إيمانهم، إنهم كفروا الاصحاب الثلاثة وحسبوهم من المنافقين المرتدين، مع أن القرآن ما بلغهم إلا من أيدى تلك الكافرين، فلزمهم أن يعتقدوا أن القرآن الموجود فى أيدى الناس ليس بشىء، بل ساقط من الاساس،

का यह कथन है और वास्तविकता यह है कि वे गालियां देने में सीमा से बाहर निकल गए और सच की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा। फिर हमारे और उनके बीच समानता कैसे हो सकती है? और जब कि वे एक घाटी में है और हम दूसरी घाटी में तो फिर मुहब्बत कैसे मार्ग पा सकती है? अल्लाह खूब जानता है कि हम सच्चों में से हैं।

हाय अफ़सोस इन पर कि ये पक्षपात की मूर्छा से होश में नहीं आ रहे और न दोषारोपण करने में रुक रहे हैं। इनकी हालत ने मुझे आश्चर्य में डाला है और मैं नहीं जानता कि इनका ईमान कैसा है? इन्होंने तीनों सहाबा को काफ़िर ठहराया और उन्हें मुनाफ़िक एवं मुर्तद शुमार किया इसके बावजूद कि क़ुर्आन उन्हीं "काफ़िरों" के हाथों से ही उन तक पहुंचा। अत: इनके लिए यह अनिवार्य है कि वे यह आस्था रखें कि लोगों के हाथों में मौजूद क़ुर्आन कुछ भी चीज़ नहीं बल्कि निराधार है और समस्त लोगों के रब्ब का कलाम नहीं बल्कि वह अक्षरान्तरण करने वालों के वाक्यों का मज्मुआ (संग्रह) है। और बात यह है कि समस्त सहाबा[रज़ि॰] उन की आस्थानुसार बेईमान और अधिकार

وليس كلام رب الإناس، بل مجموعة كلمات المحرفين فإنهم كلهم كانوا خائنين وغاصبين بزعمهم، وما كان أحد منهم أمينا ومن المتدينين فإذا كان الأمر كذلك فعلى ما عوّلوا فى دينهم؟ وأى كتاب من الله فى أيديهم لتلقينهم؟ فثبت أنهم قوم محرومون لا دين لهم ولا كتاب الدين فإن قوما إذا فرضوا أن الصحابة كفروا ونافقوا وارتدوا على أعقابهم وأشركوا، واتّسخوا بوسخ الكفر وما تطهّروا، فلا بد لهم أن يُقرّوا بأنّ القرآن ما بقى على صحته وحُرّف وبُدّل عن صورته وزِيد ونُقص، وغُيّر من سحنته وقِيّدَ إلى غير حقيقته، فإن هذا الإقرار لزمهم ضرورةً بعد

का हनन करने वाले थे और उनमें से कोई एक भी अमानतदार और दीनदार (धार्मिक) व्यक्ति न था। यदि यह मामला ऐसा ही है तो फिर किस चीज़ पर उन के धर्म की निर्भरता है? और उन को धर्म सिखाने के लिए उनके हाथों में अल्लाह की कौन सी किताब है? इसलिए सिद्ध हुआ कि यह एक ऐसी वंचित क़ौम है जिन का न तो कोई धर्म है और न कोई धार्मिक किताब। क्योंकि इस क़ौम ने जब यह मान लिया कि समस्त सहाबा काफ़िर और मुनाफ़िक हो गए और अपनी एड़ियों पर फिर गए और शिर्क किया और कुफ्र की गन्दगी से लिथड़ गए और पवित्रता ग्रहण न की तो फिर उन्हें यह इक़रार करने के बिना चारा नहीं कि क़ुर्आन अपने सही होने पर शेष नहीं रहा और अपने असल रूप से अक्षरान्तरित और परिवर्तित हो गया है और उसमें कमी-बेशी कर दी गई है और अपनी मूल वास्तविकता पर क़ायम नहीं रहा और यह इक़रार विवशतापूर्वक उनकी इस बात पर साहस के आग्रह के बाद अनिवार्य हो गया कि कुर्आन क़रीम का प्रकाशन नेक मोमिनों के हाथों नहीं हुआ। बल्कि बेईमान मुर्तद काफ़िरों ने उस का प्रकाशन किया है और जब उन की आस्था यह है कि क़ुर्आन अप्राप्य है और उसे जमा करने वाले सब के सब काफ़िर और

إصرارهم جرأةً على أن القرآن ما شاء من أيدى المؤمنين الصالحين، وأشاعه قوم من الكافرين الخائنين المرتدين وإذا اعتقدوا أن القرآن مفقود، وكل مَن جمعه فهو كافر مردود، فلا شكّ أنهم يئسوا مما نزل على أبي القاسم خاتم النبيين، وغُلقت عليهم أبواب العلم والمعرفة واليقين، ولزمهم أن يُنكروا النواميس كلها، فإنهم محرومون من تصديق الانبياء والإيمان بكتب المرسلين وإذا فرضنا أنّ هذا هو الحق أن الصحابة ارتدوا كلهم بعد خاتم الانبياء ،وما بقى على الشريعة الغرّاء إلا على رضى الله عنه ونفر قليلون معه من الضعفاء، وهم مع إيمانهم ركنوا إلى إخفاء

धिक्कृत हैं तो इस स्थिति में कोई सन्देह शेष नहीं रहता कि वे इस कलाम से निराश हो चुके हैं, जो अबुल क़ासिम ख़ातुमन्नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरा, और उन पर ज्ञान एवं मारिफ़त तथा विश्वास के दरवाज़े बन्द कर दिए गए और फिर उन के लिए यह भी अनिवार्य ठहरा कि वे समस्त आसमानी किताबों का इन्कार करें। चूंकि वे नबियों की पुष्टि और रसूलों की किताबों पर ईमान लाने से वंचित हो गए, और जब हमने यह मान लिया कि सच यही है ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद सभी सहाबा मुर्तद हो गए थे और उज्ज्वल शरीअत पर अली रज़ियल्लाहु अन्हो और आप के साथ कुछ कमज़ोर लोगों के अतिरिक्त कोई क़ायम न रहा था और वे कुछ लोग भी अपने ईमान के बावजूद सच्चाई को छुपाने की ओर झुक गए थे और उन्होंने शत्रुओं से डर कर तुच्छ दुनिया के लिए और लाभ प्राप्त करने तथा नश्वर मालों के लिए तक़ियः* किए रखा। तो यह इस्लाम सब से बड़ा संकट और सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के लिए एक बड़ी आपदा बन गया। और तू कैसे सोचता है कि अल्लाह ने स्वयं अपने वादों के

तक़ियः शिया मुसलमानों की आस्था में किसी अत्याचार के डर से सच को गुप्त रखना। (अनुवादक)

الحقیقة، واختاروا تقیّةً للدنیا الدنیة تخوّفًا من الاعداء ،أو لجذب المنفعة والحطام، فهذا أعظم المصائب على الإسلام، وبلیة شدیدة علی دین خیر الانام و کیف تظن أن اللّٰہ أخلف مواعیده، وما أری تأییده، بل جعل أوّلَ الدَنّ دُرْدِیًّا، وأفسد الدین من کید الخائنین

فنُشهِد الخلق کلهم أنّا بریئون من مثل تلك العقائد، وعندنا هی مقدمات الکفر وإلی الارتداد کالقائد، ولا تناسب فطرة الصالحین أ کفَر الصحابة بعد ما أفنوا أعمارهم فی تأیید الإسلام، وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم لنصرة خیر الانام، حتی جاءهم الشیب وقرب وقت الحمام؟ فمن أین تولدت إرادة متجددة فاسدة بعد تودیعها، و کیف غاضت میاه الإیمان بعد جریان ینابیعها؟ فویل للذین لا یذ کرون یوم الحساب، ولا

विरुद्ध किया और अपने समर्थनों का जल्वा न दिखाया बल्कि मटके में मौजूद चीज़ की ऊपरी सतह को ही तिलछट (गाद) बना दिया और बेईमानों के धोखों से धर्म को बिगाड़ दिया।

हम ख़ुदा की समस्त सृष्टि को गवाह ठहराते हैं कि हम इस प्रकार की आस्थाओं से बरी हैं और हमारे नज़दीक यह कुफ़्र का प्रारंभ है और धर्म से विमुखता की ओर ले जाने वाले लीडर की तरह हैं और नेक लोगों की प्रकृति से अनुकलता नहीं रखतीं क्या सहाबा[रज़ि॰] ने इसके बाद कुफ़्र किया, जबकि उन्होंने सम्पूर्ण उमरें इस्लाम के समर्थन में फ़ना कर दीं और अपने जान और माल से हज़रत ख़ैरुलअनाम (लोगों में सर्वश्रेष्ठ) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहायता के लिए जिहाद किया, यहां तक कि उन्हें बुढ़ापे ने आ लिया और मौत का समय निकट आ पहुंचा। फिर वे विचार कहां से पैदा हो गए? और ईमान के झरने जारी होने के बाद उन का पानी कैसे सूख गया? बुरा हो उन लोगों का! जो हिसाब के दिन को याद नहीं करते और जो रब्बुलअरबाब (समस्त प्रतिपालकों के प्रतिपलाक) की हस्ती से नहीं डरते और

يخافــون ربّ الارباــب، ويســبّون الاخيــار مســتعجلين
والعجــبُ أن الشــيعة يُقــرّون بــأن أبــا بكــر الصّدّيــق آمــن فى أيــام كثــرة الاعــداء، ورافــقَ المصطفٰــى فى ســاعة شــدّة الابتــلاء، وإذا خــرج رســول الله صلعــم فخــرج معــه بالصــدق والوفــاء، وحمــل التكاليــف وتــرَك المألــف والاليــف، وتــركَ العشــيرة كلهــا واختــار الــربّ اللطيــف، ثــم حضــر كل غــزوة وقاتــل الكفــار وأعــان النــبى المختــار، ثــم جُعــل خليفــة فى وقــت ارتــدت جماعــة مــن المنافقــين، وادعــى النبــوة كثــير مــن الكاذبــين، فحاربــهم وقاتلــهم حــتى عــادت الارض إلى أمنهــا وصلاحهــا وخــاب حــزب المفســدين

जल्दबाज़ी से काम लेते हुए नेक लोगों को गालियां देते हैं।

विचित्र बात यह है कि शिया लोग यह इक़रार भी करते हैं कि (हज़रत) अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि०] शत्रुओं की प्रचुरता के दिनों में ईमान लाए और आपने परीक्षा के कठिन समय में (हज़रत मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ ग्रहण किया और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मक्का) से निकलते तो आप भी पूर्ण श्रद्धा और निष्ठा से हुज़ूर के साथ में निकल खड़े हुए और कष्ट सहन किए और प्रिय बस्ती, दोस्त-यार और अपना सम्पूर्ण ख़ानदान छोड़ दिया और महान ख़ुदा को ग्रहण किया। फिर हर युद्ध में सम्मिलित हुए, काफ़िरों से लड़े और नबी (अहमद) मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहायता की फिर आप उस समय ख़लीफ़ा बनाए गए जब मुनाफ़िकों की एक जमाअत मुर्तद हो गई और बहुत से झूठों ने नुबुव्वत का दावा कर दिया। जिस पर आप उन से युद्ध और लड़ाई करते रहे यहां तक कि देश में दोबारा अमन और शान्ति हो गई और फ़ित्ना पैदा करने वालों का गिरोह निराश और क्षतिग्रस्त हुआ।

ثم مات ودُفن عند قبر سيد النبيين وإمام المعصومين، وما فارقَ حبيبَ الله ورسوله لا فی الحياة ولا فی الممات، بل التقيا بعد بينٍ أيامٍ معدودة فتهادی تحية المحبين والعجب كلّ العجب أن الله جعل أرض مرقد نبيه بزعمهم مشتركة بين خاتم النبيين والكافرَين الغاصبَين الخائنَين وما نجّی نبيّه وحبيبه من أذيّة جوارهما بل جعلهما له رفيقَين مؤذيَين فی الدنيا والآخرة، وما باعده عن الخبيثين سبحان ربّنا عما يصفون، بل أَلحَقَ الطيبين بإمام الطيبين إن فی ذلك لآيات للمتبصرين

फिर आप का निधन हुआ और सय्यिदुलअंबिया तथा मासूमों के इमाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के पहलू में दफ़्न किए गए और आप ख़ुदा के मित्र और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अलग न हुए, न जीवन में न मृत्यु के बाद। कुछ दिनों के वियोग के बाद आपस में मिल गए और प्रेम का उपहार प्रस्तुत किया। अत्यन्त आश्चर्य की बात यह है कि इन (शिया लोगों) के कथनानुसार अल्लाह ने नबी की क़ब्र की मिट्टी को ख़ातमुन्नबिय्यीन और दो काफ़िरों, अधिकार हनन करने वालों तथा बेईमानों के बीच सम्मिलित कर दिया और अपने नबी और मित्र सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन दोनों के पड़ोस के कष्ट से मुक्ति न दी, बल्कि इन दोनों को दुनिया और आख़िरत में आप के कष्टदायक साथी बना दिया और (नऊज़ुबिल्लाह) इन दोनों अपवित्रों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर न रखा। हमारा रब्ब इनकी वर्णन की हुई बातों से पवित्र है बल्कि अल्लाह ने इन दोनों पवित्रों को पवित्रों के इमाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मिला दिया। निस्सन्देह इसमें प्रतिभाशाली लोगों के लिए निशान हैं।

فتفكـر يـا مـن تحـلّٰى بفـهم، ولا تركَـنْ مِـن يقـين إلى وهـم، ولا تجـترء عـلى إمـام المعصومـين وأنـت تعلـم أن قـبر نبينـا صلى الله عليـه وسـلم روضـة عظيمـة مـن روضـات الجنـة، وتبـوَّأَ كلَّ ذروة الفضـل والعظمـة، وأحـاط كل مراتـب السـعادة والعـزة، فمـا له وأهـل النـيران؟ فتفكـر ولا تختر طـرق الخسـران، وتـأدّبْ مـع رسـول الله يـا ذا العينـين، ولا تجعـل قـبره بـين الكافرَيـن الغاصبَـين، ولا تُضِـعْ إيمانـك للمرتضـى أو الحسَـين، ولا حاجـة لهمـا إلى إطرائـك يـا أسـير المَـين، فاغمـدْ عَضْـبَ لسـانك وكـن مـن المتقـين أيرضـى قلبـك ويسـرّ سِـرَّ بك أن تُدفَـن بـين الكفـار وكان عـلى يمينـك ويسـارك كافـران مـن الاشـرار؟ فكيـف تجـوّز

हे विवेक के आभूषण से सुसज्जित व्यक्ति! विचार कर! और विश्वास को छोड़ कर भ्रम की ओर न झुक। और मासूमों के इमाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध साहस न कर। जबकि तुझे यह भली भांति ज्ञात है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आरामागाह जन्नत के बाग़ों में से एक बड़ा बाग़ है जो हर ख़ूबी और श्रेष्ठता के चरमोत्कर्ष के स्थान पर आसीन है और वह सौभाग्य एवं सम्मान की समस्त श्रेणियों को घेरे हुए है। तो फिर आप का और आग में रहने वाले का क्या संबंध? इसलिए सोच से काम ले! और घाटा पाने वालों के मार्गों पर न चल। और हे आंखों वाले! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान का ध्यान रख और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र को दो काफ़िरों तथा अधिकार हनन करने वालों के बीच मत ठहरा। और अपने ईमान को (अली) मुर्तज़ा रज़ि. या (इमाम) हुसैन रज़ि॰ के लिए नष्ट न कर। हे झूठ के क़ैदी! इन दोनों (बुज़ुर्गों रज़ि॰) को तेरी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा की आवश्यकता नहीं। इसलिए अपनी ज़ुबान की तलवार को मियान में रख और संयमियों में से बन। क्या तेरा दिल पसन्द करेगा और तेरे सीने को इस से खुशी मिलेगी कि तू काफ़िरों के बीच दफ़्न किया जाए और तेरे दाएं तथा तेरे

لسیّد الابرار ما لا تجوّز لنفسك یا مَورد قهر القهار؟ أتُنزل خیر الرسل منزلةً لا ترضاها، ولا تنظرُ مراتب عصمته وإیاها؟ أین ذهب أدبك وعقلك وفهمك؟ أم اختطفتْه جنُّ وهمك وترکتك کالمسحورین؟ وکما صُلتَ علی الصدّیق الاتقی کذلك صُلتَ علی علیّ المرتضی، فإنك جعلت علیًّا نعوذ باللّٰہ کالمنافقین، وقاعدا علی باب الکافرین، لیفیض شربه الذی غاض وینجبر مِن حاله ما انهاض ولا شك أن هذه السیر بعیدة من المخلصین، ولا توجد إلا فی الذی رضی بعادات المنافقین

وإذا سئل عن الشیعة المتعصّبین مَن کان أوّل مَن أسلم

बाएं बुरे लोगों में से दो काफ़िर हों? तो फिर हे महाप्रकोपी ख़ुदा के प्रकोप के पात्र! तू नेकों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वह चीज़ क्यों वैध समझता है जो तू स्वयं अपने लिए वैध नहीं समझता? क्या तू रसूलों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस स्थान पर ला रहा है जिसे तू अपने लिए पसन्द नहीं करता। और तू स्वयं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्रता की श्रेणियों की निगरानी नहीं करता। तेरा सम्मान करना तथा बुद्धि और विवेक कहां चला गया? क्या तेरे भ्रम के जिन्न ने उसे उचक लिया है और तुझे जादू ग्रस्त कर छोड़ा है। जिस प्रकार तू ने अत्यन्त संयमी सिद्दीक़ पर आक्रमण किया उसी प्रकार तू अली मुर्तज़ा पर भी आक्रमणकारी हुआ है। तो तू ने नऊज़ुबिल्लाह (हज़रत) अली को भी मुनाफ़िकों की तरह ठहराया और दो काफ़िरों के दरवाज़े पर बैठने वाला बना दिया ताकि इस प्रकार उनका फ़ैज़ का सूखा हुआ झरना फिर से जारी हो जाए और उनकी खराब आर्थिक स्थिति सुधार की ओर हो जाए। निस्सन्देह ये निष्कपट लोगों के चरित्र एवं आचरण नहीं और ये आचार-व्यवहार केवल उसी में पाए जाते हैं जो मुनाफ़िक़ों की आदतें पसन्द करता है।

यदि पक्षपाती शियों से यह पूछा जाए कि विरोधी इन्कारियों की जमाअत

من الرجال البالغين وخرج من المنكرين المخالفين، فلا بدّ لهم أن يقولوا إنه أبو بكر ثم إذا سئل مَن كان أوّل من هاجر مع خاتم النبيين ونبذ العلق وانطلق حيث انطلق، فلا بد لهم أن يقولوا إنه أبو بكر ثم إذا سئل من كان أول المستخلَفين ولو كالغاصبين، فلا بد لهم أن يقولوا إنه أبو بكر ثم إذا سئل من كان جامِعَ القرآن ليشاع فى البلدان، فلا بد لهم أن يقولوا إنه أبو بكر ثم إذا سئل من دُفن بجوار خير المرسلين وسيد المعصومين، فلا بد لهم أن يقولوا إنه أبو بكر وعمر فالعجب كل العجب أن كل فضيلة أُعطيت للكافرين المنافقين، وكل خير الإسلام ظهرت من أيدى

से निकल कर वयस्क पुरुषों में से इस्लाम लाने वाला पहला व्यक्ति कौन था? तो उन्हें यह कहने के अतिरिक्त चारा नहीं कि वह हज़रत अबू बक्र[रज़ि०] थे। फिर जब यह पूछा जाए कि वह कौन था जिस ने सब से पहले हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन के साथ हिजरत की और समस्त संबंधों को पीछे छोड़ दिया और वहां चले गए जहां हुज़ूर गए थे तो उनके लिए इस के अतिरिक्त कोई चारा न होगा कि वे कहेंगे कि वह हज़रत अबू बक्र थे। फिर जब यह पूछा जाए कि कष्ट कल्पना के तौर पर अधिकार हनन करने वाले ही सही फिर भी ख़लीफ़ा बनाए जाने वालों में से पहला कौन था? तो उन्हें यह कहे बिना चारा न होगा कि अबू बक्र। फिर जब यह पूछा जाए कि देश-देश में प्रकाशन के लिए क़ुर्आन को एकत्र करने वाला कौन था? तो निस्सन्देह कहेंगे कि वह (हज़रत) अबू बक्र थे। फिर जब यह पूछा जाए कि ख़ैरुलमुर्सलीन और सय्यिदुलमासूमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलू में कौन दफ़्न हुए तो उन्हें यह कहे बिना चारा नहीं होगा कि वह अबू बक्र[रज़ि०] और उमर[रज़ि०] हैं। तो फिर कितने आश्चर्य की बात है कि (मआज़ अल्लाह) हर ख़ूबी काफ़िरों और मुनाफ़िकों को दे दी गई और इस्लाम की सम्पूर्ण भलाई और बरकत शत्रुओं

المعادين أيزعم مؤمن أن أول لبنة لإسلام كان كافرا ومن اللئام؟ ثم أول المهاجرين مع فخر المرسلين كان كافرًا ومن المرتدين؟ وكذلك كل فضيلة حصلت للكفار حتى جوار قبر سيد الابرار، وكان عليٌّ من المحرومين، وما مال إليه الله بالعدوى وما أجدى من جدوى، كأنه ما عرفه وأخطأ من التنكير واحرورف فى المسير، وإن هذا إلا كذب مبين

فالحق أن الصدّيق والفاروق، كانا من أكابر الصحابة وما أَلَتَا الحقوق، واتخذا التقوى شرعة، والعدل نُجعة، وكانا ينقّبان عن الاخبار ويفتّشان من أصل الاسرار، وما أرادا أن يُلْفِيا من الدنيا بُغْية، وبذلا النفوس لله طاعةً وإنى لم ألقَ كالشيخَين فى غزارة فيوضهم وتأييد

के हाथों से प्रकट हुई। क्या कोई मोमिन यह सोच सकता है कि वह व्यक्ति जो इस्लाम के लिए प्रथम ईंट था और वह काफ़िर और कमीना था? फिर वह कि जिसने रसूलों के गर्व के साथ सर्वप्रथम हिजरत की वह बेईमान और मुर्तद था? इस प्रकार तो हर ख़ूबी काफ़िरों को प्राप्त हो गई यहां तक कि नेकों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र का पड़ोस भी और अली[रज़ि०] के भाग्य में निराशा ही निराशा रही। और अल्लाह उनकी सहायता की ओर न झुका और न ही अपनी किसी कृपा से उन्हें सम्मानित किया। जैसे वह उन्हें जानता-पहचानता ही न हो और न पहचानने के कारण ग़लती खाई और सही मार्ग से हट गया हो। यह तो एक खुला झूठ है।

सच तो यह है कि (अबू बक्र) सिद्दीक़[रज़ि०] और (उमर) फ़ारूक़[रज़ि०] दोनों बड़े सहाबा में से थे उन दोनों ने अधिकारों की अदायगी में कभी कमी नहीं की, उन्होंने संयम को अपना मार्ग और न्याय को अपना उद्देश्य बना लिया था। वे परिस्थितियों का गहरा निरीक्षण करते और रहस्यों की गहराई तक पहुंच जाते थे। दुनिया की इच्छाओं की प्राप्ति उनका कभी भी उद्देश्य न था।

دین نبی الثقلین کانا أسرع من القمر فی اتّباع شمس الامم والزمر، و کانا فی حُبّہ من الفانین واستعذبا کل عذاب لتحصیل صواب، ورضوا بکل ھوان لنبی الذی لیس لہ ثان، وظھرا کالاسود عند تَلقّی القوافل والجنود من ذوی الکفر والصدود، حتی غلب الإسلام وانھزم الجمع، وانزوی الشرك وانقمع، وأشرقت شمس الملّة والدّین و کانت خاتمة أمرھما جِوار خیر المسلمین، مع خدمات مرضیة فی الدین، وإحسانات ومنن علی أعناق المسلمین وھذا فضل من اللّٰہ الذی لا تخفی علیہ الاتقیاءُ، وإن الفضل بید اللّٰہ یؤتیہ من یشاء، من اعتلق بذیلہ مع کمال میلہ، فإن اللّٰہ لن یُضیعہ ولو عاداہ کل

उन्होंने अपनी जानों को अल्लाह का आज्ञापालन करने में लगाए रखा। लाभ की प्रचुरता और जिन्नों एवं इन्सानों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म की सहायता में शेख़ैन (अर्थात् अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम) जैसा मैंने किसी को न पाया। ये दोनों ही उम्मतों और मिल्लतों के सूर्य सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण में चन्द्रमा से भी अधिक तेज़ चलने वाले थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम में लीन थे। उन्होंने सच की प्राप्ति के लिए हर कष्ट को मधुर जाना और उस नबी के लिए जिसका कोई दूसरा नहीं, हर अपमान को खुशी और रुचि से सहन किया, और काफ़िरों एवं इन्कारियों की सेनाओं से मुठभेड़ के समय शेरों की तरह सामने आए, यहां तक कि इस्लाम विजयी हो गया और शत्रु के गिरोह पराजित हुए। शिर्क दूर हो गया और उसका सर्वनाश हो गया और मिल्लत-व-धर्म का सूर्य जगमगाने लगा। और मान्य धार्मिक सेवाएं करते हुए तथा मुसलमानों की गर्दनों को कृपा एवं उपकार से आभारी करते हुए उन दोनों का अंजाम रसूलों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पड़ोस पर फलदायक हुआ, और यह उस अल्लाह का

ما فی العالمین، ولا یری طالبہ خسرًا ولا عسرًا ولا یذر اللہ الصادقین

اللہ أکبر ما أعظمَ شأنَ سرِّ ھما وصدقھما دُفنوا فی مدفن لو کان موسٰی وعیسٰی حیَّین لتمناھا غبطة، ولکن لا یحصل ھذا المقام بالمنیة، ولا یعطی بالبغیة، بل ھی رحمة أزلیة من حضرة العزة، ولا تتوجہ إلا إلی الذین توجّھت العنایة إلیھم من الأزل، وحفّتْ بھم ملاحف الفضل فقضیت العجب کل العجب أن الذین یُفضّلون علیًّا علی الصدیق لا یرجعون إلی ھذا التحقیق، ویتھافتون علی ثناء المرتضی ولا ینظرون مقام الصدّیق الأتقی فاسأل الذین یکفّرون الصدّیق

फ़ज़्ल है जिसकी दृष्टि से संयमी छुपा हुआ नहीं और निस्सन्देह फ़ज़्ल (कृपा) अल्लाह के हाथ में है और वह जिसे चाहता है प्रदान करता है। जो व्यक्ति पूर्ण रुचि के साथ अल्लाह के दामन से सम्बद्ध हो जाता है तो वह उसे हरगिज़ नष्ट नहीं करता चाहे दुनिया भर की हर चीज़ उस की शत्रु हो जाए और अल्लाह का अभिलाषी किसी हानि और तंगी का मुंह नहीं देखता तथा अल्लाह सच्चों को बिना यार और सहायक नहीं छोड़ता।

अल्लाहु अकबर! इन दोनों (अबू बक्र[रज़ि०] उमर[रज़ि०]) की सच्चाई और निष्कपटता की क्या ऊंची प्रतिष्ठा है। वे दोनों ऐसे (मुबारक) मदफ़न (क़ब्रिस्तान) में दफ़्न हुए कि यदि मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम जीवित होते तो सौ गर्व के साथ वहां दफ़्न होने की अभिलाषा करते। परन्तु यह स्थान केवल अभिलाषा (आर्ज़ू) से तो प्राप्त नहीं हो सकता और न केवल इच्छा से प्रदान किया जा सकता है बल्कि यह तो ख़ुदा के दरबार की ओर से एक अनादि रहमत है और यह रहमत केवल उन्हीं लोगों की ओर मुंह करती है जिन की ओर (ख़ुदा की) कृपा अनादि काल से ध्यान देती हो। (यही लोग हैं) जिन्हें अन्ततः अल्लाह के फ़ज़्ल की चादरें ढक लेती हैं। मुझे ऐसे लोगों पर अत्यधिक आश्चर्य होता है

ويلعنون، وسيعلم الذين ظلموا بأى منقلب ينقلبون إن
الصدّيق والفاروق كانا أميرا ركبٍ علوا لله قُننًا عُلى ودعوا
إلى الحق أهل الحضارة والفلا، حتى سرت دعوتهم إلى بلاد
قصوى، وقد أُودعت خلافتهما لفائف ثمرات الإسلام،
وضُمِّخت بالطِيب العميم بأنواع فوز المرام وكان الإسلام
فى زمن الصدّيق متألّما بأنواع الحريق، وشارفَ أن تُشنّ على
سِرْبِه فوج الغارات، وتَنَادَى عند نهبه يا للثارات، فأدركه
الرب الجليل بصدق الصدّيق، وأخرج بَعاعه من البئر
العميق، فرجع إلى حالة الصلاح من مَحْلةٍ نازحة، وحالةٍ
رازحة، فأوجب لنا الإنصاف أن نشكر هذا المعين ولا نُبالى

जो अली[रज़ि०] को सिद्दीक़ (अकबर) पर श्रेष्ठता देते हैं और उस जांच-पड़ताल की हुई बात की ओर नहीं लौटते और (अली) मुर्तज़ा[रज़ि०] की प्रशंसा पर परवानों (पतंगों) की तरह गिरते हैं और अत्यन्त पवित्र सिद्दीक़[रज़ि०] के पद पर नज़र नहीं डालते। तो तू इन लोगों से पूछ जो सिद्दीक़ अकबर[रज़ि०] को काफ़िर ठहराते और उन पर लानतें डालते हैं। ये अत्याचारी लोग बहुत जल्दी जान लेंगे कि किस स्थान की ओर उन्हें लौट कर जाना है। निस्सन्देह अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि०] और उमर फ़ारूक[रज़ि०] उस कारवां के अमीर थे जिसने अल्लाह के लिए ऊंची चोटियों पर विजय प्राप्त की और उन्होंने सभ्य तथा ख़ानाबदोशों को सच की दावत दी, यहां तक कि उन की यह दावत दूर के देशों तक फैल गई। इन दोनों की ख़िलाफ़त में बड़ी प्रचुरता से इस्लाम के फल दिए गए और कई प्रकार की सफलताओं एवं कामयाबियों के साथ पूर्ण सुगंध से सुगंधित की गई और इस्लाम सिद्दीक़ अकबर[रज़ि०] के काल में विभिन्न प्रकार के (उपद्रवों की) आग से पीड़ित था और निकट था कि खुली-खुली लूट-मार करके उस की जमाअत पर आक्रमणकारी हों। और उसके लूट लेने पर विजय के नारे लगाएं तो ठीक उस समय हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि०] की सच्चाई के कारण प्रतापी रब्ब इस्लाम की सहायता को

المعادين فإياك أن تلوى عذارك عمن نصر سيدك ومختارك، وحفظ دينك ودارك، وقصد لله فلاحك وما امتار سماحك فيا للعجب الاظهر كيف يُنكَرُ مجدُ الصدّيق الاكبر، وقد برقت شمائله كالنيّر؟ ولا شك أن كل مؤمن يأكل أُكُلَ غَرْسه، ويستفيض من علوم درسه أعطى لديننا الفرقان، ولدنيانا الامن والامان، ومن أنكره فقد مان ولقى الشيط والشيطان والذين التبس عليهم مقامه فما أخطأوا إلا عمدًا، وحسبوا الغدق ثمدًا، فتوغروا غضبًا، وحقروا رجلًا كان أوّلَ المكرمين

आ पहुंचा और गहरे कुएं से उस का प्रिय सामान निकाला। अतः इस्लाम दुर्दशा की पराकाष्ठ से उत्तम हालत की ओर लौट आया। तो इन्साफ़ हम पर यह अनिवार्य करता है कि हम उस सहायक का धन्यवाद अदा करें और दुश्मनों की परवाह न करें। अतः तू उस व्यक्ति की उपेक्षा न कर जिसने तेरे सय्यिद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहायता की और तेरे धर्म और घर की रक्षा की और ख़ुदा के लिए तेरी अच्छाई चाही और तुझ से बदला न चाहा तो फिर बड़े आश्चर्य का स्थान है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] की बुज़ुर्गी से कैसे इन्कार किया जा सकता है? और यह वास्तविकता है कि आप की प्रशंसनीय विशेषताएं सूर्य के समान चमकने वाली हैं और निस्सन्देह मोमिन आप के वृक्ष के लगाए हुए फल खाता और आप के पढ़ाई हुई विद्याओं लाभान्वित हो रहा है। आप न हमारे धर्म के लिए फ़ुर्क़ान तथा हमारी दुनिया के लिए अमन-व-अमान प्रदान किया और जिसने इस से इन्कार किया तो उसने झूठ बोला और मृत्यु तथा शैतान से जा मिला। और जिन लोगों पर आप का पद एवं मर्तबा संदिग्ध रही ऐसे लोग जान बूझ कर ग़लती पर हैं और उन्होंने अधिक पानी को थोड़ा जाना। अतः वे क्रोध से उठे और ऐसे व्यक्ति का तिरस्कार किया जो प्रथम श्रेणी का आदरणीय और सम्माननीय था।

وإن نفس الصدّيق كانت جامعة للرجاء والخوف، والخشية والشوق، والانس والمحبة وكان جوهر فطرته أبلغ وأكمل فى الصفاء، منقطعًا إلى حضرة الكبرياء، مفارقا من النفس ولذاتها، بعيدًا عن الاهواء وجذباتها، وكان من المتبتلين وما صدر منه إلّا الإصلاح، وما ظهر منه للمؤمنين إلا الفلاح وكان مبرًّأً من تهمة الإيذاء والضير، فلا تنظر إلى التنازعات الداخلية، واحملها على محامل الخير ألا تُفكر أن الرجل الذى ما التفت من أوامر ربه ومرضاته إلى بنيه وبناته، ليجعلهم متمولين أو مِن أحد وُلاته، وما كان له من الدنيا إلا ما كان ميرةَ

और हज़रत सिद्दीक़[रज़ि॰] की महान हस्ती आशा तथा भय, डर और शौक़, स्नेह और प्रेम की संग्रहीता थी और आप की प्रकृति का जौहर श्रद्धा एवं निष्ठा में सर्वांगपूर्ण था और अल्लाह तआला की ओर पूर्ण रूप से कट चुका था तथा नफ़्स और उसके आनन्दों से खाली और इच्छाओं एवं लोलुपताओं और उस की भावनाओं से पूर्णतया दूर था और आप असीम श्रेणी के संसार से विरिक्त थे और आप से सुधार ही जारी हुआ तथा आप[रज़ि॰] से मोमिनों के लिए भलाई और कल्याण ही प्रकट हुआ। आप कष्ट एवं दु:ख देने के आरोप से पवित्र थे। इसलिए तू आन्तरिक विवादों की ओर न देख बल्कि उन्हें भलाई की पद्धति पर चरितार्थ कर। क्या तू विचार नहीं करता कि वह व्यक्ति जिस ने अपने रब्ब के आदेशों और प्रसन्नता से अपना ध्यान अपने बेटे, बेटियों की ओर नहीं फेरा ताकि वह उन्हें धनाढ्य बनाएं या उन्हें अपने कर्मचारियों में से बनाएं। और जिसने दुनिया से केवल इतना ही हिस्सा लिया जितना उसकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त था तो फिर तू कैसे सोच सकता है कि उसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सन्तान पर अत्याचार वैध रखा होगा। इसके बावजूद कि अल्लाह तआला ने आप को आपकी अच्छी नीयत के कारण उन सब पर श्रेष्ठता प्रदान की हुई थी और

ضروراتـه، فكيـف تظـن أنـه ظلـم آل رسـول الله مـع أن الله فضّـله عـلى كلّـهم بحسـن نياتـه، وجعـله مـن المؤيديـن وليـس كل نـزاع مبنيًّـا عـلى فسـاد النيـات كمـا زعـم بعـض متبعـى الجهـلات، بـل رُبَّ نـزاع يحـدث مـن اختـلاف الاجتهـادات فالطريـق الانسـب والمنهـج الاصـوب أن نقـول إن مبـدأ التنازعـات فى بعـض صحابـة خـير الكائنـات كانـت الاجتهـادات لا الظلامـات والسـيئات والمجتهـدون معفـوون ولـو كانـوا مخطئـين وقـد يحـدث الغـلّ والحقـد مـن التنازعـات فى الصلحـاء، بـل فى أكابـر الاتقيـاء والاصفيـاء ، وفى ذلـك مصالـح لله ربّ العالمـين

فكلّمـا جـرى فيـهم أو خـرج مِـن فِيـهم، فيجـب أن يُطـوى لا أن يُـروَى، ويجـب أن يُفـوَّض أمورهـم إلى الله الذى هـو ولى الصالحـين وقـد جـرت سُـنّته أنـه يقضـى بـين

आपको अपना समर्थन प्राप्त बनाया हुआ था और हर झगड़ा नीयतों की ख़राबी पर आधारित नहीं होता जैसा कि मूर्खता से कुछ अनुयायियों ने समझ रखा है बल्कि अधिकतर झगड़े विवेचना के मतभेद से पैदा होते हैं सबसे अधिक उचित और सही तरीका यही है कि हम कहें कि कायनात में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा[रज़ि॰] में विवादों का प्रारंभ वास्तव में विवेचनाएं थी न कि ज़ुल्म और बुराइयां करना और विवेचना करने वाले चाहे दोषी हों, क्षमायोग्य होते हैं। कभी-कभी सदाचारी बल्कि महान संयमियों और वलियों के विवादों में भी वैर और ईर्ष्या पैदा हो जाती है और उसमें अल्लाह रब्बुल आलमीन के हित होते हैं।

इसलिए जो कुछ भी (सहाबा[रज़ि॰]) के मध्य घटित हुआ या उन की ज़ुबानों से निकला उसे वर्णन करने की बजाए उसे लपेट देना ही उचित है। और उनके उन मामलों को अल्लाह के सुपुर्द करना जो कि सदाचारियों का अभिभावक है, आवश्यक है। उसकी जारी सुन्नत यही है कि वह सदाचारी लोगों के मध्य ऐसे

الصالحين على طريق لا يقضى عليه قضايا الفاسقين، فإنهم كلّهم أحباؤه و كلهم من المحبين المقبولين، ولاجل ذلك أخبرنا ربنا عن مآل نزاعهم وقال وهو أصدق القائلين وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ. هذا هو الاصل الصحيح، والحق الصريح، ولكن العامة لا يُحققون فى أمر كأولى الابصار، بل يقبلون القِصص بغضّ الابصار، ثم يزيد أحدٌ منهم شيئا على الاصل المنقول، ويتلقاه الآخر بالقبول، ويزيد عليه شيئا آخر من عند نفسه، ثم يسمعه ثالث بشدة حرصه، فيؤمن به ويُلحق به حواشى أُخرى، وهلمّ جرّا، حتى تستتر الحقيقة الاولى، وتظهر حقيقة جديدة تخالف الحق الاجلى، و كذلك هلك الناس من خيانات الراوين

ढंग से फैसले करता है जिस ढंग से वह पापियों के फ़ैसले नहीं किया करता। क्योंकि वे सब उसके प्यारे और उसके दरबार में प्रिय और मक़्बूल (मान्य) हैं। इसलिए हमारे रब्ब ने जो समस्त सच्चों में सर्वाधिक सच्चा है हमें उन के परस्पर विवाद के अंजाम के बारे में यह बताया है कि

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ✶

यह है वह सही असल और स्पष्ट सच। परन्तु जन सामान्य किसी मामले में विवेकी लोगों की तरह छान-बीन नहीं करते, बल्कि आंखें बन्द करके किस्सों को स्वीकार कर लेते हैं। फिर उनमें से कोई एक असल नक़ल किए हुए में कुछ बढ़ा देता है और दूसरा उसे स्वीकार कर लेता है तथा अपनी ओर से उसमें कुछ और बढ़ा देता है और फिर तीसरा बड़ी रुचि से उसे सुनता और उस पर ईमान ले आता है। और उस पर वह अतिरिक्त हाशिया चढ़ा देता है तथा यह सिलसिला इसी प्रकार

✶ और हम उनके दिलों से जो भी द्वेष हैं निकाल बाहर करेंगे। वे भाई-भाई बनते हुए तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे। (अलहिज्र-48)

و کم من حقیقة تسترت، وواقعات اختفت وقِصص بُدّلت، وأخبار غُیّرت وحُرّفت، و کم من مفتریات نُسجت، وأمور زیدت ونُقصت، ولا تعلم نفس ما کانت واقعة أوّلًا ثُم ما صُیّرت وجُعلت ولو أُحیِیَ الأوّلون من الصحابة وأهل البیت وأقارب خیر البریة، وعُرضت علیهم هذه القِصص، لتعجبوا وحولقوا واسترجعوا من مفتریات الناس، ومما طوّلوا الأمر من الوسواس الخنّاس، وجعلوا قطرةً کبحر عظیم، وأرَوا کجبالٍ ذرّةَ عظمٍ رمیمٍ، وجاء وا بکذب یخدع الغافلین

والحق أن الفتن قد تموجت فی أزمنة وسطی، وماجت کتموُّج الریح العاصفة والصراصر العظمٰی و کم من

चलता चला जाता है यहां तक कि पहली असल वास्तविकता ओझल हो जाती है और एक नए प्रकार की वास्तविकता जो ज़ाहिर और बाहर सच के सर्वथा विरुद्ध होती है, उभर आती है और इस प्रकार रावियों की बेईमानी से लोग मर जाते हैं।

और कितनी ही वास्तविकताएं हैं जो छुप गईं और कई घटनाएं हैं जो गोपनीयता के पर्दे में चली गईं और कितने किस्से बदल गए और कितनी रिवायतें अक्षरांतरित और परिवर्तित हो गईं और कितने झूठ गढ़े गए और कई बातों में कमी बेशी की गई। यह किसी को भी मालूम नहीं कि प्रारंभ में घटना क्या थी और फिर वह क्या से क्या हो गया। और यदि प्रारंभिक सहाबा अहले बैत और सृष्टि में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिजन (फिर से) जीवित कर दिए जाएं और ये सब किस्से उनके सामने प्रस्तुत किए जाएं तो वे हैरान और हक्का-बक्का रह जाएं और वे उन लोगों के मनघड़त झूठों के कारण लाहौलवला क़ुव्वत और इन्ना लिल्लाह पढ़ें कि उन्होंने शैतानी भ्रमों के प्रभाव के अन्तर्गत इस मामले को लम्बा किया और एक बूंद को अपार समुद्र बना दिया और एक सड़ी-गली हड्डी के कण को पर्वतों के समान दिखाया और लापरवाहों को छलग्रस्त करने के उद्देश्य से झूठ बोल दिया।

أراجيف المفترين قُبلت كأخبار الصادقين، فتَفطَّنْ ولا تكن من المستعجلين ولو أُعطيتَ مما أفاض الله علينا لقبلتَ ما قلتُ لك وما كنتَ من المعرضين والآن لا أعلم أنك تقبله أو تكون من المنكرين والذين كانت عداوة الشيخَين جوهرَ روحهم وجزءَ طبيعتهم، وديدنَ قريحتهم، لا يقبلون قولنا أبدا حتى يأتي أمر الله، ولا يصدّقون كشوفا ولو كانت ألوفا، فليتربصوا زمانا يُبدى ما فى صدور العالمين

أيها الناس لا تظنوا ظن السوء فى الصحابة، ولا تُهلكوا أنفسكم فى بوادى الاسترابة، تلك أمة قد خلت ولا تعلمون حقيقةً بعُدت واختفت، ولا تعلمون ما جرى بينهم، وكيف

सच बात यह है कि मध्यकाल में उपद्रवों में एक उत्तेजना पैदा हुई और वे उपद्रव एक तीव्र आंधी और तीव्रगामी हवा के तेज़ झोंकों की तरह लहरें मारने लगे। झूठ गढ़ने वालों की ग़लत अफ़वाहें थीं जो सच्चे लोगों की ख़बरों की तरह स्वीकार की गईं। इसलिए बुद्धि से काम ले और जल्दबाज़ी करने वालों में से मत बन। जो लाभ अल्लाह ने हमें दिया है यदि उसमें से कुछ भाग भी तुझे मिलता तो तू जो मैंने तुझे कहा है उसे अवश्य स्वीकार कर लेता और मुंह फेरने वालों में से न होता। और अब मुझे मालूम नहीं कि तू उसे स्वीकार करेगा या फिर इन्कार करने वालों में से होगा। और वे लोग कि दोनों शेखों (अबू बक्र रज़ि॰ और उमर रज़ि॰) की शत्रुता जिन की रूह का जौहर, उन की प्रकृति का भाग और उनकी तबियत बन चुकी है वे उस समय तक हमारी बात नहीं मानेंगे जब तक कि अल्लाह का आदेश नहीं आ जाता। और चाहे हज़ारों कश्फ़ भी हों वे उनकी पुष्टि नहीं करेंगे। अत: चाहिए कि वे उस समय की प्रतीक्षा करें जो दुनिया वालों के सीनों के रहस्यों को प्रकट कर देगा।

हे लोगो! सहाबा के बारे में कुधारणा मत करो और स्वयं को सन्देहों के जंगल और रेगिस्तान में मत भरो। यह एक जमाअत थी जो गुज़र चुकी और वह

زاغــوا بعــد مــا نــوّر الله عينــهم، فــلا تتبعــوا مــا ليــس لكــم بــه علــم و اتقــوا الله إن كنتــم خاشــعين و إن الصحابــة و أهــل البيــت كانــوا روحانيــين منقطعــين إلى الله و متبتلــين، فــلا أقبــل أبــدًا أنــهم تنازعــوا للدنيــا الدنيّــة، و أســرَّ بعضُــهم غِــلَّ البعــض فى الطويّــة، حــتى رجــع الامــر إلى تقاتُــل بينــهم و فســاد ذات البــين و عنــاد مبــين ولــو فرضنــا أن الصدّيــق الاكــبر كان مــن الذيــن آثــروا الدنيــا و زخرفهــا، و رضــوا بهــا و كان مــن الغاصبــين، فنضطــر حينئــذ إلى أن نقــرّ أنّ عليًّــا أســد الله أيضــا كان مــن المنافقــين، و مــا كان كمــا نخالــه مــن المتبتلــين؛ بــل كان يكــبّ عــلى الدنيــا و يطلــب زينتهــا، و كان فى زخارفهــا مــن الراغبــين ولاجــل ذلــك

वास्तविकता जो दूर हो गई और छुप गई तुम उसे नहीं जानते और न ही उससे अवगत हो जो उनके बीच गुज़रा। और वे कैसे पथभ्रष्ट हो सकते हैं जिन की आंखों को अल्लाह ने प्रकाशमान किया। जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान नहीं उसके पीछे मत लगो। और यदि तुम झुकने वाले हो तो अल्लाह का संयम (तक़्वा) ग्रहण करो। निस्सन्देह सब सहाबा और अहले बैत रूहानी लोग थे तथा ख़ुदा के लिए सब से अलग होने और उस से लौ लगाने वाले थे। इसलिए मैं यह कभी भी स्वीकार नहीं करता कि वे (सहाबा[रज़ि०]) तुच्छ संसार के लिए परस्पर लड़ने-झगड़ने लगे और एक-दूसरे के बारे में दिल में इतना वैर रखा, यहां तक कि मामला परस्पर युद्ध, पृथकता डालने वाले फ़साद, और खुली-खुली शत्रुता तक जा पहुंचा। और यदि हम यह मान भी लें कि सिद्दीक़ अकबर[रज़ि०] उन लोगों में से थे जिन्होंने दुनिया और उसके सौन्दर्य को प्राथमिकता दी और उन पर राज़ी हो गए और वह ख़यानत करने वाले थे तो ऐसी स्थिति में हम इस बात पर मज्बूर होंगे कि यह इक़रार करें कि शेरे ख़ुदा अली भी मुनाफ़िकों में सम्मिलित थे। और जैसा कि हम उनके बारे में समझते हैं वे दुनिया को त्याग कर अल्लाह से लौ लगाने वाले न थे बल्कि वे दुनिया पर गिरे हुए थे तथा

ما فارق الكافرين المرتدين، بل دخل فيهم كالمداهنين، واختار التقيّة إلى مدة قريبة من ثلاثين ثم لما كان الصدّيق الاكبر كافرا أو غاصبًا فى أعين علىّ المرتضى رضى الله تعالى عنه وأرضٰى، فلِمَ رضى بأن يُبايعه؟ ولِمَ ما هاجر من أرض الظلم والفتنة والارتداد إلى بلاد أخرى؟ ألم تكن أرض الله واسعة فيهاجر فيها كما هى سُنّة ذوى التقى؟ انظر إلى إبراهيم الذى وفّٰى كيف كان فى شهادة الحق شديد القوى، فلما رأى أن أباه ضلّ وغوى، ورأى القوم أنهم يعبدون الاصنام ويتركون الرب الاعلى، أعرض عنهم وما خاف وما بالٰى، وأُدخِل فى النار وأوذى من الاشرار، فما اختار التقيّة خوفا

उसके सौन्दर्य के अभिलाषी थे और उसकी सुन्दरताओं पर मुग्ध थे। इसी कारण से आप ने काफिर मुर्तदों का साथ न छोड़ा, बल्कि चापलूसी करने वालों की तरह उनमें सम्मिलित रहे और लगभग तीस वर्ष की अवधि तक तक़िया किए रखा। फिर जब सिद्दीक़ अकबर[रज़ि०] अली मुर्तज़ा[रज़ि०] की नज़र में काफ़िर या अपहरणकर्ता (ग़ासिब) थे तो फिर क्यों वह उनकी बैअत पर सहमत हुए और क्यों उन्होंने अन्याय, उपद्रव और धर्म से विमुखता की भूमि से दूसरे देशों की ओर हिजरत (प्रवास) न की? क्या अल्लाह की पृथ्वी इतनी विशाल न थी कि वह उसमें हिजरत कर जाते जैसा कि यह संयम धारण करने वालों की सुन्नत है। वफ़ादार इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखो कि वह सच की गवाही में कैसे शक्तिशाली थे। जब उन्होंने देखा कि उन का बाप गुमराह हो गया और सच के मार्ग से भटक गया है, और यह देखा कि उनकी क़ौम मूर्तियों की पूजा कर रही है और वे रब्बुल आला को छोड़ बैठे हैं तो उन्होंने उन से मुंह फेर लिया और न डरे और न परवाह की। वे आग में डाले गए और उपद्रवियों की ओर से कष्ट दिए गए परन्तु उन्होंने उपद्रवियों के भय से तक़िय: (किसी ज़ुल्म के डर से सच को छुपाना) नहीं किया। यह है नेक लोगों का जीवन

من الاشرار فهذا هي سيرة الابرار، لا يخافون السيوف ولا السنان، ويحسبون التقية من كبائر الإثم والفواحش والعدوان، وإن صدرت شمّةٌ منها كمثل ذلّة فيرجعون إلى الله مستغفرين

ونعجب من علي رضي الله عنه كيف بايع الصدّيقَ والفاروق، مع علمه بأنهما قد كفرا وأضاعا الحقوق، ولبث فيهما عمرًا واتّبعهما إخلاصا وعقيدة، وما لغِب وما وهَن وما أرى كراهة، وما اضمحلّت الداعية، وما منعته التقاة الإيمانية، مع أنه كان مطّلعا على فسادهم وكفرهم وارتدادهم، وما كان بينه وبين أقوام العرب بابا مسدودًا وحجابا ممدودًا وما كان من المسجونين وكان واجبا عليه أن يُهاجر إلى بعض أطراف العرب

चरित्र कि वे तलवार और भालों से नहीं डरते और वे तक़्रिय: को बड़ा गुनाह और निर्लज्जता और अत्याचार का सीमा से बढ़ जाना समझते हैं। यदि इन में से ग़लती के तौर पर एक कण भर भी हो जाए तो वे क्षमा माँगते हुए अल्लाह की ओर लौटते हैं।

हमें आश्चर्य है कि हज़रत अली[रज़ि०] ने यह जानते हुए भी कि सिद्दीक़[रज़ि०] और फ़ारूक[रज़ि०] काफ़िर हो गए हैं और उन्होंने अधिकारों का हनन किया है उनकी बैअत कैसे कर ली। वह (अली[रज़ि०]) लम्बी आयु दोनों के साथ रहे और पूर्ण निष्कपटता और श्रद्धापूर्वक उन दोनों का अनुकरण किया और (उसमें) न वह थके और न कमज़ोरी दिखाई और न ही किसी प्रकार की बददिली की अभिव्यक्ति की, न कोई कारण आड़े आया और न ही आप के ईमानी संयम ने आप को उस से रोका बावजूद इसके कि आप इन लोगों के फ़साद, कुफ़्र और धर्म से विमुखता से अवगत थे। और आप के तथा अरब क़ौमों के मध्य न कोई बन्द दरवाज़ा था और न ही कोई बड़ी रोक और

والشرق والغرب ويحث الناس على القتال ويهيج الاعراب للنضال، ويُسخرهم بفصاحة المقال ثم يقاتل قوما مرتدين

وقد اجتمع على المسيلمة الكذاب زهاء مائة ألف من الاعراب، و كان عليٌّ أحقّ بهذه النصرة، وأَولى لهذه الهمة، فلِمَ اتّبع الكافرين، ووالى وقعد كالكسالى وما قام كالمجاهدين؟ فأىّ أمر منعه من هذا الخروج مع إمارات الإقبال والعروج؟ ولِمَ ما نهض للحرب والبأس وتأييد الحق ودعوة الناس؟ ألم يكن أفصح القوم وأبلغهم فى العظات ومن الذين ينفخون الروح فى الملفوظات؟ فما كان جمع الناس عنده إلا فعل ساعة، بل أقلَّ منها لقوة بلاغة وبراعة، وتأثير جاذب

न ही आप क़ैदियों में से थे। आप पर यह आवश्यक था कि आप किसी दूसरे अरब क्षेत्र और पूरब और पश्चिम के किसी भाग की ओर हिजरत कर जाते और लोगों को युद्ध पर उकसाते और खाना-बदोशों को लड़ाई पर जोश दिलाते और सरस वर्णन शैली से उन्हें आज्ञाकारी बना लेते तथा फिर मुर्तद होने वाले लोगों से युद्ध करते।

मुसैलमा कज़्ज़ाब के पास लगभग एक लाख ख़ानाबदोश एकत्र हो गए थे, जबकि अली[रज़ि०] इस सहायता के अधिक अधिकारी थे और इस जंग के लिए अधिक उचित थे। फिर क्यों आप ने दोनों काफ़िरों का अनुकरण किया और उन से प्रेम व्यक्त किया और सुस्त लोगों की तरह बैठे रहे और मुजाहिदों की तरह न उठ खड़े हुए। वह कौन सी बात थी जिसने आप को समृद्धि और उत्थान के समस्त लक्षण होते हुए भी उस निकलने से रोके रखा। आप युद्ध और लड़ाई तथा सच के समर्थन और लोगों का (इस्लाम की) दावत देने के लिए क्यों न उठ खड़े हुए। क्या आप क़ौम के सब से सरस और सुबोध उपदेशक तथा उन

للسامعين ولما جمَعَ الناسَ الكاذبُ الدجالُ فكيف أسدُ الله الذى كان مؤيِّده الرب الفعّال، و كان محبوبَ رب العالمين

ثم من أعجب العجائب وأظهر الغرائب أنه ما اكتفى عليٌّ أن يكون من المبايعين، بل صلّى خلف الشيخَين كل صلاة، وما تخلف فى وقت من أوقات، وما أعرض كالشاكين ودخل فى شُوراهم وصدّق دعواهم، وأعانهم فى كل أمر بجهد همته وسعة طاقته، وما كان من المتخلفين فانظر أهذا من علامات الملهوفين المكفرين؟ وانظر كيف اتبع الكاذبين مع علمه بالكذب والافتراء كأن الصدق والكذب كان عنده كالسواء ألم يعلم أن الذين يتوكلون على قدير ذى القدرة

लोगों में से न थे जो शब्दों में जान डाल देते हैं। अपनी सुबोधता और प्रभावी वर्णन शैली के ज़ोर से तथा श्रोताओं के लिए अपने आकर्षणपूर्ण प्रभाव से लोगों को अपने पास एकत्र कर लेना आप के लिए मात्र एक घंटे बल्कि इस से भी बहुत कम समय का काम था। जब एक झूठे दज्जाल ने लोगों को एकत्र कर लिया तो ख़ुदा का शेर जिसकी सहायता करने वाला कर्मठ रब्ब था और जो समस्त लोकों के प्रतिपालक का प्रिय था क्यों न कर सका।

फिर बहुत अदभुत एवं आश्चर्यजनक बात यह है कि आप ने केवल बैअत करने वालों में से होने पर बस नहीं किया बल्कि हर नमाज़ शैख़ैन (अबू बक्र[रज़ि॰] और उमर[रज़ि॰]) के पीछे अदा की और किसी समय भी उसमें विलम्ब नहीं किया और न ही गिला करने वालों की तरह उस से मुंह फेरा। आप उनकी शूरा (परामर्श समिति) में सम्मिलित हुए और उन के दावे की पुष्टि की तथा हर मामले में अपनी पूरी हिम्मत और अपनी क्षमता के अनुसार शक्ति से उनकी सहायता की और पीछे रहने वालों में से न हुए। अत: विचार कर कि क्या पीड़ितों और काफ़िर कहे जाने वालों के यही लक्षण होते हैं? और इस पर भी विचार कर कि

لا يؤثـرون طريـق المداهنـة طرفـة عـين ولـو بالكراهـة، ولا يتركـون الصـدق ولـو أحرقـهم الصـدق وألقاهـم إلى التهلكـة وجعلـهم عِضِـين؟

وإن الصـدق مشـرب الأولياء، ومـن علامـات الأصفيـاء، ولكـن المرتضٰـى تـرك هـذه السـجيّة، ونحَـت لنفسـه التقيّـة، واتبـع طريقـا ذليـلا، وكان يحضـر فِنـاء الكافريـن بكـرة وأصيـلا، وكان مـن المادحـين وهـلّا اقتـدى بنـبيّ الثقلـين أو شـجاعة الحُسـين واتخـذ طريـق المحتالـين؟ وأنشـدك الله أهـذا مـن صفـات الذيـن تطهـرت قلوبـهم مـن رجـس الجـبن والمداهنـة، وأعطاهـم إيمانُـهم قـوةَ الجَنـان والمهجـة وزُكّـوا مـن كل نفـاق ومداهنـة، وخافـوا ربـهم وفرغـوا بعـده مـن كل خشـية؟ كلا

झूठ और इफ़्तिरा (झूठ गढ़ने) का ज्ञान होने के बावजूद वह (अली[रज़ि॰]) झूठों का अनुकरण क्यों करते रहे। मानो कि सच और झूठ उनके नज़दीक एक समान थे। क्या आप यह नहीं जानते थे कि जो लोग सामर्थ्यवान और शक्तिमान अस्तित्व पर भरोसा करते हैं। वे एक पल के लिए भी चाटुकारिता को महत्त्व नहीं देते, चाहे वे कितने ही विवश हों और वे सच को नहीं छोड़ते चाहे सच उन्हें जला दे और उन्हें तबाही में डाल दे और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दे।

सच्चाई वलियों का मत और सूफियों के लक्षणों में से है। परन्तु (अली) मुर्तज़ा[रज़ि॰] ने इस आदत को त्याग दिया और अपने लिए तक़िय: का आविष्कार कर लिया और अधम मार्ग अपना लिया, तथा काफ़िरों के आंगन में सुबह-शाम हाज़िरी देते रहे और वह यशोगान करने वालों में रहे। क्यों न आप ने नबी सक़्लैन (इन्सान और जिन्नों के नबी) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण किया या हुसैन की बहादुरी दिखाई और बहाना बनाने वालों का मार्ग अपनाया? मैं अल्लाह की क़सम देकर तुम से पूछता हूं कि क्या ये विशेषताएं उन लोगों की हो सकती हैं जिन के दिल कायरता और चापलूसी की गन्दगी से पवित्र हों और

بل هذه الصفات توجد فی قوم آثروا الاهواء علی حضرة العزة، وقدّموا الدنیا علی الآخرة، وما قدروا اللّٰه حق قدره، وما استناروا مِن بدره، وما کانوا مخلصین وإنی عاشرت الخواص والعوام، ورأیت کل طبقة من الإنام، ولکنی ما رأیت سیرة التقیة وإخفاء الحق والحقیقة إلا فی الذین لا یُبالون علاقة حضرة العزة و واللّٰه، لا ترضی نفسی لطرفة عین أن أداهن فی الدین ولو قُطعتُ بالسکین، و کذلک کل من هداه اللّٰه فضلا ورحما، ورزق من الإخلاص رزقا حسنا، فلا یرضی بالنفاق وسیر المنافقین أما قرأتَ قصة قوم اختاروا الموت علی حیاة المداهنة وما شاءوا أن یعیشوا طرفة عین بالتقیة

जिन का ईमान दिल और जान को शक्ति प्रदान करता है तथा जो प्रत्येक फूट और चापलूसी से पवित्र और स्वच्छ हों, तथा वे जो केवल अपने रब्ब से डरते हों। उस हस्ती के अतिरिक्त दूसरे हर भय से खाली हों। हरगिज़ नहीं बल्कि ये विशेषताएं तो उन लोगों में पाई जाती हैं जिन्होंने रब्बुलइज़्ज़त (ख़ुदा तआला) पर अपनी नफ़्स की इच्छाओं को प्राथमिकता दी हुई होती है और आखिरत को दुनिया पर तर्जीह (प्राथमिकता) दी होती है, जिन्होंने अल्लाह को यथायोग्य महत्त्व नहीं दिया और न उन्होंने उसके चौदहवीं के पूर्ण चन्द्रमा (मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्रकाश से प्रकाश पाया और वे निष्कपट नहीं थे। मेरा मेलजोल विशेष और सामान्य जन से रहा है और मैंने हर वर्ग के लोगों को देखा है। किन्तु मैंने तक़िय: तथा हक़ और सच्चाई गुप्त रखने का चरित्र केवल उन लोगों मे देखा है जो ख़ुदा तआला से संबंध रखने की परवाह नहीं करते। अल्लाह की क़सम मैं एक पल के लिए भी यह पसन्द नहीं करता कि मैं धर्म के मामले में चापलूसी करूं चाहे छुरी से मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं। इसी प्रकार हर वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल और रहम (कृपा एवं दया) से हिदायत दी हो और जिसे निष्कपटता पूर्वक अच्छी जीविका प्रदान की गई हो कभी फूट

وقالوا رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ. فيا حسرة على الشيعة إنهم اجترؤوا على ذمّ المرتضى بما كان عندهم من منافرة للصدّيق الإتقى، وهفَتْ أحلامهم بتعصب أعمى يتعامون مع المصباح المتّقد، ولا يتأملون تأمُّل المنتقد وإنّي أرى كلماتهم مجموعة ريب، وملفوظاتهم رجم غيب، وما مسّهم ريح المحققين

أيها الناظر فى هذا الكتاب إن كنتَ من عشاق الحق والصواب، فكفاك آية الاستخلاف لتحصيل ترياق الحق ودفع الذعاف، فإن فيها برهانا قويا للمنصفين فلا تحسب

तथा फूट डालने वालों के आचरण को पसंद नहीं करेगा। क्या तुम ने उन लोगों का वृतांत नहीं पढ़ा जिन्होंने चापलूसी के जीवन पर मौत को अपनाया और पल भर के लिए भी पसन्द न किया कि वे तक़िय: के साथ जीवन व्यतीत करें और वे यह दुआ मांगते रहे कि-

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ✴

अत: शियों पर अफ़सोस है कि वे सबसे (अधिक) संयमी हज़रत सिद्दीक़ अकबर[रज़ि॰] से नफ़रत करने के कारण अली मुर्तज़ा[रज़ि॰] के उस निन्दा करने पर दिलेर हुए हैं और अंधे पक्षपात के कारण उनकी अक्लें मारी गईं वे रौशन चिराग के होते हुए भी अन्धे बन रहे हैं और वे समीक्षा और नज़र रखने वाले व्यक्ति जैसी सोच से नहीं सोचते। मैं उनकी बातों को सन्देहों का संग्रह और उनके शब्दों को बिना सर-पैर का समझता हूं तथा उनको अन्वेषकों की हवा तक नहीं पहुंची।

हे इस पुस्तक को गहरी नज़र से पढ़ने वाले! यदि तू सच्चाई और ईमानदारी का आसक्त है तो तेरे लिए सच्चाई के विषनाशक (तिरयाक़) को प्राप्त करने और

✴ हे हमारे रब्ब! हम पर सब्र उंढेल और हमें मुसलमान होने की हालत में मृत्यु दे। (अल आराफ़-127)

الاخيـار كأهـل فسـاد، ولا تُلحق هُـودًا بِعَـاد، وتَفكَّـرْ لسـاعة كالمحققـين وأنـت تعلـم أن الانبـاء المسـتقبلة مـن الله الرحمـان تكـون كقضـاة لقضايـا أهـل الحـق وأهـل العـدوان، أو كجنـود الله لفتـح بـلاد البغـي والطغيـان، فتُفـرِّج ضيـق المشـكلات بِكرّاتِهـا، حـتى يُـرى مـا كان ضنـكًا رحيبًـا بقـوة صـلاتها فتبـارز هـذه الانبـاءُ كل مناضـل برمـح خضيـب، حـتى تقـود إلى اليقـين كل مرتـاب ومريـب، وتقطـع معاذيـر المعترضـين وكذلـك وقعـت آيـة الاسـتخلاف، فإنهـا تَـدُعّ كل طاعـن حـتى ينثـنى عـن موقـف الطعـن والمصـافّ، وتُظهـر الحـق عـلى الاعـداء ولـو كانـوا كارهـين فـإن الآيـة تُبشـر النـاس بأيـام الامـن

तीव्र एवं विष से बचने के लिए इस्तिख़्लाफ़ की आयत (ख़िलाफ़त की आयत) ही पर्याप्त है। क्योंकि उसमें न्याय प्रिय लोगों के लिए शक्तिशाली तर्क मौजूद है। अत: नेक आचरण वालों को फ़साद फैलाने वालों के समान मत समझ और हूद अलैहिस्सलाम को 'आद' से मिला और पल भर के लिए अन्वेषकों के समान सोच। और तुम जानते हो कि दयालु ख़ुदा की ओर से भविष्य की ख़बरों की हैसियत ईमानदार लोगों और शत्रुओं के मध्य होने वाले मुकद्दमों के लिए न्यायधीशों की सी होती है या फिर अल्लाह की सेनाओं जैसी होती है जो विद्रोह और उद्दण्डता के देशों को विजय करने के लिए नियुक्त हैं। जो अपने आक्रमणों की शक्ति से कठिनाइयों की तंगी को समृद्धि में बदल देते हैं। यहां तक कि उनकी दुआ की शक्ति से तंगी, समृद्धि दिखाई देने लगती है। फिर ये ख़बरें खून में सने हुए भाले से हर प्रतिद्वन्दी का मुक़ाबला करती हैं। यहां तक कि वे हर सन्देह एवं शंका में ग्रस्त व्यक्ति को विश्वास की ओर ले आती हैं और ऐतराज़ करने वालों के बहानों को काट कर रख देती हैं और ख़िलाफ़त की आयत भी कुछ ऐसी ही है क्योंकि यह आयत हर कटाक्ष करने वाले को धक्का देती है, यहां तक कि रणभूमि और युद्ध स्थल से उसका मुंह फिर जाता है और दुश्मनों पर सत्य को विजयी कर देती है

والاطمئنان بعد زمن الخوف من أهل الاعتساف والعدوان، ولا يصلح لِمِصْداقيّتها إلا خلافة الصدّيق كما لا يخفى على أهل التحقيق فإن خلافة عليّ المرتضٰى ما كان مصداق هذا العروج والعُلى والفوز الاجلى، بل لم يزل تبتزّها عِداها ما فيه من قوة وحِدّة مداها، وأسقطوها فى هوّة وتركوا حق أُخوّة، حتى أصاروها كبيتٍ أوهنَ من بيت العنكبوت، وتركوا أهلها كالمتحير المبهوت ولا شك أن عليّا كان نُجعةَ الرُوّاد وقدوة الاجواد، وحجة الله على العباد، وخيرَ الناس من أهل الزمان، ونورَ الله لإنارة البلدان، ولكن أيام خلافته ما كان زمن الامن والامان، بل زمان صراصر الفتن والعدوان

चाहे वे उसे पसन्द ही न कर रहे हों। अत: निस्सन्देह यह आयत लोगों को अन्याय और अत्याचार तथा उद्दण्डता करने वालों को भय के समय के बाद अमन और सन्तोष के दिनों की ख़ुशख़बरी देती है और उसका पूर्ण चरितार्थ होने की योग्यता केवल ख़िलाफ़त-ए-सिद्दीक़[रज़ि०] ही रखती है। जैसा कि यह मामला अन्वेषकों से छुपा हुआ नहीं क्योंकि हज़रत अली मुर्तज़ा[रज़ि०] की ख़िलाफ़त उस उत्थान, बुलन्दी और उच्चतम सफलता की चरितार्थ नहीं हो सकती बल्कि (अली[रज़ि०] की ख़िलाफत) के दुश्मनों ने उस की शक्ति को तथा उसकी तलवारों की काट को समाप्त कर लिया था और उसे गहरे गड्ढे में दे फेंका तथा भाई-चारे के अधिकार को छोड़ दिया, यहां तक कि उसकी हालत ऐसे घर की तरह बना दी जो मकड़ी के जाले से भी अधिक कमज़ोर हो और उन्होंने अहले ख़िलाफ़त को हैरान और परेशान कर दिया और इसमें कणभर सन्देह नहीं कि हज़रत अली[रज़ि०] (सच के) अभिलाषियों का आशा-स्थल और दानशील लोगों का अद्वितीय नमूना तथा (ख़ुदा के) बन्दों के लिए ख़ुदा की हुज्जत थे तथा अपने युग के लोगों में उत्तम इन्सान और देशों को रोशन करने के लिए अल्लाह के नूर थे। परन्तु आप की ख़िलाफ़त का दौर अमन और शान्ति का युग न था बल्कि उपद्रवों, अत्याचारों और ज़ुल्म के सीमा

و كان الناس يختلفون فى خلافته و خلافة ابن أبى سفيان، و كانوا ينتظرون إليهما كحيران، و بعضهم حسبوهما كفَرْقَدَى سماءٍ و كزَنْدَين فى وِعاءٍ و الحق أن الحق كان مع المرتضى، و مَن قاتَلَه فى وقته فبغى و طغى، و لكن خلافته ما كان مصداق الامن المبشَّر به من الرحمٰن، بل أوذى المرتضى من الاقران، و دِيست خلافته تحت أنواع الفتن و أصناف الافتنان، و كان فضل الله عليه عظيما، و لكن عاش محزونا و أليما، و ما قدر على أن يشيع الدين و يرجم الشياطين كالخلفاء الاولين، بل ما فرغ عن أسنّة القوم، و مُنع من كل القصد و الرَّوْم و ما ألّبوه بل أضبُّوا على إكثار الجور، و ما عَدَّوا عن الاذى بل زاحموه و قعدوا فى المَور، و كان صبورا

से अधिक बढ़ जाने की तीव्र हवाओं का युग था। जन सामान्य आप की और इब्ने अबी सुफ़ियान की ख़िलाफ़त के बारे में मतभेद करते थे और इन दोनों की ओर आश्चर्य-चकित व्यक्ति के समान टकटकी लगाए बैठे थे तथा कुछ लोग इन दोनों को आकाश के फ़र्क़द✶ नामक दो सितारों के समान समझते थे। और दोनों को श्रेणी में एक समान समझते थे परन्तु सच यह है कि हक़ (अली) मुर्तज़ा[रज़ि॰] के साथ था। और जिसने आप के काल में (दौर में) आप से युद्ध किया तो उसने विद्रोह और उद्दण्डता की। परन्तु आप की ख़िलाफ़त उस अमन की चरितार्थ न थी जिसकी ख़ुश ख़बरी कृपालु ख़ुदा की तरफ़ से दी गई थी बल्कि (हज़रत अली) मुर्तज़ा[रज़ि॰] को अनेक विरोधियों की ओर से कष्ट दिया गया और आप की ख़िलाफ़त विभिन्न प्रकार के उपद्रवों के नीचे कुचली गई, आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) था परन्तु जीवन भर आप शोकग्रस्त और ज़ख़्मी दिल वाले रहे और पहले ख़लीफ़ों की तरह धर्म-प्रचार तथा शैतानों को पत्थरों से मार डालने

✶ **फ़र्क़द-** पूर्वी ध्रुव में निकलने वाले दो सितारे जो शाम से सवेरे तक दिखाई देते हैं छुपते नहीं। (अनुवादक)

ومن الصالحين فلا يمكن أن نجعل خلافته مصداق هذه البشارة، فإن خلافته كانت فی أيام الفساد و البغی و الخسارة، وما ظهر الامن فی ذلك الزمن، بل ظهر الخوف بعد الامن، و بدأت الفتن، و تواترت المحن، وظهرت اختلالات فی نظام الإسلام، و اختلافات فی أُمّة خير الانام، وفُتحت أبواب الفتن، و سُدِّدَ الحقد و الضغن، و كان فی كل يوم جديد نزاعُ قوم جديد، و كثرت فتن الزمن، وطارت طيور الامن، و كانت المفاسد هائجة، و الفتن مائجة، حتی قتل الحسين سيد المظلومين-

ومن تظنّی أن الخلافة كان أمرًا روحانيا من الله رب العالمين، و كان مصداقه المرتضٰی من أول الحين، ولكنه

पर समर्थ न हो सके बल्कि आप को क़ौम के कटाक्षों से ही फ़ुर्सत न मिली और आपको हर इरादे और इच्छा से वंचित किया गया। वे आप की सहायता के लिए एकत्र न हुए बल्कि आप पर निरन्तर अत्याचार करने पर एकत्र हो गए और कष्ट देने से न रुके बल्कि आप की रोक-टोक की और हर मार्ग में बैठे तथा आप बहुत धैर्यवान और नेक लोगों में से थे। परन्तु यह संभव नहीं कि हम उन की ख़िलाफ़त को इस (आयत-ए-इस्तिख़्लाफ़ वाली) ख़ुशख़बरी का चरितार्थ ठहराएं। क्योंकि आप की ख़िलाफ़त फ़साद, विद्रोह और क्षति के युग में थी। और उस दौर (युग) में अमन प्रकट न हुआ बल्कि अमन के बाद भय प्रकट हुआ तथा उपद्रव आरंभ हुए और निरन्तर कष्ट आए तथा इस्लाम की व्यवस्था में कमज़ोरी प्रकट हुई और खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में मतभेद प्रकट हुए और उपद्रवों के दरवाज़े तथा ईर्ष्या एवं वैर के मार्ग खुल गए तथा प्रतिदिन क़ौम का नया झगड़ा उठ खड़ा हुआ। युग के उपद्रवों की बहुतात हो गई और अमन के पक्षी उड़ गए और बुराइयों में जोश पैदा हुआ और उपद्रव लहरें मारने लगे, यहाँ तक कि

أنِـف واسـتحى أن يُجـادل قومًـا ظالمـين، فهـذا عـذر قبيـح، ومـا يتلفـظ بـه إلا وقيـح بـل الحـق الذى يجـب أن يُقبَـل والصـدق الذى لـزم أن يُتقبـل أن مصـداق نبـأ الاسـتخلاف هـو الذى كان جامِـعَ هـذه الاوصـاف، وثبـت فيـه أنـه فتـح عـلى المسـلمين أبـواب أمـن وصـواب، ونجّاهـم مـن فتـن وعـذاب، وفـلَّ عـن الإسـلام حـدَّ كل نـاب، وشـمّر تشـمير مـن لا يألـو جهـدًا، ومـا لغـب ومـا وهـن حـتى سـوّى غـورًا ونجـدًا، وأعـاد الله عـلى يديـه الامـن المفقـود، والإقبـال المـوؤود، فـكان النـاس بعـد خوفـهم آمنـين والانبـاء المسـتقبلة إذا ظهـرت عـلى صورهـا

सय्यदुल मज़लूमीन (पीड़ितों के सरदार) हुसैन[रज़ि॰] क़त्ल कर दिए गए।

और जो व्यक्ति यह सोचता है कि ख़िलाफ़त समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा की ओर से एक रूहानी मामला था और पहले पल से ही हज़रत अली मुर्तज़ा[रज़ि॰] उसके चरितार्थ थे, परन्तु शर्म और लज्जा के कारण यह पसन्द न किया कि वह अत्याचारी क़ौम से झगड़ा मोल लें। तो ऐसा विचार एक बुरा बहाना है और एक निर्लज्ज (बेहया) व्यक्ति ही ऐसी बात मुंह पर ला सकता है। हां वह सच जिस का स्वीकार करना आवश्यक है और वह सच्चाई जिसे मानना अनिवार्य है वह यह है कि ख़िलाफ़त की भविष्यवाणी का चरितार्थ वही व्यक्ति है जो इन समस्त विशेषताओं का संग्रहीता हो और जिसके बारे में यह सिद्ध हो चुका हो कि उसने मुसलमानों पर अमन और ईमानदारी के दरवाज़े खोले और उन्हें उपद्रवों तथा अज़ाब से मुक्ति दिलाई और इस्लाम की प्रतिरक्षा में हर आक्रमणकारी के दांत तोड़ दिए और उस व्यक्ति के समान हिम्मत दिखाई जो अपने प्रयास में कोई कमी नहीं छोड़ता और न थका तथा न ही कमज़ोरी दिखाई, यहां तक उसने सब ऊंच-नीच को समतल कर दिया और वह अमन जो गुम हो चुका था और वह समृद्धि जो जीवित दफ़्न हो

الظاهـرة فصرفُهـا إلى معنى آخـر ظلـمٌ وفسـق بعـد المشـاهدة، فـإن الظهـور يشـفى الصـدور، ويهـب اليقـين ويلـين الصخـور، وإن فى فطـرة الإنسـان أنـه يُقـدّم المشـهود علـى غـيره مـن البيـان، وهـذا هـو المعيـار لذوى العرفـان فانظُـرْ مَـن أمـاط عـن الإسـلام وعثـاءه، وأعـاده إلى نضرتـه وأزال ضـرّاءه، وأهلـك المفسـدين، وأبـاد المرتدين ودعـا إلى ديـن الله كل فـارّ، وأراهـم الحـق بأنـوار، حـتى اكتظـت المسـاجد بالراجعـين، وأحيـا الارض بعـد موتهـا بـإذن رب العالمـين، وأزال حُمّـى النـاس مـع رحضائـه، ورحـض درن البغـى مـع خيـلائـه بمـاء معـين

चुकी थी उसे अल्लाह ने उसके हाथों बहाल कर दिया। इस प्रकार अपने भय के बाद लोग अमन से भर गए और जब भविष्य की भविष्यवाणियां अपने भौतिक रूप पर प्रकट हो जाएं तो देखने के बाद उनके दूसरे अर्थ करना अन्याय और पाप है, क्योंकि उनका प्रकटन सीनों को स्वास्थ्य प्रदान करता तथा विश्वास देता है और चट्टानों को मोम कर देता है। यह चीज़ मनुष्य के स्वभाव में दाखिल है कि वह देखने को वर्णन पर प्राथमिकता देता है और यही आरिफ़ों (आत्मज्ञानियों) के लिए मापदण्ड है। इसलिए इस बात पर भी तो विचार कर कि किस ने इस्लाम से संकटों को दूर किया और उसे उसकी शोभा लौटा दी और उस की कठिनाइयों का निवारण किया और फ़साद करने वालों को तबाह और मुर्तदों को मारा और हर भगोड़े को अल्लाह के धर्म की तरफ़ बुलाया और प्रकाशों के द्वारा उन्हें सच दिखाया यहां तक कि मस्जिदें रुजू करने वाले लोगों से भर गईं तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक की आज्ञा से पृथ्वी को उसके मुर्दा हो जाने के बाद जीवित किया और लोगों के बुखार को रोगों सहित दूर किया और बग़ावत के मैल को अहंकार सहित पवित्र और स्वच्छ पानी से धो डाला।

ورحم الله الصدّيق، أحيا الإسلام وقتل الزناديق، وفاض بمعروفه إلى يوم الدين وكان بَكّاءً ومن المتبتلين وكان من عادته التضرع والدعاء والاطّراح بين يدى المولٰى والبكاء والتذلّل على بابه، والاعتصام بأعتابه وكان يجتهد فى الدعاء فى السجدة، ويبكى عند التلاوة، ولا شك أنه فخر الإسلام والمرسلين وكان جوهره قريبًا من جوهر خير البريّة، وكان أول المستعدّين لقبول نفحات النبوة، وكان أول الذين رأوا حشرا روحانيا مِن حاشرٍ مثيلِ القيامة، وبدّلوا الجلابيب المتدنسة بالملاحف المطهرة، وضاهى

और अल्लाह सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) पर रहमतें उतारे कि आप ने इस्लाम को जीवित किया और नास्तिकों को मारा और क़यामत तक के लिए अपनी नेकियों का बड़ा लाभ जारी कर दिया। आप बहुत रोने वाले और ख़ुदा की तरफ़ लौ लगाने वाले थे और विनय, दुआ, ख़ुदा के आगे गिरे रहना उसके दरवाज़े पर रोने तथा विनीतता से झुके रहना और उसकी चौखट को दृढ़ता पूर्वक थामे रखना आप की आदत थी। आप सज्दे की अवस्था में दुआ में पूरा ज़ोर लगाते तथा तिलावत (क़ुर्आन को ऊंची आवाज़ में पढ़ने) के समय रोते थे। आप निस्सन्देह इस्लाम और रसूलों के गर्व हैं। आप की प्रकृति का जौहर ख़ैरुल बरीय: सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकृति के जौहर के बहुत क़रीब था। आप[रज़ि॰] नुबुव्वत की सुगंधों को स्वीकार करने के लिए तैयार लोगों में से प्रथम थे। हाशिर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से क़यामत के समान जो रूहानी हश्र (क़यामत के दिन मुर्दों का उठना) प्रकट हुआ आप[रज़ि॰] उसके देखने वालों में सर्वप्रथम थे और उन लोगों में से पहले थे जिन्होंने मैल से अटी चादरों को पवित्र और स्वच्छ लिबासों से बदल दिया और नबियों की अधिकांश आदतों में

الانبيــاء فى أكثــر ســير النبيــين

ولا نجــد فى القــرآن ذكــر أحــد مــن دون ذكــره قطعــا ويقينــا إلا ظــن الظانــين، والظــن لا يُغــنى مــن الحــق شــيئا ولا يــروى قومًــا طالبــين ومــن عــاداه فبينــه وبــين الحــق بــاب مســدود، لا ينفتــح أبــدًا إلا بعــد رجوعــه إلى ســيّد الصدّيقــين ولاجــل ذلــك لا نــرى فى الشــيعة رجــلا مــن الاوليــاء، ولا أحــدًا مــن زمــر الاتقيــاء، فإنــهم عــلى أعمــال غــير مرضيــة عنــد الله، وإنــهم يُعــادون الصالحــين

नबियों के समान थे।

हम क़ुर्आन करीम में आप की चर्चा के अतिरिक्त किसी अन्य (सहाबी) की चर्चा के अतिरिक्त किसी अन्य (सहाबी) की चर्चा कल्पना तथा गुमान करने वालों के गुमान के अलावा अटल और निश्चित तौर पर मौजूद नही पाते और गुमान वह चीज़ है जो सच के तुलना में कोई हैसियत नहीं रखता। और न ही वह (सच के) अभिलाषियों को सैराब (तृप्त) कर सकता है तथा जिसने आप से दुश्मनी की तो ऐसे व्यक्ति और सच के बीच एक ऐसा बन्द दरवाज़ा बाधक है जो कभी भी सिद्दीक़ों के सरदार की तरफ़ रुजू किए (लौटे) बिना न खुलेगा। यही कारण है कि हम शियों में कोई व्यक्ति वलियों में से नहीं पाते और न ही किसी एक को भी मुत्तक़ियों (संयमियों) के वर्ग में पाते हैं। निस्सन्देह वे ऐसे कर्मों पर स्थापित हैं जो अल्लाह के सामने अप्रिय हैं और फिर इस कारण से भी कि वे नेक लोगों से शत्रुता रखते हैं।

كلام موجز فى فضائل أبى بكر الصّديق رضى الله عنه و أرضاه

كان رضى الله عنه عارفا تامَّ المعرفة، حليم الخلق رحيم الفطرة، و كان يعيش فى زىّ الانكسار و الغربة، و كان كثير العفو و الشفقة و الرحمة، و كان يُعرف بنور الجبهة و كان شديد التعلق بالمصطفٰى، و التصقت روحه بروح خير الورى، و غشيهٗ من النور ما غشّى مقتداه محبوب المولى، و اختفى تحت شعشعان نور الرسول و فيوضه العظمى و كان ممتازًا من سائر الناس فى فهم القرآن و فى محبة سيد الرسل

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ह, की ख़ूबियों के बारे में संक्षिप्त वर्णन

आपरज़ि॰ पूर्ण मारिफ़त रखने वाले ख़ुदा के अध्यात्म ज्ञानी (आरिफ़ बिल्लाह), बड़े शालीन स्वभाव, और अत्यन्त मेहरबान (कृपालु) स्वभाव के मालिक थे। विनम्रता और निराश्रयता की हालत में जीवन व्यतीत करते थे। बहुत ही क्षमा करने वाले और साक्षात दया और रहमत थे। आपरज़ि॰ अपने मस्तक के प्रकाश से पहचाने जाते थे, आप का हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गहरा संबंध था और आप की रूह ख़ैरुलवरा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रूह से जुड़ी हुई थी और जिस प्रकाश ने आप के आक़ा-व-अनुकर्णीय और ख़ुदा के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ढांपा हुआ था और आप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश के उत्तम साए तथा आप के महान लाभों के नीचे छुपे हुए थे और क़ुर्आन समझने तथा रसूलों के सरदार तथा मानव जाति के गर्व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम में आप समस्त लोगों से विशिष्ट थे और जब आप पर आख़िरत का

وفخر نوع الإنسان ولما تجلى له النشأة الاخروية والاسرار الإلهية، نفَض التعلقات الدنيوية، ونبَذ العُلق الجسمانية، وانصبغ بصبغ المحبوب، وترك كل مُراد للواحد المطلوب، وتجردت نفسه عن كدورات الجسد، وتلونت بلون الحق الاحد، وغابت فى مرضاة ربّ العالمين وإذا تمكن الحبُّ الصادق الإلهى من جميع عروق نفسه، وجذر قلبه وذرات وجوده، وظهرت أنواره فى أفعاله وأقواله وقيامه وقعوده، سُمّى صدّيقًا وأُعطى علمًا غضا طريّا وعميقا، من حضرة خير الواهبين فكان الصدق له ملكة مستقرة وعادة طبعية، وبدئت فيه آثاره وأنواره فى كل قول وفعل، وحركة وسكون،

जीवन तथा ख़ुदा तआला के रहस्य प्रकट हुए तो आप ने समस्त सांसारिक संबंध तोड़ दिए। और शारिरिक बन्धनों को दूर फेंक दिया तथा आप अपने प्रियतम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रंग में रंगीन हो गए और एक बांछित हस्ती के लिए हर मनोकामना को त्याग दिया तथा समस्त शारीरिक गंदगियों से आप का नफ़्स पवित्र हो गया और सच्चे अद्वितीय ख़ुदा के रंग में रंगीन हो गया और रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों के रब्ब) की प्रसन्नता में खो गया। और जब ख़ुदा की सच्ची मुहब्बत आप के सम्पूर्ण शरीर तथा दिल की असीम गहराइयों में और अस्तित्व के हर कण में बस गई और आप के कार्यों तथा कथनों, में उठने-बैठने में उसके प्रकाश प्रकट हो गए तो आप सिद्दीक़ के नाम से नामित हुए और आप को अत्यन्त समृद्धि से तरोताज़ा तथा गहरा ज्ञान, समस्त प्रदान करने वालों में से उत्तम प्रदान करने वाले ख़ुदा के दरबार से प्रदान किया गया। सच्चाई आप की एक सुदृढ़ महारत और स्वाभाविक विशेषता थी तथा इस सच्चाई के लक्षण और प्रकाश आप[रज़ि०] में तथा आप[रज़ि०] की हर कथनी-करनी, गति और ठहराव और व्यक्तित्व में प्रकट हुए। आप आकाशों और ज़मीनों के प्रतिपालक की ओर से इनाम पाने वाले गिरोह में सम्मिलित

وحواس وأنفاس، وأُدخل فی المنعمین علیهم من رب السماوات والارضین وإنه کان نُسخة إجمالیة من کتاب النبوة، وکان إمام أرباب الفضل والفتوة، ومن بقیة طین النبیین

ولا تحسب قولنا هذا نوعًا من المبالغة ولا من قبیل المسامحة والتجوز، ولا من فور عین المحبة، بل هو الحقیقة التی ظهرت علیَّ من حضرة العزة وکان مشربه رضی اللّٰہ عنه التوکل علی رب الارباب، وقلة الالتفات إلی الاسباب، وکان کظلٍ لرسولنا وسیدنا صلی اللّٰہ علیه وسلم فی جمیع الآداب، وکانت له مناسبة أزلیة بحضرة خیر البریة،

किए गए। आप किताब-ए-नुबुव्वत की एक संक्षिप्त प्रति थे और आप श्रेष्ठ लोगों और शूरवीरों (बहादुरों) के इमाम थे तथा नबियों का स्वभाव रखने वाले चुने हुए लोगों में से थे।

तू हमारे इस कथन को किसी प्रकार की अतिश्योक्ति न समझ कर और न ही उसे नर्म आचरण एवं माफ़ करने के प्रकार से चरितार्थ कर और न ही उसे प्रेम के श्रोत से फूटने वाला समझ बल्कि यह वह वास्तविकता है जो ख़ुदा के दरबार से मुझ पर प्रकट हुई और आप[रज़ि॰] का मत समस्त प्रतिपालकों के प्रतिपालक पर भरोसा करना और सामानों की ओर कम ध्यान देना था और समस्त शिष्टाचार में हमारे रसूल और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) के तौर पर थे और आप को हज़रत ख़ैरुलबरीय: सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक अनादि अनुकूलता थी तथा यही कारण था कि आप को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ से पल भर में वह कुछ प्राप्त हो गया जो दूसरों को लम्बे समयों और बहुत दूर के महाद्वीपों में प्राप्त न हो सका। तू जान ले कि लाभ किसी मनुष्य की ओर केवल अनुकूलताओं के कारण ही मुंह करते हैं और सम्पूर्ण कायनात में अल्लाह की सुन्नत इसी प्रकार जारी और प्रचलित है। अत: जिस मनुष्य को क़िस्मत (भाग्य) लिखने वाले ने वलियों और सूफ़ियों

ولذلك حصل له من الفيض فى الساعة الواحدة ما لم يحصل للآخرين فى الازمنة المتطاولة والاقطار المتباعدة واعلم أن الفيوض لا تتوجه إلى أحد إلا بالمناسبات، وكذلك جرت عادة الله فى الكائنات، فالذى لم يُعطه القسّام ذرة مناسبة بالاولياء والاصفياء، فهذا الحرمان هو الذى يُعبَّر بالشقوة والشقاوة عند حضرة الكبرياء والسعيد الاتم الاكمل هو الذى أحاط عادات الحبيب حتى ضاهاه فى الالفاظ والكلمات والاساليب والاشقياء لا يفهمون هذا الكمال كالاكمه الذى لا يرٰى الالوان والاشكال، ولا حظ للشقى إلا من تجليات العظموت والهيبة، فإن فطرته لا ترى آيات الرحمة، ولا تشم

के साथ थोड़ा सा भी संबंध प्रदान न किया हो तो यही वह दुर्भाग्य है जिसे अल्लाह तआला के दरबार में निर्दयता और दुर्भाग्य समझा जाता है। सर्वांगपूर्ण सौभाग्यशाली वही मनुष्य है जिसने ख़ुदा के मित्र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदतों को घेरे में लिया हुआ हो यहां तक कि शब्दों, बातों और समस्त तौर-तरीक़ों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समानता पैदा कर ली हो। अभागे लोग तो उस खूबी को समझ नहीं सकते, जिस प्रकार एक जन्मजात अंधा रंगों और शक्लों को देख नहीं सकता। एक अभागे के भाग्य में तो ख़ुदा के रोब और भययुक्त चमकारों के अतिरिक्त कुछ नहीं होता क्योंकि उसकी प्रकृति रहमत के निशान नहीं देख सकती और जज़्ब और मोहब्बत थी सुगंध को नहीं सूंघ सकती और यह नहीं जानती कि निष्कपटता, भलाई, प्रेम तथा दिल की समृद्धि क्या हैं। क्योंकि वह (प्रकृति) तो अंधकारों से भरी हुई है फिर उसमें बरकतों के प्रकाश उतरें तो कैसे? बल्कि दुर्भाग्यशाली व्यक्ति का नफ़्स तो एक तीव्र और प्रचंड आंधी की मौजों (लहरों) की तरह मौजें मारता है और उसकी भावनाएं सच और सच्चाई देखने से उसे रोकती हैं। इसलिए वह भाग्यशाली लोगों की तरह मारिफ़त में आकर्षित होते हुए (हक़) की ओर नहीं आता जबकि सिद्दीक़[रज़ि॰] की उत्पत्ति

ريح الجذبات والمحبة، ولا تدرى ما المصافاة والصلاح، والإنس والانشراح، فإنها ممتلئة بظلمات، فكيف تنزل بها أنوار بركات؟ بل نفس الشقى تتموج تموُّجَ الريح العاصفة، وتشغله جذباتها عن رؤية الحق والحقيقة، فلا يجيء كأهل السعادة راغبا فى المعرفة وأما الصدّيق فقد خُلق متوجّها إلى مبدأ الفيضان، ومقبِلا على رسول الرحمٰن، فلذلك كان أحق الناس بحلول صفات النبوة، وأولى بأن يكون خليفة لحضرة خير البرية، ويتحد مع متبوعه ويوافقه بأتم الوفاق، ويكون له مظهرًا فى جميع الإخلاق والسير والعادة وترك تعلقات الإنفس والآفاق، ولا يطرأ عليه الانفكاك بالسيوف والاسنة، ويكون مستقرا على تلك الحالة ولا يزعجه شيء من المصائب والتخويفات واللوم واللعنة، ويكون الداخل فى جوهر روحه صدقا وصفاء وثباتا واتقاء، ولو ارتد العالم

फैज़ के स्रोत की ओर ध्यान देने रहमान ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर मुंह करने की स्थिति में हुई। आप नुबुव्वत की विशेषताओं के प्रकटन के समस्त मनुष्यों से अधिक अधिकारी (हक़दार) थे और हज़रत ख़ैरुलबरीय: सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा बनने के लिए उचित थे तथा अपने अनुकर्णीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पूर्ण एकता और पूर्ण अनुकूलता सुदृढ़ करने के पात्र थे और यह कि वे समस्त शिष्टाचार, गुण और आदतों को अपनाने तथा व्यक्तिगत एवं सांसारिक संबंधों को छोड़ने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के (ऐसे पूर्ण) द्योतक थे कि तलवारों और भालों के ज़ोर से भी उनके मध्य संबंध न कट सके, और आप इस हालत पर हमेशा क़ायम रहे और संकटों तथा भयभीत करने वाली हालतों और लानत एवं निन्दा में से आप को कुछ भी बेचैन न कर सके। आप की रूह के जौहर में सच्चाई और वफ़ादारी, दृढ़ता और संयम दाखिल था, चाहे सम्पूर्ण संसार मुर्तद हो जाए

كلّه لا يُباليـهم ولا يتأخـر بـل يقـدم قدمـه كل حـين

ولاجـل ذلـك قَفَّـى اللهُ ذِكـر الصدّيقـين بعـد النبيـين، وقـال۔ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وفى ذلـك إشـارات إلى الصدّيـق وتفضيـله عـلى الآخريـن، فـإن النـبى صـلى الله عليـه وسـلم مـا سـمى أحـدًا مـن الصحابـة صدّيقًـا إلا إيـاه، ليُظهـر مقامـه ورَيّـاه، فانظـر كالمتدبريـن وفى الآيـة إشـارة عظيمـة إلى مراتـب الكمـال وأهلهـا لقـوم سـالكين وإنـا إذا تدبرنـا هـذه الآيـة، وبلّغنـا الفكـر إلى النهايـة، فانكشـف أن هـذه الآيـة أكـبر شـواهد كمـالات الصدّيـق، وفيهـا سـرّ عميـق ينكشـف عـلى كل مـن يتمايـل عـلى التحقيـق فـإن أبـا بكـر سُـمّى صدّيقًـا عـلى لسـان الرسـول المقبـول، والفرقـان أَلْحـقَ

आप उनकी परवाह न करते और न पीछे हटते बल्कि हर समय अपना क़दम आगे ही बढ़ाते गए।

इसी कारण से अल्लाह ने नबियों के तुरन्त बाद सिद्दीक़ों की चर्चा को रखा और फ़रमाया-

فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ✶

और इस (आयत) में सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) तथा आप की दूसरों पर श्रेष्ठता के संकेत हैं, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा[रज़ि॰] में से आप के अतिरिक्त किसी सहाबी का नाम सिद्दीक़ नहीं रखा ताकि वह आपके पद और प्रतिष्ठा को प्रकट करे। इसलिए सोच-विचार करने वालों के समान विचार कर। इस आयत में साधकों (सालिकों) के लिए ख़ूबियों की श्रेणियां और उनकी योग्यता रखने वालों की ओर बहुत बड़ा संकेत है। जब हमने इस आयत पर विचार किया

✶ तो यही वे लोग हैं जो उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है (अर्थात) नबियों में से, सिद्दीक़ों में से, शहीदों में से और सालिह (नेक) लोगों में से। (अन्निसा-70)

الصدّيقين بالانبياء كما لا يخفى على ذوى العقول، ولا نجد إطلاق هذا اللقب والخطاب على أحد من الاصحاب، فثبت فضيلة الصدّيق الامين، فإن اسمه ذُكر بعد النبيين فانظر بالإنابة وفارِقْ غشاوة الاسترابة، فإن الاسرار الخفية مطويّة فى إشارات القرآن، ومن قرأ القرآن فابتلع كل المعارف، ولو ما أحستها بحاسةٍ الوجدانُ وتنكشف هذه الحقائق متجردةً عن الالبسة على نفوس ذوى العرفان، فإن أهل المعرفة يسقطون بحضرة العزة، فتمسّ روحهم دقائقَ لا تمسّها أحدٌ من العالمين فكلماتهم كلمات، ومن دونها خرافات، ولكنهم يتكلمون بأعلى

और सोच को चरम सीमा तक पहुंचाया तो यह प्रकट हुआ कि यह आयत (अबू बक्र) सिद्दीक[रज़ि०] की ख़ूबियों पर सबसे बड़ी गवाह है और इसमें एक गहरा राज़ है जो हर उस मनुष्य पर प्रकट होता है जो अनुसंधान की ओर झुकता है। अत: अबू बक्र[रज़ि०] वह हैं जिन्हें रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान (मुबारक) से सिद्दीक़ की उपाधि प्रदान की गई और फ़ुर्क़ान (हमीद) ने सिद्दीक़ों को नबियों के साथ मिलाया है जैसा कि बुद्धिमानों पर छुपा नही। हम सहाबा[रज़ि०] में से किसी एक सहाबी पर भी इस संबोधन और उपाधि का चरितार्थ नहीं पाते। इस प्रकार सिद्दीक़ अमीन की श्रेष्ठता सिद्ध हो गयी। क्योंकि नबियों के बाद आप के नाम का वर्णन किया गया है। इस लिए ख़ुदा की तरफ़ लौटने के साथ विचार कर और सन्देह के पर्दे को छोड़ दे! क्योंकि छुपे हुए राज़ क़ुर्आन के संकेतों में लिपटे हुए हैं और जो भी क़ुर्आन पढ़ता है वह उस के मआरिफ़ प्राप्त करता है यद्यपि उसकी खोजने वाली ज्ञनेन्द्री उनको पूर्ण रूप से न समझ सके और ये वास्तविकताएं बेपर्दा होकर आरिफ़ों के दिलों पर प्रकट होती हैं, इसलिए कुछ अध्यातम ज्ञानी ख़ुदा तआला के दरबार में गिर जाते हैं जिस के परिणामस्वरूप उनकी रूह ऐसी बारीकियां पा लेती हैं कि सब लोकों में से कोई एक भी उसे पा नहीं सकता। अत: उनकी

الإشارة حتى يتجاوزون نظر النظّارة، فيُكفّرهم كل غبي من عدم فهم العبارة فإنهم قوم منقطعون لا يُشابههم أحدٌ ولا يُشابهون أحدًا، ولا يعبدون إلا أحدًا، ولا ينظرون إلى المتلاعبين كفَلهم الله كرجل كفَل يتيما، ففوّضه إلى مرضعة حتى صار فطيما، ثم ربّاه وعلّمه تعليما، ثم جعله وارث ورثائه، ومنَّ عليه منّا عظيما، فتبارك الله خير المحسنين

बातें ही असल बातें होती हैं इस के अतिरिक्त तो सब बकवास होते हैं। हां वह उच्च इशारों के साथ बात करते हैं यहां तक कि वे दूसरे दर्शकों की दृष्टि की सीमा से ऊपर होते हैं। इस लिए हर मूर्ख इबारत के न समझने के कारण उन्हें काफ़िर ठहराते है। अत: ये लोग ख़ुदा की हस्ती में ऐसे खोए हुए होते हैं कि न तो कोई उनके समान होता है और न ही वे किसी के समान होते हैं। वे केवल एक ख़ुदा की इबादत करते हैं और खेलकूद करने वालों की ओर देखते तक नहीं। अल्लाह उन का उसी प्रकार अभिभावक (कफ़ील) हो जाता है जैसे कोई व्यक्ति अनाथ (यतीम) की कफ़ालत (पोषण) करता है और उसे दूध पिलाने वाली स्त्री के सुपुर्द कर देता है यहां तक कि वह दूध छोड़ने की आयु को पहुंच जाता है। फिर वह उस का पोषण करता और अच्छी तरह शिक्षा दिलाता है और फिर उसे अपने वारिसों में से एक वारिस बना लेता है और उस पर बड़ा उपकार करता है। अत: बहुत ही बरकत वाला है अल्लाह जो सब उपकार करने वालों से अधिक उपकारी है।

في فضائل علی رضی اللّٰہ عنہ
اللّٰهم والِ مَن والاہ وعادِ مَن عاداہ

كان رضي الله عنه تقيًّا نقيًّا ومن الذين هم أحب الناس إلى الرحمان، ومن نخب الجيل وسادات الزمان أسد الله الغالب وفتى الله الحنّان، ندىّ الكف طيب الجنان وكان شجاعا وحيدًا لا يُزايل مركزه في الميدان ولو قابله فوج من أهل العدوان أنفد العمر بعيش أنكد وبلغ النهاية في زهادة نوع الإنسان وكان أول الرجال في إعطاء النشب

हज़रत अली[रज़ि॰] **की ख़ूबियों के बारे में**

हे अल्लाह! जो उनसे मित्रता रखता है तू उस से मित्रता रख और जो उन से शत्रुता करता है तू उस से शत्रुता कर।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु संयमी, पवित्र अन्त:करण तथा उन लोगों में से थे जो कृपालु ख़ुदा के यहां सर्वाधिक प्रिय होते हैं। और आप क़ौम के चुने हुए और युग के सरदारों में से थे। आप आधिपत्य रखने वाले ख़ुदा के शेर, कृपालु ख़ुदा के योद्धा, दानी, पवित्र, हृदय थे। आप ऐसे अद्वितीय बहादुर थे जो युद्ध के मैदान में अपना स्थान नहीं छोड़ते थे चाहे उन के मुकाबले में शत्रुओं की एक सेना हो। आप ने सम्पूर्ण आयु ग़रीबी में व्यतीत की और मानव जाति के संयम के पद की चरमसीमा तक पहुंचे। आप धन-दौलत प्रदान करने, लोगों के शोक और चिन्ताओं को दूर करने, तथा अनाथों, असहायों, और पड़ोसियों की देखभाल करने में प्रथम श्रेणी के मर्द थे। आप ने युद्धों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वीरता के जौहर दिखाए थे। तीर और तलवार के युद्ध में आप से आश्चर्यजनक घटनाएं प्रकट होती थीं। इसके साथ-साथ आप अत्यन्त मृदुल

و إماطة الشجب و تفقّد اليتامى و المساكين و الجيران و كان
يجلّى أنواع بسالة فى معارك و كان مظهر العجائب فى هيجاء
السيف و السنان و مع ذلك كان عذب البيان فصيح اللسان
و كان يُدخل بيانه فى جذر القلوب و يجلو به صدأ الأذهان،
و يجلى مطلعه بنور البرهان و كان قادرًا على أنواع الأسلوب،
و من ناضله فيها فاعتذر إليه اعتذار المغلوب و كان كاملا
فى كل خير و فى طرق البلاغة و الفصاحة، و من أنكر كماله
فقد سلك مسلك الوقاحة و كان يندب إلى مواساة المضطرّ،
و يأمر بإطعام القانع و المعترّ، و كان من عباد الله المقربين
و مع ذٰلك كان من السابقين فى ارتضاع كأس الفرقان، و أُعطى

भाषी और सरस-सुबोध वक्ता भी थे आप का बयान दिलों की गहराई में उतर जाता और तर्कों के प्रकाश से उसका चेहरा चमक जाता। आप भिन्न-भिन्न प्रकार की वर्णन शैलियों पर समर्थ थे और जो आप से इनमें मुकाबला करता तो उसे एक पराजित व्यक्ति की तरह आप से विवशता व्यक्त करनी पड़ती। आप हर ख़ूबी में और सरसता एवं सुबोधता की शैलियों में पूर्ण थे और जिसने आप की ख़ूबी का इन्कार किया तो उसने निर्लज्जता का मार्ग अपनाया। आप असहायों की हमदर्दी की तरफ़ प्रेरणा दिलाते और भाग्यतुष्ट लोगों तथा दरिद्रों को खाना खिलाने का आदेश देते। आप अल्लाह के सानिध्य प्राप्त बन्दों में से थे और इसके साथ-साथ आप फ़ुर्क़ान (हमीद) की मारिफ़त के जाम पीने वालों में पहले लोगों में से थे और आप को क़ुर्आन की बारीकियों को समझने में एक अदभुत समझ प्रदान की गयी थी। मैंने जागने की अवस्था में उन्हें देखा है न कि नींद में। फिर (उसी हालत में) आप ने अन्तर्यामी ख़ुदा की किताब की तफ़्सीर मुझे प्रदान की और फ़रमाया – "यह मेरी तफ़्सीर है और यह अब आप को दी जाती है। अत: आप को इस दिए जाने पर मुबारक हो।" जिस पर मैंने अपना हाथ बढ़ाया और वह तफ़्सीर ले ली और मैंने प्रदान करने वाले

له فهم عجيب لإدراك دقائق القرآن و إنى رأيته و أنا يقظان لا فى المنام، فأعطانى تفسير كتاب الله العلام، وقال هذا تفسيرى، والآن أُولِيْتَ فَهُنِّيتَ بما أُوتِيتَ فبسطتُ يدى وأخذت التفسير، وشكرت الله المعطى القدير ووجدتُه ذا خَلْقٍ قويم وخُلقٍ صميم، ومتواضعا منكسرا ومتهلّلا منوّرا وأقول حلفًا إنه لاقانى حُبًّا وأُلْفًا، وأُلقى فى روعى أنه يعرفنى وعقيدتى، ويعلم ما أخالف الشيعة فى مسلكى ومشربى، ولكن ما شمخ بأنفه عُنفًا، وما نأى بجانبه أنفًا، بل وافانى وصافانى كالمحبين المخلصين، وأظهر المحبة كالمصافين الصادقين و كان معه الحسين بل الحسنينِ وسيد الرسل

शक्तिमान ख़ुदा का शुक्र अदा किया और मैंने आप को पैदायश में संतुलित ओर स्वभाव में पुख़्ता और विनम्र व्यवहार करने वाला विनम्र स्वभाव, प्रकाशमान और रोशन पाया और मैं यह क़सम खाकर कहता हूं कि आप मुझ से बड़े प्रेम और मुहब्बत से मिले। और मेरे दिल में यह बात डाली गई कि आप मुझे और मेरी आस्था को जानते हैं और मैं अपनी आस्था और मत में शियों से जो मतभेद रखता हूं वह उसे भी जानते हैं परन्तु आपने किसी भी प्रकार की अप्रसन्नता एवं खिन्नता की अभिव्यक्ति नहीं की और न ही (मुझ से) विमुख हुए बल्कि वह मुझ से मिले और शुद्ध प्रेमियों की तरह मुझ से प्रेम किया और उन्होंने सच्चे, स्वच्छ दिल रखने वाले लोगों की भांति प्रेम को अभिव्यक्त किया। और आप के साथ हुसैन बल्कि हसन[रज़ि॰] और हुसैन[रज़ि॰] दोनों तथा सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी थे और उनके साथ एक अत्यन्त सुन्दर नेक, प्रतापी, मुबारक, सदाचारी, सम्मानीय, ज़ाहिर-व-बाहर साक्षात प्रकाश जवान सौम्य महिला भी थीं, जिन्हें मैंने शोक से भरा हुआ पाया, परन्तु वह उसे छुपाए हुए थीं। मेरे दिल में डाला गया कि आप फ़ातिमा अज़्ज़ुहरा[रज़ि॰] हैं। आप मेरे पास आईं, मैं लेटा हुआ था। तो आप बैठ

خاتم النبيين، و كانت معهم فتاة جميلة صالحة جليلة مباركة مطهّرة معظّمة مُوَقرة باهرة السفور ظاهرة النور، ووجدتها ممتلئة من الحزن ولكن كانت كاتمة، وأُلقى فى روعى أنها الزهراء فاطمة فجاءتنى وأنا مضطجع فقعدت ووضعت رأسى على فخذها وتلطفت، ورأيتُ أنها لبعض أحزانى تحزن وتضجر وتتحنن وتقلق كأمّهات عند مصائب البنين فعُلّمتُ أنى نزلتُ منها بمنزلة الابن فى عُلَق الدّين، وخطر فى قلبى أن حزنها إشارة إلى ما سأرى ظلما من القوم وأهل الوطن والمعادين ثم جائنى الحسنان، وكانا يبدئان المحبة كالإخوان، ووافيانى كالمواسين وكان هذا كشفًا من كشوف

गईं और आप ने मेरा सर अपनी रान पर रख लिया और प्रेम को अभिव्यक्त किया। मैंने देखा कि वह मेरे किसी ग़म (शौक) के कारण शोकग्रस्त दुखित हैं और बच्चों के कष्टों के समय मांओं की तरह प्रेम, मुहब्बत और बेचैनी व्यक्त कर रही हैं। फिर मुझे बताया गया कि धर्म के संबंध में उनके नज़दीक मेरी हैसियत बेटे के समान है और मेरे दिल में विचार आया कि उनका शोकग्रस्त होना इस बात पर संकेत है कि मैं क़ौम, देशवासियों और शत्रुओं से अत्याचार देखूंगा। फिर हसन और हुसैन दोनों मेरे पास आए और मुझ से भाइयों की तरह प्रेम-व्यक्त करने लगे तथा हमदर्दी करने वालों के समान मुझ से मिले। और यह कश्फ़ जागने की अवस्था के कश्फ़ों में से था। इस पर कई वर्ष गुज़र चुके हैं, और मुझे हज़रत अली[रज़ि॰] तथा हज़रत हुसैन[रज़ि॰] के साथ एक उत्तम अनुकूलता है और उस अनुकूलता की वास्तविकता को पूरब और पश्चिम के प्रतिपालक के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और मैं हज़रत अली[रज़ि॰] और आप के दोनों बेटों से प्रेम करता हूं तथा जो उन से शत्रुता रखे उस से मैं शत्रुता रखता हूं। इसके बावजूद मैं ज़ुल्म-व-सितम करने वालों में से नहीं और यह मेरे लिए संभव नहीं कि मैं उस से मुंह फेरूं जो अल्लाह ने मुझ पर प्रकट किया और न

اليقظة، وقد مضت عليه بُرْهة من سنين ولى مناسبة لطيفة بعلىّ والحسين، ولا يعلم سرّها إلا ربّ المشرقين والمغربين وإنى أحبّ عليّا وابناه، وأعادى من عاداه، ومع ذٰلك لستُ من الجائرين المتعسفين وما كان لى أن أعرض عما كشف الله علىّ، وما كنت من المعتدين وإن لم تقبلوا فلى عملى ولكم عملكم، وسيحكم الله بيننا وبينكم، وهو أحكم الحاكمين

الباب الثانى

فى المهدى الذى هو آدم الأمّة وخَاتَم الائمة

اعلموا أن الله الذى خلق الليل والنهار، وأبدأ الظلامات

ही मैं सीमा का अतिक्रमण करने वालों में से हूं। यदि तुम स्वीकार न करो तो मेरा कर्म (अमल) मेरे लिए और तुम्हारा कर्म (अमल) तुम्हारे लिए है। और अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच अवश्य फैसला करेगा और वह फैसला करने वालों में से सबसे अच्छा फैसला करने वाला है।

द्वितीय, अध्याय

उस महदी के बारे में जो उम्मत का आदम और इमामों का ख़ातम है

जान लो! कि वह अल्लाह जिस ने रात और दिन पैदा किए और अंधकारों एवं प्रकाशों का प्रारंभ किया। अनादि युग और प्रारंभिक युग से उसका यह नियम (सुन्नत) जारी रहा है कि वह पूर्ण फ़साद देखने के बाद ही सुधार की ओर ध्यान देता है और जब आपदा अपनी अन्तिम सीमा तक तथा संकट अपनी चरम सीमा को पहुंच जाता है तो ख़ुदा की कृपा उस (संकट) के निवारण की ओर ध्यान देती है और एक ऐसी चीज़ का सृजन करती है जो उस (संकट) को

والانوار، قد جرت عادته من قديم الزمان وأوائل الازمنة والاوان، أنه لا يتوجّه إلى إصلاح إلا بعد رؤية كمال طلاح، وإذا بلغت الآفة مداها، وانتهت البلية إلى منتهاها، فتتوجه العناية الإلٰهية إلى إماطتها، وإلى خلق شيء يكون سببا لإزالتها وأما مثله فيوجد فى العالم الجسمانى أمثلة واضحة ونظائر بيّنة جليّة للذى اعترته شبهة أو كان من الغافلين

فأكبر الامثلة سُنة ربانية توجد فى نزول الامطار والمرابيع التى تنزل لتنضير الزروع والاشجار، فإن المطر النافع لا ينزل إلّا فى أوقات الاضطرار، ويُعرف وقته عند شدة الحاجة وقرب الاخطار، فإذا الارض يبست وهمدت، واصفر كل ما أنبتت وأخرجت، ومسّت الضرّاء أهلَها والمصائب

दूर करने का कारण हो। जहां तक इस के उदाहरण का संबंध है तो इसके कई स्पष्ट उदाहरण भौतिक संसार में और ज़ाहिर-व-बाहर मिसालें भौतिक संसार में पाई जाती हैं (और ये मिसालें और उदाहरण) उस व्यक्ति के लिए होते हैं जिसे कोई संदेह संलग्न हो या वह लापरवाह लोगों में से हो।

अत: समस्त उदाहरणों में बड़ा उदाहरण वह ख़ुदा का नियम है जो मेंह और वर्षाओं के उतरने में पाया जाता है जो खेतों और वृक्षों को हरा भरा तथा तरोताज़ा बनाने के उद्देश्य से बरसती हैं। क्योंकि लाभदायक वर्षा केवल व्याकुलता के समयों में उतरती है और उसका समय अत्यधिक आवश्यकता और खतरों के निकट आ जाने पर पहचाना जाता है। तो जब पृथ्वी सूख जाती तथा बंजर हो जाती है पृथ्वी से उगने तथा निकलने वाली हर वस्तु ज़र्द (पीली) हो जाती है तथा उस पर बसने वालों को कष्ट पहुंचता है और संकट उतरने और आने लगते हैं तथा लोग यह सोचने लगते हैं कि मार दिए गए और संकट बहुत क़रीब और समीप आ गए हैं और तालाबों में एक बूंद शेष नहीं रही और तालाबों का पानी बदबूदार हो गया है तो ऐसे समय में लोगों

نزلت وسقطت، وظن الناس أنهم أُهلكوا، والدواهی قربت ودنت، وما بقی فی الإضَی قطرة ماء، والغدر نتنت، فیُغاثون الناسُ فی هذا الوقت ویُحیی اللّٰہ الارض بعد موتها، وتری البلدة اهتزّت وربَتْ، وتری کل زرع أخرج الشطأ وکل الارض اخضرّت ونضرت، وصار الناس بعد الخطرات آمنین

وهذه عادة مستمرة، وسُنة قدیمة، بل تزید الشدّة فی بعض الاوقات وتتجاوز حد المعمولات، وتری بلدة قد أمحلتْ ذاتَ العُوَیم، وما بقی من جَهام فضلا عن الغَیم، وما بقی بُلالة من الماء ولا عُلالة من ذخائر الشتاء، وما نزلت قطرة من قطر مع طول أمد الانتظار، ولاحت آثار قهر القهار، وأحال الخوف صُورَ الناس، وغلب الخیب

के लिए वर्षा बरसाई जाती है और अल्लाह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद जीवित करता है और तू देखता है कि वह पृथ्वी जोश में आ जाती है तथा बढ़ने लगती है। और तू देखता है हर खेती अपनी कोंपिलें निकालती है और सम्पूर्ण पृथ्वी हरी भरी और तरोताज़ा हो जाती है तथा बहुत से ख़तरों के बाद लोग अमन में आ जाते हैं।

और यह स्थायी आदत और अनादि नियम है बल्कि कभी तो यह तीव्रता बढ़ जाती है और नित्य कर्मों की सीमा से बाहर निकल जाती है। और तू देखता है कि कोई बस्ती किसी वर्ष बंजर हो जाती है। बरसने वाला बादल तो पृथक बिना पानी वाला बादल तक शेष नहीं रहता और पानी की नमी तक नहीं रहती और सर्दियों के पानी के भण्डारों में से थोड़ी सी मात्रा भी नहीं बचती तथा लम्बे समय की प्रतीक्षा के बावजूद वर्षा की एक बूंद भी नहीं उतरती और महा प्रकोपी ख़ुदा के प्रकोप के लक्षण प्रकट होने लगते हैं और भय लोगों की शक्लों को परिवर्तित कर देता है और निराशा विजयी हो जाती है और होश-व-हवास का ठीक न रहना प्रकट हो जाता है हरी भरी तथा तरोताज़ा घाटियां ऐसी भूमि की

وظهر طيران الحواس، وصار الريف كأرض ليس فيها غير الهباء والغبار، وما بقى ورق من الاشجار، فضلا عن الاثمار، فيضطر الناس أشد الاضطرار، و كادوا أن يهلكوا من آثار اليأس والتبار؛ فتتوجه إليهم العناية، ويدركهم رحم الله وتظهر الآية، وتنضر أرضهم من الامطار، ووجوههم من كثرة الثمار، فيصبحون بفضل الله مخصبين ذلك مثل الذين أتت عليهم أيام الضلال، وحلّت بهم أسباب مضلّة حتى زاغوا عن محجّة ذى الجلال، فأدركهم ذاتَ بكرة وابلٌ من مُزنِ رحمته، وبعث مجدد لإحياء الدّين، فأخذ الظانّون ظنّ السوء يعتذرون إلى الله ربّ العالمين

وآخرون يكذّبونه ويقولون ما أنزل الله من شيء، وإن

तरह हो जाती हैं जहां धूल-मिट्टी के अतिरिक्त कुछ न हो। फल तो कहां वृक्षों के पत्ते तक शेष नहीं रहते। परिणामस्वरूप लोग बहुत बेचैन हो जाते हैं और निराशा एवं तबाही के लक्षणों के कारण वे मरने के निकट पहुंच जाते हैं। तब अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) उनकी ओर ध्यान देता है और अल्लाह का रहम (दया) उन्हें प्राप्त हो जाता है तथा एक निशान प्रकट होता है और उसकी पृथ्वी वर्षाओं के कारण और उनके चेहरे फलों की प्रचुरता के कारण तरोताज़ा हो जाते हैं। फिर वह अल्लाह के फ़ज़्ल से धनवान हो जाते हैं। यह उन लोगों का उदाहरण है जिन पर गुमराही का समय आया और उन पर गुमराह करने वाले सामान आए। यहां तक कि वे प्रतापी ख़ुदा के मार्ग से हट गए फिर अचानक यों हुआ कि एक सुबह उसके दया रूपी बादल की मूसलाधार वर्षा उन पर बरसी और धर्म को जीवित करने के लिए एक मुजद्दिद भेज दिया गया। तब कुधारणा करने वाले लोग समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा के दरबार में मजबूरी व्यक्त करने लगे

तथा कुछ और लोग इसे झुठलाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी और तू तो बस एक झूठ गढ़ने वाला है। फिर मूसलाधार वर्षा

أنت إلا من المفترين فينزل الوابل تترًا حتى لا يُبقى من سوء الظن أثرا، فيرجع الراجعون إلى الحق متندمين وأمّا الاشقياء فما ينتفعون من وابل الله شيئا، بل يزيدون بغيا وظلما وعسفا، وكانوا قومًا ظالمين وما اغترفوا من ماء الله وما شربوا، وما اغتسلوا وما توضأوا، وما كانوا أن يسقوا الحرث، وكانوا قوما محرومين، فما رأوا الحق لإنهم كانوا عمين، وإن فى ذٰلك لآيات لقوم مفكّرين ومثل آخر لمرسل الخلاق وهو ليالى المحاق كما لا يخفى على الممعِن الرمّاق وعلى المتدبرين فإنها ليال داجية الظلم، فاحمة اللمم، تأتى بعد الليالى المنيرة كالآفات الكبيرة، فإذا بلغ الظلام منتهاه، وما بقى فى ليل سناه، فيعشو الله أن يزيل الظلام

लगातार उतरती है यहां तक कि कुधारणा (बदज़नी) का निशान तक बाकी नहीं रहने देती। तब रुजू करने वाले (लौटने वाले) शर्मिन्दा हो कर सच की तरफ़ लौटते हैं और वे जो दुर्भाग्यशाली हैं वे अल्लाह की दया रूपी वर्षा से कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं करते, बल्कि वे विद्रोह, अन्याय और अत्याचार में और बढ़ जाते हैं तथा वे अत्याचारी क़ौम ही हैं। उन्होंने अल्लाह के पानी से एक चुल्लू तक नहीं भरा, न (उसमें से) पिया, न स्नान किया और न ही वुज़ू किया और न खेती को सींचने वाले बने। वह वंचित क़ौम हैं फिर उन्होंने सच को न देखा क्योंकि वे अंधे थे। इसमें सोच-विचार करने वाली क़ौम के लिए बहुत से निशान हैं। और बहुत अधिक पैदा करने वाले ख़ुदा के भेजे हुए (रसूल) का दूसरा उदाहरण चन्द्रमास की अन्धेरी रातें हैं जैसा कि हर गहरी नज़र रखने वाले तथा विचार करने वालों पर छुपा नहीं। क्योंकि वे रातें बड़ी अंधकारमय होती हैं जो प्रकाशमान रातों के बाद बड़ी आपदाओं के समान आती हैं और जब अंधेरे अपनी चरमसीमा को पहुंच जाएं और रात में उसकी कोई चमक शेष न रहे तब अल्लाह उन तह पर तह अंधकारों को दूर करने

المركوم، ويبرز النير المغموم، فيبدأ الهلال ويملأ أمنًا ونورًا الليلَ المهال، وكذلك جرت سُنّته في أمور الدّين فيا حسرة على أهل الشقاق، إنهم يحكمون بقرب الهلال عند مجيء ليالي المحاق، ويرقبونه كالمشتاق، ولكنهم لا ينتظرون في ظلام الدين هلالاً ولو بلغ الظلام كمالا فالحق والحق أقول إنهم قوم حمقى، وما أُعطى لهم من المعقول حظ أدنٰى، وما كانوا مستبصرين

هذا ما شهدتْ سُنّة الله الجارية لنوع الإنسان، وثبت أن الله يُرى مسالك الخلاص بعد أنواع المصائب والذوبان فلما كان من عادات ذى الجلال والإكرام أنه لا يترك عباده الضعفاء عند القحط العام في الآلام، ولا يريد أن

की ठान लेता है और अंधकारों में छुपे हुए चन्द्रमा को बाहर निकालता है और नवचन्द्र को प्रकट करता है और भयानक रात को अमन और प्रकाश से भर देता है। धार्मिक मामलों में उसका नियम इसी रंग में जारी है। अफ़सोस है फूट डालने वालों पर कि वे चन्द्र मास की अन्तिम रातों के आने पर हिलाल के निकट आने का तो निर्णय कर लेते हैं और बड़ी रुचि से उसकी प्रतीक्षा भी करते हैं परन्तु वे धर्म के अंधकारों में कसी हिलाल की प्रतीक्षा नहीं करते चाहे वे अंधकार अपनी चरम सीमा को पहुंच चुके हों। यही सच है और मैं सच बात ही कहता हूं कि ये मूर्ख लोग हैं और उन्हें बुद्धि का थोड़ा सा भी भाग नहीं दिया गया और वे विवेकशील नहीं।

मानव जाति की भलाई के लिए अल्लाह की जारी रहने वाली सुन्नत (नियम) ने यही गवाही दी है और उस से यह सिद्ध होता है कि अल्लाह विभिन्न कठिनाइयों तथा अड़चनों के बाद मुक्ति के मार्ग दिखाता है। फिर जब प्रतापी तथा सम्माननीय ख़ुदा की यही सुन्नत है कि वह अपने कमज़ोर बन्दों को सर्वव्यापी दुर्भिक्ष (सूखा) के समय दुखों में नहीं छोड़ता और जब अल्लाह

ينفكّ نظامٌ يتبعه عطبُ الاجسام، فكيف يرضى بفكّ نظام فيه موت الارواح ونار جهنم للدوام؟ ثم إذا نظرنا فى القرآن فوجدناه مؤيدًا لهذا البيان، وقد قال الله تعالى فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا وإن فى ذلك لبشرى لكل من تزكّٰى، وإشارة إلىٰ أن الناس إذا رأوا فى زمان ضرًّا وضيرًا، فيرون فى آخرَ نفعا وخيرا، ويرون رخاءً بعد بلاء فى الدين والدنيا وكذٰلك قال فى آية أُخرى لقوم يسترشدون اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ فأَمعِنوا فيه إن كنتم تفكرون

فهذه إشارة إلى بعث مجدد فى زمان مفسد كما

तआला ऐसी व्यवस्था को तोड़ना नहीं चाहता जो शरीरों की तबाही का कारण हो तो वह ऐसी व्यवस्था को तोड़ने पर कैसे सहमत हो सकता है जिस के नतीजे में रूहों की मौत हो और हमेशा के लिए नर्क की आग हो। फिर जब हम क़ुर्आन पर विचार करते हैं तो हम उसे इस वर्णन का समर्थक पाते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ✶

और निस्सन्देह इसमें हर शुद्ध आचरण वाले के लिए ख़ुश ख़बरी है। इसमें इस ओर संकेत है कि जब किसी दौर में लोग क्षति और हानि देखेंगे तथा धर्म एवं संसार की परीक्षाओं के बाद समृद्धि भी देखेंगे। इसी प्रकार (अल्लाह ने) एक अन्य आयत में उन लोगों के लिए जो मार्ग दर्शन के अभिलाषी हैं फ़रमाया है कि ✶ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ✶

यदि सोच-विचार करने वाले हो तो इस (आयत) पर ख़ूब विचार करो।

✶अत: निस्सन्देह तंगी के साथ समृद्धि है। निस्सन्देह तंगी के साथ समृद्धि है। (अलइंशिराह – 6,7)

✶निस्सन्देह हम ने ही ज़िक्र (क़ुर्आन) उतारा है और निस्सन्देह हम ही इसकी सुरक्षा करने वाले हैं। (अलहिज्र 10)

يعلمه العاقلون ولا معنى لحفاظة القرآن من غير حفاظة عطره عند شيوع نتن الطغيان، وإثباته فى القلوب عند هبّ صراصر الطغيان، كما لا يخفى على ذوى العرفان والمتدبرين

وإثبات القرآن فى قلوب أهل الزمان لا يمكن إلا بتوسط رجل مُطهَّر من الادناس، ومخصوص بتجديد الحواس، ومُنوَّر بنفخ الروح من رب الناس، فهو المهدى الذى يهدى من رب العالمين، ويأخذ العلم من لدنه ويدعو الناس إلى طعام فيه نجاة المدعوين وإنما هو كإناء فيه أنواع غذاء، من لبن سائغٍ وشِواءٍ، أو هو كنار شتاءٍ،

तो यह (आयत) उपद्रवग्रस्त युग में एक मुजद्दिद के भेजने के बारे में संकेत करती है जैसा कि बुद्धिमान इसे जानते हैं। तो उद्दण्डता की दुर्गन्ध फैलने के समय क़ुर्आन की रूह की सुरक्षा के बिना तथा विद्रोह की आंधियों के चलने के समय दिलों में उसको सुदृढ़ किए बिना उसकी बाह्य सुरक्षा कुछ मायने नहीं रखती, जैसा कि आरिफ़ों तथा सोच-विचार करने वालों पर छुपा नहीं।

और युग के लोगों के दिलों में क़ुर्आन की दृढ़ता ऐसे व्यक्ति के माध्यम के बिना संभव नहीं जो समस्त गन्दगियों से पवित्र और हवास (इन्द्रियों) की तीव्रता से विशिष्ट हो तथा समस्त लोगों के रब्ब की ओर से रूह फूंकने से प्रकाशित किया गया हो अत: यह वह महदी है जो समस्त लोकों के रब्ब से हिदायत प्राप्त हो और उसी की ओर से ज्ञान पाता हो। और जो लोगों को ऐसे खाने की ओर बुलाए जिसमें बुलाए जाने वालों की मुक्ति है और निस्सन्देह वह (महदी) एक ऐसे बर्तन के समान है जिसमें गले से आसानी से उतर जाने वाले दूध और भुने हुए गोश्त (मांस) जैसे भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन हैं या शरद ऋतु की आग के समान है और सर्दी में जकड़े हुए के लिए बहुत मनोवांछित वस्तु है या फिर वह सोने की प्लेट के समान है जिसमें चीनी और निथरे हुए

وللمقرور أشهٰى أشياء، أو كصحفة من الغَربِ فيها حلواء القند والضرب، فمن جاءه أكَل الخبيص، ومن أعرض فأُخذ ولا محيص، وسيلقى السعير ولو ألقى المعاذير فثبت أن وجود المهديين عماد الدّين، وتنزل أنوارهم عند خروج الشياطين، وتحيطهم كثير من الزمر كهالات القمر ولما كان أغلب أحوال المهديين أنهم لا يظهرون إلا عند غلبة الضالين والمضلين، فسُمّوا بذلك الاسم إشارة إلى أن الله ذا المجد والكرم طهّرهم من الذين فسقوا و كفروا، وأخرجهم بأيديه من الظلمات إلى النور، ومن الباطل إلى الحق الموفور، وجعلهم ورثاء علم النبوة وأعطاهم حظا منه، ودقّق مداركهم وعلّمهم من لدنه، وهداهم سبلا ما كان

शहद से तैयार किया गया मिष्ठान है। तो जो भी उसके पास आएगा वह उस मिष्ठान को खा लेगा और जो उस से मुंह फेरेगा वह पकड़ा जाएगा और उसके लिए भागने का कोई स्थान न होगा और वह भड़कती आग में डाला जाएगा चाहे वह कितने ही बहाने प्रस्तुत करे। अत: सिद्ध हुआ कि महदियों के अस्तित्त्व धर्म के स्तंभ हैं और उनके प्रकाश शैतानों के निकलने के समय उतरते तथा बहुत सी जमाअतें उन महदियों को चन्द्रमा के घेरा की तरह अपने घेरे में ले लेती हैं, जबकि महदियों की हालतों की अत्यधिक संभावना यह है कि सामान्यतया महदी गुमराहों और गुमराह करने वालों के प्रभुत्त्व के समय ही प्रकट होते हैं। इसलिए इस नाम से नामित किए जाने में यह संकेत है कि बुज़ुर्गी वाले और सम्मान वाले ख़ुदा ने पापियों और काफ़िरों से उनको शुद्ध किया है। और स्वयं अपने हाथों से उन्हीं अंधेरों से प्रकाश की ओर और झूठ से पूर्णतया सच की ओर निकाला और उन्हें नुबुव्वत के ज्ञान का वारिस बनाया और उन्हें इस से अच्छा भाग प्रदान किया और उनके हवास (इन्द्रियों) को उत्तम बनाया और स्वयं अपने पास से शिक्षा दी और उनका उन मार्गों की ओर

لـهم أن يعرفـوا، وأراهـم طرقـا مـا كان لـهم أن ينظـروا لـولا أن أراهـم الله، ولذٰلـك سُـمّوا مهديـين

وأمـا المهـدى الموعـود الذى هـو إمـام آخـر الزمـان، ومنتظَـر الظهـور عنـد هـبّ سـموم الطغيـان، فاعلـم أن تحـت لفـظ المهـدى إشـارات لطيفـة إلى زمـان الضـلالة لنـوع الإنسـان، وكأنّ الله أشـار بلفـظ المهـدى المخصـوص بالهدايـة إلى زمـان لا تبقـى فيـه أنـوار الإيمـان، وتسـقط القلـوب عـلى الدنيـا الدنيّـة ويتركـون سـبل الرحمـن، وتـأتى عـلى النـاس زمـان الشـرك والفسـق والإباحـة والافتتـان، ولا تبقـى بركـة فى سلاسـل الإفـادات والاسـتفادات، ويأخـذ النـاس يتحركـون إلى الارتـدادات والجهـلات، ويزيـد مـرض الجهـل والتعامـى،

मार्ग-दर्शन किया जिन का जानना उन के बस में न था, उन्हें वे मार्ग दिखाए जो यदि अल्लाह उन्हें वे मार्ग न दिखाता तो वे देख न सकते थे। इसी कारण उनका नाम महदी रखा गया।

और जहां तक उस महदी मौऊद का संबंध है जो अन्तिम युग का इमाम है और उद्दण्डता की ज़हरीली हवाओं के चलने के समय जिसके प्रकट होने की प्रतीक्षा की जा रही है। तो जान लो कि महदी के शब्द के अन्तर्गत मानव-जाति के लिए, पथ-भ्रष्टता के युग की ओर बारीक संकेत हैं। मानो कि अल्लाह ने महदी जो हिदायत के लिए विशिष्ट है के शब्द के साथ उस युग की ओर संकेत किया है कि जब ईमान के प्रकाश शेष न रहेंगे और दिल तुच्छ दुनिया पर गिर रहे होंगे और रहमान (ख़ुदा) के मार्गों को छोड़ रहे होंगे तथा लोगों पर शिर्क, दुराचार शरीअत की अवैध बातों को वैध ठहराने और छल करने का युग आ जाएगा और लाभ पहुंचाने तथा लाभान्वित होने के सिलसिले में बरकत बाक़ी न रहेगी और लोग धर्म परिवर्तन और मूर्खतापूर्ण बातों की ओर हरकत करने लग जाएंगे तथा जंगलों और वनों में घूमने-फिरने की रुचि के साथ-साथ

مع شوقهم في سير المعامي والموامي، ويُعرضون عن الرشاد والسداد، ويركنون إلى الفسق والفساد، وتطير جراد الشقاوة على أشجار نوع الإنسان، فلا تبقى ثمر ولا لدونة الاغصان وترى أن الزمان من الصلاح قد خلا، والإيمان والعمل أجفلا، وطريق الرشد عُلِّق بثريّا السماء فيذكر الله مواعيده القديمة عند نزول الضرّاء، ويرى ضعف الدين ظاهرًا من كل الانحاء، فيتوجّه ليُطفئ نار الفتنة الصمّاء، فيخلق رجلا كخلق آدم بيدَى الجلال والجمال، وينفخ فيه روح الهداية على وجه الكمال فتارة يُسميه عيسٰى بما خلقه كخلق ابن مريم لإتمام الحجة على النصارى، وتارة

उनकी असभ्यता और अंधेपन के रोग में वृद्धि होगी। और वे हिदायत और सीधे मार्ग से मुंह फेरेंगे तथा दुराचार और फ़साद की ओर झुकेंगे तथा दुर्भाग्य की टिड्डियां मानव-जाति के वृक्षों के फल एवं नर्म शाखाएं बाक़ी न रहेंगी और तू देखेगा कि सुधार का समय गुज़र गया। ईमान और अमल (कर्म) ने घबरा कर पलायन कर लिया और हिदायत का माध्यम आकाश के सुरैया सितारे पर लटक गया। फिर कष्टों के आने को समय अल्लाह अपने पुराने वादों को याद करेगा और हर ओर धर्म की कमज़ोरी के प्रत्यक्ष तथा बाह्य तौर पर देखेगा। तब वह प्रचंड फ़ित्नों की आग को बुझाने की ओर ध्यान देगा। फिर वह आदम को पैदा करने की तरह अपने जलाल और जमाल के हाथों से एक मनुष्य पैदा करेगा और उसमें पूर्ण रूप से हिदायत की रूह फूंकेगा। फिर कभी तो ईसाइयों पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए वह उसे ईसा को नाम देगा क्योंकि उसने उसे इब्ने मरयम के पैदा करने की तरह पैदा किया होगा। और कभी वह उसे महदी-ए-अमीन के नाम से पुकारेगा। क्योंकि वह गुमराह (पथभ्रष्ट) मुसलमानों के लिए अपने रब्ब की ओर से मार्गदर्शन प्राप्त होगा। और वह मुसलमानों में से महजूबों के लिए भेजा जाएगा ताकि वह उन्हें समस्त

يدعوه باسم مهدى أمين بما هو هُدِىَ من ربه للمسلمين الضالين، وأُخرِجَ للمحجوبين منهم ليقودهم إلى رب العالمين هذا هو الحق الذى فيه تمترون، والله يعلم وأنتم لا تعلمون أحيا عبدًا من عباده ليدعو الناس إلى طرق رشاده، فاقبلوا أو لا تقبلوا، إنه فعل ما كان فاعلا أأنتم تضحكون ولا تبكون، وتنظرون ولا تبصرون

أيها الناس لا تغلوا فى أهوائكم، واتقوا الله الذى إليه تُرجعون ما لكم لا تقبلون حكمَ الله وكنتم تنتظرون؟ شهدت السماء فلا تبالون، ونطقت الأرض فلا تفكّرون وقالوا إنا لا نقبل إلا ما قرأنا فى آثارنا ولو كانت آثارهم

लोकों के रब्ब तक ले जाए। यही वह सच है जिस के बारे में तुम सन्देह कर रहे हो और अल्लाह जानता है तथा तुम नहीं जानते। उसने अपने बन्दों में से एक बन्दे को जीवित किया ताकि वह लोगों को उसकी हिदायत के मार्गों की ओर बुलाए। तो स्वीकार करो या न करो। उसने तो निस्सन्देह जो करना था कर दिया। क्या तुम हंसते हो और रोते नहीं, और देखते हो परन्तु दिल की नज़र नहीं रखते।

हे लोगों अपने नफ़्स की इच्छाओं में अतिश्योक्ति न करो और उस अल्लाह का संयम धारण करो जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के आदेश को स्वीकार नहीं करते, हालांकि तुम (उस के) प्रतीक्षक थे। आकाश ने गवाही दे दी फिर भी तुम परवाह नहीं करते और पृथ्वी पुकार उठी फिर भी तुम सोच-विचार नहीं करते। और उन्होंने कहा कि हम तो केवल उस बात को स्वीकार करेंगे जो हमने अपनी रिवायतों में पढ़ी है चाहे वे रिवायतें परिवर्तित कर दी गई हों या बनाने वालों ने उन्हें बना लिया हो। हे लोगो! हर ओर नज़र दौड़ाओ और वैर तथा फ़साद छोड़ दो और जो चीज़ प्रकट हो चुकी और निकट आ चुकी है उसे स्वीकार कर लो। और हे संयमियो! सन्देहों और शंकाओं

مبـدَّلة أو وضعهـا الواضعـون؟ أيهـا النـاس انظـروا هٰهنـا وهُنـا فاتركـوا الدَخَـن واقبلـوا مـا بـان ودنـا، ولا تتبعـوا الظنـون أيّهـا المتقـون قـد عـدل الله بيننـا فـلا تعدلـوا عـن عـدله، ولا تركنـوا إلى الشـقاء أيّهـا المسـلمون يـا ذرارى الصالحـين لا تكونـوا فى يـدَى إبليـس مرتهَنـين، مـا لكـم لا تتطهـرون واعلمـوا أن لله تدلّيـات ونفحـات، فـإذا جـاء وقـت التـدلّى الاعظـم فـإذا النـاس يسـتيقظون، و كلّ نفـس تتنبّـه عنـد ظهـوره إلا الفاسـقون ولـكلّ تَـدَلٍّ عنـوانٌ وشـأنٌ يعرفـه العارفـون وأعظـم التدليـات يـأتى بعلـوم مناسـبة لاهـل الزمـان، ليطفـئ نائـرة أهـل الطغيـان، فينكرهـا الذيـن كانـوا عاكفـين عـلى أصنامـهم فيسـبّون ويكفـرون، ولا يعلمـون أنهـا فايضـة مـن السـماء، وأنهـا شـفاء للذيـن تَنفّـروا مـن قـول المخطئـين الجاهلـين و كانـوا يـتردّدون،

का अनुकरण न करो। अल्लाह ने हमारे बीच इन्साफ़ कर दिया है, इसलिए उस के इन्साफ़ से न हटो। और हे मुसलमानो! दुर्भाग्य की ओर मत झुको। हे नेक लोगों की सन्तान! शैतान के हाथों गिरवी मत रहो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम पवित्रता ग्रहण नहीं करते। जान लो कि अल्लाह के क़ुर्ब (सानिध्य) की श्रेणियां और सुगन्धें हैं। फिर जब सानिध्य की चरम सीमा का समय आ जाता है तो लोग सहसा जागने लगते हैं और उसके प्रकटन के समय पापियों के अतिरिक्त हर व्यक्ति भली भांति सतर्क हो जाता है और ख़ुदा के हर सानिध्य (क़ुर्ब) की एक भूमिका तथा एक शान होती है जिसे ख़ुदा के आरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानी) जान लेते हैं और सबसे महान दलील युग के लोगों के लिए उचित विद्याएं लाता है ताकि वे उद्दण्ड लोगों की आग को बुझाएं। फिर वे लोग जो अपनी मूर्तियों के द्वार पर घूनी रमाए बैठे हुए हैं उनका इन्कार करते हैं, वे गालियां निकालते हैं और कुफ्र करते हैं और वे यह नहीं जानते कि वे आकाशीय फ़ैज़ हैं और वे चिन्तित होने वालों, दोषियों और अनपढ़ों के कथन से नफ़रत उन के लिए रोगमुक्त हैं। अत:

فینزل اللّٰہ لھم علومًا ومعارف تناسب مفاسد الوقت فھم بھا یطمئنون، کأنھا ثمر غضٌّ طریٌّ وعین جاریۃ، فھم منہ یأکلون ومنھا یشربون

فحاصل البیان أن المھدی الذی ھو مجدد الصلاح عند طوفان الطلاح، ومبلِّغ أحکام ربّ الناس إلی حد الإبساس، سُمّی مھدیًا موعودًا وإمامًا معھودًا وخلیفۃ اللّٰہ رب العالمین والسر الکاشف فی ھذا الباب أن اللّٰہ قد وعد فی الکتاب أن فی آخر الأیام تنزل مصائب علی الإسلام، ویخرج قوم مفسدون ۚ فأشار فی قولہ أنھم یملکون کل خصب وجدب، ویحیطون علی کل البلدان والدیار، ویُفسدون فسادًا عامًا فی جمیع الأقطار، وفی جمیع قبائل الأخیار والأشرار، ویضلّون الناس بأنواع

अल्लाह करने वालों के लिए ऐसी विद्याएं और अध्यात्म ज्ञान उतारता है जो युग के यथायोग्य हों और वे उन से संतुष्ट हों, जैसे कि वे (विद्याएं) तरोताज़ा फल हैं जिन में से वे खाते हैं और झरना जारी है जिस से वे पीते हैं।

अत: वर्णन का निष्कर्ष यह है कि महदी जो बुराइयों के तूफ़ान के समय सुधार का नवीनीकरण करने वाला और लोगों के प्रतिपालक के आदेशों को बहुत प्रयास और नम्रतापूर्वक पहुंचाने वाला है, उसका नाम महदी मौऊद और इमाम माहूद तथा अल्लाह रब्बुलआलमीन का ख़लीफ़ा रखा गया। और इस बारे में एक खुला राज़ है कि अल्लाह ने (अपनी) किताब (क़ुर्आन करीम) में यह वादा किया है कि अन्तिम युग में इस्लाम पर संकट आएंगे और उपद्रव करने वालों की जमाअत निकलेगी।

وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ (अल अंबिया - 97)

उसने अपने कथन مِنْ كُلِّ حَدَبٍ में संकेत किया है कि वे हर हरी घास के मैदान और वीराने के मालिक होंगे और समस्त देशों तथा शहरों का घिराव

الحيل وغوائل الزخرفة، ويلوّثون عرض الإسلام بأصناف الافتراء والتهمة، ويظهر من كل طرف ظلمةٌ على ظلمة، ويكاد الإسلام أن يزهق بتبعة، ويزيد الضلال والزور والاحتيال، ويرحل الإيمان وتبقى الدعاوى والدلال، حتى يخفى على الناس الصراط المستقيم، ويشتبه عليهم المَهْيَع القديم لا ينتهجون محجّة الاهتداء، وتزلّ أقدامهم وتغلب سلسلة الاهواء، ويكون المسلمون كثير التفرقة والعناد، ومنتشرين كانتشار الجراد لا تبقى معهم أنوار الإيمان وآثار العرفان، بل أكثرهم ينخرطون في سلك البهائم أو الذياب أو الثعبان، ويكونون عن الدين غافلين وكل ذلك يكون من أثر يأجوج ومأجوج، ويشابه الناس

कर लेंगे और वे सब क्षेत्रों समस्त सभ्य और बुरे कबीलों में सामान्य फ़साद फैला देंगे और लोगों को भिन्न-भिन्न प्रकार के बहानों तथा घातक चाटुकारी से गुमराह करेंगे और हर प्रकार के झूठ और लांछनों से इस्लाम के सम्मान को धब्बा लगाएंगे। और हर ओर से अंधकार पर अंधकार प्रकट हो जाएगा और इसके परिणामस्वरूप इस्लाम मिटने के क़रीब हो जाएगा। गुमराही, झूठ और धोखेबाज़ी बढ़ जाएगी और ईमान कूच कर जाएगा, केवल दावे और नख़रे बाक़ी रह जाएंगे। यहां तक कि सदमार्ग लोगों से छुप जाएगा और मुख्य मार्ग उन पर संदिग्ध हो जाएगा। वे हिदायत के मार्ग पर नहीं चलेंगे। उनके क़दम फिसल जाएंगे तथा कामवासना संबंधी इच्छाओं का सिलसिला विजयी हो जाएगा और मुसलमानों में बहुत फूट और वैर पैदा हो जाएगा। और टिड्डी दल के फैलने की तरह फैल जाएंगे। उनके पास ईमान के प्रकाश और इर्फ़ान के लक्षण बाक़ी न रहेंगे बल्कि उन में से अधिकतर चौपायों या सांपों की लड़ी में पिरोए जाएंगे और वे धर्म से लापरवाह हो जाएंगे और यह सब कुछ याजूज तथा माजूज के प्रभाव से होगा और लोग लक्वे से मारे हुए अंग की तरह हो जाएंगे जैसे कि वे मुर्दा हैं।

العضو المفلوج كأنهم كانوا ميتين

ففى تلك الايام التى يموج فيها بحر الموت والضلال، ويسقط الناس على الدنيا الدنيّة ويعرضون عن الله ذى الجلال، يخلق الله عبدًا كخلقه آدم من كمال القدرة والربوبية، مِن غير وسائل التعاليم الظاهرية، ويُسمّيه آدم نظرا على هذه النسبة، فإن الله خلق آدم بيديه وعلّمه الاسماء كلها، ومنّ منًّا عظيمًا عليه وجعله مهديا، وجعله من المستبصرين

و كذلك سماه عيسٰى ابن مريم بالتصريح بما كان خلقه وبعثه كمثل المسيح، وبما كان سِرّه كسرّه المستور، و كانا فى علل الظهور من المتحدين وتشابهت فتن زمنهما

फिर उसी युग में कि जिस में मृत्यु और गुमराही का सागर ठाठे मार रहा होगा और लोग तुच्छ दुनिया पर गिर रहे होंगे और प्रतापी अल्लाह से मुंह मोड़े हुए होंगे और प्रतापी अल्लाह से मुंह मोड़े हुए होंगे तो अल्लाह केवल अपनी क़ुदरत और प्रतिपालन की ख़ूबी से किसी बाह्य माध्यम के बिना आदम की पैदायश की तरह (अपने) एक बन्दे को पैदा करेगा और इसी अनुकूलता को दृष्टिगत रखते हुए वह उसका नाम आदम रखेगा, क्योंकि अल्लाह ने आदम को अपने हाथों से पैदा किया और उसे समस्त नाम सिखाए और उस पर महान उपकार किया तथा उसे महदी बनाया और विवेकशील लोगों में से बनाया।

और इसी प्रकार उसने स्पष्टतापूर्वक उसका नाम ईसा इब्ने मरयम रखा क्योंकि उसकी पैदायश और अवतरण मसीह के समान था और इसलिए कि उसका रहस्य मसीह के गुप्त रहस्य के समान था और ये दोनों प्रकटन के कारणों में संयुक्त थे। इन दोनों के युगों के उपद्रवों और इन दोनों के सुधार की पद्धतियों में समानता थी तथा स्वयं धर्म के शत्रुओं के दिलों में भी समानता थी। अत: महदी के युग का सबसे बड़ा लक्षण क़ौम याजूज और माजूज के

وصور إصلاحهما، وتشابهت قلوب أعداء الدين فالعلامة العظمى لزمان المهدى ظلمة عظيمة من فتن قوم يأجوج ومأجوج إذا علوا فى الارض وأكملوا العروج، وكانوا من كل حدب ناسلين★ وفى اسم المهدى إشارات إلى هذه الفتن لقوم متفكرين فإن اسم المهدى يدل على أن الرجل المسمى به أُخرج من قوم ضالين، وأدركه هُدى الله ونجاه من قوم فاسقين

فلا شك أن هذا الاسم يدل على مفاسد الزمان بمُجمَلٍ

★हाशिया :- هذه هى العلامة القطعية لأٰخر الزمان وقرب القيامة كما جاء فى مسلم من خير البرية قال قال رسول الله صلعم تقوم القيامة والروم اكثر من سائر الناس واراد من الروم النصارىٰ كما هو مسلّم عند ذوى الادراس والاكياس والمحدثين۔ منه

उपद्रवों के कारण बहुत बड़ा अंधकार है। जब वे पृथ्वी पर छा गए और पूर्ण उत्थान प्राप्त कर लिया और तेज़ी से हर ऊंचे स्थान से (दुनिया में) फलांगने वाले हो गए★ और महदी के नाम में सोच-विचार करने वाली क़ौम के लिए इन उपद्रवों की ओर इशारे मौजूद हैं। तो महदी का नाम बताता है कि वह व्यक्ति जिस का यह नाम रखा जाएगा वह गुमराहों की क़ौम में से पैदा किया जाएगा और उसे अल्लाह का मार्ग-दर्शन प्राप्त होगा और वह दुराचारी क़ौम से मुक्ति दिलाएगा।

निस्सन्देह यह नाम इन पंक्तियों के मध्य संक्षिप्त तौर पर युग की खराबियों को सिद्ध करता है और अंधकारों तथा अत्याचारों के समय और आपदाओं के

★हाशिया :- **★हाशिया :-** यह अन्तिम युग और क़यामत के निकट होने का ठोस लक्षण है। जैसा कि मुस्लिम में खैरुलबरीय: स. से रिवायत है रावी ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत उस समय आएगी जब रूमी दूसरे लोगों की अपेक्षा बहुसंख्या में होंगे। रूमियों से आप का अभिप्राय ईसाई थे, जैसे कि उलेमा तथा बुद्धिमानों और मुहद्दिसों के यहां यह बात मान्य है। (इसी से)

مَطْوِيٌّ من البيان، ويذكر من زمن الظلمات ووقت الظلامات وأوان نزول الآفات ويشير إلى شوائب الدهر ونوائبه، وغرائب القادر وعجائبه من تأييد المستضعفين ويدل بدلالة قطعية على أن المهدى لا يظهر إلا عند ظهور الفتن المبيدة والظلمات الشديدة، فإذا كثر الضلال وزاد اللدد والجدال، وعدم العمل الصالح وبقى القيل والقال، فيقتضى هذا الحال أن يهدى رجلا الربُّ الفعّال، وتتضرع الظلمة فى الحضرة لينزل نورٌ لتنوير المحجّة، فتنزل الملائكة والروح فى هذه الليلة الحالكة بإذن رب ذى القدرة الكاملة، فيُجعَلُ رجل مهديا ويُلقَى الروح عليه، ويُنوَّر

उतरने के क्षणों का वर्णन करता है और युग के ख़तरों एवं कष्टों की ओर इशारा करता और कमज़ोरों की सहायता में शक्तिमान ख़ुदा के अद्‌भुत कार्यों की ओर संकेत करता है और ठोस तौर पर सिद्ध करता है कि महदी केवल विनाशकारी उपद्रवों और घोर अंधकारों के प्रकट होने पर ही प्रकटन करेगा। तो जब गुमराही बढ़ जाएगी और झगड़ों एवं बहसों में वृद्धि हो जाएगी शुभ कर्म (नेक अमल) समाप्त हो जाएगा और केवल बहस-मुबाहसा रह जाएगा। तो यह हालत इस बात की मांग करेगी कि सर्वशक्तिमान रब्ब एक मनुष्य का मार्ग-दर्शन करे और अंधकार (अल्लाह के) सामने विनम्रतापूर्वक यह निवेदन करेगा कि वह मार्ग को प्रकाशित करने के लिए (अपना) प्रकाश उतारे। फिर इस घोर अंधकारमय रात में फ़रिश्ते और रूहुल क़ुदुस पूर्ण क़ुदरत रखने वाले रब्ब की आज्ञा से उतरें और एक मनुष्य को महदी बनाया जाए और उस पर रूह उतारी जाए और उसके दिल और आंखों को प्रकाशित कर दिया जाए, और उसे सरदारी और सम्मान बतौर हिब: (दान) प्रदान हो तथा संयम को उसका ज़ेवर बनाया जाए और वह अल्लाह के सहायता प्राप्त बन्दों में दाखिल हो जाए। क्योंकि जब उद्‌दण्डता चरम सीमा को पहुंच जाए तो वह आदेश न्याय,

قلبه وعينيه، ويُعطَى له السؤدد والمكرمة موهبة، ويُجعَل له التقوىٰ حلية، ويُدخَل فى عباد الله المنصورين فإن البغى إذا بلغ إلى انتهاء، فهذا هو يومُ حكم وقضاء وفصل وإمضاء، وعون وإعطاء، ولو لا دفعُ الله الطلاحَ بأهل الصلاح لفسدت الارض ولسُدّت أبواب الفلاح ولهلك الناس كلهم أجمعين

فلاجل ذلك جرت سُنة الله أنه لا يُظهِر ليلة ليلاء إلا ويُرى بعدها قمراء، وإنه جعل مع كل عسرٍ يُسرا، ومع كل ظلام نورا ففكر فى هذا النظام ليظهر عليك حقيقة المرام، وإن فى ذٰلك لآيات للمتوسّمين واعلم أن ظلمة هذا الزمان قد فاقت كل ظلمة بأنواع الطغيان، وطلعت علينا آثار مُخوفة وفتن مذيبة الجَنان، والكفار نسلوا من كل حدب كالسِّرحان

निर्णय, लागू करना, सहायता और प्रदान का दिन होता है। और यदि अल्लाह नेक लोगों के द्वारा बुराइयों को न मिटाता तो पृथ्वी में अवश्य ही उपद्रव फैल जाता और सफलता के दरवाज़े बन्द हो जाते तथा सब लोग मर जाते।

तो इस कारण से अल्लाह की यही सुन्नत जारी है कि वह कोई घोर अंधेरी रात प्रकट नहीं करता, परन्तु यह कि वह इस के बाद चांदनी रात दिखाता है और यह कि उसने हर तंगी के साथ आसानी और हर अंधेरे के साथ प्रकाश रखा है। अत: तू इस व्यस्था पर विचार कर कि तुझ पर उद्देश्य की वास्तविता प्रकट हो। निस्सन्देह इसमें विवेकशील लोगों के लिए बहुत से निशान हैं। और जान लो कि इस युग का अंधकार हर प्रकार की उद्दण्डता में हर अंधकार पर अग्रसर हो गया है और भयावह लक्षण दिलों को पिघला देने वाले उपद्रव हम पर प्रकट हो चुके हैं और काफ़िर लूट मार करते हुए भेड़िए की तरह हर ऊंचाई को फलांग रहे हैं। अत: अब वह समय आ गया है कि मुसलमानों की सहायता की जाए और कमज़ोरों को शक्ति दी जाए और दज्जालों के षडयंत्रों को कमज़ोर किया जाए। क्या पृथ्वी अत्याचार से भर नहीं गई? और लोगों की अक्लें मारी गई हैं

ناهبين فحان أن يُعان المسلمون ويُقوَّى المستضعفون، ويوهَن كيد الدجّالين ألم تمتلئ الأرض ظلاما، وسفهت النفوس أحلاما، ونحَت الناس أصناما، وغلب الكفر وحاق به الظفر وقلّ التخفّر، فزخرفوا الزور الكبير وزيّنوا الدقارير، وصالوا بكل ما كان عندهم من لطم، وما بقى على كيد من ختم، واتفق كل أهل الطلاح، وصاروا كالماء والراح، وطفق زمر الجهال يتبعون آثار الدجال، ومن يقبل مشرب هذيانهم يكون خالصةَ خُلصانهم ووالله إن خباثتهم شديدة، وأما حلمهم فمكيدة، بل هو أحبولة من حبائل ختلهم، ورَسَنٌ استمر من فتلهم، وستعرفون دجاليّتهم متلهّفين

وإنهم قوم تفور المكائد من لسانهم وعينيهم

तथा लोगों ने मूर्तियां बना ली हैं और कुफ्र विजयी हो गया है तथा उसे सफलता प्राप्त हो गयी, शर्म और लज्जा कम हो गई। इसलिए उन्होंने बड़े से बड़े झूठ को सुसज्जित करके और हर बुरे झूठ को सजा कर प्रस्तुत किया और कष्ट पहुंचाने के जो-जो साधन उनके पास थे उनके द्वारा उन्होंने आक्रमण किया और वे समस्त षडयंत्र इस्तेमाल किए, समस्त दुराचारी लोग एक हो गए। और पानी और शराब की तरह दूध और शक्कर हो गए और मूर्खों के गिरोह दज्जाल के पद-चिन्हों पर चलने लगे। जो व्यक्ति उनके बकवास के मार्ग का अनुकरण करेगा वह उनका शुद्ध पक्का दोस्त होगा। ख़ुदा की क़सम उन की अन्तः कुटिलता (ख़बासत) बहुत तीव्र है और उनका नर्म स्वभाव षडयंत्र है। बल्कि वे तो उनके छल के फन्दों में से एक फन्दा है और छल की ऐसी रस्सी है जो उनके बटने से मज़बूत हो गई है। और तुम शीघ्र ही उनकी दज्जालियत को निराश होकर पहचान लोगे।

और ये ऐसे लोग हैं कि छल-कपट उनकी ज़ुबान, आंख, नाक, कान, हाथों, कंधों, पैरों और कूल्हों से फूट रहा है, और मैं उनके अंगों के एक-एक टुकड़े को धोखे बाज़ों के समान फड़कते देखता हूं। युग बिगड़ गया तथा

وأنفهم وأُذنيهم، ويديهم وأصدريهم ورجليهم ومِذروَيهم، وأرى كل مضغة من أعضائهم واثبة كالماكرين فسد الزمان وعمّ الفسق والعدوان وتنصرت الديار والبلدان؛ فالله المستعان والناس يُدلجون فى الليلة الليلاء ويعرضون عن الشمس والضياء، ويضيعون الإيمان للاهواء متعمدين وأرى القسيسين كالذى أكثبَه قنصٌ، أو بدت له فرصٌ، وأجدهم بأنواع حيل قانصين

ومن مكائدهم أنّهم يأسُون جراح الموهوص، ويرِيشون جناح المقصوص، لعلهم يُسخّرون قوما طامعين يُرغّبون ضُلًّا بنَ ضُلٍّ، ويفرِضون له مِن كلِّ كثيرٍ وقُلٍّ، لعلهم يحبسونه

दुराचार-पाप और अत्याचार सार्वजनिक हो गया और शहरों के शहर तथा देश के देश ईसाई हो गए। तो अल्लाह ही है जिससे सहायता मांगी जा सकती है। लोग घोर अंधेरी रात में सफ़र कर रहे हैं और सूर्य तथा (उसके) प्रकाश से मुंह फेर रहे हैं और जान-बूझ कर इच्छाओं के लिए ईमान व्यर्थ कर रहे हैं तथा मैं पादरियों को उस व्यक्ति के समान देखता हूं शिकार जिस के निकट आ गया हो या उसके अवसर पैदा हो गए हों। और मैं उनको विभिन्न बहानों से शिकार करते हुए पाता हूं।

उनकी धोखेबाज़ियों में से एक तरीक़ा यह है कि वे चोट लगे हुए के ज़ख्मों का इलाज करते हैं। और टूटे पंख वाले को पंख लगाते हैं ताकि वे इस प्रकार लालची लोगों को अपने क़ाबू में ले आएं, वे गुमराह इब्न गुमराह को दिलचस्पी दिलाते हैं और हर कमो बेश में से उन के लिए वज़ीफ़ा निर्धारित करते हैं ताकि वे उन्हें इस तौक़ के द्वारा क़ैद कर लें। फिर वे उन्हें तबाह हो चुके (मरे हुए) लोगों के गढ़े में गिरा देते हैं और आर्थिक दशा खराब हो चुके लोगों का सुधार, क़ैदियों की रिहाई, फक़ीरों की हमदर्दी में तेज़ी दिखाते हैं बशर्ते कि वे उनके उस धर्म में सम्मिलित हो जाएं जो भड़कती आग का

بغُلٍّ، ثم يُسقطونه فی هوّة الهالكين يُبادرون إلى جبر الكسير وفكّ الاسير ومواساة الفقير، بشرط أن يدخل فی دينهم الذی هو وقود السعير، ويرغّبونهم إلى بناتهم وأنواع لذاتهم ليغترّ الخَلق بجهلاتهم ويجعلوهم كأنفسهم مفسدين فالناس لا يرجعون إليهم بأناجيل متلوّة، بل بخطبة مجلوّة أو بمال مجّان كالناهبين ولا يتنصرون لاعتاب الرؤوف البَرّ، بل يهرولون لاحتلاب الدرّ لكی يكونوا متنعمين وكذلك أشاعوا الضلالات ومدّوا أطنابها، وفتحوا من كل جهة بابها، وأعدّوا شهوات الاجوفَين ودعوا طُلابها، فإذا يُسِّرَ لاحد منهم العقد، أو أُعطِیَ له النقد، وآمَنوه مِن عيشٍ

ईंधन हैं। वे उनको अपनी बेटियों तथा अन्य आनन्दों की दिलचस्पी दिलाते हैं ताकि प्रजा अपनी अनभिज्ञता के कारण धोखे में आ जाए और ताकि वे उन्हें भी अपने समान उपद्रवी बना दें। लोग पढ़ी जाने वाली इंजीलों के कारण से नहीं बल्कि लुटेरों की तरह सुन्दर स्त्रियों तथा मुफ़्त माल के कारण उन की ओर लौटते हैं। वे अत्यन्त दयालु तथा उपकारी ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए ईसाई नहीं होते बल्कि वे दूध दोहने के लिए दौड़े जाते हैं ताकि वे समृद्धशाली हो जाएं। इस प्रकार उन्होंने गुमराहियों का प्रकाशन किया और उन के तम्बू लगा दिए और हर ओर से गुमराहियों (पथ-भ्रष्टताओं) के तम्बुओं के दरवाज़े खोल दिए हैं। और उन्होंने पेट और गुप्त अंग की इच्छाओं के सामान उपलब्ध किए और उनके अभिलाषियों को बुलाया। फिर जब उनमें से किसी को निकाह का इक़रारनामा उपलब्ध हो जाता है या उसे नक़द माल दिया जाता है और वे ईसाई उसे दरिद्रता से बचा लेते हैं तो उन का जो मतलब होता है वह पूरा हो जाता है। इसी प्रकार उनकी चालों का जाल और उनके छल प्रपंचों का जाल बिछा है। इसी कारण से उनके पास सुस्त और आलसी लोगों के ऐसे गिरोह पंक्तियों में एकत्र हो जाते हैं जो खाने-पीने और

أنكَد، فكأَنْ قَدْ و كذٰلك كانت فخُّ سِيَرهم، وشِباكُ حِيَلهم، ولاجلها اصطفّ لديهم زُمر من الكسالٰى، لا يعلمون إلا الاكل والشرب والدلال، ولا يوجد صغوُهم إلا إلى شرب المدام أو إلى الغِيد وأطايب الطعام، فيعيشون قرير العين بوصال العِين ووصول العَين و كذلك لا يألوا القسيسون جُهدًا فى إضلال العوام، ويُنعمون على الذين هم كالانعام، وينفُضون عليهم أيادىَ الإنعام، ويوطنونهم أمنع مقام من الإكرام، وتراهم مكبّين على الحطام، كأنهم هُنَيدة مِن راغية، أو ثُلّة من ثاغية فهؤلاء هم الدجال المعهود، فليَسّرِ عنك إنكارك المردود وإن هذه الايام أيام اقتحام الظلام، وأظلال خيام

नख़रों के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते और उनका झुकाव केवल और केवल शराब पीना तथा मात्र दुबली-पतली स्त्रियों तथा उत्तम वयंजनों की ओर होता है तो वे सुन्दर आंखों वाली स्त्रियों की संगत और माल एवं सोने की प्राप्ति के साथ खुश-व-ख़ुर्रम (आनन्द दायक) जीवन गुज़ारते हैं। इस प्रकार पादरी लोग सामान्य जन को गुमराह करने में कोई कमी नहीं छोड़ते। और उन लोगों पर जो चौपायों के समान हैं कृपाएं करते हैं और उन पर इनाम न्योछावर करते हैं तथा सम्मानपूर्वक उन्हें सुरक्षित स्थानों पर आबाद करते हैं और तू उन्हें दुनिया के फ़ानी (नश्वर) माल-दौलत पर गिरे हुए देखता है जैसे कि वे ऊंटनियों का गल्ल: और बकरियों का रेवड़ हैं। अत: यही लोग वह दज्जाल माहूद (वादा दिया गए) हैं। अत: चाहिए कि तुम्हारा इन्कार-ए-मरदूद तुम से दूर हो जाये और निश्चित ही यह दिन घोर अन्धकार की यलगार के दिन हैं और डेरे डालने वाले दिन के तम्बुओं की छाया हैं और हम निस्संदेह अन्धेरी रात में प्रवेश कर चुके हैं और सैलाब में अंधाधुन्ध घुस चुके हैं और हमारी मंज़िलों में ऐसे मार्ग मौजूद हैं जिन में राह दिखाने वाला भी भटक जाये। और जिन में एक माहिर अनुभवी आश्चर्यचकित हो जाये। हमें हमारे इस

يوم القيام، وإنا اغتمدنا الليل واقتحمنا السيل مختبطين وفي منازلنا طرق يضلّ بها خفير، ويحار فيها نحرير، وخوّفَنا يومنا الصعب الشديد، ورأينا ما كنا منه نحيد، وليس لنا ما يشجّع القلب المزءود، ويحدو النِضْوَ المجهود إلا ربنا رب العالمين

والناس قد استشرفوا تلفًا وامتلاءوا حَزَنًا وأسفًا، ونسوا كل رزء سلَفَ وكل بلاء زلَفَ، ويستنشئون ريح مُغيث ولا يجدون مِن غير نتن خبيث، فهل بعد هذا الشر شر أكبر منه يُقال له الدجال؟ وقد انكشف الآثار وتبينت الإهوال، ورأينا حمارًا يجوبون عليه البلدان،

अत्यन्त कठिन समय ने भयभीत कर दिया है और हम ने वह कुछ देखा है जिस से हम बचना चाहते थे और हमारे लिए हमारे रब्ब, रब्बुल आलमीन के सिवा कोई नहीं जो भयभीत दिल को दिलेर करे और निराश (नफ़्स की) ऊंटनी को तेज़ चला सके।

और लोग तबाही के निकट पहुँच चुके हैं और गम से भर गए हैं और पिछली हर मुसीबत और परेशानी को भूल चुके हैं और वह सहायता की सुंगंध सूंघना चाहते हैं परन्तु दुष्टता की दुर्गन्ध के अतिरिक्त कुछ नहीं पाते, क्या इस बुराई से बढ़कर भी कोई बुराई हो सकती है जिसे दज्जाल कहा जाये जिसकी निशानियाँ प्रकट हो चुकी हैं और उसके ख़तरे स्पष्ट हो चुके हैं। और हमने उस गधे को भी देख लिया है जिस पर वे देश-देश की यात्रा करते हैं और जो खुरों से नाकेदार पत्थरों को रोंदता है और प्रतिभाशाली लोगों के नज़दीक वर्ष की यात्रा एक महीने में और महीने की दूरी एक या दो दिनों में तय कर लेता है और यात्रियों को प्रसन्न कर देता है। वह एक बहुत घूमने-फिरने वाली सवारी है। ऊंट उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते न नई उम्र के न बड़ी उम्र के। उसके लिए नए-नए मार्ग बनाए गए और दस माह की गाभिन ऊंटनियां

فیطِسّ بأخفافه الظّرّانَ، و یجعل سَنةً کشهر عند ذوی العینین، و یجعل شهرا کیوم أو یومین، و یعجب المسافرین إنه مرکبٌ جوّاب لا تواهقه رِکاب، ولا ثنیة ولا ناب، والسبل له جُدّدت، والازمنة بظهوره اقتربت، والعِشار عُطّلت، والصحف نُشرت، ★ والجبال دُکّت، والبحار فُجّرت،

बेकार हो गईं, अखबार और किताबों का प्रकाशन-प्रसारण किया गया, ★ पर्वत चूर-चूर कर दिए गए। और दरिया जारी किए गए तथा लोगों में मेल-मिलाप पैदा किया गया और पृथ्वी जैसे लपेट दी गई है और वह अपने किनारों को क़रीब करती चली जा रही है। जवान ऊंटनियां ऐसी बेकार कर दी गईं कि उन से काम नहीं लिया जाता यह हानि का स्थान नहीं बल्कि अल्लाह ने लोगों की

★الحاشیۃ۔ اعلم ان القراٰن مملو من الانباء المستقبلۃ والواقعات العظیمۃ الاٰتیۃ ویقتاد الناس الی السکینۃ والیقین و عشاره تخور لحمل السالکین فی کل زمان و اعشاره تفور لتغذیۃ الجائعین فی کل اوان و هو شجرۃ طیبۃ یوتی اکله کل حین و ذلّلت قطوفه فی کل وقت للمجتنین فما من زمن ماله من ثمر و لا تعطل شجرته کشجرۃ عِنبٍ و تمرٍ بل یُری ثمراته فی کل امر و یطعم مستطعمین و من اعظم معجزاته انه لا یغادر واقعۃ من الواقعات التی کانت مفیدۃ للناس او مضرۃ و لکن کانت من

★**हाशिया :-** जान लो कि क़ुर्आन भविष्य की भविष्यवाणियों और आने वाली महान घटनाओं से भरा पड़ा है और लोगों को इत्मीनान और विश्वास की ओर मार्ग-दर्शन करता है तथा उसकी ऊंटनियां हर युग में साधकों को सवार करने के लिए पुकार रही हैं और उसकी देगें भूखों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए हर दम उबल रही हैं, और वह (क़ुर्आन) ऐसा पवित्र वृक्ष है जो हर समय ताज़ा फल देता है और उस के गुच्छे फल चुनने वालों के लिए हर समय झुके हुए हैं और कोई युग ऐसा नहीं जिसमें उसके फल न हों, और उसका वृक्ष अंगूर और खजूर के वृक्ष की तरह कभी फलहीन नहीं होता बल्कि हर मामले में यह अपने फलों को प्रकट करता है। और खाने के अभिलाषियों को वह (क़ुर्आन) खाना खिलाता है और उसका महानतम चमत्कार यह है कि वह लोगों के लिए लाभप्रद या हानिप्रद अहम घटनाओं में से किसी घटना को नहीं छोड़ता बशर्ते कि वे महत्त्वपूर्ण हों जैसा कि अज़्ज़ा-

والنفوس زُوّجت، وجُعلت الارض كأنها مطويّة ومزلف طرفيها، وتُركت القِلاص فلا يُسعى عليها وليس هذا محلّ إلباس، بل أرصده الله لخير الناس، ولو كان من صنع الدجّالين فهذه المراكب جارية مذ مُدّة، وليست سواها قعدة، وفيها آيات للمتفطنين

भलाई के लिए यह चीज़ तैयार की है। यद्यपि यह दज्जालों की कारीगरी हैं। तो ये सवारियां बहुत समय से जारी हैं और इनके अतिरिक्त अन्य कोई दज्जाल का गधा नहीं। इसमें बुद्धिमानों के लिए कई निशान हैं।

अत: इस वर्णन से सिद्ध हो गया कि अलमहदी और युग को मसीह के प्रकटन का यही समय है। निस्सन्देह गुमराही आम हो गई है और पृथ्वी

المعظمات كما قال عزّ وجلّ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ و فى هذا اشارة من رب عليم الى ان كل ما يفرق فى ليلة القدر من امر ذى بال فهو مكتوب فى القراٰن كتاب الله ذى كل عظمة و جلال فانه نزل فى ليلة القدر بنزول تام فبورك منه الليل باذن ربّ علّام فكلما يوجد من العجائب فى هٰذه الليلة يوجد من بركات نزول هٰذه الصحف المباركة فالقراٰن احقّ و اولٰى بهذه الصفات فانه مبدأ اول لهذه البركات و ما بوركت الليلة الا به من ربّ الكائنات و لاجل ذالك يصف القراٰن نفسه بأوصاف توجد فى ليلة القدر

व-जल्ल: ख़ुदा ने फ़रमाया है

(अद्दुखान - 5)فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ इसमें हर बुद्धिमत्ता पूर्ण बात का निर्णय किया जाता है। और इसमें सर्वज्ञ रब्ब की ओर से इस बात का इशारा है कि हर अहम मामला जो लैलतुलक़द्र में निर्णय पाता है वह अल्लाह की श्रेष्ठता और प्रतापी किताब क़ुर्आन में लिखा हुआ है, क्योंकि वह (क़ुर्आन) पूर्ण उतरने के साथ लैलतुलक़द्र में उतारी। फिर उस क़ुर्आन से उस विशेष रात को सर्वज्ञ रब्ब की आज्ञा से बरकत दी गई। फिर जो कुछ भी उस (विशेष) रात में चमत्कार पाए जाते हैं वे सब इन मुबारक किताबों के उतरने की बरकतों के कारण हैं। अत: क़ुर्आन इन विशेषताओं का अधिक हक़दार और योग्य है। क्योंकि वह इन सब बरकतों के प्रारंभ करने का प्रथम स्थान है और उस शबेक़द्र को कायनात के रब्ब की ओर से केवल और केवल और केवल इस (क़ुर्आन) के कारण बरकत दी गई। इसी कारण क़ुर्आन स्वयं

فثبت من هذا البيان أن هذا هو وقت ظهور المهدی ومسیح الزمان، فإن الضلالة قد عمّت، والارض فسدت، وأنواع الفتن ظهرت، و کثرت غوائل المفسدین و کل ما ذُکر فی القرآن من علامات آخر الزمان فقد بدت کلها للناظرین

बिगड़ गई है और भिन्न-भिन्न प्रकार के उपद्रव प्रकट हो गए हैं तथा उपद्रव फैलाने वालों द्वारा बरबादियां बहुत अधिक हो गई हैं। और अन्तिम युग के लक्षण जिनका क़ुर्आन में वर्णन किया गया है वे सब के सब दर्शकों के लिए प्रकट हो चुके हैं।

और जो लोग यह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि महदी केवल अरब देश या पश्चिमी देशों के किसी देश से प्रकट होगा। तो उन्होंने निस्सन्देह बहुत बड़ी ग़लती की

بل اللیلة کالھلال وھو کالبدر و ذٰلك مقام الشکر والفخر للمسلمین

و انی نظرت مرارا فوجدت القراٰن بحرا زخّارا و قد عظمه الله انواعا واطوارا فما للمخالفین لا یرجون له وقارًا و انکروا عظمته انکارا و یتکئون علی احادیث ما طھر وجھھا حق التطھیر و یترکون الحق الخالص للدقاریر ولا یخافون رب العالمین واذا قیل لھم تعالوا الیٰ کتاب سواء بیننا و بینکم لتخلصوا من الظلام و تفتح اعینکم قالوا

को उन विशेषताओं से विभूषित ठहराता है जो लैलतुलक़द्र में पाई जाती हैं, बल्कि यह रात तो नवचन्द्र के समान है और वह (क़ुर्आन) चौदहवीं के चन्द्रमा के समान है तथा यह बात मुसलमानों के लिए शुक्र का स्थान और गर्व करने योग्य है।

मैंने अनेकों बार विचार किया तो क़ुर्आन को एक अथाह सागर पाया। अल्लाह ने उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से श्रेष्ठता प्रदान की है। फिर विरोधियों को क्या हो गया है कि यह उसकी प्रतिष्ठा नहीं चाहते। उन्होंने उसकी महानता का पूर्णतया इन्कार कर दिया है और वे उन हदीसों का सहारा ले रहे हैं जिनकी अच्छी तरह जांच-पड़ताल नहीं की गई। वे बुरे झूठ के लिए शुद्ध सच्चाई को छोड़ रहे हैं और वे समस्त लोकों के रब्ब से नहीं डरते और जब उन से यह कहा जाए कि उस किताब की ओर आओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच बराबर है ताकि तुम अंधकार से मुक्ति पाओ। और तुम्हारी आंखें खुल जाएं तो वे कहते हैं कि जो कुछ हमने अपने पहले

والذين يرقبون ظهور المهدى من ديار العرب، أو من بلدة من بلاد الغرب، فقد أخطأوا خطأ كبيرًا وما كانوا مُصيبين فإن بلاد العرب بلاد حفظها الله من الشرور والفتن ومفاسد كفار الزمن، ولا يُتوَقَّع ظهور الهادى إلا فى بلاد كثرت فيها طوفان الضلال، و كذٰلك جرت سُنة الله ذى

और वे (इस राय में) सही नहीं हैं। क्योंकि अरब देश वे देश हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने बुराइयों, उपद्रवों और युग के काफ़िरों के उत्पातों से सुरक्षा में रखा है। और उस पथ-प्रदर्शक (सच्चे) के प्रकटन की आशा केवल उन प्रदेशों में की जा सकती है जिन में गुमराही का तूफ़ान तीव्रतम हो। महा प्रतापी ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार जारी है और हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान की भूमि भिन्न-भिन्न प्रकार के उपद्रव के लिए विशिष्ट है और इसमें मुर्तद होने के दरवाज़े खोल दिए गए हैं

كفٰى لنا ما سمعنا من اٰباء نا الاوّلين اولو كان اٰباء هم لا يعلمون شيئا من حقايق الدين و انى فكرت حق الفكر فوجدت فيه كلّ انواع الذكر و ما من رطب و لا يابس الا فى كتاب مبين و من انباءه انه اخبر عن نشر الصحف فى اٰخر الزمان و كذٰلك ظهر الامر فى هذا الاوان وقد بدت فى هٰذا الزمن كتب مفقودة بل موؤدة حتى ان كثرتها تعجب الناظرين وظهرت كل وسايل الاشاعة والكتابة و لا بد من أن نقبل هٰذا الإمر من غير

बाप-दादों से सुना वही हमारे लिए पर्याप्त है, चाहे उनके ये बाप-दादे धर्म की वास्तविकताओं मे से कुछ भी न जानते हों। मैंने भलीभांति सोच-विचार किया तो मैंने उसमें ज़िक्र के सब प्रकार पाए और कोई अहम और साधारण बात ऐसी न थी जो इस किताब मुबीन में मौजूद न हो। उसकी भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी यह भी है कि उसने अन्तिम युग में पुस्तकों के प्रकाशन-प्रसारण की खबर दी है और वह भविष्यवाणी बिल्कुल उसी प्रकार इस युग में प्रकट हो गई। इस युग में वे पुस्तकें प्रकट हुईं जो पहले अप्राप्य थीं बल्कि दफ़्न थीं, यहां तक कि उन पुस्तकों की प्रचुरता दर्शकों को आश्चर्य में डाले हुए है और प्रकाशन तथा लेखन के हर प्रकार के साधन (माध्यम) प्रकट हो चुके हैं। और इस के बिना चारा नहीं कि हम इस बात को बिना सन्देह-व-शंका के स्वीकार कर लें। यदि तुम को इस पुस्तकों की प्रचुरता के बारे में कोई सन्देह हो तो उसका कोई उदाहरण पहले युगों से प्रस्तुत करो।

الجلال وإنا نرى أن أرض الهند مخصوصة بأنواع الفساد، وفُتحت فيها أبواب الارتداد، وكثر فيها كل فسق وفجور، وظلم وزور، فلا شك أنها محتاجة بأشدّ الحاجة إلى نصرة الله ذى العزة والقدرة، ومجيءِ مهديٍّ من حضرة العزّة ووالله لا نرى نظير فساد الهند فى ديار أُخرى، ولا فتنًا كفتن هذه

तथा इसमें पाप, दुराचार, अत्याचार और झूठ की बहुतायत है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस (देश) को अल्लाह की क़ुदरत की सहायता तथा अल्लाह तआला की ओर से महदी के आगमन की अत्यन्त आवश्यकता है। ख़ुदा की क़सम! हम हिन्दुस्तान (में मौजूद) फ़साद और उन ईसाइयों के फ़ित्ने का उदाहरण दूसरे देशों में नहीं देखते। सही हदीसों में आया है कि दज्जाल पूर्वी देशों से निकलेगा और क़ुर्आन खुले-खुले लक्षणों के साथ इस ओर इशारा करता है। इसलिए आवश्यक

الاستزابة وان كنت فى شك من هٰذا فات نظيره من زمن الاوّلين

ومن انباء العليم القهار انه اخبر من تعطيل العشار و تفجير البحار وتزويج الديار فظهر كما اخبر فتبارك عالم غيوب السمٰوات والارضين واخبر عن قوم ذوى خصب ينسلون من كل حدب ويعلون علوا كبيرًا ويفسدون فى الارض فسادًا مبيرا فرئينا تلك القوم باعيننا ورئينا غلوهم وغلبتهم بلغت مشارق الارض ومغاربها تكاد السمٰوات

और बहुत जानने वाले तथा महाप्रकोपी ख़ुदा की भविष्यवाणियों में से यह भी है कि उसने दस माह की गाभिन ऊंटनियों के बेकार हो जाने, समुद्रों और दरियाओं के फाड़े जाने तथा देशों के परस्पर मेल जोल की सूचना दी और फिर जैसे सूचना दी वैसा ही प्रकटन में आ गया। अत: बहुत ही बरकत वाला है वह ख़ुदा जो आकाशों और ज़मीनों की गुप्त बातों का ज्ञान रखने वाला है। और उसने एक ऐसी खुशहाल क़ौम के बारे में भी सूचना दी जो हर बुलन्दी से फलांगते हुए आएगी और बहुत बड़ी उद्दण्डता करेगी और पृथ्वी में विनाशकारी फ़साद फैलाएगी। फिर हमने इस क़ौम को अपनी आंखों से देखा और उन के हद से गुज़र जाने और ज़ोर को भी देखा जो पूरब तथा पश्चिमों में पहुंच चुका है। क़रीब है कि उनके फ़सादों के कारण आकाश फट जाएं। वे सच को झूठ से मिला देते हैं और वे दज्जाल क़ौम हैं। उन्होंने नर्मी, लालच देने और भयंकर अक्षरांतरण को गुमराह करने का एक फन्दा

النصارىٰ وقد جاء فی الاحادیث الصحیحة أن الدجال یخرج من الدیار المشرقیة، والقرآن یشیر إلى ذلك بالقرائن البینة، فوجب أن نحکم بحسب هذه العلامات الثابتة البدیهة، ولا نتوجه إلى إنکار المنکرین
والذین یرقبون المهدی فی مکة أو المدینة فقد وقعوا

है कि हम इन प्रमाणित स्पष्ट लक्षणों के अनुसार फैसला करें और इन्कार करने वालों के इन्कार की ओर कोई ध्यान न दें।

और जो लोग महदी का मक्का या मदीना में इन्तिज़ार कर रहे हैं तो वे खुली गुमराही में पड़ गए हैं। और यह कैसे हो सकता है जब कि अल्लाह ने अपनी विशेष कृपा और दया के साथ पृथ्वी के इस क्षेत्र की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ली हुई है। इन क्षेत्रों में दज्जाल का रोब दाख़िल नहीं होगा और न ही वहां के रहने

یتفطرن من مفاسدهم یلبسون الحق بالباطل و کانوا قوما دجّالین اتخذوا الحلم والاطماع والتحریف المنّاع شبکة الاضلال واهلکوا خلقا کثیرا من هذا التثلیث کالمغتال و کل من یقصد منهم طرق الغول الخبیث فلا بد له من هذا التثلیث فیهلکون بعض الناس بالحلم المبنی على الاختداع بانواع الاطماع و بعضًا اٰخر بظلام التحریف الذی هو عدو الشعاع و کذلك یضلون الخلق متعمّدین وما نفعهم حدیث الاب والابن

बनाया हुआ है और बहुत सी (ख़ुदा की) मख़्लूक़ को उस तस्लीस के द्वारा धोखे से मारने वाले की तरह मार दिया है और उनमें से हर वह व्यक्ति जो बहुत बड़ा पापी (ख़बीस) और भटके हुए लोगों के मार्ग को अपनाता है तो उस को तस्लीस (के धोखे) के अतिरिक्त चारा नहीं। फिर वे कुछ लोगों को तो धोखे पर आधारित शालीनता के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के लालच देकर मारते हैं तथा कुछ अन्य लोगों को प्रकाश के शत्रु अक्षरांतरण के अंधकारों से तबाह करते हैं और इस प्रकार वे ख़ुदा की प्रजा को जान बूझ कर गुमराह कर रहे हैं। उन्हें बाप, बेटा और रूहुल क़ुदुस के क़िस्से ने कुछ लाभ न दिया, क्योंकि वह तो केवल एक मनगढ़त बात है। हां इस (शालीनता, लालच देने वाले अक्षरांतरण वाली) तस्लीस ने उन्हें अवश्य लाभ पहुंचाया है। अत: वे गन्दगी और मलिनता वाले उद्देश्यों में सफल हैं। मुझे उन पर आश्चर्य है कि किस प्रकार उनकी रूहुलक़ुदुस से सहायता की गई? और उन्होंने

فی الضلالة الصریحة و کیف، واللّٰہُ کفل صیانة تلك البقاع المبارکة بالفضل الخاص والرحمة، ولا یدخل رعب الدجال فیها، ولا یجد أهلها ریح هذه الفتنة فالبلاد التی یخرج فیها الدجال أحق وأولی بأن یرحم أهلَها الربُّ الفعال، ویبعث فیهم من کان نازلا بالإنوار السماویة کما خرج الدجال بالقوی الارضیة کالشیاطین وأما ما قیل أن المهدی مُختفٍ فی الغار فهذا قول لا أصل له عند ذوی الابصار، وهو کمثل قولهم أن عیسٰی لم یمت بل رُفع بجسمه إلی السماء ، وینزل عند خروج الدجال والفتنة الصمّاء، مع أن القرآن

वालों को इस फ़ित्ने (दज्जाल) की हवा लगेगी। इसलिए वे देश जहां दज्जाल निकलेगा वे इस बात के अधिक योग्य और पात्र हैं कि उनके रहने वालों पर कर्मठ (बहुत काम करने वाला) रब्ब रहम करे और आकाशीय प्रकाशों के साथ उतरने वाले को उनमें भेजे। जैसा कि दज्जाल शैतानों की तरह ज़मीनी शक्तियों के साथ (इन में) निकला हैं। और यह जो कहा गया है कि महदी किसी गुफ़ा में छुपा हुआ है। तो इस कथन का प्रतिभाशाली लोगों के नज़दीक कोई आधार नहीं तथा यह तो ऐसी ही बात है जैसे वे कहते हैं कि ईसा की मृत्यु नहीं हुई बल्कि अपने शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए गए हैं। और वह दज्जाल निकलने तथा भारी फ़ित्ने के समय उतरेंगे। जबकि क़ुर्आन खुले स्पष्ट वर्णन के साथ उनकी मृत्यु हो जाने खबर देता है।

و رُوح القدس و ان هو الا الحدیث ولٰکن نفعهم هٰذا التثلیث ففازوا المطالب بالخبث والرجس فعجبت لهم کیف ایدوا من روح القدس و نسلوا من کل حدب فرحین ولکل امر اجل فاذا جاء الاجل فلا ینفع الکایدین کیدهم ولا یطیقون قبل الصادقین منه

कैसे इतराते हुए हर ऊंचाई को तेज़ी से फलांग लिया। हर मामले के लिए एक समय सीमा होती है और जब वह समय सीमा आएगी तो धोखेबाज़ों को उनका कोई धोखा लाभ न देगा और वे सच्चों का सामना करने की शक्ति नहीं पाएंगे। (इसी से)

يُخبر عن وفاته ببيان صريح مبين

فالحق أن عيسى والإمام محمد أطرحا عنهما جلابيب أبدانهما وتوفاهما ربّهما وألحقَهما بالصّالحين، وما جعل الله لعبد خُلدًا، وكل كانوا من الفانين ولا تعجَب من أخبار ذُكر فيها قصّة حياة المسيح، ولا تلتفت إلى أقوال فيها ذكر حياة الإمام ولو بالتصريح، وإنها استعارات وفيها إشارات للمتوسّمين والبيان الكاشف لهذه الاسرار، والكلام الكامل الذى هو رافع الاستار، أن لله عادة قديمة وسُنّة مستمرة أنه قد يُسمّى الموتى الصالحين أحياء، ليغِيظ به أعداءً أو يبشّر به أصدقاءً، أو يُكرم به بعض عباده المتقين، كما قال عزّ وجلّ فى الشهداء لا تحسبوهم

तो सच यह है कि ईसा और इमाम मुहम्मद ने अपने शरीरों के चोग़े उतार फेंके और उनके रब्ब ने उन दोनों की रूहों को क़ब्ज़ कर लिया और उन्हें नेक लोगों के गिरोह में सम्मिलित कर लिया। अल्लाह ने किसी बन्दे के लिए भी हमेशा (जीवित) रहना मुक़द्दर (प्रारब्ध) नहीं किया। और वे सब नश्वर (फ़ानी) थे। तू उन रिवायतों पर आश्चर्य न कर जिन में मसीह के जीवित रहने का किस्सा वर्णन किया गया है और न उन कथनों की ओर ध्यान दे जिनमें इमाम के जीवन का वर्णन किया गया है, चाहे यह वर्णन स्पष्टतापूर्वक हो। वास्तव में ये रूप हैं और इन में बुद्धिमान लोगों के लिए संकेत हैं। इन रहस्यों की वास्तविकता को खोलने वाला बयान और वह पूर्ण कलाम जो इन से पर्दा उठाने वाला है यह है कि यह अल्लाह की अनादि आदत और हमेशा की सुन्नत है कि वह मृत्यु प्राप्त नेक बन्दों को जीवित ठहराता है ताकि वह इस प्रकार शत्रुओं की समझाए या ईमानदार दोस्तों को ख़ुशख़बरी दे या इस से अपने कुछ संयमी बन्दों को सम्मानित करे। जैसा कि महाप्रतापी ख़ुदा ने शहीदों के बारे में फ़रमाया- कि तुम उन्हें मुर्दे न समझो बल्कि वे जीवित हैं। अत: इसमें यह संकेत है कि काफ़िर मोमिनों को

أمواتا بل أحياء، ففى هذا إيماء إلى أن الكافرين كانوا يفرحون بقتل المؤمنين و كانوا يقولون إنّا قتلناهم و إنا من الغالبين

و كذٰلك كان بعض المسلمين محزونين بموت إخوانهم وخلانهم وآبائهم وأبنائهم مع أنهم قُتلوا فى سبيل ربّ العالمين، فسكّت الله الكافرين المخذولين بذكر حياة الشهداء، وبشّر المؤمنين المحزونين أن أقاربهم من الاحياء وأنهم لم يموتوا وليسوا بميتين وما ذكر فى كتابه المبين أن الحياة حياة روحانى وليس كحياة أهل الارضين، بل أكد الحياة المظنون بقوله عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ و ردّ على المنكرين

क़त्ल करके खुश हो रहे थे और यह कह रहे थे कि हमने उन्हें क़त्ल किया है और हम विजयी हैं।

और इसी प्रकार कुछ मुसलमान अपने भाइयों, दोस्तों, पिताओं और बेटों की मृत्यु से शोक ग्रस्त थे। यद्यपि यह सब समस्त लोकों के प्रतिपालक के मार्ग में क़त्ल किए गए थे। तो अल्लाह ने शहीदों के जीवन का वर्णन करके असफल काफ़िरों का मुंह बन्द कर दिया और शोक ग्रस्त मोमिनों को खुश ख़बरी दी कि उन के परिजन जीवित हैं और यह कि वे मरे नहीं और न वे मरने वाले हैं। और ख़ुदा ने अपनी किताब-ए-मुबीन में यह वर्णन नहीं किया कि (शहीदों का) यह जीवन रूहानी जीवन है पृथ्वी पर रहने वालों के जीवन की तरह नहीं है बल्कि (अल्लाह ने) अपने कथन

عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (आले इमरान-170)

अनुवाद - वह अपने रब्ब के यहां रिज़्क़ (जीविका) दिए जाते हैं।

के द्वारा उस निश्चित जीवन को अधिक मज़्बूत बना दिया और इन्कारियों का खण्डन किया।

फिर तुम उस कथन से क्यों प्रसन्न होते हो कि ईसा की मृत्यु नहीं हुई।

فکیف تعجب من قول لم یمت عیسی، وقد جاء مثل هذا القول لقوم لحقوا بالموتی وماتوا بالاتفاق، وقُتلوا بالإهریاق، ودُفنوا بالیقین أما یکفی لك حیاة الشهداء بنص کتاب حضرة الکبریاء مع صحة واقعة الموت بغیر التماری والامتراء، فأیّ فضل وخصوصیة لحیاة عیسی مع أن القرآن یسمّیه المتوفّٰی، فتدبَّرْ فإنك تُسأل عن کلّ خیانة ونفاق فی یوم الدین یومئذ یتندّم المبطِل علی ما أصرّ، وعلی ما أعرض عنه وفرّ، ولکن لا ینفع الندم إذا الوقت مضٰی ومرّ، وکذلك تطلع نار اللّٰه علی أفئدة الکاذبین فویل للمزورین الذین لا ینتهون عن تَزیُّدِهم بل یزیدون

हांलाकि इस प्रकार का कथन तो उन लोगों के बारे में भी आया है जो मुर्दों से निश्चित तौर पर जा मिले हैं और सर्वसम्मति से मर चुके हैं तथा ख़ून बहाने से क़त्ल किए गए और निश्चित तौर दफ़्न किए गए। निस्सन्देह मृत्यु की घटना सही होने के बावजूद ख़ुदा तआला की किताब के स्पष्ट आदेश से सिद्ध शहीदों का जीवन क्या तेरे लिए पर्याप्त नहीं? अतः क़ुर्आन करीम के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मृत्यु प्राप्त ठहराने के बावजूद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन के लिए कौन सी श्रेष्ठता और विशेषता है? तो विचार करो! क्योंकि प्रतिफल दिवस पर तुझ से हर बेईमानी और फूट के संबंध में पूछा जाएगा। उस दिन हर झूठ का पुजारी अपने आग्रह करने और उस से विमुख होने तथा पलायन करने पर लज्जित होगा। परन्तु यह शर्मिन्दगी उसे कोई लाभ न देगी क्योंकि समय जा चुका और गुज़र चुका होगा। और इसी प्रकार अल्लाह की आग काफ़िरों के दिलों के अन्दर चली जाती है। तो तबाही है उन झूठे चालबाज़ों के लिए जो अपनी अतिशयोक्ति से नहीं रुकते बल्कि प्रतिदिन तथा हर दम बढ़ते चले जाते हैं। तेरी बेईमानी के सबूत में यही पर्याप्त है कि तू हर मामूली बात का छान-बीन के बिना जो तेरे कानों तक पहुंचे अनुकरण करने लगता है और तू अपने दिल को

كل يــوم و كل حــين و كفــى لخيانتــك أن تتبــع بغــير تحقيــق كل قــول رقيــق بلــغ آذانــك، و مــا تطهِّــر مــن الجهــلات جنانــك، و تســقط عــلى كل خضــراء الدِمَــن، كأهــل الاهــواء و مُحــبّى الفتــن، ولا تفتّــش الطيــب كالطيبــين

و قــد علمــت أن إطــلاق لفــظ الاحيــاء عــلى الامــوات و إطــلاق لفــظ الحيــاة عــلى الممــات ثابــت مــن النصــوص القرآنيــة والمحكمــات الفرقانيــة، كمــا لا يخفــى عــلى المســتطلعين الذيــن يتلــون القــرآن متدبّريــن، و يصكّــون أبوابــه مســتفتحين فينــير عليــك مِــن هــذه الحقيقــة الغــرّاء الليــلُ الذى اكفهــرَّ عــلى بعــض العلماء حــتى انثنــوا مُحَقَوقفــين بعدمــا كانــوا مســتقيمين

و لعلّــك تقــول بعــد هــذا البيــان إنى فهمــتُ حقيقــة الحيــاة

मूर्खतापूर्ण बातों से साफ़ नहीं करता और लोभ-लालच तथा फ़ित्नों के अभ्यस्त बन्दे की तरह कूड़ा-कर्कट के ढेर पर उगे सब्ज़े पर गिरता है और पवित्र एवं साफ लोगों की तरह पवित्र चीज़ों का अभिलाषी नहीं।

और तुझे मालूम है कि क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश और फ़ुर्क़ान हमीद (क़ुर्आन) के वे वाक्य जिन के अर्थ बहुत स्पष्ट हों की दृष्टि से जीवितों का शब्द मुर्दों पर और हयात का शब्द मृत्यु पर चरितार्थ होता है जैसा कि यह बात ज्ञान के विद्यार्थियों से छुपी नहीं जो कुर्आन को ध्यान से पढ़ते और खोलने के लिए उसके दरवाज़ों को खटखटाते हैं। इस रोशन वास्तविकता से तुझ पर वह रात जो कुछ उलेमा पर घोर अंधकारमय हो चुकी थी, प्रकाशमय हो जाएगी, यहां तक कि वे सदाचारी होने के बाद दुराचारी हो गए।

इस वर्णन के बाद शायद तू यह कहे कि मैंने वलियों की तरह जीवन की वास्तविकता को समझ लिया है। तो फिर उचित तौर पर तथा ऐसे ढंग से जिस सत्याभिलाषियों के दिल सन्तोष प्राप्त कर सकें नुज़ूल के क्या अर्थ हैं? अत: जान लो कि यह (नुज़ूल) का शब्द वह है जो क़ुर्आन में बड़ी प्रचुरता से

كأهل العرفان، ولكن ما معنى النزول على وجه المعقول وعلى نهجٍ يطمئن قلوب الطالبين فاعلم أنه لفظ قد كثر استعماله فى القرآن، وأشار الله الحميد فى مقامات شتّى من الفرقان أن كل حِبْرٍ وسِبْرٍ ينزل من السماء، وما من شيء إلا ينال كمالَه من العُلَى بإذن حضرة الكبرياء، وتلتقط الارض ما تنفض السماوات، ويصبّغ القرائح بتصبيغٍ من الفوق، فتُجعَل نفسٌ سعيدًا أو من الاشقياء والمبعدين

فالذين سُعدوا أو شقوا يُشابه بعضهم بعضا، فيزيدون تشابهًا يومًا فيومًا، حتى يُظَنّ أنهم شيء واحد، كذٰلك جرت سُنة أحسن الخالقين وإليه يشير عزّ وجلّ بقوله تَشَابَهَتْ

प्रयोग हुआ है और प्रशंसनीय ख़ुदा ने क़ुर्आन में विभिन्न स्थानों पर यह इशारा किया है कि प्रत्येक सुन्दरता एवं सौन्दर्य आकाश से उतरता है और हर चीज़ ख़ुदा तआला की आज्ञा से ऊपर से ही अपना कमाल (खूबी) प्राप्त करती है और पृथ्वी उसी चीज़ को लाती है जिसे आकाश गिराएं और तबियतें वही रंग पकड़ती हैं जो ऊपर से रंग दिया गया है। फिर (इसके बाद) या तो नफ़्स को सौभाग्यशाली बनाया जाता है या फिर उसे दुर्भाग्यशाली या सच से दूर रहने में सम्मिलित कर दिया जाता है।

फिर भाग्यशाली या दुर्भाग्यशाली लोग एक दूसरे के समान होने लगते हैं और दिन-प्रतिदिन इस समानता में बढ़ते चले जाते हैं, यहां तक कि वे एक ही समझे जाते हैं। समस्त पैदा करने वालों में से अतियुत्तम स्त्रष्टा ख़ुदा की यही सुन्नत जारी है और इसी की ओर प्रतापवान ख़ुदा अपने कथन

تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ (अलबक़रह-119)

अनुवाद - उनके दिल परस्पर एक समान हो गए।

में संकेत करता है। इसलिए हर उस व्यक्ति को जिसे सोच-विचार करने वालों की शक्तियां दी गई हैं विचार करना चाहिए।

قُلُوْبُهُمْ فليتفكر من أُعطى قوى المتفكرين

وقد يزيد على هذا التشابه شيء آخر بإذن الله الذى هو أكبر وأقدر، وهو أنه قد يفسُد أُمّة نبيٍّ غاية الفساد، ويفتحون على أنفسهم أبواب الارتداد، وتقتضى مصالح الله وحِكمه أن لا يعذّبهم ولا يُهلكهم بل يدعو إلى الحق ويرحم وهو أرحم الرّاحمين فيفتح الله عينَ نبيٍّ متوفّى كان أُرسِلَ إلى تلك القوم، فيصرف نظره إليهم كأنه استيقظ من النوم، ويجد فيهم ظلما وفسادا كبيرًا، وغُلوّا وضلالا مُبيرًا، ويرى قلوبهم قد مُلِئَت ظلما وزورًا وفتنا وشرورًا، فيضجَر قلبه، وتقلق مهجته، وتضطرّ روحه وقريحته، ويعشو أن

और कभी बुज़ुर्ग और शक्तिमान ख़ुदा की आज्ञा से उस समानता पर कोई और चीज़ भी अधिक हो जाती है और वह यह कि किसी नबी की उम्मत अत्यधिक स्तर तक बिगड़ जाती है और वह अपने ऊपर धर्म-परिवर्तन के दरवाज़े खोल लेते हैं। तब अल्लाह की नीतियां और दूरदर्शिताएं चाहती हैं कि वह उन्हें अज़ाब न दे और न ही तबाह करे, बल्कि वह उन्हें सच की ओर बुलाता तथा रहम करता है और वह समस्त रहम (दया) करने वालों से अधिक रहम करने वाला है। फिर अल्लाह उस मृत्यु प्रदान नबी की आंख खोलता है जो उस क़ौम की ओर भेजा गया था। फिर वह उनकी ओर अपनी दृष्टि फेरता जैसे वह अभी नींद से जागा है। और वह उनमें अत्याचार तथा बहुत बड़ा फ़साद अधिकता और विनाशकारी गुमराही पाता है तथा उनके दिलों को देखता है कि वे अत्याचार, झूठ, उपद्रव और बुराई से भर गए हैं। तब उस का दिल बेचैन हो जाता है, जान व्याकुल होती है और रूह तथा तबियत बेचैन हो जाती है और चाहता है कि अवतरित हो कर अपनी क़ौम का सुधार करे और तर्क के द्वारा उन्हें निरुत्तर करे परन्तु वह उसकी ओर कोई मार्ग नहीं पाता। तब अल्लाह का उपाय उसकी सहायता करता है और उसे सफल होने वालों में से बना देता है तथा अल्लाह

ينــزل و يُصلــح قومــه و يُفحمــهم دليــلا، فــلا يجــد إليــه ســبيلا، فيُدركــه تدبــير الحــق و يجعــله مــن الفائزيــن و يخلــق الله مثيــلا له يشــابه قلبُــه قلبَــه، وجوهــرُه جوهــرَه، و يُنــزِل إراداتِ الممثَّــل بــه عــلى المثيــل، فيفــرح الممثــل بــه بتيسُّــر هــذا الســبيل، و يحســب نفســه مــن النازلــين، و يتيقــن بتيقــن تــام قطعــى أنــه نــزل بقومــه، وفــاز برَوْمــه، فــلا يبقــى له هــمٌّ بعــده و يكــون مــن المستبشــرين

فهــذا هــو ســرُّ نــزول عيســى الذى هــم فيــه يختلفــون وختــم الله عــلى قلوبــهم فــلا يعرفــون الاســرار ولا يســألون و مــن تجــرّدَ عــن وســخ التعصبــات وصُبِّــغَ بأنــوار التحقيقــات، فــلا يبقــى له شــك فى هــذه النــكات، و لا يكــون مــن المرتابــين تلــك

उसका ऐसा मसील (समरूप) पैदा कर देता है जिसका दिल उसके दिल और जिस का जौहर उसके जौहर के समान होता है और जिस (मृत्यु प्राप्त नबी) का वह मसील है उसके इरादों को (उस) मसील (समरूप) पर उतारता है। जिस पर वह जिसका वह मसील है इस मार्ग के आसान होने के कारण प्रसन्न हो जाता है और वह अपने आप को उतरने वाला समझता है और उसे पूरा निश्चित विश्वास हो जाता है कि वह स्वयं अपनी क़ौम में नाज़िल हुआ (उतरा) है और अपने उद्‌देश्य में सफल हो गया है। इसलिए इसके बाद उसे कोई शोक नहीं रहता और वह प्रसन्न हो जाता है।

तो यह ईसा के नुज़ूल (उतरने) का वह राज़ है जिसके बारे में वे मतभेद करते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है। इसलिए न तो वे उन रहस्यों का ज्ञान रखते हैं और न ही वे पूछते हैं। और जो मनुष्य द्वेषों की मैल से पवित्र हो गया और छानबीन के नूर से रंगीन हुआ तो उसे उन रहस्यों के बारे में कोई सन्देह शेष नहीं रहेगा और न वह सन्देह करने वालों में से होगा। ये लोग हैं जो मृत्यु पा गए, गुज़र गए और कूच कर गए। अतएव वे दुनिया में वापस नहीं आएंगे और न ही वे अपनी पहली एक मौत के अतिरिक्त दो मौतों

قــوم قــد خلــوا وذهبــوا ورحلــوا، فــلا يرجعــون إلى الدنيــا ولا يذوقــون موتَــين إلا موتتــهم الاءولىٰ، وتجــد السُــنة والكتــاب شــاهدَين علىٰ هــذا البيــان، ولكــن بشــرط التحقيــق والإمعــان وإمحــاض النظــر كالمنصفــين

وقــد جــاء فى بعــض الآثــار مــن نــبى اللّٰه المختــار أنــه قــال لــو لــم يبــق مــن الدنيــا إلا يــوم لطــوّل اللّٰه ذلــك اليــوم حــتى يبعــث فيــه رجــلا مــنى أو مِــن أهــل بيــتى، يواطــئ اســمُه اســمى واســمُ أبيــه اســمَ أبى أخرجــه أبــو داود الذى كان مــن أئمــة المحدثــين فقــوله مــنى و يواطــئ اسمه اسمى إشــارة لطيفــة إلى بياننــا المذكــور، ففكِّــرْ كطالــب النــور ،إن كنــتَ

का स्वाद चखेंगे और तू सुन्नत तथा (अल्लाह की) किताब को इस वर्णन पर गवाह पाएगा किन्तु इसके लिए न्यायाधीशों जैसी जांच-पड़ताल, गहरी नज़र और प्रतिभा शर्त है।

अल्लाह के नबी (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसों में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि – "यदि दुनिया में केवल एक दिन बाक़ी रहेगा तो अल्लाह उस दिन को लम्बा कर देगा, यहां तक कि वह उसमें एक ऐसे व्यक्ति को भेजेगा जो मुझ से या मेरे अहले बैत में से होगा" जिसका नाम मेरे नाम और उसके बाप का नाम मेरे बाप के नाम के समान होगा। इस हदीस को अबू दऊद ने जो हदीस के इमामों में से थे लिखा है। फिर हुज़ूर का यह कहना कि वह मुझ से होगा और उसका नाम मेरे नाम के अनुकूल होगा (इसमें) हमारे कथित बयान की तरफ़ एक सूक्ष्म संकेत है। तो यदि तू चाहता है कि तुझ पर इस गुप्त रहस्य की वास्तविकता प्रकट हो तो एक प्रकाश के अभिलाषी के समान विचार कर और अत्याचारियों के समान आँखें बन्द कर के न गुज़र। और यह जान ले कि इन दो नामों की समानता से अभिप्राय रूहानी समानता है न कि फ़ना होने

تريد أن تنكشف عليك حقيقة السر المستور، فلا تمرّ غاضَّ البصر كالظالمين واعلم أن المراد من مواطأة الاسمين مواطأة روحانية لا جسمانية فانية، فإن لكل رجل اسم فى حضرة الكبرياء، ولا يموت حتى ينكشف سرّ اسمه سعيدًا كان أو من الاشقياء والضالين وقد يتفق تواردُ أسماء الظاهر كما فى أحمد و أحمد، ولكن الامر الذى وجَدْنا أحقّ وأنشد، فهو أن الاتحاد اتحاد روحانى فى حقيقة الاسمين، كما لا يخفى على عارفٍ ذى العينين وقد كان مِن هذا القبيل ما أُلهمتُ من الرب الجليل و كتبتُه فى كتابى البراهين، وهو أن ربى كلّمنى وخاطبنى وقال يَا أَحْمَدُ

वाली (नश्वर) समानता। निस्सन्देह ख़ुदा तआला के दरबार में हर व्यक्ति का एक नाम है और वह (नाम) उस समय तक नहीं मरता जब तक कि उस नाम का यह रहस्य प्रकट न हो जाए कि क्या वह भाग्यशाली लोगों में से था या दुर्भाग्य वालों या गुमराहों में से। कभी-कभी ज़ाहिरी नामों के भावसाम्य में भी समानता हो जाती है जैसा कि अहमद से अहमद की। परन्तु हम ने इस बात को अधिक उचित और अधिक प्रसिद्ध पाया है, वह यही है कि वास्तव में इन दोनों नामों की समानता रूहानी समानता है। जैसा कि एक ज्ञानी, आँखों वाले व्यक्ति पर यह बात छुपी हुई नहीं, और बिल्कुल इस प्रकार की वह बात है जो प्रतापी रब्ब की ओर से मुझे इल्हाम की गई। और जैसे मैंने अपनी पुस्तक अलबराहीन (बराहीन अहमदिया) में लिखा है और वह यह है कि मुझ से मेरे रब्ब ने कलाम किया और मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि

يَا أَحْمَدُ يَتِمُّ اسْمُكَ، وَلَا يَتِمُّ اِسْمِى

अनुवाद - हे अहमद! तेरा नाम पूरा हो जाएगा और मेरा नाम पूरा नहीं होगा।

और यह वह नाम है जो रूहानी लोगों को दिया जाता है और इसी ओर अल्लाह तआला के इस कथन में संकेत है कि

يَتِمُّ اسْمُكَ، وَلا يَتِمُّ اسْمِى فهذا هو الاسم الذى يُعطى للروحانيين، و إليه إشارة فى قوله تعالى وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا أى علّمه حقائق الاشياء كلها، وجعله عالما مجملًا مثيل العالمين

وأمّا توارد اسم الابوين كما جاء فى حديث نبىّ الثقلَين، فاعلم أنه إشارة لطيفة إلى تطابُق السرَّين من خاتم النبيين فإن أبا نبينا صلى الله عليه وسلم كان مستعدّا للإنوار فما اتفق حتى مضى من هذه الدار، و كان نورُ نبيّنا موّاجًا فى فطرته، ولكن ما ظهر فى صورته، والله أعلم بسرّ حقيقته، وقد مضى كالمستورين و كذلك تشابهَ أبُ المهدى

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا (अलबक़रह – 32)

अनुवाद - और अल्लाह ने आदम को सब नाम सिखाए।

अर्थात् उसे समस्त चीज़ों की वास्तिवकताओं का ज्ञान प्रदान किया और उसे एक ऐसा संक्षिप्त संसार बना दिया जो समस्त लोकों का समरूप है।

जहाँ तक दो बापों के नाम के भावसाम्य (तवारुद) होने का संबंध है जैसा कि दोनों लोकों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में आया है। अत: याद रहे यह (हज़रत) ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो रहस्यों में से समानता की ओर सूक्ष्म संकेत है। निस्सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिता (ख़ुदा के) प्रकोप को पाने के लिए तैयार थे परन्तु ऐसा संयोग न हो सका यहाँ तक कि वह इस दुनिया से कूच कर गए। उनके स्वभाव में तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर लहरें मारता था। परन्तु उसकी शक्ल में वह प्रकट न हो सका उसकी वास्तविकता के रहस्य को अल्लाह ही उत्तम जानता है और वह (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिता) गुमनामों की तरह कूच कर गए। एक प्रकार से महदी के पिता रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पिता के समान हो गए। अत: तू

أبَ الرسول المقبول، ففكِّرْ كذوى العقول، ولا تمش معرضا كالمستعجلين

وأظن أن بعض الائمة من أهل بيت النبوة، قد أُلهمَ من حضرة العزة، أن الإمام محمدًا قد اختفى فى الغار، وسوف يخرج فى آخر الزمان لقتل الكفار، وإعلاءِ كلمة الملة والدين فهذا الخيال يُشابه خيال صعود المسيح إلى السماء ونزوله عند تموُّج الفتن الصمّاء والسرّ الذى يكشف الحقيقة ويبين الطريقة، هو أن هذه الكلمات ومثلها قد جرت على ألسنة الملهَمين بطريق الاستعارات، فهى مملوّة من لطائف الإشارات، فكأنّ القبر الذى هو بيت الاخيار بعد

बुद्धिमानों की तरह विचार कर और जल्दबाज़ों की तरह विमुख होते हुए न चल।

और मेरा विचार है कि अहले बैत-ए-नुबुव्वत के किसी इमाम को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ओर से यह इल्हाम किया गया कि इमाम मुहम्मद एक गुफ़ा में छुप गए हैं और वह अन्तिम युग में काफ़िरों को क़त्ल करने के लिए तथा (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) मिल्लत और इस्लाम धर्म के कलिम: को प्रतिष्ठित करने के लिए अवश्य प्रकट होंगे। तो यह विचार मसीह के आकाश की ओर चढ़ जाने और प्रचंड उपद्रवों के फैलने के समय उसके नुज़ूल (उतरने) के विचार के समान है और वह रहस्य जो वास्तिवकता को प्रकट करता तथा आत्मशुद्धि को स्पष्ट करता है वह यह है कि यह और इस जैसे दूसरे वाक्य रूपकों के रूप में मुल्हमों की ज़ुबान पर जारी होते हैं और वे सूक्ष्म संकेतों से भरपूर होते हैं। जैसे कि वह क़ब्र जो इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद नेक लोगों का घर है उसे गुफा का नाम दिया गया है और मसील जो प्रकृति और जौहर की दृष्टि से अर्थात् जिसका वह समरूप है से जुदा हुआ है उसके निकलने को इमाम के गुफ़ा में से निकालने से अभिप्राय लिया गया है। और यह सब रूपक के रंग में है और ये मुहावरे सम्पूर्ण दुनिया के रब्ब

النقل من هذا الدار، عُبِّرَ منه بالغار وعُبِّرَ خروج المثيل المتحد طبعًا وجوهرًا بخروج الإمام من المغارة، وهذا كله على سبيل الاستعارة وهذه المحاورات شائعة متعارفة فى كلام رب العالمين، ولا يخفى على العارفين

ألا تعرف كيف أنّب الله يهود زمان خاتم النبيين، وخاطبهم وقال بقول صريح مبين

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ وَإِذْ وَاعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ وَإِذْ

के कलाम में सामान्य तथा प्रसिद्ध है और यह बात आरिफ़ों पर छुपी नहीं।

क्या तू यह नहीं जानता कि अल्लाह ने किस प्रकार ख़ातमुन्नबिय्यीन के युग के यहूदियों की डांट-फटकार की? उन्हें सम्बोधित किया और उन्हें इन खुले स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया–

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ وَإِذْ وَاعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

(अलबक़रह 51 से 54)

अनुवाद - और जब हम ने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़ दिया और तुम्हें मुक्ति दी जब कि हमने फ़िरऔन की क़ौम को डुबो दिया और तुम देख रहे थे। और जब हम ने मूसा से चालीस रातों का वादा किया फिर उसके (जाने के) बाद तुम बछड़े को (मा'बूद) बना बैठे और तुम अन्याय करने वाले थे। फिर इसके बावजूद हमने तुम्हें माफ़ किया ताकि शायद तुम शुक्र करो, और जब हमने मूसा को किताब और फ़ुर्क़ान दिए ताकि हो सके तो तुम हिदायत पा जाओ।

آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

هٰذا ما جاء فی القرآن وتقرأونه فی کتاب الله الفرقان، مع أن ظاهر صورة هذا البیان یُخالف أصل الواقعة، وهذا أمر لا یختلف فیه اثنان فإن الله ما فَرَقَ بیهودِ زمانِ نبیّنا

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

(अलबक़रह 56 से 58)

अनुवाद - और जब तुमने कहा कि हे मूसा! हम कदापि तुम्हारी (बात) नहीं मानेंगे यहाँ तक कि हम अल्लाह को प्रत्यक्ष तौर पर देख न लें। तो तुम्हें आकाशीय बिजली ने आ पकड़ा और तुम देखते रह गए। फिर हमने तुम्हारी मौत (की सी हालत) के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्र करो। और हमने तुम पर बादलों की छाया की और तुम पर हम ने मन्न और सल्वा (अल्लाह की नेमतें) उतारे। जो जीविका हमने तुम्हें दी है उस में से पवित्र चीज़ें खाओ और उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि स्वयं अपने ऊपर ही ज़ुल्म करने वाले थे।

यह है जो क़ुर्आन में आया है और जिसे तुम अल्लाह की किताब फ़ुर्क़ान हमीद में पढ़ते हो इसके बावजूद कि यह वर्णन बाह्य रूप में असल घटना के विरुद्ध है, और यह वह बात है जिसमें कोई दो व्यक्ति मतभेद नहीं करते। अल्लाह ने हमरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में यहूदियों के लिए न किसी

بحرًا من البحار، وما أغرق آل فرعون أمام أعين تلك الإشرار، وما كانوا موجودين عند تلك الاخطار، وما اتخذوا العجل وما كانوا فی ذلك الوقت حاضرين، وما قالوا يا موسى لن نؤمن حتی نری اللّٰہ جهرة بل ما كان لهم فی زمان موسى أثرًا وتذكرة، وكانوا معدومين فكيف أخذتهم الصاعقة، وكيف بُعِثوا من بعد الموت وفارقوا الحِمام؟ وكيف ظلل اللّٰہ عليهم الغمام؟ وكيف أكلوا المن والسلوى، ونجّاهم اللّٰہ من البلوى، وما كانوا موجودين، بل وُلدُوا بعد قرون متطاولة وأزمنة بعيدة مبعدة، ولا تزر وازرة وزر أخرٰى، واللّٰہ لا يأخذ رجلا مكان رجل وهو أعدل العادلين فالسرّ فيه أن اللّٰہ أقامهم مقام آبائهم لمناسبةٍ

समुद्र को फाड़ा और न ही आले फ़िरऔन को दुष्टों की आँखों के सामने डुबोया और न ही वे उन ख़तरों के समय वहां मौजूद थे, न उन्होंने बछड़े को मा'बूद (उपास्य) बनाया और न ही वे उस अवसर पर उपस्थित थे। और न ही उन्होंने यह कहा कि हे मूसा! हम तुझ पर हरगिज़ ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक कि हम अल्लाह को अपनी आँखों के सामने न देख लें बल्कि मूसा अलैहिस्सलाम के युग में तो इनका निशान और चर्चा तक न थी। वे तो (बिल्कुल) अप्राप्य (मा'दूम) थे, फिर किस प्रकार कड़कती बिजली ने इन को पकड़ लिया और किस प्रकार वे मौत के बाद उठाये गए और मौत से अलग हो गए और कैसे अल्लाह ने उन पर बादलों की छाया की तथा किस प्रकार उन्होंने मन्न और सल्वा खाया और अल्लाह ने उन्हें संकट से मुक्ति दी, हालाँकि वह मौजूद ही न थे? बल्कि वह लम्बी सदियों और बहुत लम्बे समय के बाद पैदा हुए। कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाती और अल्लाह एक आदमी की दूसरे आदमी के स्थान पर गिरफ्त नहीं करता, क्योंकि वह सब न्याय करने वालों से बढ़कर न्याय करने वाला है। इसमें रहस्य यह है कि अल्लाह ने उन्हें उन्हीं के बाप-दादों का

كانت فی آرائهم، وسماهم بتسمية أسلافهم وجعلهم وُرثاء أوصافهم، وكذلك استمرت سُنة رب العالمين

وإن كنت تزعم كالجهلة أن المراد من نزول عيسى نزولُ عيسى عليه السلام فی الحقيقة فيعسُر عليك الامر وتخطئ خطأ كبيرا فی الطريقة، فإن تَوفّی عيسى ثابت بنص القرآن، ومعنى التوفّی قد انكشف من تفسير نبی الإنس ونبی الجانّ، ولا مجال للتأويل فی هذا البيان، فالنزول الذی ما فسّره خاتم النبيين بمعنى يفيد القطع واليقين بل جاء إطلاقه على معان مختلفة فی القرآن وفی آثار فخر المرسلين، كيف يعارض لفظَ التوفّی الذی قد حصحص معناه وظهر بقول النبی وابن العباس أنه الإماتة

स्थानापन्न (क़ाइम मक़ाम) बनाया।

इस अनुकूलता के कारण जो उनके विचारों में मौजूद थी और उन्हें उन्हीं के पूर्वजों का नाम दे दिया और उन्हें उन्हीं की विशेषताओं का वारिस ठहरा दिया तथा समस्त लोकों के रब्ब की सुन्नत (नियम) इसी प्रकार जारी है यदि मूर्खों की तरह तू यह विचार करता है कि ईसा के नुज़ूल (उतरने) से अभिप्राय वास्तव में ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल है तो यह मामला तेरे लिए कठिन हो जाएगा और यह तरीका अपनाकर तो बहुत बड़ी ग़लती करेगा क्योंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध है और تَوَفِّی के अर्थ निस्सन्देह जिन्नों तथा इन्सानों के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तफ़्सीर (व्याख्या) से खुल चुके हैं, और इस वर्णन में किसी तावील की गुंजाइश नहीं। अत: शब्द नुज़ूल जिस की ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे अर्थ में तफ्सीर नहीं की जो अटल और विश्वास का लाभ दे, बल्कि क़ुर्आन और रसूलों के गर्व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में विभिन्न अर्थों पर इसको बोला गया है (तो फिर) वह इस शब्द تَوَفِّی के विरुद्ध कैसे हो सकता है जिसके

وليس ما سواه؟ وما بقى فى معناه شك ولا ريب للمؤمنين وهل يستوى المتشابهات والبينات والمحكمات؟ كلا لا تستوى أبدا، ولا يتبع المتشابهات إلا الذى فى قلبه مرض وليس من المطهّرين فالتوفّى لفظ محكم قد صرح معناه وظهر أنه الإماتة لا سواه، والنزول لفظ متشابه ما توجّهَ إلى تفسيره خاتم الانبياء، بل استعمله فى المسافرين ومع ذلك إن كنتَ يصعب عليك ذكرُ مجدّد آخر الزمان باسم عيسى فى أحاديث نبىّ الإنس ونبى الجانّ ويغلب عليك الوهم عند تعميم المعنى، فاعلم أن اسم عيسى جاء فى بعض الآثار بمعانٍ وسيعة عند العلماء الكبار، وكفاك

अर्थ स्पष्ट हो चुके और जो नबी (अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इब्ने अब्बास[रज़ि॰] के कथन से स्पष्ट है (تَوَفِّیٌ) कि इमात (اماتت) अर्थात् मृत्यु देना है और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। मोमिनों के लिए इसके मायने में कोई सन्देह तथा आशंका बाकी नहीं रही। क्या सन्देह और स्पष्ट और सुदृढ़ आदेश बराबर हो सकते हैं? हरगिज़ नहीं। यह कभी बराबर नहीं हो सकते और संदिग्ध आदेशों का अनुकरण वही व्यक्ति करता है जिसके दिल में बीमारी हो और नेक लोगों में से न हो। तो शब्द تَوَفِّیٌ सुदृढ़ आदेशों में से है जिसके अर्थों का स्पष्टीकरण हो चुका है और यह प्रकट हो गया है कि इस शब्द के अर्थ मृत्यु देने के हैं इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं और नुज़ूल का शब्द संदिग्धों में से है जिसकी तफ्सीर की तरफ़ ख़ातमुलअंबिया ने ध्यान नहीं दिया बल्कि उसे मुसाफिरों के अर्थों में प्रयोग किया है, इसके बावजूद यदि जिन्नों और इन्सानों के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीसों में अन्तिम युग के मुजद्दिद का वर्णन ईसा के नाम के साथ अच्छा न लगे और उसके अर्थों के सामान्य होने के समय तुझ पर भ्रम का प्रभुत्त्व हो जाए तो जान ले कि बहुत से बड़े उलेमा के नज़दीक कुछ हदीसों में जो ईसा का नाम आया है वह विशालतम अर्थों में आया है। और तेरे लिए

حديث ذكره البخاری فی صحيحه مع تشريحه من العلامة الزمخشری و كمال تصريحه، وهو أن كل بنی آدم يمسّه الشيطان يوم ولدتْه أُمُّه إلا مريم وابنها عيسٰی وهذا يُخالف نصَّ القرآنْ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وآيات أُخری، فقال الزمخشری إن المراد من عيسی وأُمِّه كلُّ رجل تقیّ كان علی صفتهما و كان من المتقين المتورعين

فانظر كيف سمّی كلَّ تقی عيسی، ثم انظر إلی إعراض المنكرين وإن قُلتَ أنّ الشهادة واحدة ولا بدّ أن تزيد عليه شاهدًا أو شاهدةً، فاسمعْ وما أخال أن تكون من السامعين اقرأ كتاب التيسير بشرح الجامع

तो वह हदीस ही पर्याप्त है जिस का इमाम बुखारी ने अपनी सही में वर्णन किया है और जिसकी व्याख्या और स्पष्टीकरण अल्लामा ज़मख़शरी ने किया है। और वह यह कि मरयम और उसके बेटे ईसा के अतिरिक्त हर बनी आदम (मनुष्य) को जिस दिन उसकी मां उसे जनती है, शैतान स्पर्श करता है और यह क़ुर्आन का स्पष्ट आदेश

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ (अलहिज्र - 43)

अनुवाद - निसन्देह (जो) मेरे बन्दे (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्त्व प्राप्त न होगा।

और दूसरी आयतों के विरुद्ध है। ज़मख़शरी कहते हैं कि ईसा और उनकी मां से अभिप्राय हर वह मुत्तकी (संयमी) मनुष्य है जो इन दोनों की विशेषताओं पर हो तथा वह नेक और संयमियों में से हो।

अत: विचार कर कि उसने किस प्रकार हर मुत्तक़ी (संयमी) का नाम ईसा रखा फिर इन्कार करने वालों की विमुखता पर विचार कर। और यदि तू कहे कि यह तो केवल एक गवाही है। इसलिए यह आवश्यक है कि आप उस पर अतिरिक्त किसी पुरुष या स्त्री गवाह की वृद्धि करें तू सुन, और मेरा विचार नहीं कि तू सुनने वालों में से होगा। तू जामिउस्सग़ीर की व्याख्या "किताबुत्तैसीर"

الصغير للشيخ الإمام العامل والمحدث الفقيه الكامل عبد الرؤوف المناوى رحمه الله تعالى وغفر له المساوى وجعله من المرحومين إنه ذكر هذا الحديث فى الكتاب المذكور وقال ما جاء فى الحديث المزبور من ذكر عيسى وأُمّه فالمراد هما ومَن فى معناهما فانظر بإمعان العينين كيف صرح بتعميم هذين الاسمين، فما لك لا تقبل قول المحققين

وقد سمعتَ أن الإمام مالكًا وابن قيّم وابن تيميّة والإمام البخارى وكثيرًا من أكابر الائمة وفضلاء الامّة، كانوا مُقرّين بموت عيسٰى ومع ذلك كانوا يؤمنون بنزول عيسى الذى أخبر عنه رسول الله صلى الله عليه

को पढ़ जो शेख़, इमाम, ऐसा विद्वान जिसने जो कुछ पढ़ा हो उसी के अनुसार उसका आचरण हो (आलिम बा अमल) मुहद्दिस और धार्मिक विद्वान "कामिल अब्दुर्रऊफ़ अलमुनादी" की रचना है, अल्लाह उन पर रहम (दया) करे और उन्हें अपने स्वर्गवासी बन्दों में सम्मिलित करे। उन्होंने कथित (उपरोक्त) पुस्तक में इस हदीस का वर्णन किया है और कथित हदीस में ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां के बारे में जो वर्णन किया है उसके संबंध में वह कहते हैं कि इस से अभिप्राय वे दोनों का तथा वे सब लोग हैं जो इन दोनों की विशेषताओं में समान हैं। अत: गहरी दृष्टि से देख कि उसने किस प्रकार इन दोनों नामों के साधारण होने को स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दिया है। अत: तुझे क्या हो गया है कि तू अन्वेषकों के कथन को स्वीकार नहीं करता।

और तुम सुन चुके हो कि इमाम मालिक, इब्ने क़य्यिम, इब्ने तैमिय:, इमाम बुखारी तथा बहुत से बड़े इमामों और उम्मत के विद्वान ईसा की मृत्यु का इक़रार करने वाले थे और इसके साथ ही वे ईसा के नुज़ूल पर भी ईमान रखते थे जिसके बारे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी। और

وسلم، وما أنكر أحدٌ هذين الأمرين وما تكلم، وكانوا يُفوّضون التفاصيل إلى الله ربّ العالمين، وما كانوا فى هذا مجادلين ثم خلف من بعدهم خلفٌ وسوادٌ أقلَفُ وفيجٌ أعوجُ وأجوفُ، يجادلون بغير علم ويفرّقون، ولا يركنون إلى سِلم ويكفرون عباد الله المؤمنين

فحاصل الكلام فى هذا المقام أن الله كان يعلم بعلمه القديم أن فى آخر الزمان يُعادى قوم النصارى صراط الدين القويم، ويصدّون عن سبل الرب الكريم، ويخرجون بإفك مبين ومع ذلك كان يعلم أن فى هذا الزمان يترك المسلمون نفائس تعليم الفرقان، ويتبعون زخارف بدعات ما ثبتت من الفرقان، وينبذون أمورًا تُعين الدين وتحبّر حلل

किसी एक व्यक्ति ने भी इन दो बातों से न तो इन्कार किया और न ऐतराज़। वे विवरणों (तफ़सीलों) को अल्लाह रब्बुलआलमीन पर छोड़ देते थे और इस बारे में बहस न करते थे। फिर इनके बाद कपूत (अयोग्य) उत्तराधिकारी पैदा हुए जो नासमझ टेढ़े और खोखले थे। जो जानकारी न होने के बिना बहस करते और फूट डालते थे और सुलह की ओर नहीं झुकते थे तथा अल्लाह के मोमिन बन्दों को काफ़िर ठहराते थे।

इस स्थान पर कलाम का सारांश यह है कि अल्लाह तआला अपने अनादि ज्ञान के आधार पर यह जानता था कि अंतिम युग में ईसाई क़ौम सुदृढ़ धर्म (इस्लाम) के तरीके से दुश्मनी करेगी और कृपालु रब्ब के मार्गों से रोकेगी तथा खुले-खुले झूठ के साथ निकलेगी। और उसके साथ वह (अल्लाह) यह भी जानता था कि इस युग में मुसलमान क़ुर्आन की शिक्षा की खूबियों को छोड़ देंगे दिल को धोखा देने वाली ऐसी बिदअतों का अनुकरण करेंगे जो क़ुर्आन करीम से सिद्ध नहीं। और धर्म की सहायता करने वाले तथा मोमिनों के लिबास को सजावट देने वाली बातों को फेंक देंगे। और वे नित्य नई बिदअतों और भिन्न-भिन्न प्रकार की

المؤمنين وتسقطون فى هوة محدثات الامور وأنواع الاهواء والشرور، ولا يبقى لهم صدق ولا ديانة ولا دين، فقدر فضلا ورحمة أن يرسل فى هذا الزمان رجلًا يُصلح نوعَى أهل الطغيان، ويتم حجة الله على المبطلين فاقتضى تدبيره الحق أن يجعل المرسَلَ سَمِىَّ عيسٰى لإصلاح المتنصرين، ويجعله سَمِىَّ أحمدٌ لتربية المسلمين، ويجعله حاذيًا حذوَهما وقافيًا خطوَهما، فسماه بالاسمين المذكورين، وسقاه من الراحَين، وجعله دافِعَ همِّ المؤمنين ورافِعَ فتن المسيحيين فهو عند الله عيسٰى من جهة، وأحمدُ من جهة، فاترُكِ السبل الاخياف وتجنَّبِ الخلاف والاعتساف، واقبل الحق ولا تكن كالضنين

इच्छा तथा बुराइयों के गढ़े में गिर जाएंगे। उनके लिए न सच्चाई बाकी रहेगी और ना ईमानदारी और न धर्म। तब उस (ख़ुदा) ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) और रहम (दया) से यह निश्चित किया कि वह इस युग में एक ऐसे व्यक्ति को भेजे जो दोनों प्रकार के उद्दण्ड लोगों का सुधार करे और झूठों पर अल्लाह के समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करे। तो उनकी सच्ची व्यवस्था ने चाहा कि वह उस चुने हुए को ईसाइयों के सुधार के लिए ईसा का समनाम बनाए और मुसलमानों की तरबियत (प्रशिक्षण) के लिए उससे अहमद का समनाम बनाए, उसे इन दोनों का अनुकरण करने वाला तथा दोनों के पद-चिन्हों पर चलने वाला बनाए। इसी कारण से उसने उसके कथित दोनों नाम रखे और दो आरामदायक शराबों में से उसे पिलाया और उसे मोमिनो के शोकों को दूर करने वाला और ईसाइयों के उपद्रवों को निवारण करने वाला बनाया। अत: वह अल्लाह के नज़दीक एक पहलू से ईसा और दूसरे पहलू से अहमद है। इसलिए तू विभिन्न मार्गों को छोड़ तथा विरोध और गुमराही से बच, सच को स्वीकार कर तथा कंजूस मनुष्य के समान न बन। और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जैसे उसे मसीह की विशेषताओं से विशिष्ट ठहराया, यहां तक कि उसका नाम ईसा रखा। उसी प्रकार

والنبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم کما وصفہ بصفات المسیح حتی سماہ عیسی، کذلك وصفہ بصفات ذاتہ الشریف حتی سماہ أحمد ومشابھًا بالمصطفی، فاعلم أن ھذین الاسمین قد حصلا لہ باعتبار توجہ التام إلی الفرقتین، فسماہ أھل السماء عیسٰی باعتبار توجُّھہ وتألمہ کمُواسی الاسارٰی إلی إصلاح فرق النصاری، وسمَّوہ بأحمد باعتبار توجّھہ إلی أُمّۃ النبی توجّھًا أشد وأزید، وتألّمِہ من سوء اختلافھم وعیشھم أنکد فاعلم أن عیسٰی الموعود أحمد، وأن أحمد الموعود عیسٰی، فلا تنبذ وراء ظھرك ھذا السرّ الاجلی ألا تنظر إلی المفاسد الداخلیۃ وما نالنا من الاقوام النصرانیۃ؟ ألست

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे अपनी पवित्र हस्ती की विशेषताओं से विशिष्ट किया, यहां तक कि उसका नाम अहमद रखा और मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सदृश ठहराया। इसलिए तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ये दोनों फ़िर्कों की ओर पूर्ण ध्यान की अनुसार उसे प्राप्त हुए। और आकाश वालों ने ईसाई फ़िर्क़ों के सुधार की ओर उस का ध्यान करने तथा क़ैदियों के हमदर्दों के समान दुख उठाने के कारण उसका नाम ईसा रखा। और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत की ओर उसके अत्यधिक ध्यान देने तथा उनके बुरे मतभेदों और उनकी आर्थिक हालत की खराबी के कारण दुख उठाने के आधार पर उका नाम अहमद रखा। तो जान लो कि मौऊद ईसा अहमद है और अहमद मौऊद ईसा। अत: इस स्पष्ट और रोशन रहस्य को पीछे के पीछे न डाल। क्या उन भीतरी खराबियों को और उन कष्टों को नहीं देखता जो हमें ईसाई क़ौमों की तरफ़ से पहुंचे हैं? क्या तू देखता नहीं कि हमारी क़ौम ने हमदर्दी के मार्गों तथा धर्म को बिगाड़ दिया है और उनमें से अधिकतर लोग शैतानों के मार्गों पर चल निकले हैं, यहां तक कि उनका ज्ञान जुगनूं के प्रकाश के समान हो गया और उनके उलेमा जंगलों की मृत-तृष्णा के समान हो गए। बुराई उनकी दूसरी प्रकृति

ترىٰ أن قومنا قد أفسدوا طرق الصلاح والدين، واتبعوا أكثرهم سبل الشياطين، حتى صار علمهم كنار الحُباحِب، وحِبرهم كسراب السُباسِب، وصار تطبُّعُ الشرِّ طِباعًا، والتكلّفُ له هوًى طباعًا، وأكبّوا على الدنيا متشاجرين؟

يأبر بعضهم بعضا كالعقارب ولو كان المظلوم من الاقارب، وما بقى فيهم صدق الحديث وإمحاض المصافات، وبدلّوا الحسنات بالسيئات اشتغلوا فى تطلُّب مثالب الإخوان ونسوا إصلاح ذات البين وحقوق أهل الإيمان، وصالوا على الإخوة كصول أهل العدوان أدحضوا المودّات وأزالوا خلوص النيّات، وأشاعوا فيهم الفسق والعدوان، واتبعوا العثرات والبهتان زالت نفحات المحبة كل الزوال، وهبّت رياح النفاق والجدال ما بقى سعة الصدر وصفاء

और उसके लिए कष्ट और बनावट उनकी हार्दिक इच्छा बन गए और वे परस्पर हाथा पाई करते हुए दुनिया पर बुरी तरह जा गिरे।

उनमें से प्रत्येक बिच्छुओं की तरह डंक मारता है चाहे वह अत्याचार पीड़ित निकट संबंधियों में से ही हो। उनमें सच बोलना और निष्कपटतापूर्ण प्रेम शेष नहीं रहा। उन्होंने नेकियों (भलाइयों) को बुराइयों में बदल दिया। और वे भाइयों के दोष निकालने में व्यस्त हो गए, परस्पर सुधार और मोमिनों के अधिकारों को (सर्वथा) भूल गए तथा वे भाइयों पर अत्याचारियों के आक्रमण करने की तरह आक्रमणकारी हुए, मुहब्बतों को पांव तले रौंद डाला और शुद्ध नीयत को नष्ट कर दिया, दुराचार और शत्रुता को अपने अन्दर फैलाया, ग़लतियों तथा झूठे आरोप लगाने के पीछे लग गए। प्रेम की महकती खुशबुएं बिल्कुल समाप्त हो गईं तथा फूट और लड़ाई-झगड़ों की हवाएं चलने लगीं, हौसले की विशालता और दिल की सफाई शेष न रही तथा ईमान में मलिनताएं दाखिल हो गईं और वे संयम एवं तक़्वः की समस्त सीमाओं को फलांग गए,

الجنان، ودخلت كدوراتٌ فى الإيمان، وتجاوزوا حدود التورع والتقاة، وتناسوا حقوق الإخوان والمؤمنين والمؤمنات لا يتحامَون العقوق ولا يؤدّون الحقوق، وأكثرهم لا يعلمون إلا الفسق والنهات، وتغيَّرَ الزمان فلا ورع ولا تقوىٰ ولا صوم ولا صلاة قدّموا الدنيا على الآخرة، وقدّموا شهوات النفس على حضرة العزة، وأراهم لدنياهم كالمصاب، ولا يبالون طرق الآخرة ولا يقصدون طريق الصواب ذهب الوفاء وفقد الحياء، ولا يعلمون ما الاتقاء أرى وجوهًا تلمع فيهم أسرّة الغَدر، يحبّون الليل الليلاء ويبزُقون على البدر يقرأون القرآن، ويتركون الرحمان لا يرى منهم جارُهم إلا الجَور، ولا شريكُ حدبهم إلا الغَور، يأكلون الضعفاء ويطلبون الكَور كثُر الكاذبون والنمّامون، والواشون والمغتابون، والظالمون

भाइयों और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के अधिकारों को भूल गए। वे अवज्ञा से नहीं बचते और अधिकारों को अदा नहीं करते। उनमें से अधिकतर दुराचार और कोलाहल एवं शोर के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते। और समय बदल गया, परहेज़गारी रही न तक़्वः, रोज़ा रहा न नमाज़। उन्होंने दुनिया को आख़िरत पर प्राथमिकता दी, उन्होंने कामवासना संबंधी इच्छाओं को ख़ुदा तआला पर प्राथमिक किया। मैं उन्हें दुनिया की तलब में अर्धपागल जैसा देख रहा हूं। वे आख़िरत के मार्गों से लापरवाह हैं और सीधा मार्ग उनका अभीष्ट नहीं, वफ़ादारी जाती रही और शर्म समाप्त हो गई। वे नहीं जानते कि ख़ुदा से डरना क्या है? कुछ चेहरे मैं ऐसे देख रहा हूं जिन में विद्रोह के लक्षण चमक रहे हैं, वे घोर अंधकारमय रात से प्रेम करते और पूर्ण चन्द्रमा पर थूकते हैं, वे क़ुर्आन पढ़ते हैं परन्तु कृपालु ख़ुदा को छोड़ते हैं, उनका पड़ोसी उन से अत्याचार के अतिरिक्त कुछ नहीं देखता और केवल नीचाई ही उनकी ऊंचाई की भागीदार है, वे कमज़ोरों को खाते तथा अधिक के इच्छुक रहते हैं, झूठों,

المغتالــون، والزانــون الفاجــرون، والشــاربون المذنبــون، والخائنــون الغــدّارون، والمايلــون المرتشــون قســت القلــوب والســجايا، لا يخافــون الله ولا يذكــرون المنايــا يأكلــون كمــا يــأكل الانعــام، ولا يعلمــون مــا الإســلام وغمرتــهم شــهوات الدنيــا، فلهــا يتحركــون ولهــا يســكنون، وفيهــا ينامــون وفيهــا يســتيقظون وأهــل الثــراء منــهم غريقــون فى النعــم ويأكلــون كالنَّعــم، وأهــل البــلاء يبكــون لفقــد النعيــم أو مــن ضغطــة الغريــم، فنشــكوا إلى الله الكريــم، ولا حــول ولا قــوة إلا بــالله النصــير المعــين

وأمــا مفاســد النصــارى فــلا تُعــدّ ولا تُحصــى، وقــد ذكرنــا

चुग़ली करने वालों, चापलूसों, पीठ पीछे बुराई करने वालों, अत्याचारियों, धोखे से क़त्ल करने वालों, व्यभिचारियों, दुराचारियों, मदिरापान करने वालों, पापियों, बेईमानों, विद्रोहियों, दुनिया की ओर झुकने वालों तथा रिश्वत खाने वालों की बहुतायत हो गई है, दिल और तबीयतें कठोर हो गईं हैं वे अल्लाह से नहीं डरते और न मौतों को याद रखते हैं। वे जानवरों की तरह खाते हैं और नहीं जानते कि इस्लाम क्या है? संसार की कामवासना संबंधी इच्छाओं ने उन्हें ढक लिया। इसलिए वे उसी के लिए हरकत करते हैं और उसी के लिए ठहरते हैं और उसी हालत में वे सोते हैं और उसी हालत में जागते हैं। उनके धनाढ्य लोग निकम्मेपनों में डूबे हुए हैं और पशुओं की भांति खाते हैं तथा पीड़ित लोग तो नेमतों (ऐश्वर्यों) के अभाव के कारण या क़र्ज़ के इच्छुक के दबाव के कारण रोते हैं। हम कृपालु अल्लाह के आगे फर्याद करते हैं। फिर सहायक और सहयोगी ख़ुदा की सहायता के अतिरिक्त बुराई से बचने और नेकी करने की शक्ति नहीं मिलती।

और जहां तक ईसाइयों की खराबियों का संबंध है तो वे असंख्य और अनगिनत है। हमने उनमें से एक भाग का वर्णन पिछले पृष्ठों में कर दिया है।

شطرا منها فی أوراقنا الاولٰی فلما رأی اللّٰہ سبحانه أن المفاسد
فارت من الخارج والداخل فی هذا الزمان، اقتضت حکمته
ورحمته أن یُصلح هذه المفاسد برجُل له قَدمان قدمٌ علی
قدم عیسی، وقدم علی قدم أحمدن المصطفٰی و کان هذا
الرجل فانیا فی القدمین حتی سُمّی بالاسمین فخذوا هذه
المعرفة الدقیقة، ولا تخالفوا الطریقة، ولا تکونوا أول
المنکرین وإن هذا هو الحق وربِّ الکعبة، وباطل ما
یزعم أهل التشیع والسُنة فلا تعجلوا علیّ، واطلبوا
الهدی من حضرة العزة، وأْتونی طالبین فإن تُعرضوا ولا
تقبلوا، فتعالوا ندع أبناء نا وأبناء کم، ونساء نا ونساء

फिर जब पवित्र ख़ुदा तआला ने यह देखा कि इस युग में खराबियों ने अन्दर और बाहर से जोश मारा है तो उसकी दूरदर्शिता और रहमत ने चाहा कि वह एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा उन खराबियों को सुधारे जिसके दो क़दम हों। एक क़दम ईसा के क़दम पर और दूसरा क़दम अहमद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कदम पर। और यह व्यक्ति इन दो कदमों (नमूने) में ऐसा फ़ना होने वाला था कि वह दो नामों से नामित किया गया, तो इस बारीक मारिफ़त को दृढ़तापूर्वक थाम लो और इस सही मार्ग का विरोध मत करो और सब से पहले इन्कार करने वालों में से मत बनो। काब: के रब्ब की क़सम! निस्सन्देह यही सच है। और जो शिया लोग और अहले सुन्नत विचार करते हैं वह सर्वथा ग़लत है। इसलिए मेरे बारे में जल्दी मत करो और रब्बुलइज़्ज़त (समस्त प्रतिष्ठाओं का स्वामी अर्थात् ख़ुदा) से हिदायत मांगो और सत्य के अभिलाषी बन कर मेरे पास आओ फिर यदि मुंह फेर लो और स्वीकार न करो (तो) आओ हम अपने बेटों को बुलाएं और तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को और तुम अपनी औरतों को। फिर हम गिड़गिड़ा कर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की लानत डालें।

كـم، ثـم نبتهـل فنجعـل لعنـة الله عـلى الكـاذبـين

وهــذا هــو الحــق الذى كشــف الله عــلىّ بفضــله العظيـم وفيضـه القديـم وقـد تُـوفّى عيسـى، والله يعلـم أنـه المتـوفّى وتُـوفّى إمامكـم محمـدن الذى ترقبونـه، وقائـمُ الوقـتِ الذى تنتظرونـه وأُلهمـتُ مـن ربى أنى أنـا المسـيح الموعـود وأحمـدن المسـعود أتعجبـون ولا تفكّـرون فى سُـنن الله، وتنكـرون ولا تخافـون؟ وحصحـص الحـق وأنتـم تعرضونـو جـاء الوقـت وأنتـم تبعـدون ومـن سُـنن الله القديـم المسـتمرة الموجـودة إلى هـذا الزمـان الـتى لـم تنكرهـا أحـد مـن الجهـلاء وذوى العرفـان، أنـه قـد يذكـر شـيئًا أو رجُـلا فى أنبائـه المسـتقبلة، ويريـد منـه شـيئًا آخـر أو

यह वह सच है जो अल्लाह ने अपनी महान कृपा (फ़ज़्ल) और अनादि वरदान से मुझ पर प्रकट किया। वास्तव में ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और अल्लाह जानता है कि वह मृत्यु प्राप्त हैं। तुम्हारा इमाम मुहम्मद मुंतज़र और इमाम कायमुज़्ज़मान जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे हो वह मृत्यु पा चुका और मुझे मेरे रब्ब ने इल्हाम द्वारा बताया है कि मैं ही मसीह मौऊद और अहमद मसऊद हूं। क्या तुम आश्चर्य करते हो और अल्लाह की सुन्नतों पर विचार नहीं करते। और इन्कार करते हो और डरते नहीं। सच खुल कर स्पष्ट हो चुका है और तुम मुंह फेरते हो, और समय आ गया और तुम मुंह फेरते हो, और समय आ गया और तुम उस से दूर भागते हो। अनादि ख़ुदा की जारी तथा उस युग तक मौजूद सुन्नत जिस का अनाड़ियों एवं इर्फ़ान वाले लोगों में से कोई इन्कार नहीं कर सकता है। यह कि वे अपनी भविष्य की अहम ख़बरों में एक चीज़ या एक व्यक्ति का वर्णन करता है। हालांकि उसके अनादि इरादे में उस से कोई दूसरी चीज़ या दूसरा व्यक्ति अभिप्राय होता है। कभी हम स्वप्न में देखते हैं कि एक व्यक्ति किसी स्थान से आया है परन्तु वह नहीं आता जिसे हमने (स्वप्न में) देखा होता है बल्कि वह व्यक्ति आ जाता जो कुछ विशेषताओं में उसके समान होता है

رجُلا آخر فی الإرادۃ الازلیۃ وربما نری فی منام أن رجلا جاء من مقام فلا یجیء مَن رأیناہ بل یجیء مَن ضاھاہ فی بعض الصفات أو شابھَہ فی الحسنات أو السیئات وأقص علیک قصۃً عجیبۃً وحکایۃً غریبۃً إن لی کان ابنا صغیرًا وکان اسمہ بشیرًا، فتوفاہ اللّٰہ فی أیام الرضاع، واللّٰہ خیر وأبقی للذین آثروا سبل التقوی والارتیاع فأُلھمتُ من ربی إنا نردّہ إلیک تفضلًا علیک وکذلک رأت أُمُّہ فی رؤیاھا أن البشیر قد جاء ، وقال إنی أعانقک أشد المعانقۃ ولا أفارق بالسرعۃ فأعطانی اللّٰہ بعدہ ابنا آخر وھو خیر المعطین فعلمتُ أنہ ھو البشیر وقد صدق الخبیر، فسمّیتہ باسمہ، وأری حُلیۃ الاوّل فی جسمہ

या कुछ अच्छाइयों या बुराइयों में उस से समानता रखता है। मैं तुम्हें एक अद्‌भुत घटना और असाधारण कहानी वर्णन करता हूं और वह यह कि मेरा एक छोटा बेटा था उसका नाम बशीर था, जिसे अल्लाह ने दूध पीने की आयु में मृत्यु दे दी और अल्लाह उत्तम और सब से बढ़कर शेष रहने वाला है उनके लिए जो तक़्वा और संयम के मार्गों को प्राथमिकता देते हैं। तो मुझे मेरे रब्ब की ओर से इल्हाम हुआ कि हम तुझ पर फ़ज़्ल (कृपा) करते हुए उस (बशीर) को तेरी तरफ़ लौटा देंगे। इसी प्रकार उसकी मां ने भी अपने स्वप्न में देखा कि बशीर आया है और कहता है कि मैं तुझ से अच्छी तरह गले मिलूंगा और तुझ से जल्दी अलग नहीं हूंगा। तो फिर अल्लाह ने मुझे दूसरा बेटा दिया और वह देने वालों में से सबसे उत्तम है। तब मैंने जाना कि यह वही बशीर है और बहुत ख़बर रखने वाले ख़ुदा ने सच ही कहा था। अत: मैंने उसका नाम उस के नाम पर रखा। और मैं उसके अस्तित्व में पहले बशीर का हुलिया देखता हूं। तो अल्लाह की सुन्नत विवेकपूर्ण तौर पर सिद्ध हो गयी कि वह दो मनुष्यों को एक नाम में सम्मिलित कर देता है और जहां तक एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य का समनाम बनाने का संबंध है तो यह उद्‌देश्य-पूर्ति के लिए ऐसे रहस्य हैं जिन्हें केवल आरिफ़ों (अध्यात्मज्ञानियों)

فثبتت عادة الله برأى العَين، أنه قد يجعل شريكَ اسمٍ رجلَين وأما جعلُ البعض سَمِيَّ بعضٍ فهى أسرار لتكميل غرض لا يعلمها إلا مُهجة العارفين

ولى صديقٌ أحبُّ الاصدقاء وأصدق الاحبّاء، الفاضل العلامة والنحرير الفهّامة، عالمُ رموز الكتاب المبين، عارفُ علوم الحِكم والدّين، واسمه كصفاته المولوى الحكيم نور الدين فاتفق فى هذه الايام من قضاء الله الحكيم العلام أن ابنه الصغير الاحد، الذى كان اسمه محمد أحمد، مات بمرض الحصبة، فصبر ووافق ربَّه ذا الحكمة والقدرة والرحمة، فرآه رجل فى ليلة وفاته بعد مماته كأنه يقول لا تحزنوا لهذه الفرقة، فإنى أذهب لبعض الضرورة، وسأرجع

की रूह ही समझ पाती है।

मेरे एक दोस्त हैं, सब दोस्तों से अधिक प्रिय और समस्त परिजनो से अधिक सच्चे, विद्वान, अल्लामा, दक्ष बहुत बुद्धिमान और प्रतिभावान, किताब-ए-मुबीन (क़ुर्आन) के रहस्यों के ज्ञानी, चिकित्सा संबंधी विद्याओं तथा धर्म का इर्फ़ान रखने वाले जिनका प्रसिद्ध नाम उनकी महान विशेषताओं की भांति हकीम मौलवी नूरुद्दीन है। उन्हीं दिनों यह संयोग हुआ कि उनका इकलौता छोटा बेटा जिसका नाम मुहम्मद अहमद था, दूरदर्शी और सर्वज्ञ ख़ुदा के न्याय से मोती झाला (ख़सरा) की बीमारी से मृत्यु पा गया। आप ने सब्र से काम लिया और अपने दूरदर्शी, सामर्थ्वान, तथा दयालु ख़ुदा की इच्छा पर राज़ी रहे। तो एक व्यक्ति ने उस (बच्चे) की मृत्यु के पश्चात् उसी रात स्वप्न में उस बच्चे को देखा कि जैसे वह कह रहा हो कि आप इस वियोग पर शोकग्रस्त न हों, क्योंकि मैं किसी आवश्यकता के लिए जा रहा और बहुत जल्द तुम्हारे पास वापस आ जाऊंगा। यह (स्वप्न) इस बात पर संकेत करता है कि आपको एक दूसरा बेटा दिया जाएगा और वह स्वर्गवासी बेटे से समानता रखेगा और अल्लाह हर बात

إليكم بقدم السرعة وهذا يدل على أنه سيُعطى ابنا آخر، فيُضاهى الثانى الغابرَ والله قادر على كل شيء، ولكن أكثر الناس لا يعلمون شؤون أحسن الخالقين

وكذٰلك فى هذا الباب قصص كثيرة وشهادات كبيرة وقد تركناها خوفا من طول الكلام، وكثيرة منها مكتوبة فى كتب تعبير المنام، فارجع إليها إن كنتَ من الشاكّين وكيف تشكّ وإن الاخبار تواترت فى هذا الباب؟ ولعلك تكون أيضًا من المشاهدين لهذا العجاب فما ظنك أتعتقد أن رجلًا متوفّى إذا رآه أحد فى المنام، أو أخبر عنه فى الإلهام، وقال المتوفى إنى سأرجع إلى الدنيا وأُلاقى القربى، فهل هو راجع على وجه الحقيقة أو لهذا

पर सामर्थ्यवान है परन्तु अधिकतर लोग सृष्टि करने वालों में से सर्वोत्तम स्रष्टा ख़ुदा की क़ुदरतों का ज्ञान नहीं रखते।

और इस प्रकार इस अध्याय में बहुत सी घटनाएं तथा बड़ी-बड़ी गवाहियां पाई जाती हैं जिन्हें कलाम के लम्बे हो जाने के डर से हम ने छोड़ दिया है। उनमें से अधिकांश स्वप्नों की ताबीर (स्वप्नफल) की पुस्तकों में लिखित मौजूद हैं, यदि तुम सन्देह करने वाले हो तो उन को देखो। और तुम सन्देह कैसे कर सकते हो जबकि इस अध्याय में निरन्तरता से ख़बरें मौजूद हैं। शायद तू स्वयं भी इस अद्‌भुत बात को देखने वालों में से हो। तुम्हारा क्या विचार है? क्या तू विश्वास रखता है कि जब कोई व्यक्ति एक मृत्यु प्राप्त व्यक्ति को स्वपन में देखे या इल्हाम में उसके बारे में सूचना दी जाए और वह मृत्यु प्राप्त यह कहे कि मैं जल्द ही दुनिया में वापस आ जाऊंगा और रिश्तेदारों से मुलाक़ात करूंगा। तो क्या वह वास्तव में वापस आ जाता है? या उस के इस कथन की सूफ़ियों के नज़दीक तावील (प्रत्यक्ष हट कर व्याख्या) की जाएगी। तो यदि तुम इस अवसर पर तावील करोगे तो फिर क्या कारण है कि तुम भविष्यवाणियों के बारे में तावील

القول تأويل عند أهل الطريقة؟ فإن كنتم مؤوّلين فی هذا المقام، فما لكم لا تؤوّلون فی أنباء تُشابهها بالوجه التام؟ أتُفرّقون بين سُنن الله يا معشر الغافلين؟ فتدبّرْ وما أخال أن تتدبّر إلا أن يشاء ربی هادی الضالين

وقد عرفت أن علامات ظهور المسيح الذی هو المهدی قد ظهرت، والفتن كثرت وعمّت، والمفاسد غلبت وهاجت وماجت، ويسبّون خير البشر فی السكك والاسواق، وماتت الملة والتفّت الساق بالساق، وجاء وقت الفراق، فارحموا الدّين المُهان، فإنه يرحل الآن ونشدتكم الله ألا ترون هذه المفاسد بالعين؟ ألا يُترك عينُ زلالِ الإيمان للعَين؟ اشهدوا لله اشهدوا أحقٌّ هذا أو من المَين؟ وما

नहीं करते जो उनसे पूर्ण रूपेण समानता रखती हैं। हे लापरवाहों के गिरोह! क्या तुम अल्लाह की सुन्नतों (नियमों) में अन्तर करते हो। अत: तू विचार कर और मैं नहीं समझता कि तू विचार करे सिवाए इस के कि मेरा प्रतिपालक चाहे जो मार्ग भूल जाने वाले लोगों का पथ-प्रदर्शक है।

और यह तू अच्छी तरह से जान चुका है कि मसीह जो कि महदी ही है कि प्रकटन के लक्षण प्रकट हो चुके है तथा फ़ित्ने बहुत अधिक और आम हो गए और खराबियां ज़ोर पकड़ गईं और जोश में हैं तथा लहरें मार रही हैं। और (विरोधी) हज़रत ख़ैरुल बशर (सर्वश्रेष्ठ मनुष्य) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कूचों और बाज़ारों में गालियां देते हैं और मिल्लत मरने को है। चन्द्रा की अवस्था है और जुदाई का समय आ पहुंचा है। तो इस धर्म पर दया करो जो अपमानित हो चुका है, क्योंकि वह अब कूच करने को है। मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूं, क्या तुम यह खराबी (अपनी) आंखों से नहीं देख रहे, क्या ईमान का मधुर झरना माल-व-दौलत के लिए छोड़ा नहीं जा रहा? ख़ुदा के लिए गवाही दो, हां गवाही दो कि क्या यह सच है या झूठ? और हमें ईसाइयों के षडयंत्रों से अधिक

زاوَلْنا أشدَّ مِن كيد النصارى، وإنا فى أيديهم كالإسارى إذا أرادوا التلبيس، فيُخجلون إبليس ظهر البأس، وحصحص اليأس وقست قلوب الناس، واتبعوا وساوس الوسواس وبعدوا عن التقوى، وخوف الله الاعلٰى، بل عادَوا هذا النمط، وضاهَوا السقط وقلتُ قليلا مما رأيتُ وما استقصيت ووالله إن المصائب بلغت منتهاها، وما بقى من الملة إلا رسمها ودعواها، وأحاطت الظلمات وعدم سناها، ووطِئ زروعَنا الاوابد، فما بقى ماؤها ومرعاها، وكاد الناس أن يهلكوا من سيل الفتن وطغواها، فأُعطيتُ سفينةً من ربى، وبسم الله مجريها ومرساها وتفصيل ذلك أن الله وجد فى هذا الزمان ضلالات النصارىٰ مع أنواع

किसी से वास्ता नहीं पड़ा। और हम उनके हाथों में क़ैदियों की तरह हैं। जब वे धोखा देने का इरादा कर लें तो शैतान को भी शर्मिन्दा कर देते हैं। संकट प्रकट हो गया और निराशा खुल कर सामने आ गई और लोगों के दिल कठोर हो गए और उन्होंने भ्रम डालने वाले शैतान के भ्रमों का अनुकरण किया तथा संयम और महान और श्रेष्ठतम ख़ुदा के डर से दूर जा पड़े बल्कि वे इस नेक चलन के शत्रु हो गए और गिरी-पड़ी बेकार वस्तु की तरह हो गए। मैंने जो देखा उसमें से थोड़ा वर्णन किया और उसके विवरण में चरम सीमा तक नहीं गया। और ख़ुदा की क़सम कष्ट अपनी चरम सीमा को पहुंच गए। और धर्म में निशान और दावों के अतिरिक्त कुछ शेष न रहा, अंधकारों ने घेरा डाल लिया और इस (धर्म) की चमक समाप्त हो गई और जंगली जानवरों ने हमारी खेतियों को रोंद डाला जिस के कारण न उस धर्म का पानी शेष रहा और न ही चरागाहें। और निकट था कि लोग फ़ित्नों के इस तीव्र सैलाब और बाढ़ से मर जाते। तो मेरे रब्ब की ओर से मुझे एक नाव प्रदान की गई। उसका चलना और ठहरना अल्लाह के नाम से है। विवरण इसका यह है कि अल्लाह ने इस युग में ईसाइयों की गुमराहियों

الطغيان، ورأى أنهم ضلّوا وأضلّوا خلقا كثيرا، وعلَوا عُلوًّا كبيرا، وأكثروا الفساد، وأشاعوا الارتداد، وصالوا على الشريعة الغرّاء، وفتحوا أبواب المعاصى والاهواء، ففارت غيرة الله ذى الكبرياء عند هذه الفتنة الصمّاء ومع ذلك كانت فتنة داخلية فى المسلمين، ومزّقوا باختلافاتٍ دينَ سيد المرسلين، وصال بعضهم على البعض كالمفسدين فاختارنى الله لرفع اختلافهم، وجعلنى حَكَما قاضيا لإنصافهم فأنا الإمام الآتى على قدم المصطفٰى للمؤمنين، وأنا المسيح متمم الحجة على النصارى والمتنصرين
وجمع الله فى وجودى الاسمَين كما اجتمعت فى زمانى نار

को भिन्न-भिन्न प्रकार की उद्दण्डताओं के साथ मिला हुआ पाया और उसने देखा कि वे स्वयं भी गुमराह (पथ भ्रष्ट) हो गए हैं और उन्होंने बहुत अधिक लोगों को गुमराह किया हुआ है और बड़ी उद्दण्डता की तथा बहुत बिगाड़ पैदा कर दिया है और मुर्तद होने की एक लहर चला दी है और प्रकाशमान शरीअत पर आक्रमणकारी हुए हैं तथा उन्होंने पापों और इच्छाओं के दरवाज़े खोल दिए हैं। तब इस घोर फ़ित्ने के अवसर पर बुज़ुर्ग और श्रेष्ठतम ख़ुदा के स्वाभिमान ने जोश मारा और इसके साथ-साथ स्वयं मुसलमानों के अन्दर भी फ़ित्नः मौजूद था और उन्होंने नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म को आपसी मतभेदों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया। और वे फ़साद करने वालों की तरह एक-दूसरे पर आक्रमणकारी हुए तो उनके आपसी मतभेदों को दूर करने के लिए अल्लाह ने मुझे चुना और मुझे उनके इन्साफ़ के लिए फैसला करने वाला हकम (निर्णायक) बनाया। तो मैं मोमिनों के लिए (हज़रत मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम पर आने वाला इमाम हूं और मैं ही ईसाइयों और ईसाइयत ग्रहण करने वालों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करने वाला मसीह हूं।

الفتنتَين، وهذا هو الحق وبالذی خلَق الکونَین فجئتُ لأشیع أنوار برکاته، واختارنی ربی لمیقاته وما کنتُ أن أردّ فضل اللّٰه الکریم، وما کان لی أن أخالف مرضاة الرب الرحیم وما أنا إلا کالمیت فی یدَی الغسّال، وأُقلَّبُ کلَّ طرفة بتقلیب الفعّال، وجئتُ عند کثرة بدعات المسلمین ومفاسد المسیحیین وإن کنتَ فی شك فانظر بإمعان النظر کالمحقق الأریب، فی فتنِ بدعاتِ قومنا وجهلاتِ عبَدة الصلیب أما تری فتنًا متوالیة؟ أسمعتَ نظیرها فی قرون خالیة؟ فما لك لا تفکّر کالعاقلین، ولا تنظر کالمنصفین؟ وإن اللّٰه یبعث علی کل رأس مائة مجدّدَ الدّین، وکذلك جرت

अल्लाह ने मेरे अस्तित्व में दो नाम एकत्र कर दिए हैं। जिस प्रकार मेरे युग में दो फ़ित्नों की आग एकत्र हो गई और यही बात सच है तथा उस हस्ती की क़सम जिसने दोनों लोक पैदा किए। मैं इसलिए आया हूं ताकि मैं उसकी बरकतों के प्रकाश फैलाऊं। मेरे रब्ब ने मुझे वादा दिए हुए निश्चित समय पर चुना। मेरे लिए यह संभव नहीं कि मैं कृपालु ख़ुदा के फ़ज़्ल (अनुकम्पा) को अस्वीकार कर दूं और मेरे लिए यह भी संभव नहीं कि मैं दयालु रब्ब की इच्छा के विरुद्ध करूं। मैं तो मुर्दे को नहलाने वाले (स्नान कराने वाले) के हाथों में मुर्दे के समान हूं और मैं कर्मठ ख़ुदा के फिराने पर हर पल फिराया जाता हूं और मैं मुसलमानों में बिदअतों की अधिकता तथा ईसाइयों की खराबियों के अवसर पर आया हूं। यदि तुझे (इस बारे में) कोई सन्देह है तो एक बुद्धिमान अन्वेषक की तरह हमारी क़ौम में बिदअतों के फ़ित्नों और सलीब के पुजारियों की मूर्खतापूर्ण बातों को गहरी दृष्टि से देख! क्या तुझे निरन्तर आने वाले ये फ़ित्ने दिखाई नहीं देते, क्या तू ने कभी पहली सदियों में उनका उदाहरण सुना है? तुझे क्या हो गया है कि बुद्धिमानों की तरह सोच-विचार नहीं करता और न ही न्यायकर्ताओं की तरह देखता है। अल्लाह हर सदी (शताब्दी) के सर पर धर्म का मुजद्दिद भेजता

سُـنة الله المعـين أتظـن أنـه مـا أرسـل عنـد هـذا الطوفـان رجـلا مــن ذوى العرفــان، ولا تخــاف الله آخِـذَ المجرمــين؟

قــد انقضــت عــلى رأس المائــة إحــدى عشــر ســنة فمــا نظــرتَ، وانكســفت الشــمس والقمــر فمــا فكّــرتَ، وظهــرت الآيــات فمــا تذكّــرت، وتبينــت الإمــارات فمــا وقّــرت، أأنــت تنــام أو كنــتَ مــن المعرضــين؟ أتقــول لِــمَ مــا فعــل الفعّــال كما كنــتُ أخــال؟ و كذلــك زعــم الذيــن خلــوا مــن قبلــك مــن اليهــود، ومــا آمنــوا بخــير الرســل وحبيــب ربّ المعبــود، وقالــوا يخــرج منــا خاتــم الإنبيــاء الموعــود، و كذلــك كان وعــد ربنــا بــداوٗد، وقالــوا إن عيســى لا يــأتى إلا بعــد نــزول إيليــا مــن الســماء فكفــروا بمحمــد خــير الرســل وعيســى الذى

है और इसी प्रकार मदद करने वाले अल्लाह की सुन्नत जारी और प्रभावी है। क्या तू यह समझता है कि उस ने इस तूफ़ान के समय किसी इर्फ़ान वाले व्यक्ति को नहीं भेजा और तू गिरफ़्त करने वाले अल्लाह से नहीं डरता?

सदी के सर को गुज़रे हुए ग्यारह वर्ष हो चुके परन्तु तू ने विचार न किया और सूरज और चाँद को ग्रहण लग गया परन्तु तूने विचार न किया, निशान प्रकट हुए परन्तु तुम ने नसीहत प्राप्त न की और लक्षण खुल कर सामने आ आए परन्तु तू ने उनका सम्मान न किया। क्या तू सो रहा है या विमुख होने वालों में से है? क्या तू यह कहता है कि जैसा मेरा विचार था वैसा कर्म (फ़अआल) (ख़ुदा) ने क्यों न किया? और इस प्रकार उन यहूदियों ने भी जो तुम से पहले हो गुज़रे हैं ऐसा ही विचार किया था। वे रसूलों में सर्वश्रेष्ठ और माबूद ख़ुदा के मित्र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमपर ईमान न लाए और उन्होंने कहा कि मौऊद ख़ातमुल अंबिया हम ही में से प्रकट होगा और इसी प्रकार हमारे परवरदिगार का दाऊद अलैहिस्सलाम से वादा था तथा उन्होंने कहा कि ईसा एलिया के आकाश से उतरने के बाद ही आएगा जिसके कारण उन्होंने ख़ैरुर्रुसुल मुहम्मद

كان من الإنبياء، وختم الله على قلوبهم فما فهموا الحقيقة، وما كانوا متدبّرين وقست قلوبهم ونحتوا الدقارير، حتى صاروا قردة وخنازير، وكذلك يكون مآل تكذيب الصادقين وإنهم كانوا علماء أحزابهم وأئمة كلابهم، وكانوا فقهاء ومحدثين وفضلاء ومفسّرين، وكان أكثرهم من الراهبين فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم، وما نفعهم علمُهم ولا نُخْرُوبُهم، وكانوا قوما فاسقين

فلا تُفرِطوا بجنب الله وليكن فيكم رفق وحلم، ولا تقْفُوا ما ليس لكم به علم، ولا تغلُوا ولا تعتدوا، ولا تعثوا في الإرض ولا تفسدوا، واخشوا الله إن كنتم متقين قد سمعتم سُنّة تسمية البعض بأسماء البعض، فلا تتركوا

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और ईसा का जो नबियों में से थे इन्कार किया। अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी तो वे वास्तविकता को न समझ सके और वे सोच-विचार करने वाले न थे। उनके दिल कठोर हो गए और उन्होंने बुरे झूठ गढ़े, यहां तक कि वे बन्दर और सुअर बन गए और सच्चों को झुठलाने का यही अंजाम हुआ करता है। और ये लोग उनके गिरोहों के उलेमा और कुत्तों का स्वभाव रखने वालों के इमाम थे, वे फ़ुक्हा (इस्लामी धर्म-शास्त्र के विद्वान) भी थे और मुहद्दिस भी। वे बड़े-बड़े प्रकाण्ड विद्वान भी थे और व्याख्याकार भी और उनमें से अधिकतर दुनिया को त्यागने वाले थे। फिर जब वे टेढ़ी चाल चलने वाले हो गए तो अल्लाह ने भी उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया। न उन के ज्ञान ने उन्हें कुछ लाभ पहुंचाया और न ही (अमन में) दराड़ें डालने ने, और वे पापी क़ौम थे।

तो तुम अल्लाह के अधिकार में कमी न करो यद्यपि तुम में नर्मी और सहिष्णुता होनी चाहिए। जिसका तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगो न अतिशयोक्ति करो और न अत्याचार करो तथा पृथ्वी में ख़राबी पैदा न करो

السُنن الثابتة من الله القدير، لأوهام ليس لها عندكم من برهان ونظير، وإن كنتم تُصرّون عليها ولا تُعرضون عنها فأنبئونا بنظائر على تلك السُنة إن كنتم صادقين ولن تقدروا أن تأتوا بنظير، فلا تبرزوا لحرب الرب القدير، ولا تردّوا النعمة بعد نزولها، ولا تدُعّوا الفضل بعد حلولها، ولا تكونوا أوّل المعرضين

وإن كنتم فى شك من أمرى، ولا تنظرون نور قمرى، وتزعمون أن المهدى الموعود والإمام المسعود يخرج من بنى فاطمة لإطفاء فتن حاطمة، ولا يكون من قوم آخرين، فاعلموا أن هذا وهم لا أصل له، وسهم لا نصل له، وقد اختلف القوم فيه، كما لا يخفى على عارفيه، وعلى

और न ही फ़साद करो। यदि तुम संयमी हो तो अल्लाह से डरो। निस्सन्देह कुछ के नाम कुछ दूसरों के दिए जाने की सुन्नत के बारे में तुम सुन चुके हो। इसलिए तुम शक्तिशाली और सुदृढ़ अल्लाह की प्रमाणित सुन्नतों को उन भ्रमों के लिए न छोड़ो जिनके लिए न तो तुम्हारे पास कोई उदाहरण। परन्तु यदि तुम फिर भी इस पर आग्रह करते हो और इस से नहीं रुकते तो इस सुन्नत के विरुद्ध हमें उदाहरण बताओ यदि तुम सच्चे हो। और तुम ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने की हरगिज़ क़ुदरत नहीं रखते। अतः तुम शक्तिमान रब्ब से युद्ध करने के लिए मैदान में मत निकलो और नेमत के उतरने के बाद उसे न धिक्कारो और सर्वप्रथम विमुख होने वाले मत बनो।

यदि तुम मेरे मामले में सन्देह में हो और तुम मेरे चन्द्रमा के प्रकाश को नहीं देखते तथा तुम सोचते हो कि महदी मौऊद और इमाम मसऊद बनी फ़ातिमा से तबाह करने वाले फ़ित्नों (की आग) बुझाने के लिए प्रकट होगा और वह किसी दूसरी क़ौम से नहीं होगा तो यह जान लो कि यह एक ऐसा भ्रम है जिसका कोई आधार नहीं और ऐसा तीर है जिसकी कोई नोक नहीं।

كمل المحدثين وجاء فى بعض الروايات أن المهدى صاحب الآيات مِن وُلْدِ العبّاس، وجاء فى البعض أنّه منّا أى مِن خير الناس، وفى البعض أنه من وُلْدالحسن أو الحسين، فالاختلاف لا يخفى على ذوى العينين وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن سلمان منا أهل البيت، مع أنه ما كان من أهل البيت، بل كان من الفارسيّين

ثم اعلم أن أمر النسب والإقوام أمر لا يعلم حقيقته إلا علمُ العلام، والرؤيا التى كتبتُها فى ذكر الزهراء تدل على كمال تعلّقى، واللّٰهُ أعلم بحقيقة الاشياء وفى كتاب التيسير عن أبى هريرة مَن أسلم من أهل فارس فهو قرشى وأنا من الفارس كما أنبأنى ربى، فتفكر فى هذا ولا

और जैसा कि अहले इर्फ़ान (आत्म ज्ञानियों) और पूर्ण मुहद्दिसों पर छुपा नहीं कि इस बारे में क़ौम ने मतभेद किया है। क्योंकि कुछ रिवायतों में आया है कि निशानों वाला महदी बनू अब्बास[रज़ि॰] में से होगा तथा कुछ अन्य (रिवायत) में आया है कि वह हम में से अर्थात पवित्र लोगों में से होगा और कुछ रिवायतों में आया है कि वह हसन रज़ियल्लाहु या हुसैन[रज़ि॰] की सन्तान में से होगा। यह एक ऐसा मतभेद है जो किसी प्रतिभाशाली मनुष्य से छुपा नहीं। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सलमान हम अहले बैअत में से हैं जबकि वह अहले बैअत में से न थे। बल्कि फ़ारसियों में से थे।

फिर यह भी जान ले कि वंश और क़ौमियत का मामला ऐसा मामला है जिसकी वास्तविकता को केवल सर्वज्ञ ख़ुदा का ज्ञान ही परिधि में ले सकता है और वह स्वप्न जिसे मैंने (हज़रत) फ़ातिमा अज़्ज़ुहरा[रज़ि॰] के वर्णन में लिखा है वह उनके साथ मेरे संबंध की खूबी पर संकेत करती है। वस्तुओं की मूल वास्तविकता को अल्लाह ही सबसे उत्तम जानता है। किताबुत्तैसीर में अबू हुरैरः से रिवायत है कि फारसियों में से जिसने भी इस्लाम स्वीकार किया वह

تعجل كالمتعصبين ثم الاصول المحكم والاصل الاعظم أن يُنظَر إلى العلامات و يُقدَّمَ البينات على الظنيات، فإن كنت ترجع إلى هذه الاصول فعليك أن تتدبّر بالنهج المعقول ليهديك الله إلى حق مبين، وهو أن النصوص القرآنية والحديثية قد اتفقت على أن الله ذا القدرة قسّم زمان هذه الامة بحكمة منه ورحمة على ثلاثة أزمنة، وسلّمه العلماء كلهم من غير مِرْية فالزمان الاوّل هو زمانٌ أوّلُ من القرون الثلاثة مِن بُدُوّ زمان خير البرية، والزمان الثانى زمانُ حدوث البدعات إلى وقت كثرة شيوع المحدثات، والزمان الثالث هو الذى شابهَ زمانَ خير

क़ुरैशी है और जैसा कि मेरे रब्ब ने मुझे बताया है कि मैं अहले फ़ारस में से हूं। इसिलए तू इस पर ख़ूब सोच-विचार कर और द्वेष रखने वालों के समान जल्दबाज़ी न कर। फिर एक सुदृढ़ सिद्धान्त तथा सबसे बड़ा असल यह है कि लक्षणों की ओर देखा जाए और स्पष्ट बातों को काल्पनिक बातों पर प्राथमिकता दी जाए। तो यदि तू इस सिद्धान्त की ओर लौटे तो तेरा कर्त्तव्य है कि उचित ढंग से विचार कर ताकि अल्लाह स्पष्ट सच की ओर तेरा मार्ग-दर्शन करे और वह सिद्धान्त यह है कि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेश इस पर सहमत हैं कि अल्लाह ने जो क़ुदरत वाला है अपनी दूरदर्शिता और रहमत से इस उम्मत के युग को तीन युगों में विभाजित किया है। और जिसे समस्त उलेमा ने बिना किसी सन्देह एवं शंका के स्वीकार किया है। अत: पहला युग वह युग है जो ख़ैरुल-बरिय्य: (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ) के युग के प्रारंभ से पहली तीन सदियों का युग है। दूसरा युग बिदअतों के पैदा होने के युग से उन बिदअतों के अत्यधिक फैल जाने तक युग है। और तीसरा युग वह है जो ख़ैरुल बरिय्य: (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के युग से समानता रखता है और नुबुव्वत के मार्ग (मिन्हाज-ए-नुबुव्व) की ओर लौट आया है और वह रद्दी बिदअतों और बिगड़ी हुई रिवायतों से

البريـة، ورجـع إلى منهـاج النبـوة، وتطهَّـرَ مِـن بدعـات رديّـة وروايـات فاسـدة، وضاهَـى زمـانَ خاتـم النبيـين، وسـماه آخـرَ الزمـان نـبيُّ الثقلـين، لانـه آخِـر مـن الزمانَـين وحمِـد الله تعـالى العبـاد الآخِريـن كمـا حمِـد الاوّلـين، وقالَ ثُلَّـةٌ مِـنَ الۡاَوَّلِـيۡنَ وَ ثُلَّـةٌ مِـنَ الۡاٰخِرِيۡـنَ ولـكلّ ثـلّةٍ إمـام، وليـس فيـه كلام فهـذه إشـارة إلى خاتـم الائمـة، وهـو المهـدى الموعـود اللاحـق بالصحابـة، كمـا قـال عـزّ و جـلّ واٰخَرِيۡـنَ مِنۡـهُمۡ لَمَّـا يَلۡحَقُـوۡا بِـهِمۡ وسـئل رسـول الله صـلى الله عليـه وسـلم عـن حقيقـة الآخريـن فوضـع يـده عـلى كتـف سـلمان كالموالـين المحبـين، وقـال لـو كان الإيمـان مُعلَّقًـا بالثريّـا أى ذاهبًـا مـن الدنيـا لنـاله

पवित्र है और ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग से समानता रखता है तथा जिन्न और इन्सानों के नबी ने उस का नाम अन्तिम युग रखा है। क्योंकि वह उन दो युगों में से अन्त में आने वाला है और अल्लाह तआला ने उन बाद में आने वाले बन्दों की उसी प्रकार प्रशंसा की जैसे उसने पहलों की प्रशंसा की। और फ़रमाया –

ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاٰخِرِيۡنَ (अलवाक़िअ:40,41)

अनुवाद - पहले में से भी एक जमाअत और बाद में आने वालों की भी एक जमाअत है।

और हर जमाअत का एक इमाम है। इसमें कोई आपत्ति नहीं और यह संकेत है ख़ातमुल अंबिया की ओर और वह महदी मौऊद है जो सहाबा से मिलने वाला होगा जैसा कि विजयी और तेजस्वी ख़ुदा ने फ़रमाया –

وَاٰخَرِيۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ (अलजुम्मः4)

अनुवाद - उन के अतिरिक्त एक दूसरी क़ौम भी है जो अभी उन से मिली नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उन अन्त में आने वालों की वास्तविकता पूछी गई तो आपने अपना हाथ सलमान के कंधे पर दोस्तों और

رجل من فارس وهذه إشارة لطيفة من خير البريّة إلى آخر الائمّة، وإشارة إلى أن الإمام الذى يخرج فى آخر الزمان ويردّ إلى الارض أنوار الإيمان يكون مِن أبناء فارس بحكم الله الرحمٰن فتفكّر وتدبّر، وهذا حديث لا يبلغ مقامَه حديث آخر، وقد ذكره البخارى فى الصحيح بكمال التصريح وإذا ثبت أن الإمام الآتى فى آخر الزمان هو الفارسى لا غيره من نوع الإنسان، فما بقى لرجل آخر موضع قدم، وهذا من الله مليكِ وجودٍ وعدم، فلا تحاربوا الله ولا تجادلوا كالمعتدين، وآخر دعوانا أنِ الحمد لله رب العالمين

प्यारों की तरह रखा और फ़रमाया –

لوكان الايمان معلّقًا بالثريا لناله رجلٌ مِّنْ هٰؤلآء

अनुवाद - कि यदि ईमान सुरैया सितारे पर भी चला गया अर्थात् दुनिया से जाता रहा तो फ़ारसियों में से कोई व्यक्ति उसे अवश्य प्राप्त कर ले आएगा।

यह ख़ैरुलबरिय्य: (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आख़िरुल अइम्म: (इमामों में से अन्तिम) की ओर एक सूक्ष्म संकेत था और उस इमाम की तरफ़ संकेत था जो अन्तिम युग में प्रकट होगा और ईमान के प्रकाश पृथ्वी की ओर वापस लाएगा और वह कृपालु ख़ुदा के आदेश से फ़ारस वालों में से होगा। अत: सोच-विचार कर। इस हदीस के स्थान को (स्तर को) कोई अन्य हदीस नहीं पहुंच सकती। इमाम बुख़ारी ने इस हदीस का वर्णन पूर्ण स्पष्टता से अपनी सही में किया है और जब यह सिद्ध हो गया कि अन्तिम युग में आने वाला इमाम फ़ारसी नस्ल से ही होगा न कि मानव जाति में से कोई दूसरा। तो फिर किसी दूसरे मनुष्य के लिए पैर रखने की गुंजायश शेष नहीं रहती। और यह सब हस्त और नीस्त के मालिक अल्लाह की ओर से है। इसलिए तुम अल्लाह से युद्ध न करो और सीमा से बढ़ने वालों की तरह बहस न करो और हमारी अन्तिम दुआ यही है कि समस्त वास्तविक प्रशंसा समस्त लोकों के प्रतिपालक अल्लाह को शोभा देती है।

الْقَصِيْدة

فی مدح أبی بکر الصدّیق وعمر الفاروق وغیرهما من الصّحابة رضی اللّٰہ عنهم أجمعین

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, उमर फ़ारूक और अन्य आदरणीय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की प्रशंसा में क़सीद:

رُوَیدَك لا تَهْجُ الصحابةَ واحْذَرِ ولا تَقْفُ کلَّ مزوِّرٍ وتَبَصَّرِ

संभल जा, सहाबा की निन्दा न कर और डर तथा हर धोखेबाज़ के पीछे न चल और विवेक से काम ले।

ولا تتخيَّرْ سبلَ غيٍّ وشقوةٍ ولا تلعَنَنْ قومًا أناروا کنيّرِ

गुमराही और दुर्भाग्य के मार्गों को ग्रहण न कर और ऐसे लोगों पर लानत न कर जो सूर्य के समान प्रकाशमान हुए।

أولئك أهلُ اللّٰہ فَاخْشَ فِناءَهم ولا تقدَحَنْ فی عِرضهم بتهوُّرِ

ये लोग अहलुल्लाह (ख़ुदा के वली) हैं। अतः इन के आंगन में प्रवेश करने से डर और निर्लज्जतापूर्वक उनके मान-सम्मान पर कटाक्ष न कर।

أولئك حزب اللّٰہ حُفَّاظُ دينهِ وإيذاؤهم إيذاءُ مولًی مُؤَثِّرِ

ये सब अल्लाह के गिरोह हैं और उसके धर्म के रक्षक हैं उनको कष्ट देना उन्हें पसन्द करने वाले मौला को कष्ट देना है।

تَصدَّوا لدين اللّٰہ صدقًا وطاعةً لکلّ عذابٍ محرِقٍ أو مدمِّرِ

वे ख़ुदा के धर्म के लिए तैयार हो गए सच्चाई और फ़र्माबरदारी से, हर जलाने वाले या घातक अज़ाब को उठाने के लिए

وطهَّر وادی العشق بحر قلوبهم فما الزبدُ والغُثاء بعدَ التطهُّرِ

इश्क़ की घाटी ने उनके दिलों के समुद्र को पवित्र कर दिया। तो झाग और मैल-कुचैल पवित्र हो जाने के बाद शेष नहीं रही।

وجاءوا نبیَّ اللّٰہ صدقا فنوّروا ولم يبقَ أثرٌ مِن ظلامٍ مُکدِّرِ

और वे अल्लाह के नबी के पास सच्चे दिल से आए तो प्रकाशमान कर दिए गए और गंदलापन पैदा करने वाले अंधकार का कोई प्रभाव शेष न रहा।

بأجنحة الاشـواق طاروا إطاعةً وصاروا جوارحَ للنبيّ الموقَّرِ

वे फ़र्माबरदारी करते हुए शौक़ के परों के साथ उड़े और वे आदरणीय नबी के लिए हाथ और बाज़ू बन गए।

ونحن وأنتم فى البساتين نرتعُ وهم حضروا ميدانَ قتلٍ كمَحشَرِ

हम और तुम तो (आज) बाग़ों में मज़े करते हैं, हालांकि वे क़त्ल के मैदान में कयामत के दिन की तरह उपस्थित हुए थे।

وتركوا هوى الاوطان لله خالصًا وجاءوا الرّسولَ كعاشق متخَيِّرِ

और उन्होंने शुद्ध नीयत से अल्लाह के लिए देश के प्रेम को त्याग दिया और रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक मुग्ध प्रेमी की तरह आए।

على الضعف صوّالون مِن قوة الهدىٰ على الجُرحِ سلّالون سيفَ التّشذُّرِ

वे कमज़ोर होने के बावजूद हिदायत की शक्ति के साथ आक्रमणकारी थे, ज़ख़्मी हो जाने के बावजूद टुकड़े-टुकड़े करने वाली तलवार सूंतने वाले थे।

أتُكفر خلفاءَ النبيّ تجاسرًا أتُكفر خلفاءَ النبيّ تجاسرًا

हे सम्बोधित! क्या तू दुस्साहस से नबी के ख़लीफ़ाओं को काफ़िर कहता है? क्या तू उन पर लानत करता है जो पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान हैं।

وإن كنتَ قد ساءتْك أمرُ خلافةٍ فحارِبْ مَلِيكًا اجتباهم كمُشترى

और यदि तुझ को (उन की) ख़िलाफ़त का मामला बुरा लगता है तो उस बादशाह से लड़ाई कर जिसने उन्हें ख़रीदार की तरह पसन्द कर लिया है।

فبإذنه قد وَقَعَ ما كان وَاقعًا فلا تَبْكِ بعد ظهور قَدَرٍ مقدَّرِ

उसी बादशाह की आज्ञा से घटित होने वाला मामला घटित हो चुका है। इसलिए निश्चित तक़्दीर के प्रकट होने के बाद मत रो।

وما استخلفَ اللهُ العليمُ كذاهلٍ وما كان ربُّ الكائناتِ كمُهْتَرِ

और इन्हें बहुत जानने वाले ख़ुदा ने भूलने वाले की तरह खलीफा नहीं बनाया

और कायनात का रब्ब ग़लत बात कहने वाले की तरह न था।

وقُضِيتْ أمورُ خلافة موعودةٍ وفی ذاك آياتٌ لقلبٍ مفكِّرِ

और वादा दी गई ख़िलाफ़त के कार्य पूर्ण हो गए। इसमें विचार करने वाले दिल के लिए निशान हैं।

وإنى أرى الصدّيقَ كالشمس فی الضحى مآثرُه مقبولةٌ عندَ هُوجرِ

मैं (अबू बक्र) सिद्दीक़ को चढ़ते सूर्य की तरह पाता हूं। आप के यशोगान और शिष्टाचार एक प्रतिभाशाली मनुष्य की दृष्टि में मान्य हैं।

و كان لذات المصطفٰى مثلَ ظلِّهِ ومهما أشار المصطفى قام كالجَرِى

वह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए आप की छाया के समान था और जब भी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारा किया तो वह बहादुर की तरह उठ ख़ड़ा हुआ।

وأَعطى لنصر الدّين أموالَ بيتهِ جميعًا سِوى الشیء الحقير المحقَّرِ

और उसने धर्म की सहायता के लिए अपने घर के समस्त माल दे दिए सिवाए तुच्छ और मामूली चीजों के।

ولـمَّا دعاه نبيُّنا لرفاقةٍ على الموت أقبلَ شائقا غيرَ مُدبِرِ

और जब हमारे नबी ने उसे मित्रता के लिए बुलाया तो वह मौत पर शौक के साथ आगे बढ़ा, इस हाल में कि वह पीठ फेरने वाला न था।

وليس محلَّ الطعن حسنُ صفاته وإن كنتَ قد أزمعتَ جَورًا فعَيِّرِ

और उसकी अच्छी विशेषताएं कटाक्ष का स्थान नहीं यदि तूने अत्याचार से इरादा किया है तो दोष लगाता रहा है।

أبادَهوى الدنيا لإحياء دينه وجاء رسولَ الله مِن كلّ مَعبَرِ

उसने दुनिया की इच्छाओं को रसूलुल्लाह के धर्म को जीवित करने के लिए मिटा दिया और रसूलुल्लाह के पास हर घाट से आया।

عليك بصُحف الله يا طالبَ الهدى لتنظُر اوصاف العتيق المطهَّرِ

हे हिदायत के अभिलाषी! अल्लाह की किताबों को अनिवार्य तौर पर पकड़

ताकि तू उस पवित्र स्वभाव से सज्जन (इन्सान) के गुण देखे।

وما إنْ أری واللّٰہِ فی الصحب کلّھمْ　　　　کمثل ابی بکر بقلب معطَّرِ

और ख़ुदा की क़सम! मैं समस्त सहाबा में कोई मनुष्य अबू बक्र की तरह सुगंधित हृदय वाला नहीं देखता।

تخیّرہ الاصحاب طوعًا لفضلہٖ　　　　وللبحر سلطانٌ علی کلّ جعفرِ

सहाबा ने प्रसन्नतापूर्वक उसकी बुज़ुर्गी के कारण उस का चयन किया और समुद्र को हर दरिया (नदी) पर आधिपत्य प्राप्त है।

ویثنی علی الصدّیق ربٌّ مھیمنٌ　　　　فما أنت یا مسکین إن کنتَ تزدری

और निगहबान रब्ब, सिद्दीक की प्रशंसा कर रहा है। अत: हे कंगाल! तू क्या चीज़ है? यदि तू दोष लगाता है।

لہ باقیات صالحات کشارقٍ　　　　لہ عینُ آیاتٍ لھذا التطھُّرِ

सूर्य के समान उसके शेष रहने वाले शुभ कर्म मौजूद हैं इस पवित्रता के कारण उसके लिए निशानों का एक झरना मौजूद है।

تَصدَّی لنصر الدین فی وقت عسرہٖ　　　　تَبدَّی بغارٍ بالرسول المؤزَّرِ

धर्म की तंगी के समय उसने उसकी सहायता की ज़िम्मेदारी ली और समर्थन प्राप्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गुफ़ा में जाने में पहल की।

مَکینٌ امین زاھد عند ربّہٖ　　　　مخلِّصُ دینِ الحقّ مِن کلِّ مُھجِرِ

और अपने रब्ब के समक्ष प्रतिष्ठित, अमानतदार और दुनिया त्यागने वाला है। सच्चे धर्म को प्रत्येक बकवास करने वाले से छुटकारा देने वाला है।

ومِن فتن یُخشی علی الدین شرُّھا　　　　ومِن محنٍ کانت کصخرٍ مکسِّرِ

और धर्म को ऐसे फ़ित्नों से मुक्ति देने वाला है जिन की बुराई से धर्म को भय था तथा ऐसे दुखों से जो तोड़ने वाले पत्थर के समान थे।

ولو کان ھذا الرجل رجلًا منافقًا　　　　فمَن للنبیّ المصطفٰی مِن معزِّرِ

यदि यह आदमी कोई मुनाफ़िक आदमी था तो फिर नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सहायक कौन था?

أتحسب صدّيقَ المهيمنِ كافرًا لقولِ غريقٍ فی الضلالة أكْفَرِ

क्या तू निगरान ख़ुदा के सिद्दीक को काफ़िर समझता है ऐसे व्यक्ति के कहने पर जो गुमराही में डूबा हुआ और सब से बड़ा काफ़िर है।

و كان كقلب الانبياء جَنانُهُ وهمّتُهُ صوّالة كالغضنفرِ

उसका दिल तो नबियों के दिल के समान था और साहस शेर के समान ख़ूब आक्रमण वाला था।

أرىٰ نورَ وجه الله فی عاداتهِ وجلواتِه كأنه قِطعٌ نَيِّرِ

मैं तो उसकी आदतों और उसकी चमकारों में अल्लाह के चेहरे का प्रकाश देखता हूं जैसे कि वह सूर्य का टुकड़ा है।

و إنّ له فی حضرة القدس درجةً فويلٌ لالسنةٍ حِدادٍ كخنجرِ

और उसे ख़ुदा के दरबार में एक पद प्राप्त है। अत: तबाही है उन ज़ुबानों पर जो खंजर के समान तेज़ हैं।

وخدماتُه مثلُ البدور منيرةٌ وثمراته مثل الجنا المستكثَرِ

और उसकी सेवाएं पूर्ण चन्द्रमाओं के समान प्रकाशमान हैं तथा उसके फल प्रचुरता से चुने हुए मेवे हैं।

وجاء لتنضير الرياض مبشّرًا فللّهِ دَرُّ منضّرٍ ومبشّرٍ ★

और वह बागों की हरियाली के लिए खुशखबरी देने वाला होकर आया। अत: ख़ुदा भला करे उस हरा भरा करने वाले और खुश ख़बरी देने वाले का।

وشابَهَهُ الفاروق فی كل خطّةٍ وساسَ البرايا كالمليك المدبّرِ

और (उमर) फ़ारूक़ हर प्रतिष्ठा में उनके समरूप हुआ और उसने एक विवेकवान बादशाह के समान प्रजा का प्रबंध किया।

سعىٰ سَعْىَ إخلاص فظهرتْ عزّة وشأنٌ عظيم للخلافة فانظُرِ

उसने श्रद्धापूर्वक प्रयत्न किया तो ख़िलाफ़त का सम्मान और ऊंची शान प्रकट हो गई। अत: देख तो सही।

★ इस पृष्ठ का हाशिया पुस्तक के पृष्ठ नम्बर 200 में दर्ज किया गया है।

وصبّغ وجهَ الارض مِن قتلِ كفرة فيا عجبًا مِن عزمه المتشمِّرِ

और उसने ज़मीन की सतह को काफ़िरों के क़त्ल करने से रंग दिया। अत: उसका दृढ़ संकल्प क्या ही विचित्र था।

وصار ذُكاءً كوكبٌ فی وقتهِ فواهًا له ولوقته المتطهِّرِ

और उसके समय में सितारा सूर्य बन गया था। अत: आफ़रीन (धन्य) है उसपर भी और उसके पवित्र समय पर भी।

وبارَی ملوكَ الكفر فی كل معرَكٍ وأهلكَ كلَّ مبارزٍ متكبّرِ

और उसने काफ़िर बादशाहों से हर युद्ध में मुक़ाबला किया और हर घमण्डी योद्धा को तबाह कर दिया।

أری آیۃ عظمٰی بأیدٍ قویۃٍ فواهًا لهذا العبقریّ المظفّرِ

उसने दृढ़ हाथों से बड़ा निशान दिखाया। तो शाबाश हो उस विजय प्राप्त योद्धा पर।

إمامُ أناسٍ فی بِجادٍ مرقّعٍ ملیكُ دیار فی كساء مغبَّرِ

वह पैवन्द लगे कम्बल में लोगों का इमाम था और मिट्टी में लिथड़ी हुई चादर में देशों का बादशाह था।

وأُعطیَ أنوارًا فصارَ محدَّثًا وكلَّمه الرحمن كالمتخیّرِ

और उसे ख़ुदा के प्रकाश दिए गए फिर वह ख़ुदा का मुहद्‌दस बन गया और कृपालु ख़ुदा ने उस से (अपने) चुने हुए लोगों की तरह वार्तालाप किया।

مآثره مملوّۃ فی دفاترٍ فضائله أجلی كبدرٍ أنورِ

उसकी ख़ूबियों से पुस्तकें भरी पड़ी हैं और उसकी अच्छाइयां प्रकाशमान चौदहवीं के चन्द्रमा के समान अधिक प्रकाशमान हैं।

فواهًا له ولسعیه ولجهدهِ وكان لدین محمدٍ خیرَ مِغفَرِ

अत: शाबाश है उस पर, उसकी कोशिश और मेहनत पर वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म के लिए उत्तम ख़ोद था।

وفی وقته أفراسُ خیلِ محمّدٍ أثرنَ غبارًا فی بلاد التنصّرِ

और उसके काल में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तम सवारों के घोड़ों ने ईसाइयों के देश में धूल उड़ाई।

وكسَّر كسرى عسكرُ الدين شوكةً فلم يبق منهم غيرُ صُورِ التَّصوّرِ

और धर्म की सेनाओं ने किस्रा को दबदबे की दृष्टि से तोड़ डाला। फिर उन (किस्राओं) में से काल्पनिक शक्लों के अतिरिक्त कुछ शेष न रहा।

وكان بشوكته سليمانَ وقتهِ وجُعلتْ له جِنُّ العِدا كالمسخَّرِ

और वह अपने दबदबे में अपने समय का सुलेमान था और शत्रुओं के जिन्न उसके लिए काम पर लगा दिए गए थे।

رأيتُ جلالةَ شأنه فذكرتُهُ وما أمدحُ المخلوق إلّا لجوهرِ

मैंने उसकी महान प्रतिष्ठा को देखा तो उस का वर्णन किया और उसमें सृष्टि की प्रशंसा एवं स्तुति केवल उस की ख़ूबी के कारण करता हूं।

وما إنْ أخاف الخَلقَ عند نصاحة وإن المرارة يلزَمَنْ قولَ مُنذِرِ

और नसीहत के समय में सृष्टि (लोगों) से नहीं डरता और डराने वाले की बात को कड़वाहट तो अनिवार्य ही होती है।

فلما أجازت حُلَلُ قولي لُدونةً وغارت دقائقُه كبئرٍ مقعَّرِ

जब मेरे कथन के लिबास (शब्द) नर्मी से बाहर निकल गए और उनकी बारीकियां गहरे कुएं की तरह गहरी हो गईं

فأفتوا جميعا أنّ كُفرك ثابتٌ وقتلك عملٌ صالحٌ لِلمكفِّرِ

तो उन सब ने फ़त्वा दे दिया कि तेरा कुफ्र तो सिद्ध है और काफ़िर ठहराने वाले के लिए तुझे मार डालना नेक कर्म है।

لقد زيّنَ الشيطانُ أوهامَهم لهم فتركوا الصلاحَ لاجل غيٍّ مُدْخِرِ

निस्सन्देह शैतान ने मनुष्य के भ्रमों को उन के लिए सुन्दर कर दिखाया है। अत: उन्होंने अपमानित करने वाली गुमराही के लिए नेकी (भलाई) को छोड़ दिया।

وقد مسخَ القهّارُ صورَ قلوبهم وفقدوا من الاهواء قلبَ التدبُّرِ

और महाप्रतापी ख़ुदा ने उनकी आन्तिरक शक्लों को बिगाड़ दिया है और इच्छा तथा लालच के कारण उन्होंने विचार करने वाला दिल खो दिया है।

وما بقيتْ فى طينهم ريحُ عِفّةٍ　　فذَرْهم يسبّوا كلَ بَرٍّ موقَّرِ

और उनके स्वभाव में पाकदामनी की गंध भी शेष नहीं रही। अतः छोड़ उनको इस हालत में कि वे हर सम्मानीय नेक व्यक्ति को गालियां देते रहें।

وقد كُفِّرَتْ قبلى صحابةُ سيّدى　　وقد جاءك الاخبارُ من كل مُخْبِرِ

और मुझ से पहले मेरे सरदार के सहाबा को काफ़िर कहा गया है और हर जासूस की ओर से तुझे ऐसी सूचनाएं मिल चुकी हैं।

يُسِرّون إيذائى لجبن قلوبهم　　وما إنْ أرى فيهم خصيمًا ينبرى

वह अपनी कायरता के कारण छुप कर मुझे कष्ट पहुंचाते हैं और उनमें कोई ऐसा मुकाबला करने वाला नहीं देखता जो सामने आए।

يفرّون منى كالثعالب خشيةً　　يخافون أسيافى ورمحى وخنجرى

वे डर के मारे मुझ से लोमड़ियों के समान भागते हैं। वे मेरी तलवारों, मेरे भालों और खंजर से डरते हैं।

ومنهم حِراصٌ للنضال عداوةً　　غلاظٌ شدادٌ لو يطيقون عسكرى

और कुछ उनमें से शत्रुता के कारण मुकाबला करने के लिए लालायित हैं वे कट्टर शत्रु हैं। काश वे मेरी सेना से मुकाबला करने की शक्ति रखते।

قد استترتْ أنوارُهم من تعصّبٍ　　وإنى أراهم كالدّمال المعَفَّرِ

और उनके प्रकाश पक्षपात के कारण छुप गए और मैं उनके धूलग्रस्त गोबर के समान पाता हूं।

فأعرضْنا عنهم وعن أرجائهم　　كأنّا دفنّاهم بقبرٍ مقعَّرِ

फिर हमने उनसे तथा उन के आस-पास से मुंह फेर लिया है जैसा कि हमने उनको गहरी क़ब्र में दफ़्न कर दिया है।

ووالله إنا لا نخاف شرورَهم　　نقلنا وَضِيئتَنا إلى بيتِ أقدرِ

और ख़ुदा की क़सम! हम उनकी बुराइयों से नहीं डरते और हमने अपना

बहुमूल्य सामान शक्तिमान ख़ुदा के घर में रख दिया है।

وما إن أخاف الخَلق فی حکم خالقی وقد خَوَّفوا واللّٰہُ کھفی ومَأْزَرِی

और मैं स्रष्टा के आदेश के बारे में लोगों से नहीं डरता हालांकि उन्होंने मुझे भयभीत किया है और अल्लाह मेरी शरण तथा शान्ति कुंज है।

وإن المھیمن یعلَمَنْ کلّ مُضْمَری فدَعْنی وربی یا خصیمی ومُکْفِری

और निगरान ख़ुदा मेरे सम्पूर्ण आन्तरिक को जानता है अत: मुझे मेरे रब्ब के सुपुर्द कर दे हे मेरे शत्रु और मुझे काफ़िर ठहराने वाले।

ولو کنتُ مفتریا کذوبا لضَرَّنی عداوۃُ قومٍ جرَّدوا کلّ خنجرِ

और यदि मैं झूठ गढ़ने वाला और झूठा होता तो मुझे उन लोगों की शत्रुता अवश्य हानि पहुंचाती, जिन्होंने हर खंजर को निकाल लिया है।

بوجه المھیمن لستُ رجلا کافرا وإن المھیمن یعلَمَنْ کلّ مُضْمَری

निगरान ख़ुदा की हस्ती की क़सम! मैं काफ़िर आदमी नहीं और निस्सन्देह निगरान ख़ुदा मेरे सम्पूर्ण आन्तरिक को जानता है।

ولستُ بکذّاب وربّی شاھدٌ ویعلمُ ربّی کلَّ ما فی تصوُّری

और मैं कज़्ज़ाब नहीं और मेरा रब्ब गवाह है और मेरा रब्ब जो कुछ मेरी कल्पना में है ख़ूब जानता है।

وأُعطِیتُ أسرارًا فلا یعرفونھا وللناس آراءٌ بقدْرِ التبصُّر

और मुझे रहस्य दिए गए हैं वे उनको नहीं जानते तथा लोगों की रायें उनकी प्रतिभा के अनुसार ही होती हैं।

فسبحانَ ربِّ العرش عمّا تقوَّلوا علیه بأقوال الضلال کمُفترَی

रब्बुल अर्श पवित्र है उसे से जो उन्होंने एक मुफ़्तरी की तरह उन पर गुमराही के कथन बना लिए हैं।

وما أنا إلا مسلمٌ تابعُ الھدیٰ فیا صاحِ لا تَعجَلْ ھوًی وتَدَبَّرِ

और मैं तो केवल एक मुसलमान हूं जो हिदायत के अधीन है अत: हे दोस्त! नफ़्स की इच्छा के कारण जल्दी न कर और सोच से काम ले।

ولكنّ علومی قد بدا لُبُّ لُبِّها لِما رَدِفَتْها ظُفْرُ كَشْفٍ مقَشِّرِ

और मेरे ज्ञानों का यह हाल है कि उनका मूल सार प्रकट हो चुका है क्योंकि उन ज्ञानों के पीछे छिलका उतार देने वाली स्पष्टता के नाख़ून चले आ रहे हैं।

لقد ضلّ سعْيًا مَن أتانی مخالفًا وربی معی واللّٰهُ حِبّی ومُوثِری

निस्सन्देह उसकी कोशिश व्यर्थ हो गई जो विरोधी होकर मेरे पास आया और मेरा रब्ब मेरे साथ है तथा अल्लाह तआला मेरा दोस्त और मुझे पसन्द करने वाला है।

ويعلو أولو الطغوی بأوّل أمرِهم وأهلُ السعادة فی الزمان المؤَخَّرِ

और बात के प्रारंभ में तो उद्दण्ड लोग ऊपर चढ़ आते हैं और नेक लोग अन्ततः बुलन्द होते हैं।

ولو كنتَ من أهل المعارف والهدیٰ لصدَّقْتَ أقوالی بغیر تحیُّرِ

और यदि तू अहले मारिफ़त तथा अहले हिदायत से होता तो तू मेरे कथनों की किसी हैरानी के बिना पुष्टि करता।

ولو جئتَنی من خوفِ ربٍّ محاسِبٍ لأصبَحْتَ فی نعمائه المستَكثَرِ

यदि मुहासिब के डर से तू मेरे पास आता तो तू उसकी बहुत बड़ी रहमत में रहता।

ألا لا تُضِعْ وقتَ الإنابة والهُدیٰ صُدودُك سمٌّ يا قليلَ التفكّرِ

सावधान! अल्लाह की तरफ़ लौटना और हिदायत के समय को व्यर्थ न कर। तेरा रुक जाना हे कम सोचने वाले! एक ज़हर है।

وإن كنت تزعمُ صبرَ جسمِك فی اللّظی فجرِّبْهُ تمرينًا بحرْقٍ مسَعّرِ

यदि तेरा विचार है कि तेरा शरीर आग के शेले को सहन कर सकता है भड़कने वाली आग की जलन का अभ्यास करते हुए तो इस का अनुभव कर।

وما لك لا تبغی المعالِجَ خائفًا وإنك فی داءٍ عُضالٍ كمُحصَرِ

और तुझे क्या हो गया है कि तू डर कर चिकित्सक की इच्छा नहीं करता हालांकि तू असमर्थ कर देने वाले लोग के रोगी की तरह बड़े रोग में ग्रस्त है।

فیا أیها المُرخی عِنانَ تعصّبٍ   خَفِ اللّٰهَ واقبَلْ تُحَفَ وعظِ المذکِّرِ

अत: हे पक्षपात् की अग्नि की नकेल को ढीला करने वाले! अल्लाह से डर और नसीहत करने वाले के उपदेश के उपहारों को स्वीकार कर ले।

وخَفْ نارَ یومٍ لا یَرُدُّ عذابَها   تدَلُّلُ شیخٍ أو تظاهُرُ مَعْشَرِ

और उस दिन की आग से डर जिसके अज़ाब को शेख का गर्व और नख़रा हटा नहीं सकेगा और न ही क़बीले की परस्पर सहायता।

سئِمنا تکالیفَ التطاول مِن عِدا   تمادتْ لیالی الجَور یا ربِّ فانْصُرِ

हम दुश्मनों के अत्याचार के कष्टों से उकता चुके हैं। अत्याचार की रातें लम्बी हो गई हैं। हे मेरे रब्ब मेरी सहायता कर।

وأنتَ رحیم ذو حنان ورحمةٍ   فنَجِّ عبادَك من وبالٍ مدمِّرِ

और तू दयालु है, मेहरबान और दयावान है तू अपने बन्दों को घातक झंझर से बचा ले।

رأیتُ الخطایا فی أمور کثیرةٍ   وإسرافَنا فاغفِرْ وأیِّدْ وعَزِّرِ

तू ने बहुत से मामलों में (हमारी) ग़लतियों और हमारे अपव्यय को देखा है। अत: क्षमा कर दे, और सहायता कर और सम्मान कर

وأنتَ کریمُ الوجهِ مَولی مُجامِلٌ   فلا تطرُدِ الغلمانَ بعد التخیُّرِ

तू कृपालु और मेहरबान है! तू अच्छा व्यवहार करने वाला मौला है। अत: तू इन दासों का चयन करने के बाद न धिक्कार।

وجئناك کالموتیٰ فأَحْیِ أمورَنا   ونستغفِرَنْك مستغیثین فَاغْفِرِ

हम तेरे पास मुर्दों की भांति आए हैं तो हमारे मामलों का जीवन प्रदान कर। हम तुझ से सहायता का निवेदन करते हुए क्षमा मांगते हैं। अत: माफ़ कर।

إلیٰ أیِّ باب یا إلٰهی تَرُدُّنی   أتترکُنی فی کفِّ خصمٍ مُخسِّرِ

हे मेरे माबूद! किस दरवाज़े की ओर तू मुझे ढकेलेगा? क्या तू मुझे मेरे हानि पहुंचाने वाले शत्रु के हाथों में छोड़ देगा?

إلٰهی فدَتْك النفسُ أنت مقاصدی   تعالَ بفضلٍ من لدُنْك وبَشِّرِ

हे मेरे माबूद! मेरी जान तुझ पर न्योछावर हो। तू ही तो मेरा उद्देश्य है अपने फ़ज़्ल (कृपा) के साथ आ और मुझे ख़ुशखबरी दे।

أأعـرضتَ عنّى لا تكلّمُ رحمةً　　وقد كنتَ من قبلِ المصائبِ مُخبِرِى

क्या तू ने मुझ से मुंह फेर लिया है (जो) तू हमदर्दी के साथ मुझ से बात नहीं करता। तू तो इन कष्टों से पहले मेरा मुख़बिर था।

وكيف أظنُّ زوالَ حُبِّك طُرفةً　　ويَأْطِرُ قلبى حبُّك المتكثِّرِ

और मैं तेरे प्रेम के पतन का एक पल के लिए भी कैसे सोच सकता हूं जबकि तेरा बहुत बड़ा प्रेम मेरे दिल को (तेरी ओर) झुका रहा है।

وجدتُ السّعادة كلَّها فى إطاعةٍ　　فوَفِّقْ لآخَرَ من خلوصٍ ويَسِّرِ

हे ख़ुदा! मैंने समस्त सौभाग्य आज्ञापालन में पाया है। तो दूसरों को भी निष्कपटता का सामर्थ्य दे और आसानी पैदा कर।

إلهى بوجهك أَدْرِكِ العبدَ رحمةً　　تعالَ إلى عبدٍ ذليلٍ مُكفَّرِ

हे मेरे ख़ुदा! अपने अस्तित्व के कारण इस बन्दे की दयापूर्वक सहायता कर और (अपने) कमज़ोर तथा असहाय बन्दे की ओर जिसे काफ़िर ठहराया गया आ जा।

ومِن قبل هذا كنتَ تسمع دعوتى　　وقد كنتَ فى المضمار تُرسى ومأْزَرى

और इस से पहले तू मेरी दुआएं सुनता रहा है और तू मैदान में मेरी ढाल और शरण बना रहा है।

إلٰهى أَغِثْنى يا إلٰهى أَمِدَّنى　　وبَشِّرْ مقصودى حنانًا وخَبِّرِ

हे मेरे ख़ुदा! मेरा न्याय कर। हे मेरे ख़ुदा! मेरी सहायता कर और मेहरबानी से मेरे उद्देश्य की ख़ुशख़बरी दे और अवगत कर।

أَرِنى بنورك يا ملاذى ومَلجَئى　　نعوذ بوجهك من ظلامٍ مُدَعْثِرِ

मुझे अपने प्रकाश दिखा, हे मेरे रक्षा-स्थल एवं शरण-स्थल। हम तबाह करने वाले अंधकार से तेरे अस्तित्व की शरण लेते हैं।

وخُذْ رَبِّ مَن عادَى الصلاحَ ومفسدًا　　ونَزِّلْ عليه الرِّجْزَ حقًّا ودَمِّرِ

और हे मेरे रब्ब! नेकी के दुश्मन और उपद्रवी को गिरफ़्तार कर। और सच

के लिए उस पर अज़ाब उतार और उसे तबाह कर।

وكُنْ ربِّ حنّانًا كما كنتَ دائمًا   وإن كنتُ قد غادرتُ عهدًا فذَكِّرِ

और हे मेरे रब्ब! तू मेहरबान रह जैसा कि तू हमेशा मेहरबान था और यदि मैं दायित्त्व को छोड चुका हूं तो याद दिला।

وإنّك مولى راحمٌ ذو كرامةٍ   فبَعِّدْ عنِ الغلمان يومَ التشوُّرِ

और निस्सन्देह तू दयालु मौला तथा कृपालु है। अत: तू अपने दासों से लज्जित होने के दिन को दूर कर दे।

أرى ليلةً ليلاءَ ذاتَ مخافةٍ   فهَنّئ وبَشِّرْنا بيومٍ عبقرِى

मैं बहुत भयानक काली रात को देख रहा हूं। तो तू मुबारक बाद दे और हमें शानदार दिन की ख़ुशख़बरी दे।

وفَرِّجْ كُروبِى يا كريمى ونَجِّنى   ومَزِّقْ خصيمى يا إلٰهى وعَفِّرِ

और हे मेरे कृपालु! मेरे दुखों को दूर कर दे तथा मुझे मुक्ति दे। और हे मेरे ख़ुदा! मेरे दुश्मन को टुकड़े-टुकड़े कर दे और धूलग्रस्त कर दे।

وليستْ عليك رموزُ أمرى بغُمّةٍ   وتعرفُ مستورى وتدرى مقَعَّرى

और मेरे काम के रहस्य तुझ पर छुपे नहीं हैं और तू मेरी गुप्त बातों को जानता है और मेरे दिल की गहराइयों को जानता है।

زلالُك مطلوبٌ فأَخْرِجْ عُيونَه   جلالُك مقصودٌ فأيِّدْ وأَظْهِرِ

तेरा निथरा हुआ पानी मेरा उद्‌देश्य है, अत: तू उसके स्रोतों को जारी कर। तेरा प्रताप उद्‌देश्य है अत: सहायता कर और प्रताप प्रकट कर।

وجدناك رحمانًا فما الهَمُّ بعدَهُ   نعوذ بنورك من زمانٍ مُكَوَّرِ

जब हम ने तुझे रहमान (कृपालु) पाया है तो इसके बाद क्या अफसोस हो सकता है। हम अंधकारमय युग से तेरे प्रकाश की शरण लेते हैं।

وآخر دعوانا أنِ الحمدُ كلُّهُ   لربٍّ كريمٍ قادرٍ وميَسِّرِ

और हमारी अन्तिम पुकार यह है कि सम्पूर्ण प्रशंसा कृपालु, सामर्थ्यवान और आसानी पैदा करने वाले रब्ब के लिए है।

حاشیہ متعلقہ صفحہ 191 ★انا بیّنا ان ابابکر کان رجلا عبقریا وانسانا اِلٰھیًّا جلّی مطلع الاسلام بعد الظلام وکان قصاراہ انہ من ترک الاسلام فباراہ ومن انکر الحق فماراہ ومن دخل دارالاسلام فداراہ کابد فی اِشاعۃ الاسلام شدائد واعطی الخلق دررًا فراید ساس الاعراب بالعزم المبارک وھذب تلک الجمال فی المسارح والمبارک واستقراء المسالک ورغاء المعارک ما استفتی بأسًا ورأی من کل طرف یأسًا انبری لمبارات کل خصیم وما استھوتہ الافکار ککل جبان وسقیم وثبت عند کل فساد وبلوی انہ ارسخ من رضویٰ واھلک کل من تنبیٰ من

★पृष्ठ 191 का हाशिया :- हम वर्णन कर चुके हैं कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु दुनिया भर में श्रेष्ठ, ख़ुदा वाले एक इन्सान थे, जिन्होंने अंधकारों के बाद इस्लाम के चेहरे को चमक प्रदान की, और आपका पूर्ण प्रयास यही रहा कि जिसने इस्लाम को छोड़ा आपने उस से मुक़ाबला किया और जिसने सच से इन्कार किया आपने उस से युद्ध किया और जो इस्लाम के घर में प्रवेश कर गया उससे नर्मी और हमदर्दी का व्यवहार किया। आप ने इस्लाम के प्रसार के लिए कष्ट सहन किए, आपने सृष्टि को दुर्लभ मोती प्रदान किए, और अपने शुभ संकल्प से ख़ानाबदोशों को परस्पर मिल जुल कर रहना सिखाया और निरंकुशों को खान-पान, उठने-बैठने के नियम और नेकी के मार्गों की खोज तथा युद्धों में डींगे मारने के नियम सिखाए इसी प्रकार रास्तों का सुदृढ़ किया। और आपने हर ओर निराशा देख कर भी किसी से युद्ध के बारे में नहीं पूछा बल्कि आप हर मुक़ाबला करने वाले से युद्ध करने के लिए उठ खड़े हुए। हर कायर और बीमार व्यक्ति की तरह आपको विचारों ने बहकाया नहीं, हर फ़साद और संकट के अवसर पर सिद्ध हो गया कि आप को रिज़्वा पर्वत से अधिक दृढ़ और मज़्बूत हैं। आप ने हर उस व्यक्ति को जिसने नुबुव्वत

كـذب الدعـوىٰ ونبـذ العُلـق لله الا عـلىٰ و كان كل اهتشاشـه فى اعـلاء كلمـة الاسـلام واتبـاع خـير الانـام فدونـك حافـظ دينـك واتـرك طنينـك وانى ماقلـت كمتبـع الاهـواء او مقـلد امـر وجـد مـن الابـاء بـل حُبّـب الى مُـذْ سَـعَتْ قدمـى ونفـث قلمـى ان اتخـذ التحقيـق شـرعة والتعميـق نُجعـة فكنـت انقـب عـن كل خـبر وا سئل عـن كل حـبر فوجـدت الصديـق صديقـا وكشـف عـلى هـذا الامـر تحقيقـا فـاذا الفيتـه امـام الائمـة وسـراج الدّيـن والاُمّـة شـددت يـدى بغـرزه وأويـت الى حـرزه واسـتنزلت رحمـة ربى بحـبّ الصالحـين فرحمـنى وآوانى وايّـدنى وربّـانى وجعلـنى مـن المكرمـين وجعلـنى مجـدّد هـذه

का झूठा दावा किया मार दिया और अल्लाह तआला के लिए समस्त संबंधो को दूर फेंक दिया। आप की सम्पूर्ण प्रसन्नता इस्लाम के कलिमे को बुलन्द करने और सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण में थी। अत: अपने धर्म की रक्षा करने वाले (हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु का दामन थाम ले और अपना बकवास करना छोड़ दे। और मैंने जो कुछ कहा है वह इच्छाओं का अनुकरण करने वाले व्यक्ति की तरह या बाप-दादों के विचारों का अनुकरण करने वाले की तरह नहीं कहा बल्कि जब से मेरे क़दम ने चलना और मेरे क़लम ने लिखना प्रारंभ किया मुझे यही प्रिय रहा कि मैं अन्वेषण को अपनी पद्धति और सोच-विचार को अपना उद्देश्य बनाऊं। अत: मैं हर ख़बर की छान-बीन करता और ज्ञान-विशेषज्ञ से पूछता। तो मैंने सिद्दीक़ (अकबर रज़ि.) को (वास्तव में) सिद्दीक़ पाया। और अनुसंधान की दृष्टि से मुझ पर यह बात प्रकट हुई जब मैंने आप को समस्त इमामों का इमाम, तथा धर्म और उम्मत का दीपक पाया। तब मैंने आप रज़ियल्लाहु की रकाब (घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने का पायदान) को मज़्बूती से थाम लिया और आप रज़ियल्लाहु की सुरक्षा में शरण ली और नेक लोगों से प्रेम करके अपने रब्ब

المأة والمسيح الموعود من الرحمة وجعلنى من المكلّمين واذهب عنى الحزن واعطانى ما لم يعط احد من العالمين وكل ذٰلك بالنبى الكريم الاُمّى و حبّ هٰؤلاء المقربين اللّٰهم فصلّ و سلّم على افضل رسلك و خاتم انبياءك محمد خير الناس اجمعين ووالله ان ابا بكر كان صاحب النبى صلعم فى الحرمين و فى القبرين اعنى قبر الغار الذى تواٰرى فيه كالميت عند الاضطرار والقبر الذى فى المدينة ملتصقا بقبر خير البرية فانظر مقام الصديق ان كنت من اهل التعميق حمده الله و خلافته فى القراٰن واثنى عليه باحسن البيان ولا شك انه مقبول الله و مستطاب وهل يحتقر

की दया प्राप्त करनी चाही। तो उस (दयालु ख़ुदा) ने मुझ पर दया की, शरण दी, मेरी सहायता की और मेरी तर्बियत (प्रशिक्षण) की, तथा मुझे प्रतिष्ठित लोगों में से बनाया और अपनी विशेष दया से उसने मुझे इस सदी का मुजद्दिद और मसीह मौऊद बनाया तथा मुझे मुल्हमों में से बनाया। मुझ से चिन्ता को दूर किया मुझे वह कुछ दिया जो संसार में किसी और को नहीं दिया। यह सब उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी (अनपढ़) और उन सानिध्य प्राप्त लोगों के प्रेम के कारण प्राप्त हुआ। हे अल्लाह! तू अपने रसूलों में सर्वश्रेष्ठ और अपने ख़ातमुल अंबिया तथा दुनिया के समस्त मनुष्यों से उत्तम अस्तित्व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेज। ख़ुदा की क़सम (हज़रत) अबू बक्र रज़ियल्लाहु हर्मेन में भी और दोनो क़ब्रों में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी हैं। इस से मेरा अभिप्राय एक तो गुफ़ा की क़ब्र है जिसमें आप ने विवशता की हालत में मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की भांति शरण ली। और फिर (दूसरी) वह क़ब्र जो मदीने में सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र के साथ मिली हुई है। इसलिए सिद्दीक (अकबर रज़ियल्लाहु) के पद को समझ यदि तू गहरी समझ का मालिक है।

قدره الا مصاب غابت شوائب الاسلام بخلافته و كمل سعود المسلمين برأفته و كاد ان ينفطر عمود الاسلام لو لا الصديق صديق خير الانام وجد الاسلام كالمهتر الضعيف والموؤف النحيف فنهض لاعادة حبره و سبره كالحاذقين واوغل فى اثر المفقود كالمنهوبين حتى عاد الاسلام الٰى رشاقة قده و أسالة خده و نضرة جماله و حلاوة زلاله و كان كلّ هٰذا من صدق هٰذا العبد الامين عفّر النفس و بدل الحالة و ما طلب الجعالة الا ابتغاء مرضات الرحمان و ما اظلّ المَلَوان عليه الا فى هٰذا الشأن كان محيى الرفات ودافع الاٰفات و واقى الغافات و كلُّ لبّ النصرة جاء فى

अल्लाह ने आप की तथा आप की ख़िलाफ़त की क़ुर्आन में प्रशंसा की और उत्तम वर्णन द्वारा आप की स्तुति की। निस्सन्देह आप अल्लाह के मान्य और प्रिय हैं और आप की प्रतिष्ठा का तिरस्कार किसी सर फिरे व्यक्ति के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। आप की ख़िलाफ़त के द्वारा इस्लाम से समस्त ख़तरे दूर हो गए। और आप की मेरहबानी से मुसलमानों का सौभाग्य पूर्ण हो गया। यदि ख़ैरुल अनाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ) का बहुत ही सच्चा और प्राण न्योछावर करने वाला दोस्त सिद्दीक़ अकबर[रज़ि०] न होता तो क़रीब था कि इस्लाम का स्तंभ ध्वस्त हो जाता। आप ने इस्लाम को एक निर्बल, निराश्रय, कमज़ोर, क्षीण और विकृत व्यक्ति की भांति पाया तो आप विशेषज्ञों की तरह उसकी शोभा और तरोताज़गी को दोबारा वापस लाने के लिए उठ खड़े हुए तथा एक लुटे हुए व्यक्ति के समान अपनी खोई हुई चीज़ की तलाश में व्यस्त हो गए, यहां तक कि इस्लाम अपने संतुलित क़द अपने मुलायम कपोल अपने सौन्दर्य की प्रफुल्लता और अपने निर्मल पानी की मिठास की ओर लौट आया। और यह सब कुछ उस अमानतदार बन्दे की निष्कपटता के कारण हुआ। आप ने नफ़्स को मिट्टी में मिलाया और हालत को बदला

حصتہ و ھذا من فضل اللّٰہ و رحمتہ و الاٰن نذکر قلیلا من الشواھد متوکّلًا علی اللّٰہ الواحد لیظھر علیک کیف اعدم فتنا مشتدۃ الھبوب و محنًا مشتنطۃ الاُلھوب و کیف اعدم فی الحرب ابناء الطعن و الضرب فبانت دخیلۃُ امرہ من افعالہ و شھدت اعمالہ علی سر خصالہ فجزاہ اللّٰہ خیر الجزاء و حشرہ فی ائمۃ الاتقیاء و رحمنا بھٰؤلاء الاحباء فتقبل منی یا ذاالالاء و النعماء و انک ارحم الرحماء و انّک خیر الرّاحمین

और कृपालु ख़ुदा की खुशी के अतिरिक्त किसी प्रतिफल के अभिलाषी न हुए। इसी हालत में आप पर दिन-रात आए। आप गली हुई हड्डियों में जान डालने वाले, आपदाओं को दूर करने वाले और (रेगिस्तान के) मीठे फल वाले वृक्षों को बचाने वाले थे। ख़ुदा की शुद्ध सहायता आप के भाग में आई और यह अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और दया के कारण था और अब हम एक ख़ुदा पर भरोसा करते हुए कुछ गवाहियों का वर्णन करते हैं ताकि तुझ पर यह बात प्रकट हो जाए कि आप ने क्योंकर तीव्रतम आंधियों वाले फ़ित्नों और झुलसाने वाले शोलों के कष्टों को समाप्त किया और अपने युद्ध में किस प्रकार बड़े-बड़े माहिर भाले चलाने वालों तथा तलवार चलाने वालों को मार दिया। इस प्रकार आप की आन्तरिक हालत आप के कारनामों से प्रकट हो गई और आप के कर्मों ने आपकी प्रशंसनीय विशेषताओं की वास्तविकता पर गवाही दी। अल्लाह आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और आप को संयमियों के इमामों में उठाया जाए और (अल्लाह) अपने उन प्रियजनों के सद्क़े हम पर दया करे। हे नेमतों तथा कृपाओं के मालिक ख़ुदा? मेरी दुआ स्वीकार कर। तू सर्वाधिक दया करने वाला और तू दयावानों में सर्वोत्तम है।

فتنة الارتداد بعد وفات النّبی صعلم خیر الرسل و امام العباد

لما قبض رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ارتدت العرب اما القبیلۃ مستوعبۃ و اما بعض منہا و نجم النفاق و المسلمون کالغنم فی اللیلۃ الممطرۃ لقلتہم و کثرۃ عدوہم و ظلام الجو بفقد نبیہم (الجزء الثانی من تاریخ ابن خلدون صفحہ ۶۵) وقال ایضا ارتدت العرب عامۃ و خاصۃ واجتمع علی طلیحۃ عوام طیء و اسد و ارتدت غطفان و توقفت ھوازن فامسکوا الصدقۃ و ارتد خواص من بنی سلیم و کذا سائر الناس بکل مکان (صفحہ ۶۵) و قال ابن الاثیر فی تاریخہ لما توفی رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم و

बन्दों के इमाम और ख़ैरुर्रुसुल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात् धर्म से विमुख होने का फ़ित्नः

"जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ तो अरब मुर्तद हो गए। या तो पूरा का पूरा क़बीला या उनका कुछ भाग। फूट पैदा हो गई और मुसलमान अपनी कमी और दुश्मनों की अधिकता के कारण तथा अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु से वातावरण के अंधकारमय हो जाने के कारण ऐसे हो गए थे जैसे कि वर्षा वाली रात को भेड़-बकरियां" (तारीख़ इब्ने ख़ल्दून भाग-2 पृष्ठ-65) इब्ने खल्दून ने और अधिक लिखा है – "अरब के आम और ख़ास लोग मुर्तद हो गए और बनू तै और बनू असद तलीहा के हाथ पर एकत्र हो गए और बनू ग़त्फ़ान मुर्तद हो गए और बनू हवाज़न मुर्तद हुए और उन्होंने ज़कात देना रोक दी तथा बनू सुलैम के सरदार मुर्तद हो गए और इसी प्रकार हर स्थान पर शेष लोगों का भी यही हाल था।" (पृष्ठ-65) इब्ने असीर ने अपनी तारीख में लिखा है – "कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वर्गवास हुआ और आपके निधन की खबर मक्का और वहां के गवर्नर उताब बिन उसैद को पहुंची तो उताब

وصل خبرہ الیٰ مکۃ وعاملہ علیھا عتاب بن أسید استخفی عتاب وارتجت مکۃ و کاداھلھا یرتدون(الجزء الاول صفحہ ۱۳۴)

وقال ایضًا ارتدت العرب امّا عامۃ او خاصۃ من کل قبیلۃ وظھر النفاق واشرأبت الیھود والنصرانیۃ و بقی المسلمون کالغنم فی اللیلۃ الممطرۃ لفقد نبیّھم و قلّتھم و کثرۃ عدوھم فقال الناس لابی بکر انّ ھٰؤلاء یعنون جیش اسامۃ جند المسلمین والعرب علیٰ ماتریٰ فقد انتقضت بک فلا ینبغی ان تفرق جماعۃ المسلمین عنک فقال ابوبکر والذی نفسی بیدہ لو ظننت ان السباع تخطفنی لانفذتُ جیش اسامۃ کما امر النبی صلعم ولا اردّ قضاءً قضی بہ رسول اللہ صلعم وقال عبد اللہ بن مسعود لقد قمنا بعد

छुप गया और मक्का कांप उठा और निकट था कि उसके निवासी मुर्तद हो जाते।" (भाग-1, पृष्ठ-134)

और अतिरिक्त लिखा है – अरब मुर्तद हो गए, हर कबीले में से जन सामान्य या जन विशेष, और फूट प्रकट हो गयी तथा यहूदियों और ईसाइयों ने अपनी गर्दनें उठा-उठा कर देखना आरंभ कर दिया और मुसलमानों की अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन और अपनी कमी और दुश्मनों की अधिकता के कारण ऐसी हालत हो गयी थी जैसी वर्षा की रात में भेड़-बकरियों की होती है। इस पर लोगों ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु से कहा कि ये लोग केवल उसामा की सेना को ही मुसलमानों की सेना समझते हैं और जैसा कि आप देख रहे हैं अरबों ने आप से विद्रोह कर दिया है। अत: उचित नहीं है कि आप मुसलमानों की इस जमाअत को अपने से अलग कर लें। इस पर (हज़रत) अबू बक्र रज़ियल्लाहु ने फ़रमाया- उस हस्ती की क़सम जिस के क़ब्ज़ए-क़ुदरत में मेरी जान है। यदि मुझे इस बात का विश्वास भी हो जाए कि दरिन्दे मुझे उचक लेंगे तब भी मैं रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार उसामा की सेना को अवश्य भेजूंगा। जो फैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

النّبی صلعم مقاماً کِدنا اَنْ نھلک لو لا ان منّ اللّٰہ علینا بابی بکر رضی اللّٰہ عنہ اجمعنا علی ان نقاتل علی ابنۃ مخاض و ابنۃ لبون و ان ناکل قری عربیۃ و نعبد اللّٰہ حتی یاتینا الیقین(ایضا صفحہ۱۴۲)

خروج مُدعی النبوّۃ

وثب الاسود بالیمن و وثب مسیلمۃ بالیمامۃ ثم وثب طلیحۃ بن خویلد فی بنی اسد یدعی کلھم النبوۃ (ابن خلدون الجزء الثانی صفحہ۶۰) و تنبأت سجاح بنت الحارث من بنی عقفان و اتبعھا الھذیل بن عمران فی بنی تغلب و عقبۃ بن ھلال فی النمر و السلیل بن قیس فی شیبان و زیاد بن بلال و اقبلت من الجزیرۃ فی ھٰذہ الجموع قاصدۃ المدینۃ لتغزو ابا بکر رضی اللّٰہ عنہ (صفحہ۶۵)

है, मैं उसे निरस्त नहीं कर सकता। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात् हम एक ऐसे स्थान पर खड़े हो गए थे कि यदि अल्लाह हम पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु के द्वारा उपकार न करता तो करीब था कि हम तबाह हो जाते। आप रज़ियल्लाहु ने हमें इस बात पर इकट्ठा किया कि हम बिन्ते मख़ाज़ (एक वर्षीय ऊंटनी) और बिन्ते लबून (दो वर्षीय ऊंटनी) की (ज़कात की वुसूली के लिए) युद्ध करें और यह कि हम अरब बस्तियों को खा जाएं और हम अल्लाह की इबादत करते चले जाएं, यहां तक कि मौत हमें आ जाए। (पृष्ठ-142)

नुबुव्वत के दावेदारों का निकलना

अस्वद यमन से, मुसैलिमा यमामा से फिर तलीहा बिन खुवैलिद बनी असद से सब के सब नुबुव्वत का दावा करते हुए उठ खड़े हुए। (इब्ने ख़ल्दून भाग-2, पृष्ठ-60) बनी अक़्फ़ान से सजाह बिन्त अलहारिस ने नबी होने का झूठा दावा कर दिया। बनी तग़लब में से सलील बिन क़ैस और ज़ियाद बिन बिलाल उसके अनुयायी बन गए और प्रायद्वीप से संबंध रखने वालों ने इन गिरोहों से मिलकर मदीना की तरफ़ कूच किया ताकि वे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु से युद्ध करें। (पृष्ठ-65)

استخلافه صلّی اللّٰہ علیه وسلم ابا بکر نائبا عنه للامامة فی الصّلٰوة

قال ابن خلدون ثم ثقل به الوجع واغمی علیه فاجتمع علیه نساء ہ واهل بیته والعباس و علی ثم حضر وقت الصلٰوة فقال مروا ابا بکر فلیصل بالناس(الجزء الثانی صفحه۶۲)

مکان ابی بکر من النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم

وقال ابن خلدون ثم قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم بعد ما اوصی بثلاث سدّوا هذه الابواب فی المسجد الا باب ابی بکر فانی لا اعلم امرئً افضل یدًا عندی فی الصحبة من ابی بکر (الجزء الثانی صفحه۶۲)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उत्तराधिकार (ख़िलाफ़त) हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु को अपने प्रतिनिधित्व में इमामुस्सलात बनाना

इब्ने ख़ल्दून कहते हैं कि "जब आंहज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कष्ट बढ़ गया और आप पर बेहोशी छा गई तो आप की पत्नियों तथा अन्य अहले बैत, अब्बास और अली आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एकत्र हो गए। फिर नमाज़ का समय हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बक्र से कह दें कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ा दें।" (भाग-2 पृष्ठ-62)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु का मक़ाम (पद)

इब्ने ख़ल्दून कहते हैं कि "फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बातों की वसीयत करने के बाद फ़रमाया – अबू बक्र के दरवाज़े के अतिरिक्त मस्जिद में खुलने वाले सब दरवाज़े बन्द कर दें! क्योंकि मैं समस्त सहाबा में नेकी में किसी को भी अबू बक्र से अधिक श्रेष्ठ नहीं जानता।" (भाग-2 पृष्ठ-62)

شدة حُبّ ابی بکر للنبیّ صَلی اللّٰہ علیہ وسلّم

و ذکر ابن خلدون و اقبل ابو بکر و دخل علیٰ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم فکشف عن وجھہ و قبّلہ و قال بابی انت و أمی قد ذقت الموتۃ التی کتب اللّٰہ علیک و لن یصیبک بعدھا موتۃ ابدًا (ایضًا صفحہ۶۳)

و کان من لطائف منن اللّٰہ علیہ و اختصاصہ بکمال القرب من النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم کما نص بہ ابن خلدون انہ رضی اللّٰہ عنہ حمل علی السریر الذی حمل علیہ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم و جعل قبرہ مثل قبر النبی مسطحا و الصقوا لحدہ بلحد النبی صلعم و جعل رأسہ عند کتفی النبی صلی

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु का असीम प्रेम

इब्ने ख़ल्दून ने वर्णन किया है कि "(हज़रत) अबू बक्र रज़ियल्लाहु आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उपस्थित हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरे से चादर हटाई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चुम्बन लिया और कहा – मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान, अल्लाह ने जो मौत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए निश्चित की थी उसका स्वाद आपने चख लिया परन्तु अब इसके बाद कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मौत नहीं आएगी।" (पृष्ठ-63)

अल्लाह के उत्तम उपकारों में से जो उसने आप रज़ियल्लाहु पर किए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकटता की खूबी की जो विशिष्टता आप को प्राप्त थी जैसा कि इब्ने ख़ल्दून ने वर्णन किया है वह यह थी कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु उसी चारपाई पर उठाए गए जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की क़ब्र की तरह समतल बनाया गया और (सहाबा ने) आप रज़ियल्लाहु

اللّٰہ علیہ وسلم و کان اخر ما تکلم بہ توفنی مسلما والحقنی
بالصالحین(صفحہ ۱۷۶)

ولنکتب ھنا کتابا کتبہ الصدیق الٰی قبائل العرب المرتدة لیزید المطلعون علیہ ایمانا وبصیرة بصلابة الصدیق فی ترویج شعائر اللّٰہ والذبّ عن جمیع ما سنّہ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلّم

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم من ابی بکر خلیفة رسول اللّٰہ صلعم الٰی من بلغہ کتابی ھٰذا من عامّة وخاصّة أقام علی

की लहद को नबी करीम की लहद के बिल्कुल क़रीब बनाया और आप के सर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दोनों कंधों के समानान्तर रखा। आप रज़ियल्लाहु ने जो अन्तिम वाक्य अदा किया वह यह था कि (हे अल्लाह!) मुझे मुस्लिम होने की हालत में मृत्यु दे और मुझे नेक लोगों में सम्मिलित कर। (पृष्ठ-176)

उचित है कि हम यहां वह पत्र दर्ज कर दें जो सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु ने मुर्तद होने वाले अरब कबीलों की तरफ़ लिखा ताकि उस पत्र से सूचित होने वाले सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु का अल्लाह की निशानियों को रिवाज देना और रसूलुल्लाह के समस्त नियमों की प्रतिरक्षा में दृढ़ता को देख कर ईमान और प्रतिभा में उन्नति करें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह पत्र अबू बक्र ख़लीफ़तुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से हर सामान्य और विशेष के लिए है, जिस तक पहुंचे चाहे वह इस्लाम पर क़ायम रहा है या उस से फिर गया है। हिदायत का अनुकरण करने वाले हर व्यक्ति पर सलामती हो जो हिदायत के बाद गुमराही तथा अंधेपन की ओर नहीं लौटा। तो मैं तुम्हारे सामने उस अल्लाह की स्तुति वर्णन करता हूं जिसके अतिरिक्त कोई माबूद नहीं, जो एक है, कोई भागीदार नहीं

اسلامه او رجع عنه سلام علی من اتبع الهدٰی ولم یرجع بعد الهدٰی الی الضلالة والعمٰی فانی احمد الیکم اللّٰہ الذی لا الٰه الا هو واشهد ان لا الٰه الا اللّٰہ وحده لا شریك له وانّ محمدا عبده ورسوله نقرّ بما جاء به ونکفرّ من ابٰی ونجاهده امّا بعد فان اللّٰہ تعالٰی ارسل محمدا بالحق من عنده الی خلقه بشیرًا ونذیرا وداعیا الی اللّٰہ باذنه وسراجا منیرا لینذر من کان حیا ویحق القول علی الکافرین فهدی اللّٰہ بالحق من اجاب الیه وضرب رسول اللّٰہ صلعم من ادبر عنه حتی صار الی الاسلام طوعا وکرها ثم توفی رسول اللّٰہ صلعم وقد نفّذ لامر اللّٰہ ونصح لامّته

है और यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। जो शिक्षा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ले कर आए उसका हम इक़रार करते हैं और जो उस से इन्कार करते हैं और जिस ने उस से इन्कार किया उसे हम काफ़िर ठहराते हैं और उस से जिहाद करते हैं। तत्पश्चात् स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपनी ओर से हक़ देकर अपनी सृष्टि की तरफ़ ख़ुशख़बरी देने वाला, सतर्क करने वाला और अल्लाह की तरफ़ उस के आदेश से बुलाने वाले और एक प्रकाशित करने वाले सूर्य के तौर पर भेजा ताकि आप उसे डराएं जो जीवित हो और काफ़िरों पर आदेश चरितार्थ हो जाए। अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को हक़ के साथ हिदायत दी जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वीकार किया और जिसने आप से पीठ फेरी उस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस समय तक युद्ध किया कि वह बिना इच्छा के इस्लाम में आ गया फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मृत्यु पा गए। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के आदेश को लागू कर लिया और उम्मत की हमदर्दी कर ली और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो ज़िम्मेदारी थी उसे पूरा कर लिया और अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और अहले इस्लाम

وقضی الذی کان علیہ و کان اللّٰہ قد بیّن لہ ذٰلک ولاھل الاسلام
فی الکتاب الذی انزل فقال

اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّ اِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ

وقال ۔ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِکَ الْخُلْدَ اَفَاِنْ مِّتَّ فَھُمُ الْخَالِدُوْنَ

وقال للمؤمنین ۔ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِہِ الرُّسُلُ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓی اَعْقَابِکُمْ وَمَنْ یَّنْقَلِبْ عَلٰی عَقِبَیْہِ فَلَنْ یَّضُرَّ اللّٰہَ شَیْـًٔا وَسَیَجْزِی اللّٰہُ الشّٰکِرِیْنَ ۝

فمن کان انما یعبد محمدا فان محمدا قد مات و من کان

पर अपनी इस पुस्तक में जो उसने उतारी इस बात को खूब खोल कर वर्णन कर दिया था। अत: फ़रमाया

اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّ اِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ (अज़्ज़ुमर-31)

अनुवाद - तू भी मरने वाला है और वे भी मरने वाले हैं।

और फ़रमाया –

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِکَ الْخُلْدَ اَفَاِنْ مِّتَّ فَھُمُ الْخَالِدُوْنَ (अलअंबिया-35)

अनुवाद - तुझ से पहले हमने किसी इन्सान को अस्वाभाविक आयु नहीं दी कि यदि तू मर जाए तो वे अस्वाभाविक आयु तक जीवित रहेंगे

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِہِ الرُّسُلُ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓی اَعْقَابِکُمْ وَمَنْ یَّنْقَلِبْ عَلٰی عَقِبَیْہِ فَلَنْ یَّضُرَّ اللّٰہَ شَیْـًٔا وَسَیَجْزِی اللّٰہُ الشّٰکِرِیْنَ ۝ (आले इमारान-145)

अनुवाद - मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) केवल एक रसूल हैं। इन से पहले सब रसूल मृत्यु पा चुके। फिर यदि वे मृत्यु पा जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो क्या तुम एड़ियों के बल फिर जाओगे? और जो व्यक्ति अपनी दोनों ऐड़ियों के बल फिर जाए तो (याद रखो कि) वह अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे और अल्लाह धन्यवाद करने वालों को अवश्य बदल देगा।

अत: वह जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत किया करता

انما یعبد اللّٰہ وحدہ لا شریک لہ فان اللّٰہ لہ بالمرصاد حیٌّ قیومٌ لا یموت ولا تاخذہ سنۃ ولا نوم حافظ لامرہ منتقم من عدوہ یجزیہ وانی اوصیکم بتقوی اللّٰہ وحظکم ونصیبکم من اللّٰہ وما جاء کم بہ نبیکم صلعم وان تھتدوا بھداہ وان تعتصموا بدین اللّٰہ فان کل من یھدہ اللّٰہ ضال و کل من لم یعافہ لمبتلی و کل من لم یُعنہ مخذول فمن ھداہ اللّٰہ کان مھتدیا و من اضلّہ کان ضالا قال اللّٰہ تعالیٰ

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا

था (वह जान ले) कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो मृत्यु पा चुके और वह जो भागीदार रहित एक अद्वितीय ख़ुदा की इबादत किया करता था उसे मालूम हो कि अल्लाह उस की घात में लगा हुआ है, वह जीवित है और कायम और अनश्वर है वह नहीं मरेगा। उसे ऊंघ और नींद नहीं आती, वह अपने कार्यों का रक्षक है। अपने दुश्मन से प्रतिशोध लेने वाला है और उसे दण्ड देने वाला है। मैं तुम्हें अल्लाह के संयम की और तुम्हारे उस भाग्य और क़िस्मत के प्राप्त करने की जो अल्लाह के यहां तुम्हारे लिए निश्चित है और वह शिक्षा जो तुम्हारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे पास लेकर आया उस पर अमल करने की तुम्हें नसीहत करता हूं और यह कि तुम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म को दृढ़तापूर्वक पकड़े रखो। क्योंकि हर वह व्यक्ति जिसे अल्लाह हिदायत न दे वह गुमराह है और हर वह व्यक्ति जिसे वह न बचाए वह आज़मायश (परीक्षा) में पड़ेगा और हर वह व्यक्ति जिसकी वह सहायता न करे वह असहाय है। अत: जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत प्राप्त है और जिसे वह गुमराह ठहराए वह गुमराह है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है – कि

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا (अल कहफ़-18)

अनुवाद - जिसे अल्लाह (हिदायत का) मार्ग दिखाए वही हिदायत पर होता है और जिसे वह गुमराह करे उसका तो (कभी: कोई दोस्त (और) पथ-प्रदर्शक नहीं पाएगा।

ولم يُقبل منه فى الدنيا عمل حتى يقرّ به ولم يقبل منه فى الاٰخرة صرف ولا عدل و قد بلغنى رجوع من رجع منكم عن دينه بعد ان اقرّ بالاسلام وعمل به اغترارًا بالله وجهالة بامره واجابة للشيطان قال اللّٰہ تعالٰى

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ - كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ - اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

और उसका दुनिया में क्या हुआ, कोई कर्म उस समय तक स्वीकार न किया जाएगा जब तक वह उस (इस्लाम धर्म) का इक़रार न कर ले और न ही आख़िरत में उसकी ओर से कोई प्रतिफल और बदला स्वीकार किया जाएगा, और मुझ तक यह बात पहुंची है कि तुम में से कुछ ने इस्लाम का इक़रार करने और उसका पालन करने के बाद अल्लाह तआला को धोखा देते हुए और उसके मामले में मूर्खता बरतते हुए तथा शैतान की बात मानते हुए अपने धर्म से धर्म परिवर्तन कर लिया है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है –

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ - كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ - اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

(अल कहफ़-51)

अनुवाद - और (उस समय को भी याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा था कि तुम आदम के साथ (मिलकर) सज्दा करो। इस पर उन्होंने (तो उस आदेश के अनुसार उसके साथ होकर) सज्दा किया, परन्तु इब्लीस ने (न किया) वह जिन्नों में से था तो उसने (अपने स्वभाव के अनुसार) अपने रब्ब के आदेश की अवज्ञा की (हे मेरे बन्दो!) क्या तुम मुझे छोड़कर उस (शैतान) को तथा उसकी नस्ल को (अपने) दोस्त बनाते हो, हालांकि वे तुम्हारे शत्रु हैं और वह (शैतान) अत्याचारियों के लिए बहुत ही बुरा बदल सिद्ध हुआ है।

و قال - إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ

وانی بعثت الیکم فلانا من المھاجرین والانصار والتابعین باحسان وامرته ان لا یقاتل احدًا ولا یقتله حتی یدعوه الی داعیة اللّٰہ فمن استجاب له و اقرّ و کفّ و عمل صالحًا قبل منه و اعانه علیه و من ابیٰ امرت ان یقاتله علیٰ ذٰلك ثم لا یبقی علی احد منهم قدر علیه و ان یحرقهم بالنار و یقتلهم کلقتلة

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ (फ़ातिर-7)

अनुवाद - निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः उसे शत्रु ही बनाए रखो। वह अपने गिरोह को केवल इसलिए बुलाता है ताकि वह भड़कती आग में पड़ने वालों में से हो जाएं।

और मैंने मुहाजिरों, अन्सार तथा अच्छे अमल से अनुकरण करने वाले ताबिईन✶की सेना पर अमुक मनुष्य को नियुक्त करके तुम्हारी तरफ़ भेजा है और मैंने उसे आदेश दिया है कि वह न तो किसी से युद्ध करे और न उसे उस समय तक क़त्ल करे जब तक वह अल्लाह के सन्देश की तरफ़ बुला न ले। फिर जो उस सन्देश को स्वीकार कर ले और इक़रार कर ले तथा रुक जाए और अच्छे कर्म करे तो उस से स्वीकार करे और उस पर उसकी सहायता करे। और जिसने इन्कार किया तो मैंने उसे आदेश दिया है कि वह उस से इस बात पर युद्ध करे और जिस पर काबू पाए उनमें से किसी एक को भी शेष न रहने दे और या वह उन्हें आग से जला डाले और हर तरीके से उन्हें क़त्ल करे तथा स्त्रियों एवं बच्चों को क़ैदी बना ले और किसी से इस्लाम से कम कोई चीज़ स्वीकार न करे। फिर जो उसका अनुकरण करे तो यह उस के लिए अच्छा है

✶**ताबिईन** – जिन मुसलमानों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा को देखा और उनका समय पाया हो। (अनुवादक)

وان يسبى النسآء والذرارى ولا يقبل من احد الا الاسلام فمن اتبعه فهو خير له ومن تركه فلن يعجز الله وقد امرت رسولى ان يقرء كتابى فى كل مجمع لكم والداعية الاذان و اذا اذّن المسلمون فاذّنوا كفّوا عنهم وان لم يؤذّنوا عاجلوهم واذا أذّنوا اسألوهم ما عليهم فان ابوا عاجلوهم وان اقرّوا قبل منهم

और जिसने उसे छोड़ा तो वह अल्लाह को विवश नहीं कर सकेगा और मैंने इस पत्र को तुम्हारी हर मज्लिस में पढ़ कर सुना दे और अज़ान ही (इस्लाम का) ऐलान है अत: जब मुसलमान अज़ान दें तो वे भी अज़ान दे दें और उन (पर आक्रमण) से रुक जाएं और यदि वे अज़ान न दें तो उन पर शीघ्र आक्रमण करो और जब वे अज़ान दे दें तो जो उन के कर्त्तव्य हैं उन की मांग करो और यदि वे इन्कार करें तो उन पर शीघ्र आक्रमण करो। यदि इक़रार कर लें तो उन से स्वीकार कर लिया जाए।

الوصيّة

إنّ مـن السهـود أن القـدح يوجـب القـدح، والمـدح يوجـب المـدح۔ فإنـک إذا قلتَ لرجـل إنّ أباک رجـل شريـف صالح، فلـن يقـول لأبيـک إنـه شرير طالح، بـل يرضيـک بـكلام زكّاه، ويمدح أباک كمثل مَدْحٍ مدحتَ بـه أباه، بـل يذكـره بأصفـاه وأعـلاه، وأمـا إذا شـتمتَ فيـكلّم كما كلّمـتَ۔ فكذلـک الـذين يسـبّون الصدّيـق والفـاروق، فإنمـا هم يسـبون عليًّـا ويؤذونـه ويُضيعـون الحقـوق۔ فإنـک إذا قلـتَ إن أبا بكـر كافـر، فقـد هيّجـتَ محـبَّ الصدّيـق الأكـبر لأن يقـول إنّ عليًّـا أكفـرُ؛ فمـا شـتمتَ الصدّيـق، بـل شـتمتَ عليًّـا وجـاوزتَ الطريـق۔ وإنـک لا تسـبّ أبا أحـد لئـلا يسـبّوا أباک، وكذلـک لا تشـتم أُمَّ مَـن عـاداک، ولكـن لا تبـالى عـزّةَ بيـت النبـوة، ولا تعصمهـم مـن سـوء هـذه

वसीयत

यह बात देखने में आई है कि आलोचना-आलोचना का और प्रशंसा-प्रशंसा का कारण बनती है क्योंकि जब आप किसी व्यक्ति से यह कहें कि तुम्हारा पिता नेक और सुशील आदमी है तो वह आपके पिता के बारे में यह कदापि नहीं कहेगा कि वह दुष्ट और दुर्भाग्यशाली है बल्कि वह आपको अत्युत्तम कलाम से प्रसन्न करेगा तथा वह वैसे ही आपके पिता की प्रशंसा करेगा जैसे आपने उसके पिता की प्रशंसा की होगी बल्कि उससे भी अधिक निर्मल तथा उच्चतर चर्चा करेगा परंतु यदि आप ने गाली दी होगी तो आपको वही कुछ कहेगा जो आपने कहा होगा तो इसी प्रकार जो लोग सिद्दीक़ (अकबर[रज़ि॰]) और (उमर) फारूक[रज़ि॰] को गालियां देते हैं तो वास्तव में वे हज़रत अली[रज़ि॰] को गालियां दे रहे होते हैं और उन्हें कष्ट पहुंचाते और अधिकारों को नष्ट करते हैं क्योंकि जब तू यह कहता है कि अबू बक्र[रज़ि॰] काफिर हैं तो तू सिद्दीक़े अकबर से प्रेम करने वाले को जोश दिलाता है कि वह यह कहे कि अली[रज़ि॰] उनसे बढ़कर काफिर हैं। इस प्रकार तूने सिद्दीक[रज़ि॰] को गाली नहीं दी बल्कि अली[रज़ि॰] को गाली दी

السلسلة، ولا تنظر إلى فساد النتيجة مع دعاوى التشيع وتصلُّف المحبّة، فكل ذنب السبّ على عنقك يا عدو آل رسول اللّٰه والخمسة المطهرة ومتطبعا بطباع المنافقين۔

है और तूने सम्मान का सम्मान की पद्धति से अतिक्रमण किया है क्योंकि तू किसी के पिता को इसलिए गाली नहीं देता कि वह तेरे बाप को गाली न दे. इसी प्रकार तू उस व्यक्ति की मां को गाली नहीं देता जो तुझ से शत्रुता रखता है किंतु तू नुबुव्वत के खानदान की परवाह नहीं करता और उन्हें इस गाली-गलौज के कष्ट से नहीं बचाता और शिया होने के दावे करने तथा प्रेम की डींगे मारने के बावजूद तू उसके परिणाम की बुराई की और नहीं देखता. अत: हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संतान और पवित्र पंजतन★ के दुश्मन तथा कपट स्वभाव व्यक्ति! इस गाली-गलोज का सब गुनाह तेरी गर्दन पर है.

★ **पंजतन** - अर्थात पाँच व्यक्ति अर्थात हज़रत मुहम्मद स.अ.व., हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फातिमा रज़ि० और उनके दोनों पुत्र इमाम हसन रज़ि० और इमाम हुसैन रज़ि०

مِن المؤلّف
लेखक की ओर से

إنّ الصحابةَ كلّهم كذُكاءٍ قد نوّروا وجهَ الورى بضياءٍ

निस्सन्देह सहाबा सब के सब सूर्य के समान हैं उन्होंने सृष्टियों का चेहरा अपने प्रकाश से प्रकाशमान कर दिया।

تركوا أقاربَهم وحُبَّ عِيالهم جاءوا رسولَ الله كالفقراءِ

उन्होंने अपने परिजनों को तथा बीवी-बच्चों की मुहब्बत को छोड़ दिया और रसूलुल्लाह के सामने फ़क़ीरों की तरह उपस्थित हो गए।

ذُبحُوا وما خافوا الورى من صدقهم بل آثروا الرحمان عند بلاءٍ

वे ज़िब्ह किए गए और अपनी सच्चाई के कारण सृष्टि (मख़्लूक़) से न डरे बल्कि संकट के समय उन्होंने कृपालु ख़ुदा को अपनाया।

تحت السيوف تَشهّدوا الخلوصهم شَهِدوا بصدق القلب فى الإمْلاءِ

अपनी निष्कपटता के कारण वे तलवारों के नीचे शहीद हो गए और उन्होंने मज्लिसों में सच्चे दिल से गवाही दी।

حضروا المواطنَ كلها من صدقهم حفَدوا لها فى حَرَّةٍ رَجْلاءِ

अपनी सच्चाई के कारण वे समस्त मैदानों में उपस्थित हो गए। वे उन मैदानों की पथरीली कठोर भूमि में एकत्र हो गए।

الصالحون الخاشعون لربهم البايِتون بذكره وبكاءٍ

वे नेक लोग थे, अपने रब्ब के सामने विनय करने वाले थे वे उसके ज़िक्र में रो-रो कर रातें गुज़ारने वाले थे।

قومٌ كِرامٌ لا نُفرِّقُ بينهم كانوا لخير الرسل كالاعضاءِ

वे बुज़ुर्ग लोग थे, हम उन के बीच अन्तर नहीं करते वे ख़ैरुर्रुसुल के लिए अवयवों के स्थान पर थे।

ما كان طعنُ الناس فيهم صادقًا بل حَشْنَةٌ نشأَتْ مِن الاهواءِ

लोगों के कटाक्ष उनके बारे में सच्चे न थे बल्कि वह एक वैर है जो लोभ लालच से पैदा हुआ है।

انی أری صَحْبَ الرسول جمیعَهم عندَ الملیكِ بعزَّةٍ قَعْسَاءِ

मैं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण का सफर और घर में ठहरने में तथा अपने यार के मार्गों में तिरस्कृत हो गए।

تَبِعوا الرسول برَحْلهِ وثَواءٍ صاروا بِسُبلِ حبیبِهم کعَفاءٍ

मैं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त सहाबा को ख़ुदा के सामने अनश्वर सम्मान के स्थान पर पाता हूं।

نهضوا لنصر نبینا بوفاءٍ عند الضلال وفتنةٍ صمَّاءِ

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता के लिए वफ़ादारी के साथ वे गुमराही और घोर उपद्रव के समय में उठ खड़े हुए।

وتخیَّروا لله کلَّ مصیبةٍ وتهَلَّلوا بالقتل والإجلاءِ

और उन्होंने अल्लाह तआला के लिए हर कष्ट को अपना लिया तथा क़त्ल और देश से निकाले जाने को भी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया।

أنوارُهم فاقَتْ بیانَ مبیِّنٍ یسوَدُّ منها وجهُ ذی الشحناءِ

उनके प्रकाशों का वर्णन करने के वर्णन से भी श्रेष्ठ हो गए वैर रखने वाले का चेहरा उन प्रकाशों के सामने काला हो रहा है।

فانظُرْ إلی خِدماتهم وثَباتهم ودَعِ العِدَا فی غُصَّة وصَلاءِ

तू उनकी सेवाओं और दृढ़ता को देख और शत्रु को उनके क्रोध एवं जलन में छोड़ दे।

یا ربِّ فارحمنا بصَحْبِ نبیِّنا واغفِرْ وأنتَ اللهُ ذو آلاءِ

हे मेरे रब्ब! हम पर भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा के कारण रहम कर और हमें माफ़ कर और तू ही नेमतों वाला अल्लाह है।

والله یعلَم لو قدرتُ ولم أمُتْ لإشعْتُ مدح الصَحْبِ فی الاعداءِ

अल्लाह जानता है। यदि मैं क़ुदरत रखता और मुझे मृत्यु का सामना न होता तो मैं सहाबा की प्रशंसा उन के दुश्मनों में ख़ूब फैला छोड़ता।

ان كنت تلعنتهم و تضحك خسّة فارقُبْ لنفسك كلَّ اِسْتِهزاءٍ

यदि तू उनको लानत करता रहा और कमीनगी से हंसता रहा तो अपने लिए हर हंसी की प्रतीक्षा कर।

من سبّ اصحاب النبی فقد ردی

حق فما فی الحقّ من اخفاء

जिसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा को गाली दी तो निस्सन्देह वह मर गया। यह एक सच्चाई है। तो इस सच्चाई में कोई छुपाव नहीं।

सार्वजनिक सूचना हेतु

एक विज्ञापन

वे समस्त लोगो जिन्होंने शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के अखबार इशाअतुस्सुन्नः देखे होंगे या उन के उपदेश सुने होंगे या उनके पत्र पढ़े होंगे वे इस बात की गवाही दे सकते हैं कि शेख़ साहिब ने इस ख़ाकसार के बारे में क्या कुछ बातें व्यक्त की हैं और कैसे-कैसे स्वयं को बड़ा समझने की भावना से भरपूर वाक्य तथा अहंकार में डूबी हुई व्यर्थ बातें उनके मुंह से निकल गई हैं कि एक ओर तो उन्होंने इस ख़ाकसार को क़ज़्ज़ाब और झूठ गढ़ने वाला ठहराया है और दूसरी ओर बड़े ज़ोर और आग्रह पूर्वक यह दावा कर दिया है कि मैं उत्तम श्रेणी का मौलवी हूं और यह व्यक्ति सर्वथा अनपढ़, नासमझ और अरबी भाषा से वंचित और दुर्भाग्यशाली है। शायद इस बकवास से उनका उद्देश्य यह होगा कि ताकि इन बातों का जन सामान्य पर प्रभाव पड़े और एक ओर तो वे शेख़ बतालवी को अद्वितीय विद्वान समझ लें कि ये लोग मूर्ख हैं तथा परिणाम यह निकले कि मूर्खों का विश्वास नहीं। जो लोग वास्तव में मौलवी हैं उन्हीं की गवाही विश्वसनीय है। मैंने उस बेचारे को लाहौर के एक बड़े जल्से में यह इल्हाम भी सुना दिया था कि اِنِّیْ مُهِیْنٌ مَنْ اَرَادَ اِهَانَتَکَ कि मैं उसे अपमानित करूंगा जो तेरे अपमान पर तत्पर है। परन्तु द्वेष ऐसा

बढ़ा हुआ था कि यह इल्हामी आवाज़ उसके कान तक न पहुंच सकी। उसने चाहा कि क़ौम के दिलों में यह बात जम जाए कि यह व्यक्ति अरबी का एक अक्षर नहीं जानता किन्तु ख़ुदा ने उसे दिखा दिया कि यह बात उलट कर उसी पर पड़ी। यह वही इल्हाम है जो कहा गया था कि मैं उसी को अपमानित करूंगा जो तेरे अपमान पर तत्पर होगा। सुब्हान अल्लाह वह कैसा शक्तिमान और ग़रीबों का समर्थक है, फिर लोग डरते नहीं क्या यह ख़ुदा तआला का निशान नहीं कि वही व्यक्ति जिस के बारे में कहा गया था कि अनपढ़ है और उसे एक सीग़: (वर्ण) तक मालूम नहीं। वह उन समस्त काफ़िर ठहराने वालों को जो अपना नाम मौलवी रखते हैं ऊंची आवाज़ से कहता है कि मेरी तफ़्सीर के मुकाबले पर तफ़्सीर बनाओ तो हज़ार रुपए इनाम लो और 'नूरुलहक़' के मुक़ाबले पर बनाओ तो पांच हज़ार रुपए पहले रखा लो और कोई मौलवी दम नहीं मारता, क्या यही मौलवियत है जिसके भरोसे मुझे काफ़िर ठहराया था। हे शेख! अब वह इल्हाम पूरा हुआ या कुछ कमी है? एक दुनिया जानती है कि मैंने इसी फैसले के उद्देश्य से तथा इसी नीयत से कि ताकि शेख़ बतालवी की मौलवियत और कुफ्र के समस्त फ़त्वे लिखने वालों की असलियत लोगों पर खुल जाए। पुस्तक 'करामातुस्सादिक़ीन' अरबी में लिखी, तत्पश्चात् पुस्तक 'नूरुलहक़' भी अरबी में लिखी और मैंने साफ़-साफ़ इश्तिहार दे दिया कि यदि शेख़ साहिब या समस्त काफ़िर ठहराने वाले मौलवियों मैं से कोई साहिब करामातुस्सादिक़ीन के लेखक के मुकाबले पर कोई पुस्तक लिखें तो उनको एक हज़ार रुपया इनाम दिया जाएगा और यदि नूरुल हक़ के मुक़ाबले पर पुस्तक लिखें तो पांच हज़ार रुपया इनाम दिया जाएगा। परन्तु वे लोग मुकाबले पर लिखने से बिल्कुल लाचार रह गए और हम ने जो तिथि इस निवेदन के लिए निर्धारित की थी अर्थात अन्तिम जून 1894 ई० वह गुज़र गई। शेख़ साहिब की इस खामोशी से सिद्ध हो गया कि वह अरबी से स्वयं ही अनभिज्ञ और वंचित हैं। और न केवल यही बल्कि यह भी सिद्ध हुआ कि वह प्रथम श्रेणी के झूठे, काज़िब और बेशर्म हैं, क्योंकि उन्होंने तो लिखित एवं मौखिक तौर पर स्पष्ट

इश्तिहार दे दिया था कि यह व्यक्ति अरबी विद्या से वंचित और अनपढ़ है अर्थात् अरबी का एक शब्द तक नहीं जानता तो फिर ऐसे आवश्यक मुक़ाबले के समय जिसमें उन पर अनिवार्य हो चुका कि वह अपना ज्ञान व्यक्त करते क्यों ऐसे चुप हो गए कि जैसे वह इस दुनिया में नहीं हैं। विचार करना चाहिए कि हम ने कितना बल देकर उनको मैदान में बुलाया और किन-किन शब्दों से उनको जोश (ग़ैरत) दिलाना चाहा परन्तु उन्होंने इस ओर आंख उठा कर भी न देखा। हम ने केवल इस विचार से कि शेख साहिब का अरबी जानने का दावा भी निर्णय पा जाए। पुस्तक 'नूरुलहक़' में यह इश्तिहार दे दिया कि यदि शेख़ साहिब तीन माह की अवधि में उतनी ही पुस्तक लिख कर प्रकाशित कर दें और वह पुस्तक वास्तव में सरस एवं सुबोध शैली की समस्त अनिवार्यताओं तथा सच्चाई एवं दूरदर्शिता की आवश्यक बातों में 'नूरुलहक़' के बराबर हो तो तीन हज़ार रुपया नक़द बतौर इनाम शेख़ साहिब को दिया जाएगा तथा इल्हाम के झूठा ठहराने के लिए भी एवं सरल और साफ़ मार्ग उनको मिल जाएगा और हज़ार लानत के दाग़ से भी बच जाएंगे। अन्यथा वे न केवल पराजित बल्कि इल्हाम के सत्यापित करने वाले ठहरेंगे। परन्तु शेख़ साहिब ने इन बातों में से किसी बात की भी परवाह न की और कुछ भी स्वाभिमान न दिखाया। इस का क्या मतलब था? केवल यही कि यह मुक़ाबला शेख साहिब की शक्ति से बाहर है। अत: विवश् होकर उन्होंने अपनी बदनामी को स्वीकार कर लिया और इस ओर ध्यान न दिया। यह उसी इल्हाम की पुष्टि है कि

اِنِّیْ مُھِیْنٌ مَنْ اَرَادَ اِھَانَتَکَ

शेख़ साहिब ने मिंबरों पर चढ़-चढ़ कर सैकड़ों लोगों में सैकड़ों अवसरों पर बार-बार इस ख़ाकसार के बारे में वर्णन किया कि यह व्यक्ति अरबी भाषा से बिल्कुल अपरिचित और धार्मिक विद्याओं से सर्वथा अनभिज्ञ है, एक मूर्ख व्यक्ति है और महा झूठा तथा दज्जाल है और इसी को पर्याप्त न समझा बल्कि सैकड़ों पत्र इसी विषय के अपने मित्रों को लिखे और जगह-जगह यही विषय प्रकाशित किया और अपने मूर्ख मित्रों के दिलों में बैठा दिया कि यही सच है।

तो ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस घंमडी व्यक्ति का घमंड तोड़े और इस गर्दन काटने वाले की गर्दन को मरोड़े और उसे दिखाए कि वह अपने बन्दों की कैसे सहायता करता है। अतः उसकी सामर्थ्य, सहायता और उसकी विशेष शिक्षा और समझाने से ये पुस्तकें लिखी गईं तथा हम ने 'करामातुस्सादिक़ीन' और 'नूरुलहक़' के मुक़ाबले की दरख़्वास्त की अन्तिम तिथि इस मौलवी तथा समस्त विरोधियों के लिए अन्तिम जून 1894 ई० निर्धारित की थी जो गुज़र गई और अन दोनों पुस्तकों के बाद यह पुस्तक 'सिर्रुलख़िलाफ़त' लिखी गई है जो बहुत संक्षिप्त है और उसकी नज़्म कम है और एक अरबी जानने वाला व्यक्ति ऐसी पुस्तक सात दिन में बहुत आसानी से बना सकता है तथा छपने के लिए दस दिन पर्याप्त हैं परन्तु हम शेख़ साहिब की हालत और उसके मित्रों की पूंजी की कमी (ज्ञान की कमी) पर बहुत ही रहम (दया) करके दस दिन और बढ़ा देते हैं और ये सत्ताईस दिन हुए। अतः हम प्रतिदिन एक रुपया की दर से सत्ताईस रुपए के इनाम पर यह पुस्तक प्रकाशित करते हैं और शेख साहिब और उनके नाम के मौलवियों की सेवा में निवेदन है कि यदि वे अपने दुर्भाग्य से हज़ार रुपए का इनाम लेने से वंचित रहे और फिर पांच हज़ार रुपए भी उनके अल्पज्ञान के कारण उनके हाथ से जाता रहा और दरख़्वास्त की तिथि गुज़र गई। अब वे सत्ताईस रुपयों को तो न छोड़ें। हम ने सुना है कि इन दिनों✱ में शेख साहिब पर दरिद्रता के कारण बहुत सी परेशानियां हैं। ख़ुश्क मित्रों ने वफ़ा नहीं की। तो इन दिनों में तो उनके लिए एक रुपया एक अशरफ़ी का आदेश रखता है। मानो ये सत्ताईस रुपए सत्ताईस अशरफ़ी हैं जिन से कई काम निकल सकते हैं और हम अपने सच्चे दिल से इक़रार करते हैं कि यदि सिर्रुलख़िलाफ़त पुस्तक के मुकाबले पर शेख साहिब ने कोई पुस्तक निर्धारित अवधि के अन्दर प्रकाशित कर दी और वह पुस्तक हमारी पुस्तक के बराबर सिद्ध हुई तो हम न केवल सत्ताईस रुपए उन को देंगे बल्कि यह इक़रार लिख देंगे कि शेख साहिब अवश्य अरबी जानते तथा मौलवी कहलाने के पात्र

✱नोट - शेख साहिब अपने वर्तमान के पर्चे में इक़रारी हैं कि यदि उनके मित्रों ने अब भी उनकी सहायता न की तो वह इस नौकरी से त्याग पत्र दे देंगे। इसी से

हैं बल्कि भविष्य में उनको मौलवी के नाम से पुकारा जाएगा। और चाहिए कि इस बार शेख साहिब हिम्मत न हारें। यह पुस्तक तो बुहत ही थोड़ी है और कुछ भी चीज़ नहीं। यदि एक-एक भाग प्रतिदिन घसीट दें तो केवल चार-पांच दिन में उसे समाप्त कर सकते हैं और यदि अपने अस्तित्व में कुछ भी जान नहीं तो उन सौ डेढ़ सौ मौलवियों से सहायता लें, जिन्होंने बिना सोचे-समझे मुसलमानों को काफ़िर और सैदव के नर्क के दण्ड योग्य ठहराया और बड़े घमंड से स्वयं को मौलवी के नाम से अभिव्यक्त किया। यदि वे एक-एक भाग लिख कर दें तो शेख साहिब इस पुस्तक के मुकाबले पर डेढ़ सौ भाग की पुस्तक प्रकाशित कर सकते हैं। किन्तु यदि शेख साहिब ने फिर भी ऐसा न कर दिखाया तो फिर बड़ी बेशर्मी होगी कि भविष्य में मौलवी कहलाएं बल्कि उचित है कि भविष्य में झूठ बोलने तथा झूठ बुलवाने से बचें। शेख का नाम आप के लिए पर्याप्त है जो बाप-दादे से चला आता है या मुंशी का नाम बहुत उचित होगा। परन्तु अभी यह बात परखने योग्य है कि आप मुंशी भी हैं या नहीं। मुंशी के लिए आवश्यक है कि फ़ारसी नज़्म में पूरी क़ुदरत रखता हो। परन्तु मेरी दृष्टि से अब तक आप का कोई फ़ारसी दीवान नहीं गुज़रा। बहरहाल यदि हम नर्मी और दोष देख कर नज़र बचाने के तौर पर आप का मुंशी होना मान भी लें और समझ लें कि आप मुंशी हैं यद्यपि मुंशी होने की योग्यताएं आप में पाई नहीं जातीं तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि मुंशी होने का हमारे धर्म से कुछ संबंध नहीं। किन्तु हम किसी प्रकार मौलवी की उपाधि ऐसे मूर्खों को दे नहीं सकते जिन को हम पांच हज़ार रुपए तक इनाम देना चाहें तब भी उन की मुर्दा रूह में कुछ भी मुकाबले की शक्ति प्रकट न हो, हज़ार लानत की धमकी दें (तब भी) कुछ ग़ैरत न आए। सम्पूर्ण विश्व को सहायक बनाने के लिए इजाज़त दें तब भी एक झूठे मुंह से भी हां न कहें ऐसे लोगों को यदि मौलवी की उपधि दी जाए तो क्या मुसलमानों को काफ़िर बनाने के अतिरिक्त उनमें कुछ और भी योग्यता है, हरगिज़ नहीं। चार हदीसें पढ़ कर नाम शेख़ुल कुल। हम इस ज़माने और उसके लोगों से अल्लाह की पनाह मांगते हैं और मूर्खों की मूर्खताओं से (भी) ख़ुदा की पनाह मांगते हैं।

यह भी स्पष्ट रहे कि प्रत्येक हयादार (लज्जावान) शत्रु अपनी शत्रुता में किसी सीमा तक जाकर ठहर जाता है और ऐसे झूठों के इस्तेमाल से उसे शर्म आ जाती है जिन की असलियत कुछ भी न हो परन्तु अफ़सोस कि शेख साहिब ने कुछ भी इस इन्सानी शर्म से काम नहीं लिया। जहां तक हानि पहुंचाने के साधन उनके मस्तिष्क में आए उन्होंने सब इस्तेमाल किए और कोई कमी नहीं रखी। सर्वप्रथम तो लोगों को उठाया कि यह व्यक्ति काफ़िर है, दज्जाल है, इसकी मुलाक़ात से बचो और यथासंभव उसे कष्ट पहुंचाओ और प्रत्येक अत्याचार से इसे दुख दो सब पुण्य की बात है। और जब इस यत्न में असफल रहे तो अंग्रेज़ी सरकार को भड़काने के लिए कैसे-कैसे झूठ बनाए। कैसे-कैसे मनगढ़त झूठों द्वारा सहायता ली परन्तु यह सरकार दूरदर्शी तथा मनुष्य को पहचानने वाली सरकार है सिक्खों के पद चिन्हों पर नहीं चलती जो शत्रु और स्वार्थी के मुंह से एक बात सुन कर भड़क जाए बल्कि अपनी ख़ुदा की प्रदान की हुई बुद्धि से काम लेती है। अतः बुद्धिमान सरकार ने इस व्यक्ति के लेखों पर कुछ ध्यान न दिया और क्यों ध्यान देती उसे मालूम था कि एक स्वार्थी शत्रु स्वार्थ के जोश से झूठी जासूसी कर रहा है। सरकार को इस ख़ाकसार के ख़ानदान के शुभ चिन्तक होने पर पूर्ण विश्वास था और सरकार खूब जानती थी कि यह ख़ाकसार चौदह वर्ष की अवधि से इन मौलवियों के विरुद्ध बार-बार यह निबंध प्रकाशित कर रहा है कि हम लोग जो अंग्रेज़ी सरकार की प्रजा हैं हमारे लिए अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश से इस सरकार की फ़र्माबरदारी के तहत रहना अपना कर्त्तव्य है और विद्रोह करना अवैध। और जो व्यक्ति विद्रोह के मार्ग अपनाए या उसके लिए कोई उपद्रव पूर्ण बुनियाद डाले या ऐसे जमावड़े में सम्मिलित हो या राज़दार हो तो वह अल्लाह और रसूल के आदेश की अवज्ञा कर रहा है। और जो कुछ इस ख़ाकसार ने अंग्रज़ी सरकार का सच्चा शुभचिन्तक बनने के लिए अपनी पुस्तकों में वर्णन किया है वह सब सच है। नादान मौलवी नहीं जानते कि जिहाद के लिए शर्तें हैं। सिक्खा शाही, लूटमार का नाम जिहाद नहीं और प्रजा को अपनी रक्षक सरकार के साथ किसी प्रकार जिहाद उचित नहीं। अल्लाह तआला हरगिज़ पसन्द नहीं करता

कि एक सरकार अपनी एक प्रजा के जान, माल और सम्मान की रक्षक हो और उनके धर्म के लिए भी इबादतों की पूरी-पूरी आज़ादी दे रखी हो, परन्तु वह प्रजा अवसर पाकर उस सरकार को क़त्ल करने के लिए तैयार हो। यह धर्म नहीं बल्कि अधर्म है, और नेक काम नहीं बल्कि बदमाशी है। ख़ुदा तआला उन मुसलमानों की हालत पर दया करे जो इस मामले को नहीं समझते और इस सरकार के अधीन एक मुनाफ़िकों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं जो ईमानदारी से बहुत दूर है। हम ने सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम बड़े ध्यानपूर्वक देखा परन्तु नेकी के स्थान पर बुराई करने की शिक्षा कहीं नहीं पाई। हां यह सच है कि इस सरकार की क़ौम धर्म के बारे में बहुत बड़ी ग़लती पर है। वह इस प्रकाश के युग में एक मनुष्य को ख़ुदा बना रहे हैं तथा एक असहाय दरिद्र को रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का प्रतिपालक) की उपाधि दे रहे हैं। किन्तु इस स्थिति में तो वे और भी दया के योग्य तथा मार्ग-दर्शन के मुहताज हैं, क्योंकि वे सद्मार्ग को बिल्कुल भूल गए और दूर जा पड़े हैं। हमें चाहिए कि उनके उपकार याद करके उनके लिए ख़ुदा के दरबार में दुआ करें कि हे ख़ुदा वन्द, शक्तिमान, प्रतापवान उनको हिदायत दे और इन के दिलों को पवित्र तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए खोल दे तथा सच्चाई की ओर फेर दे ताकि वे तेरे सच्चे तथा कामिल नबी और तेरी किताब को पहचान लें और इस्लाम धर्म उन का धर्म हो जाए। हां पादरियों के फ़ित्ने सीमा से अधिक बढ़ गए हैं और उनकी धार्मिक सरकार एक बहुत शोर डाल रही है परन्तु उनके फ़ित्ने तलवार के नहीं हैं, क़लम के फ़ित्ने हैं। तो हे मुसलमानो! तुम भी क़लम से उनका मुक़ाबला करो और सीमा से मत बढ़ो। ख़ुदा तआला का इरादा क़ुर्आन करीम में साफ़ पाया जाता है कि कलम के मुकाबले पर क़लम है और तलवार के मुक़ाबले पर तलवार, परन्तु कहीं नहीं सुना गया कि किसी ईसाई पादरी ने धर्म के लिए तलवार भी उठाई हो। फिर तलवार के यत्न करना क़ुर्आन करीम को छोड़ना है बल्कि स्पष्ट पथ भ्रष्टता और ख़ुदा की हिदायत से उद्दण्डता है। जिनमें रूहानियत नहीं वह ऐसे यत्न किया करते हं। जो इस्लाम का बहाना करके अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं। ख़ुदा तआला उनको समझ दे। अफ़ग़ानी स्वभाव के लोग इस शिक्षा को

बुरा मानेंगे परन्तु हमें सच की अभिव्यक्ति से मतलब है न कि उनके प्रसन्न करने से और अत्यन्त हानिकारक आस्था जिस से इस्लाम की रूहानियत को बहुत हानि पहुंच रही है यह है कि ये सब मौलवी एक ऐसे महदी की प्रतीक्षा में हैं जो सम्पूर्ण विश्व को ख़ून में डूबो दे और निकलते ही क़त्ल करना आरंभ कर दे। यही लक्षण अपने काल्पनिक मसीह के रखे हुए हैं कि वह आकाश से उतरते ही समस्त काफ़िरों को क़त्ल कर देगा और वही बचेगा जो मुसलमान हो जाए। ऐसे विचारों के लोग किसी क़ौम के सच्चे शुभ चिन्तक नहीं बन सकते बल्कि उन के साथ अकेले सफ़र करना भी भय का स्थान है। शायद किसी समय काफ़िर समझ कर क़त्ल न कर दें और अपने अन्दर के कुफ्र से अपरिचित है। याद रखना चाहिए कि ऐसे निरर्थक मामलों को इस्लाम का भाग ठहराना और नऊज़ुबिल्लाह क़ुर्आनी शिक्षा समझना इस्लाम से हंसी करना है और विरोधियों को ठट्ठा करने का अवसर देना है। कोई बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि कोई व्यक्ति आते ही इत्माम-ए-हुज्जत किए बिना लोगों को क़त्ल करना आरंभ कर दे या जिस सरकार के अधीन जीवन व्यतीत करे उसी के विनाश की घात में लगा रहे। मालूम होता है कि ऐसे लोगों की रूहें पूर्णतया विकृत हो चुकी हैं और मानवीय सहानुभूति की आदतें उन के अन्दर से पूर्णतया समाप्त हो गई हैं या वास्तविक स्रष्टा ने पैदा ही नहीं कीं। ख़ुदा तआला हर एक विपत्ति से सुरक्षित रखे। मालूम नहीं के हमारे इस वर्णन से वे लोग कितना जलेंगे और कैसे मुंह मरोड़-मरोड़ कर काफ़िर कहेंगे। परन्तु हमें उनके इस काफ़िर ठहराने की कुछ परवाह नहीं। प्रत्येक व्यक्ति का मामला ख़ुदा तआला के साथ है। हमें क़ुर्आन करीम की किसी आयत में यह शिक्षा दिखाई नहीं देती कि समझाने के प्रयास को पूर्ण किए बिना विरोधियों को क़त्ल करना आरंभ कर दिया जाए। हमारे सय्यिद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तेरह वर्ष तक काफ़िरों के अन्याय एवं अत्याचारों पर सब्र किया। बहुत से दुख दिए गए परन्तु दम न मारा। बहुत से सहाबा और परिजन क़त्ल किए गए, एक थोड़ा भी मुक़ाबला न किया और दुखों से पीसे गए। परन्तु सब्र के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। अन्ततः जब काफ़िरों के अत्याचार सीमा से बढ़ गए और उन्होंने चाहा कि सब

को क़त्ल करके इस्लाम को ही मिटा दें तब ख़ुदा तआला ने अपने प्यारे नबी को उन भेड़ियों के हाथ से मदीना में सुरक्षित पहुंचा दिया। वास्तव में वही दिन था कि जब आकाश पर अत्याचारियों को दण्ड देने के लिए प्रस्ताव का निर्णय हो गया-

تا دلِ مـرد خدانامدبدرد
هیچ قوم راخدارسوانکرد

परन्तु अफ़सोस कि काफ़िरों ने इसी पर बस न किया बल्कि क़त्ल के लिए पीछा किया और कई चढ़ाइयां कीं और भिन्न-भिन्न प्रकार के दुख पहुंचाए। अन्ततः वे ख़ुदा तआला की दृष्टि में अपने असंख्य गुनाहों के कारण इस योग्य ठहर गए कि उन पर अज़ाब उतरे। यदि उन की शरारतें इस सीमा तक न पहुंचतीं तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरिगज़ तलवार न उठाते। परन्तु जिन्होंने तलवारें उठाईं और ख़ुदा तआला के सामने उद्दण्ड और ज़ालिम सिद्ध हुए वे तलवारों से ही मारे गए। अतः जिहाद-ए-नबवी का रूप यह है कि जिस से बुद्धिमान लोग अपरिचित नहीं और क़ुर्आन में ये निर्देश मौजूद हैं कि जो लोग नेकी करें तुम भी उन के साथ नेकी करो, जो तुम्हें शरण दे उनके कृतज्ञ बने रहो और जो लोग तुम्हें दुख नहीं देते उनको तुम भी दुख मत दो। परन्तु इस युग के मौलवियों की हालत पर अफ़सोस है कि वे नेकी के स्थान पर बुराई करने को तैयार हैं और ईमानी रूहानियत तथा मानवीय दया से रिक्त। हे अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का सुधार कर। आमीन

शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी का हमारे काफ़िर ठहराने पर आग्रह और हमारी ओर से हमारी इस्लामी आस्था का प्रमाण तथा कथित शेख़ साहिब के लिए सत्ताईस रुपए का इनाम, यदि वह पुस्तक सिर्रुलख़िलाफ़त के मुकाबले पर पुस्तक लिखकर प्रकाशित करें।

ख़ुदा तआला जानता है कि हम ने एक कण भर इस्लाम से बाहर नहीं गए बल्कि जहां तक हमारा ज्ञान और विश्वास है। हम उन सब बातों पर

क़ायम और अटल हैं जो क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से सिद्ध होती हैं और हमें बड़ा अफ़सोस है कि शेख मुहम्मद हुसैन साहिब और हमारे दूसरे विरोधियों ने केवल यही नहीं किया कि हमें काफ़िर और दज्जाल बनाया और सदैव का नर्क हमारा दण्ड ठहराया, बल्कि क़ुर्आन तथा हदीस को भी छोड़ दिया और हम बार-बार कहते हैं कि हम उन की स्वार्थपूर्ण इच्छाओं, ग़लतियों तथा दोषों को तो किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकते। परन्तु यदि कोई सच्ची बात और ख़ुदा की किताब तथा हदीस के अनुसार कोई आस्था उनके पास हो जिस के हम कष्ट कल्पना के तौर पर विरोधी हों तो हम हर समय उसको स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। हम ने उन्हें दिखा दिया और सिद्ध कर दिया कि تـوفّ के शब्द में ख़ुदा की किताब का सामान्य मुहावरा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बोल चाल का सामान्य मुहावरा और सहाबा की दैनिक बोलचाल का सामान्य मुहावरा तथा उस समय से आज तक अरब की समस्त क़ौम का सामान्य मुहावरा मारने के अर्थों पर है न कि और कुछ। और हमने यह भी दिखाया कि जो मायने تـوفّ के शब्दों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध हुए वे इसी की ओर संकेत करते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए। बुख़ारी खोल कर देखो और पवित्र दिल के साथ इस आयत पर विचार करो कि मैं क़यामत के दिन उसी प्रकार فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ कहूंगा जैसा कि अब्द सालिह (नेक बन्दे) अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा और सोचो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह वाक्य शब्द تـوفّ के लिए कैसी एक उत्तम तफ़्सीर है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिना किसी तब्दीली और परिवर्तन के विवादित शब्द का चरितार्थ अपने आप को ऐसा ठहरा लिया जैसा कि कथित आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सालम उसके चरितार्थ थे। अब क्या हमें वैध है कि हम यह बात ज़ुबान पर लाएं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आयत ★ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ के वास्तविक चरितार्थ नहीं थे और वास्तविक चरितार्थ

★ कुछ मूर्ख कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम में كَمَا का

ईसा अलैहिस्सलाम ही थे। और इस आयत से वास्तव में ख़ुदा तआला का जो कुछ मतलब था और जो मायने تــوفّٰى के वास्तविक तौर पर यहां ख़ुदा का अभिप्राय था और सदैव से वह अभिप्राय ख़ुदा के ज्ञान में ठहर चुका था अर्थात् आकाश पर जीवित उठाए जाना नऊज़ुबिल्लाह उस विशेष अर्थ में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्मिलित नहीं थे बल्कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयत को अपनी ओर सम्बद्ध करने के समय उसके अर्थों में परिवर्तन कर दिया है और वास्तव में जब इस शब्द को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर सम्बद्ध करें तो उसके दूऔर जब मसीह की ओर यह शब्द सम्बद्ध करें तो अर्थ हैं फिर इसके वही वास्तविक अर्थ लिए जाएंगे जो ख़ुदा तआला के अनादि इरादे में थे। फिर यदि यही बात सच है तो इस स्पष्ट ख़राबी के अतिरिक्त कि एक नबी की शान से दूर है कि वह एक निश्चित अर्थों को तोड़कर उन में एक ऐसा परिवर्तन करे कि मायनों में अक्षरान्तरण के अतिरिक्त उसका अन्य कोई नाम हो ही नहीं सकता। दूसरी

शब्द मौजूद है जो किसी हद तक अन्तर को सिद्ध करता है। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की تــوفّٰى और हज़रत ईसा की تــوفّٰى में कुछ अन्तर चाहिए। परन्तु अफ़सोस कि ये नादान नहीं सोचते कि मुशब्ब: (उपमेय) मुशब्ब: (बिही) उपमान की वर्णन शैली में चाहे कुछ अन्तर हो परन्तु शब्दकोशों में अन्तर नहीं पड़ सकता। उदाहरणतया कोई कहे कि जिस प्रकार ज़ैद ने रोटी खाई, मैंने भी उसी प्रकार रोटी खाई। तो यद्यपि रोटी खाने की बनावट या उत्तम और खराब होने में अन्तर हो परन्तु रोटी का शब्द जो एक विशेष अर्थों के लिए बना है उसमें तो अन्तर नहीं आएगा। यह तो नहीं कि एक जगह रोटी से अभिप्राय रोटी तथा दूसरी जगह पत्थर हो। शब्दकोश में तो किसी प्रकार हस्तक्षेप वैध नहीं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक और इसी प्रकार की कहावत है जो इब्ने तैमिया ने 'ज़ादुलमआद' में नक़ल की है और वह इबारत यह है

قال یا معشر قریش ما تون انی فاعل بکم قالوا اخیرًا اخ کریم وابن اخ کریم قال فانِّی اقول لکم کما قال یوسف لاخوتہ لا تثریب علیکم الیوم اذھبوا فانتم الطلقاء صفحۃ ۴۱۵

अब देखो تثریب का शब्द जिन अर्थों से हज़रत यूसुफ़ के कथन में है उन्हीं अर्थों से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन में है। (इसी से)

खराबी यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस कहावत की समानता को जोड़ने का इरादा किया था अर्थात् فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ का, वह समानता भी तो क़ायम न रही क्योंकि समानता तो तब क़ायम रहती जब توفّى के अर्थों में आंहज़रत और हज़रत ईसा सम्मिलित हो जाते, परन्तु वह भागीदारी तो उपलब्ध न हुई फिर समानता किस बात में हुई। क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई और शब्द नहीं मिलता था कि आप ने अकारण एक ऐसी भागीदारी की ओर हाथ फैलाया जिस का आपको किसी प्रकार से अधिकार नहीं पहुचंता था। भला पृथ्वी में दफ़्न होने वाले और आकाश पर ज़िन्दा उठाए जाने वाले में एक ऐसे शब्द में कि जो मरने के या जीवित उठाए जाने के मायने रखता है, कैसे भागीदारी हो। क्या दो विपरीत चीज़ें जमा हो सकती हैं? और यदि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ में توفّى के मायने मारना नहीं था तो क्या इमाम बुख़ारी की बुद्धि मारी गई कि वह अपनी सही में इसी मायने के समर्थन के लिए दूसरे स्थान से एक और आयत उठा कर उस स्थान में ले आया। अर्थात् आयत اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ और फिर इस पर बस न किया बल्कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु का कथन भी इस स्थान पर जड़ दिया कि मुतवफ्फीक, मुमीतुका अर्थात् मुतवफ्फीक के यह मायने हैं कि मैं तुझे मारने वाला हूं। यदि बुख़ारी का यह मतलब नहीं था आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपमा के तौर पर मायनों को इब्ने अब्बास को स्पष्ट मायनों के साथ अधिक खोद दे। तो इन दोनों आयतों को जमा करने और इब्ने अब्बास के मायनों के वर्णन करने से क्या मतलब था और कौन सा अवसर था कि توفّى के मायने की बहस आरंभ कर देता। तो वास्तव में इमाम बुख़ारी ने इस कार्रवाई से توفّى के मायने में जो कुछ अपना मत था व्यक्त कर दिया। अत: यहां हमारे दावे के समर्थन के लए तीन चीज़ें हो गईं – प्रथम – आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक कथन कि जैसे अब्द सालिह अर्थात् ईसा ने فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ कहा, मैं भी فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ कहूंगा। द्वितीय – इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु से توفّى के शब्द के मायने मारना है। तृतीय – इमाम

बुख़ारी की गवाही जो उसकी क्रियात्मक कार्रवाई से प्रकट हो रही है।

अब सोच कर देखो कि क्या हम ने हदीस और क़ुर्आन को छोड़ा या हमारे विरोधियों ने? क्या उन्होंने भी تـوفّی के मायने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा किसी सहाबी से सिद्ध किए, जैसा कि हमने किए हैं? और फिर भी हम इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं कि यदि हमारे विरोधी इस सबूत के मुक़ाबले पर जो تـوفّی के बारे में हम ने प्रस्तुत किया अब भी कोई दूसरा सबूत प्रस्तुत करें अर्थात् توفّی के मायनों के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई और हदीस हमें दिखा दें और उसके साथ किसी और सहाबी की ओर से भी تـوفّی के मायने समर्थन के तौर पर प्रस्तुत करें और बुख़ारी जैसे किसी हदीस के इमाम की भी ऐसी ही गवाही تـوفّی के मायनों के बारे में प्रस्तुत कर दें तो हम उसको स्वीकार कर लेंगे। परन्तु यह कैसी चतुराई है कि स्वयं तो हदीस और क़ुर्आन को छोड़ दें और उल्टा हमें इल्ज़ाम दें कि यह फ़िर्क़ा क़ुर्आन और हदीस से बाहर हो गया है। हे विरोधी मौलवियो!= ख़ुदा तुम पर दया (रहम) करे तनिक ध्यानपूर्वक विचार करो ताकि तुम्हें मालूम हो कि यह निश्चित और अटल बात है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा से विवादित स्थान में تـوفّی के मायने मारने के अतिरिक्त और कुछ भी सिद्ध नहीं हुए जो व्यक्ति इस प्रमाणित मायने को छोड़ता है वह क़ुर्आन करीम की तफ़्सीर बिर्राय (अपनी राय से) करता है। क्योंकि हदीस की दृष्टि से मारने के अतिरिक्त تـوفّی के और कोई मायने विवादित आयत में नक़ल नहीं हुए। इसी कारण से शाह वली उल्लाह साहिब ने अपनी तफ़्सीर 'फ़ौज़ुल कबीर' में जो केवल आसार-ए-नबवी और सहाबा के कथनों की व्यवस्था से की गई है مُتَوَفِّيْـكَ के मायने केवल مُمِيْتُـكَ लिखे हैं। यदि उनको कोई विरोधी कथन मिलता तो वह अवश्य اَوْ के शब्द से वह मायने भी वर्णन कर जाते। अब हमारे विरोधियों को शर्म करना चाहिए कि वे स्पष्ट आदेशों को बिल्कुल छोड़ बैठे हैं। अत: हे धृष्ट लोगो! ख़ुदा से डरो। क्या तुम ने एक दिन मरना नहीं। और आप लोग नुज़ूल के शब्द पर गर्व न करें। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने इस शब्द का कुछ फैसला नहीं किया कि यह नुज़ूल किन मायनों से नुज़ूल है क्योंकि नुज़ूल कई प्रकार के हुआ करते हैं और मुसाफ़िर भी एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन में जाकर नज़ील ही कहलाता है। क़ुर्आन करीम में उन नुज़ूलों का भी वर्णन है जो रूहानी हैं जैसे अल्लाह फ़रमाता है कि हमने लोहा उतारा, हमने लिबास उतारा, हमने चौपाए उतारे और एलिया अर्थात् यूहन्ना के क़िस्से से जिस पर यहूदियों तथा ईसाइयों की सहमति है और बाइबल में मौजूद है, साफ खुल गया है कि मृत्यु-प्राप्त नबियों का नुज़ूल इस दुनिया में रूहानी तौर पर हुआ करता है न कि शारीरिक। वे आकाश से तो हरगिज़ नाज़िल नहीं होते (अर्थात् उतरते), परन्तु उन की रूहानी आदतें किसी मसील (समरूप) पर एक छाया होती है। इसलिए उस मसील का प्रकटन मुमस्सलबिही (जिसका वह समरूप है) का नुज़ूल (उतरना) समझा जाता है। कुछ औलिया किराम ने भी इस प्रकार के नुज़ूल का सूफीवाद की पुस्तकों में वर्णन किया है। अतः ख़ुदा के नज़दीक यह प्रकार भी नुज़ूल का एक प्रकार है और यदि यह नुज़ूल नहीं तो फिर ख़ुदा तआला की किताबें झूठी होती हैं। एलिया का क़िस्सा जो बाइबल में मौजूद है एक ऐसी प्रसिद्ध घटना है जो यहूदियों और ईसाइयों दोनों समुदायों में मान्य हैं और यह बड़ी मूर्खता होगी कि हम यह कहें कि इन दोनों समुदायों ने परस्पर मिल कर इस स्थान की आयतों को बदल दिया है बल्कि ईसाइयों को यह क़िस्सा अत्यन्त हानिकारक पड़ा है, और यदि यहां एलिया के नुज़ूल के प्रत्यक्ष मायने करें तो यहूदी सच्चे ठहरते हैं और सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सच्चे नबी नहीं थे। क्योंकि अब तक हज़रत एलिया अलैहिस्सलाम आसमान से नाज़िल नहीं हुए और बाइबल के अनुसार ज़रूरी था कि वह हज़रत मसीह से पहले नाज़िल हो जाते। हज़रत मसीह के सामने यह एक बड़ी परेशानी आ गई थी कि यहूदियों ने उनकी नुबुव्वत में यह बहाना प्रस्तुत कर दिया जो वास्तव में पर्वत के समान था तो यदि यह उत्तर सही होता कि एलिया के नुज़ूल का किस्सा बदला हुआ है तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के आगे इसी उत्तर को प्रस्तुत करते और कहते कि यह बात सिरे से

ही झूठ है कि एलिया फिर दुनिया में आएगा और अवश्य है कि वह मसीह से पहले पार्थिव शरीर के साथ आकाश से उतर आए। किन्तु उन्होंने यह उत्तर नहीं दिया बल्कि आयत के सही होने को मान्य रख कर नुज़ूल को नुज़ूल रूहानी ठहराया। इन्हीं तावीलों के कारण यहूदियों ने उन्हें नास्तिक कहा और सर्व सम्मति से फ़त्वा दिया कि यह व्यक्ति अधर्मी और काफ़िर है, क्योंकि तौरात के स्पष्ट आदेशों को बिना प्रचलित शैली के प्रत्यक्ष अर्थों से फेरता है। इस में कुछ सन्देह नहीं कि यदि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अक्षरान्तरण (तहरीफ़) का बहाना प्रस्तुत कर देते और कह देते कि तुम्हारी आकाशीय किताबों के ये स्थान बदल गए हैं तो इस उत्तर से भी वह यद्यपि यहूदियों का मुंह बन्द तो नहीं कर सकते थे फिर भी उनके विलक्षण निशानों तथा चमत्कारों को देख कर बहुत से लोग समझ जाते कि संभव है कि ये इबारतें बदलने का दावा सच्चा ही हो, क्योंकि यह व्यक्ति ख़ुदा से समर्थन प्राप्त, इल्हाम प्राप्त और चमत्कार वाला है परन्तु हज़रत मसीह ने तो ऐसा न किया बल्कि आयत के सही होने का एलिया के नुज़ूल के बारे में इक़रार कर दिया, जिसके कारण अब तक ईसाई संकट में पड़े हुए हैं और यहूदियों के आगे बात भी नहीं कर सकते और यहूदी हंसी उड़ाते हुए कहते हैं कि ईसा उस समय नबी ठहर सकता है कि जब हम ख़ुदा तआला की समस्त किताबों को झूठा ठहरा दें और अब तक ईसाइयों को अवसर नहीं मिला कि इस स्थान में इबारत बदलने का दावा कर दें और विपत्ति से मुक्ति पाएं क्योंकि अब वे उन्नीस सौ वर्ष के पश्चात् उस कथन का विरोध कैसे कर सकते हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुंह से निकल गया। यह स्थान हमारे भाई मुसलमानों के लिए बहुत विचार करने योग्य है। उनको सोचना चाहिए कि जिन ज़ाहिरी अर्थों पर वे ज़ोर देते हैं यदि वही अर्थ सच्चे हैं तो फिर हज़रत ईसा किसी प्रकार से भी नबी नहीं ठहर सकते बल्कि वह ख़ुदा के नबी तो उसी हालत में ठहरेंगे जबकि हज़रत एलिया नबी के नुज़ूल को एक रूहानी नुज़ूल माना जाए।

अफ़सोस कि अठारह सौ नव्वे वर्ष गुज़रने के बाद वही यहूदियों का झगड़ा

इन मौलवियों और धार्मिक विद्वानों ने इस ख़ाकसार के साथ आरंभ कर दिया और एक बच्चा भी समझ सकता है कि जिस पहलू को इस ख़ाकसार ने अपनाया वह हज़रत ईसा का पहलू है और जिस पहलू पर विरोधी मौलवी जम गए वह यहूदियों का पहलू है। अब मौलवियों के पहलू की अमांगलिकता (नहूसत) देखो कि इसको ग्रहण करते ही उनको यहूदियों से समानता प्राप्त हुई। अभी कुछ नहीं गया यदि समझ लें। अब जबकि इस छानबीन से शारीरिक नुज़ूल का कुछ पता न लगा और न पहली किताबों में इसका कोई उदाहरण मिला और मिला तो यह मिला कि एलिया नबी के दुनिया में दोबारा आने का जो वादा था उससे अभिप्राय रूहानी नुज़ूल था न कि ज़ाहिरी। तो इस छान-बीन से सिद्ध हुआ कि जब से दुनिया की नींव पड़ी है अर्थात् हज़रत आदम से लेकर इस समय तक कभी किसी मनुष्य के बारे में नुज़ूल का शब्द जब आकाश की ओर सम्बद्ध किया जाए शारीरिक नुज़ूल पर चरितार्थ नहीं पाया और जो दावा करे कि पाया है वह उसका सबूत प्रस्तुत करे। और जब अब तक शारीरिक नुज़ूल पर चरितार्थ नहीं पाया तो अब ख़ुदा की सुन्नत के विरुद्ध जो उसकी किताबों में पाया जाता है कैसे चरितार्थ होगा। وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا

फिर हम कुछ कमी के तौर पर कहते हैं कि यदि कोई मूर्ख अब भी इस व्यापक और स्पष्ट वर्णन को न समझे तो इतना तो अवश्य समझता होगा कि विवादित स्थान में تَوَفِّیْ का शब्द वह सुदृढ़ और स्पष्ट शब्द है जिसके अर्थ निर्णय पा गए और निश्चित तौर पर सिद्ध हो गया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके अर्थ मारना बताया है और हज़रत इब्ने अब्बास[रज़ि०] ने भी इस के अर्थ मारना ही लिखा है और इमाम बुख़ारी ने भी मारने पर ही क्रियात्मक तौर पर गवाही दी है। परन्तु इसके मुकाबले पर नुज़ूल का जो शब्द है उसके बारे में यदि एक बड़े से बड़ा पक्षपाती कुछ तावीलें करे तो इस से अधिक नहीं कह सकता कि वह एक शब्द है जो समानता में शामिल है परन्तु निर्णीत (फैसला शुदा) शब्द और उसके स्पष्ट तथा सुदृढ़ अर्थों को छोड़कर संदिग्ध अर्थों की ओर दौड़ना उन्हीं लोगों का काम है जिनके दिल में रोग है।

यदि ईमान है तो वह शब्द जो स्पष्ट और व्यापक अर्थों में सम्मिलित हो गया उसी से पंजा मारो न कि किसी ऐसे शब्द से जो संदिग्ध में सम्मिलित रहा और संदिग्ध की व्याख्या ख़ुदा तआला के ज्ञान के सुपुर्द करो ताकि मुक्ति पाओ।

बड़ा भारी विवाद जो हम में और हमारे विरोधियों में है यही है जो मैंने वर्णन कर दिया है और निष्कर्ष यही निकला कि हम व्यापक एवं स्पष्ट तौर से पंजा मारते हैं जो क़ुर्आन से प्रमाणित, हदीस से प्रमाणित, सहाबा के कथनों से प्रमाणित, पहली किताबों के उदाहरणों से प्रमाणित, ख़ुदा की सुन्नत से प्रमाणित, इमाम बुख़ारी के कथन से प्रमाणित, इमाम मालिक के कथन से प्रमाणित, इब्ने क़य्यिम के कथन से प्रमाणित, इब्ने तैमियः के कथन से प्रमाणित तथा इस्लाम के कुछ अन्य समुदायों की आस्था से प्रमाणित। परन्तु हमारे विरोधियों ने केवल नुज़ूल का बहुमुखी शब्द पकड़ा हुआ है जो शब्दकोश क़ुर्आन तथा पहली आकाशीय किताबों के अनुसार अनेक अर्थों पर चरितार्थ होता है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहीं व्याख्या नहीं की कि इस से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का शारीरिक नुज़ूल अभिप्राय है न और कुछ क्योंकि जब नबियों के रूहानी नुज़ूल के बारे में एक पहली उम्मत मानती है और यहूदी जो हज़रत एलिया के शारीरिक नुज़ूल के प्रतीक्षक थे उन का ग़लती पर होना हज़रत मसीह की ज़ुबान से सिद्ध हो गया और उस अल्लाह की सुन्नत का कहीं पता न मिला जो शारीरिक नुज़ूल भी कभी किसी युग में गुज़र चुका। तो यही अर्थ निर्धारित हुए कि ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल से अभिप्राय रूहानी नुज़ूल है। अन्यथा यदि शारीरिक नुज़ूल भी सुन्नतुल्लाह में सम्मिलित है तो ख़ुदा तआला ने यहूदियों को क्यों इतनी परीक्षा में डाला कि वे अब तक इस विचार में ग्रस्त हैं कि सच्चा मसीह तब ही आएगा कि जब एलिया नबी आकाश से उतर आए। जब ख़ुदा तआला ने स्पष्ट वादा किया था कि एलिया नबी दोबारा दुनिया में आएगा और फिर उसके बाद मसीह आएगा। तो इस वादे को उसके प्रत्यक्ष रूप में पूरा किया होता और एलिया नबी को आकाश से पृथ्वी पर पार्थिव शरीर के साथ उतारा होता ताकि यहूदी लोग

जैसा कि एक लम्बे समय से भविष्यवाणी के अर्थ समझ बैठे थे और यहूदी धार्मिक विद्वानों तथा उलेमा और मुहद्दिसों ने एलिया के शारीरिक नुज़ूल को अपनी आस्था में सम्मिलित कर लिया था। इस भविष्यवाणी का अपनी आस्था के अनुसार पूर्ण होना देख लेते और फिर उन को हज़रत मसीह की नुबुव्वत में कुछ भी सन्देह शेष नहीं रहता। परन्तु उन पर यह कैसी विपदा पड़ी कि उनकी किताबों में तो उन को साफ़-साफ़ तथा स्पष्ट शब्दों में बताया गया कि वास्तव में एलिया ही दुनिया में दोबारा आएगा और वही सच्चा मसीह होगा जो एलिया के नुज़ूल के बाद आए। परन्तु यह भविष्यवाणी अपने प्रत्यक्ष अर्थों पर पूरी न हुई और हज़रत मसीह आ गए और उनको यहूदियों के सामने बड़ी कठिनाइयों का सामना हुआ। अन्ततः एक ऐसी वास्तविकता से दूर तावील पर ज़ोर दिया गया जिस से यहूदियों को कहना पड़ा कि ईसा सच्चा मसीह नहीं है बल्कि एक मक्कार एवं नास्तिक है जो अपने मतलब के लिए एक स्पष्ट भविष्यवाणी को प्रत्यक्ष (अर्थ) से फेरकर रूहानी नुज़ूल को मानता है। अतः इस कारण से करोड़ों लोग काफ़िर और इन्कारी रह कर नर्क में चले गए। हे मुसलमानो! इस स्थान को तनिक ध्यानपूर्वक पढ़ो कि आप लोगों की बातें एक ही हो गईं। निश्चित समझो के मोमिन की आदत में सम्मिलित है कि वह दूसरे के हाल से नसीहत ग्रहण करता है-

فَاعْتَبِرُوْا يَا اُولِي الْاَبْصَارِ وَاسْئَلُوْا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

यदि कहो कि हम कैसे विश्वास करें कि यह सही घटना है तो इसका उत्तर यही है कि यह मामला दो क़ौमों का निरन्तरताओं से है और केवल यह कहना कि वे किताबें अक्षरांतरित और (कुछ) परिवर्तित हो गईं ऐसी निरन्तरताओं को कमज़ोर नहीं कर सकता। हां इस स्थिति में हो सकता था कि ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में उस कथन को झुठलाता। अतः जब इस मामले का झूठा होना हदीस और क़ुर्आन से सिद्ध नहीं होता तो हम कथनीय निरन्तरताओं से किसी प्रकार इन्कार नहीं कर सकते।★ बल्कि यदि यह भी मान लें कि वे समस्त

★**नोट –** आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आने वाले मसीह को अपनी उम्मत में

किताबें ख़ुदा तआला की ओर से उतरी ही नहीं और सर्वथा मनुष्य की लिखी हैं फिर भी हम ऐतिहासिक सिलसिले को किसी प्रकार मिटा नहीं सकते। और जो बात ऐतिहासिक पद्धति पर दो क़ौमों की सर्वसम्मत गवाही द्वारा सिद्ध हो गई अब वह संदिग्ध और काल्पनिक नहीं ठहर सकती। जैसा कि हम रामचन्द्र जी, कृष्ण जी, विक्रमाजीत और बुद्ध से इन्कार नहीं कर सकते। हालांकि हम इन किताबों को ख़ुदा तआला की तरफ़ से नहीं समझते, फिर क्यों इन्कार नहीं कर सकते? ऐतिहासिक निरन्तरता के कारण।

कुछ अधमुल्ला अद्‌भुत मूर्खता के गढ़े में पड़े हुए हैं। उन्होंने जो एक तहरीफ़ (अक्षरांतरण) का शब्द सुन रखा है उचित, अनुचित अवसर पर उसी को प्रस्तुत कर देते हैं और ऐतिहासिक निरन्तरता को उपेक्षित कर दिया है बल्कि उनको मिटाना चाहते हैं। यह बहुत शर्मनाक बात है कि हमारी क़ौम में ऐसे लोग भी मौलवी के नाम से प्रसिद्ध हैं कि क़ौमी निरन्तरताओं को जो इतिहास के सिलसिले में आ गई हैं स्वीकार नहीं करते और अकारण असंबधित भागों को अक्षरांतरण में सम्मिलित करते हैं और यह नहीं सोचते कि इस अवसर पर यदि यहूदी तहरीफ़ (अक्षरांतरण) करते तो वह अक्षरांतरण ईसाइयों के उद्‌देश्य के विरुद्ध ठहरता, और यदि ईसाई अक्षरांतरण करते तो यहूदियों के दावे के विपरीत होता तथा जो शब्द तौरात की किताबों में मौजूद हैं वे ईसाइयों के उद्‌देश्य को बहुत ही हानिप्रद पड़े हैं। क्योंकि इन से हज़रत एलिया के शीरारिक नुज़ूल की भविष्यवाणी प्रकट होने से पूर्व हज़रत मसीह निश्चित तौर पर सिद्ध होती है तो इस स्थिति में अक्षरांतरण करने में ईसाइयों का यहूदियों के साथ सहमत होना ऐसा है जैसा कि कोई अपने हाथ से अपनी नाक काटे। कारण यह कि यदि एलिया के नुज़ूल की भविष्यवाणी को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करें तो फिर हज़रत ईसा का सच्चा नबी होना असंभव बातों में से है, क्योंकि अब तक एलिया नबी पार्थिव शरीर के साथ आकाश से नहीं उतरा तो फिर ईसा

से ठहराना रूहानी नुज़ूल का समर्थक है जिस से सिद्ध होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभिप्राय रूहानी नुज़ूल था न कि कुछ और। (इसी से)

जिस का उसके बाद आना आवश्यक था पहले ही क्योंकर आ गया। और यदि प्रत्यक्ष पर चरितार्थ न करें और एलिया के नुज़ूल को नजूले रूहानी क़रार दें तो फिर नुज़ूल-ए-ईसा की भविष्यवाणी में क्यों प्रत्यक्ष पर जम बैठें। नुज़ूल सच्चा और उस पर हम ईमान लाते हैं बल्कि उस का प्रकटन भी देख लिया। परन्तु जिन अर्थों की दृष्टि से यहूदी बन्दर और सुअर कहलाए और ख़ुदा तआला की किताबों में लानती ठहरे। इस प्रकार के नुज़ूल के अर्थ हिदायत पहुंचाने के बाद वही करे जिसको बन्दर और सुअर बनने की रुचि हो। ख़ुदा तआला सच्चे मोमिनों को ऐसे अर्थों से अपनी शरण में रखे जो इस लानत की खुशख़बरी देते हैं जो पहले यहूदियों पर आ चुकी है। इस मामले में अधिक क्या लिखें और क्या कहें जिन को ख़ुदा तआला हिदायत न दे हम कैसे दे सकते हैं, जिन की आंखें वह मालिक न खोले हम क्योंकर खोल सकते हैं। जिन मुर्दों को वह जीवित न करे हम क्योंकर (जीवित) करें। **हे मालिक और शक्तिमान ख़ुदा अब फ़ज़्ल कर और रहम कर और मध्य से इस फूट को दूर कर और सच को प्रकट कर तथा झूठ को मिटा कि सब क़ुदरत और शक्ति और दया तेरी ही है। आमीन, आमीन, आमीन**

तत्पश्चात् स्पष्ट रहे कि फ़रिश्तों के नुज़ूल से भी हमें इन्कार नहीं। यदि कोई सिद्ध कर दे कि फ़रिश्तों का नुज़ूल इसी प्रकार होता है कि वे अपने अस्तित्व को आकाश से खाली कर दें तो हम रुचि पूर्वक उस सबूत को सुनेंगे और यदि वास्तव में सबूत होगा तो हम उसे स्वीकार कर लेंगे। जहां तक हमें मालूम है फ़रिश्तों का अस्तित्व ईमीनी बातों में सम्मिलित है। ख़ुदा तआला का नुज़ूल समाउद्दुनिया की ओर तथा फ़रिश्तों का नुज़ूल दोनों ऐसी वास्तविकताएं हैं जो हम समझ नहीं सकते। हां ख़ुदा की किताब से इतना सिद्ध होता है कि ख़ल्क-ए-जदीद (नई पैदायश) के तौर पर पृथ्वी पर फ़रिश्तों का प्रकटन हो जाता है। वाह्य कल्बी के रूप में जिब्राईल का प्रकटन होना ख़ल्क़े जदीद था या कुछ और था। फिर क्या यह अवश्य है कि पहली ख़ल्क़ को नष्ट कर लें फिर ख़ल्क़-ए-जदीद को मानें बल्कि पहला ख़ल्क स्वयं आकाश पर सुदृढ़ और

क़ायम है और दूसरा ख़ल्क़ ख़ुदा तआला की विशाल क़ुदरत का एक परिणाम है। क्या ख़ुदा तआला की क़ुदरत से असंभव है कि एक अस्तित्व दो जगह दो शरीरों से दिखाए। हाशा व कल्ला हरगिज़ नहीं। क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

फिर शेख़ बतालवी साहिब ने अपनी समझ में हमारी पुस्तक तब्लीग़ की कुछ ग़लतियां निकाली हैं और हम अफ़सोस से लिखते हैं कि हठधर्मी के जोश से या मूर्खता के कारण सही और नियमानुसार तर्कीबों को भी ग़लती में शामिल कर दिया। यदि इस बात के लिए कोई विशेष मज्लिस निर्धारित हो तो हम उनको समझा दें कि ऐसी जल्दबाज़ी से क्या-क्या शर्मिन्दगियां उठानी पड़ती हैं। क़यामत की निशानियां प्रकट हो गईं। यह ज्ञान और नाम मौलवी इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। वे ग़लतियां जो उन्होंने बड़ी दौड़-धूप करके निकाली हैं। यदि वे सब इकट्ठी करके लिखी जाएं तो दो या डेढ़ पंक्ति के लगभग होंगी और उनमें से अधिकांश लिखने वाले (किताब) की भूल हैं और तीन ऐसी ग़लतियां जो पुनर्विचार उपलब्ध न होने के कारण या नज़र के उचटने के कारण रह गई हैं और शेष शेख़ साहिब की अपनी अल्प बुद्धि और समझ का घाटा है, जिस से सिद्ध होता है कि शेख़ साहिब ने कभी अरबी भाषा की ओर ध्यान नहीं दिया, अच्छा था कि चुप रहते और अपने दोषों को प्रकट न कराते। हमें रुचि ही रही कि शेख साहिब हमारी पुस्तकों के मुकाबले पर कोई सरस-सुबोध पुस्तक पद्य और गद्य में निकालें और हम से इनाम लें तथा हम से इक़रार करा लें कि वास्तव में वह मौलवी और अरबी जानने वाले हैं।

मैं कई बार वर्णन कर चुका हूं कि ये पुस्तकें जो लिखी गई हैं ख़ुदा की सहायता से लिखी गई हैं। मैं उनका नाम वह्यी और इल्हाम तो नहीं रखता परन्तु यह तो अवश्य कहता हूं कि ख़ुदा तआला की विशेष और विलक्षण सहायता ने ये पुस्तकें मेरे हाथ से निकलवाई हैं। मैंने कई बार प्रकाशित किया कि यदि कथित शेख साहिब जिन के बारे में मेरा विश्वास है कि वह शर्मिन्दगी में पड़े हुए हैं और अरबी ज्ञान से किसी संयोग से वंचित रह गए हैं मुकाबला

करके दिखाएं तो वह इस मुकाबले से मेरे इन समस्त दावों को नष्ट कर देंगे, परन्तु शेख साहिब इस ओर क्यों ध्यान नहीं देते। कौन सा संकट है जो उनको बाधक है। केवल यही संकट है कि वह अरबी भाषा से अनभिज्ञ और आजकल अपमान की हालत में ग्रस्त हैं। उनके लिए हरगिज़ संभव न होगा कि मुकाबला कर सकें। यह वही इल्हाम है जो प्रकट हो रहा है कि اِنِّیْ مُهِیْنٌ مَنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ यह वही मुहम्मद हुसैन है जो इस खाकसार के बारे में जगह-जगह कहता फिरता था कि यह व्यक्ति बड़ा अनाड़ी है। अरबी क्या इसे एक सीग: तक नहीं आता और वे उच्च श्रेणी के विद्वान जो मेरे साथ हैं उनको कहता था कि ये लोग केवल मुंशी हैं। तो ख़ुदा तआला के स्वाभिमान (ग़ैरत) ने चाहा कि उसका पर्दाफ़ाश करे (अर्थात् उस के दोष प्रकट करे) और उसके घमंड को तोड़े तथा उसे दिखाए कि स्वयं को अच्छा समझने और अहंकार के ये फल हैं। तो इस से अधिक और क्या अपमान होगा कि जिस व्यक्ति को अनाड़ी समझता था और स्टेज पर चढ़कर तथा मज्लिसों में बैठ कर बार-बार कहता था कि अरबी भाषा से यह मनुष्य बिल्कुल अनभिज्ञ है और सबसे बड़ा मूर्ख है। उसी के हाथ से ख़ुदा तआला ने उसे लज्जित और अपमानित किया। यदि यह निशान अपने समस्त मित्रों से सहायता लेता और 'नूरुलहक़' तथा 'करामातुस्सादिक़ीन' का उत्तर लिखता। इस आदमी को बड़े-बड़े इनामों के वादे दिए गए। हज़ार लानत का भंडार आगे रखा गया परन्तु इस ओर ध्यान न दिया। अब यह परिणाम सच के विरोध का है। हे आंखों वाले लोग अल्लाह का तक़्वा ग्रहण करो।

याद रहे कि कथित शेख़ साहिब का यह बहाना कि 'नूरुल हक़' में पादरी भी सम्बोधित हैं, इसलिए मुकाबले पर पुस्तक लिखने से पहलू बचाया गया अत्यन्त छलपूर्ण बहाना है। मानो एक बहाना ढूंढा है कि किसी प्रकार जान बच जाए परन्तु बुद्धिमान समझते हैं कि यह बहाना बहुत ही कच्चा और बेकार तथा एक लज्जाजनक चालाकी है, क्योंकि हमने तो लिख दिया है कि केवल पादरी लोग और अधर्मी लोग इस के मुकाबले से असमर्थ नहीं हैं। तो यदि शेख साहिब

मुकाबले पर पुस्तक प्रस्तुत करते तो पादरियों का और भी अपमान होता और लोग कहते कि मुलमानों ने ही यह पुस्तक लिखी थी तथा मुसलमानों ने ही उस के मुकाबले पर एक और पुस्तक लिखी थी परन्तु पादरियों से कुछ न हो सका। इसके अतिरिक्त तीन हज़ार रुपया इनाम पाते, इल्हाम का झूठा होना सिद्ध कर देते और क़ौम में सम्मान प्राप्त कर लेते तथा उनके कुछ पुराने मित्र जो कह रहे हैं कि बस मालूम हुआ कि मुहम्मद हुसैन उर्दू जानने वाला है अरबी नहीं जानता। उनके ये सब सन्देह दूर हो जाते परन्तु अब कि वह जब मुक़ाबले से अलग हो गए तो भविष्य में शर्म से बहुत दूर होगा कि इस जमाअत का नाम मुंशी रखें और स्वयं उन बातों से बचें जो मौलवियत के पद के लिए आवश्यक शर्त हैं। इन लोगों का विचित्र विश्वास है जो अब भी इन लोगों को अरबी जानने वाला ही समझ रहे हैं और मौलवी करके पुकारते हैं अत्यन्त हमदर्दी से पुनः मैं अन्तिम बार दावत करता हूं और पहली पुस्तकों से निराश हो कर पुस्तक 'सिर्रुल ख़िलाफ़त' की ओर शेख साहिब को बुलाता हूं। आप के लिए सत्ताईस दिन की समय सीमा और सत्ताईस रुपए नक़द का इनाम निर्धारित किया गया है और मैं इस पर सहमत हूं कि यह रुपया आप ही के सुपुर्द करूं यदि आप मांग करें और हम न भेजें तो हम झूठे हैं। हम यह रुपया पहले ही भेज सकते हैं परन्तु आप इक़रार प्रकाशित कर दें कि मैं सत्ताईस दिन में मुकाबले पर पुस्तक प्रकाशित कर दूंगा। यदि आप इस समय सीमा में प्रकाशित कर दें तो आपने न केवल सत्ताईस रुपया इनाम पाया बल्कि हम सार्वजनिक रूप से प्रकाशित कर देंगे कि हम ने इतना समय जो आप को शेख़-शेख़ करके पुकारा तथा मौलवी मुहम्मद हुसैन न कहा यह हमारी बहुत बड़ी ग़लती थी बल्कि आप तो वास्तव में बड़े फ़ाज़िल और साहित्यकार हैं और इस योग्य हैं कि आप हदीस के जो अर्थ समझें वही स्वीकार किए जाएं।

अब देखो कि इसमें आप को कितनी (अधिक) विजय प्राप्त होती है और फिर इसके बाद कुछ भी आवश्यकता नहीं कि आप रुपया एकत्र करने के लिए लोगों को कष्ट दें या इस नौकरी से त्याग पत्र देने के लिए तैयार हो

जाएं। क्योंकि जब आप ने मेरा मुकाबला कर दिखाया तो मेरा इल्हाम झूठा कर दिया। इस स्थिति में मेरा तो कुछ शेष न रहा। अतः आप को ख़ुदा तआला की क़सम है कि यदि आप को अरबी भाषा में कुछ भी अधिकार है, एक थोड़ा भी अधिकार है तो अब की बार तो हरगिज़ मुंह न फेरें और यदि इस पुस्तक में कुछ ग़लतियां सिद्ध हों तो आप के सामने पुस्तक की ग़लतियों से जितनी अधिक होंगी, प्रति ग़लती आप को एक रुपया दिया जाएगा। 25 जुलाई 1894 ई० तक यह दरख़्वास्त छाप कर किसी इश्तिहार द्वारा न भेजी तो समझ आ जाएगा कि आप इस से भी भाग गए।

और मुसलमानों पर अनिवार्य है कि इन नादानों को जो नाम के मौलवी हैं और अपने प्रवचनों और पुस्तकों को आजीविका का साधन बना रखा है ख़ूब पकड़ें और प्रत्येक स्थान पर जो ऐसा मौलवी कहीं प्रवचन देने के लिए उस से नर्मी के साथ यही प्रश्न करें कि क्या आप वास्तव में मौलवी हैं या किसी स्वार्थ के कारण अपना नाम मौलवी रख लिया है। क्या आप ने 'नूरुलहक़' का कोई उत्तर लिखा या 'करामातुस्सादिक़ीन' का कोई उत्तर लिखा है या पुस्तक 'सिर्रुलख़िलाफ़त' के मुक़ाबले पर कोई पुस्तक निकाली है। निस्सन्देह स्मरण रखें कि ये लोग मौलवी नहीं हैं। मुसलमानों पर अनिवार्य है कि 'नूरुलहक़' इत्यादि पुस्तकें अपने पास रखें और पादरियों तथा इस प्रजाति के मौलवियों को हमेशा उन से दोषी करते रहें और उन का पर्दाफ़ाश करके इस्लाम को उनके फ़ित्ने से बचाएं और ख़ूब सोच लें कि यह वही लोग हैं जिन्होंने धोखा देकर मौलवी कहला कर सैकड़ों मुसलमानों को काफ़िर ठहराया और इस्लाम में एक बड़ा फ़ित्नः पैदा कर दिया।

وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰی

लेखक

ख़ाकसार – ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहु अन्हु

الشيخ عبد الحُسين
الناكفورى

سأل عنى بعض الناس فى أمر الشيخ عبد الحسين ناكفورى، وقالوا إنه يدّعى أنه نائب المهدى الموعود، وأنه من الله رب العالمين فاعلموا أنّى ما توجهتُ إلى هذا الامر، وما أرىٰ أن أتوجه إليه، ويجرّد الله كلَّ حقيقة من أستارها، وكلّ شجرة تُعرَف من ثمارها، فستعرفون كل شجرٍ من ثمره إلى حين والذى اتّبعَنا فى مشربنا فهو منّا، والذى لم يتّبع فهو ليس منّا، وسيحكم الله بيننا وبينهم وهو أحكم الحاكمين إن الذين يبسطون يديهم إلى عرض الصحابة ويحسبون صَحْبَ رسول الله

अश्शेख़ अब्दुल हुसैन
नागपुरी

कुछ लोगों ने मुझ से शेख़ अब्दुल हुसैन नागपुरी के बारे में पूछा और यह कहा है कि वह महदी मौऊद के नायब होने का दावा करता है और यह कि वह रब्बुल आलमीन ख़ुदा की तरफ़ से है। तो जान लो कि मैंने इस मामले की तरफ़ ध्यान नहीं दिया और न ही इस ओर ध्यान देना उचित समझता हूं। अल्लाह तआला हर सच्चाई को उसके पर्दों से प्रकट कर देगा। प्रत्येक वृक्ष अपने फलों से पहचाना जाता है। कुछ समय पश्चात् तुम हर वृक्ष को उसके फल से पहचान लोगे। जिस व्यक्ति ने हमारी पद्धति में हमारा अनुकरण किया वह हम में से है और जिसने अनुसरण न किया तो वह हम में से नहीं। अल्लाह जल्द ही हमारे और उनके बीच फ़ैसला कर देगा और वह सब फ़ैसला करने वालों से अच्छा फ़ैसला करने वाला है। वे लोग जो सहाबा की मर्यादा पर दुस्साहस करते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा को काफ़िरों तथा दुराचारियों

صلى الله عليه وسلم من الكفرة الفجرة، أولئك ليسوا منا ولسنا منهم، فرّقوا دين الله و كانوا كالمفسدين أولٓئك الذين ما عرفوا رسول الله حق المعرفة، وما قدروا حق قدرِ خيرِ البريّة، فقالوا إن صحبه أكثرهم كانوا فاسقين كافرين ما اتقوا الفواحش، وخانوا كل خيانةٍ، ما ظهر منها وما بطن، و كانوا منافقين فصرف الله قلوبهم عن الحق، يتكبّرون فى الارض بغير الحق، يقولون نحن نحبّ آل رسول الله وما كانوا مُحبّين

يريدون أن يُرضوا قومهم بالسب والشتم، والله أحقُّ أن يُرضوه إن كانوا مؤمنين ألا إنهم على الباطل، ألا إنهم من المفسدين وغشِيهم من التعصب ما غشيهم فانثنوا كالعَمين

में से समझते हैं। उनका हम से और हमारा उन से कोई संबंध नहीं। उन्होंने अल्लाह के धर्म में फूट डाली और वे फ़साद करने वालों की तरह हो गए। यही वे लोग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यथोचित नहीं पहचाना और न ही सृष्टि में सर्वोत्तम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की क़द्र की जैसा कि क़द्र करने का हक़ था। इसलिए उन्होंने यह कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अधिकांश सहाबा पापी और काफ़िर थे। वे निर्लर्ज्ताओं से नहीं बचे और हर बेईमानी की प्रत्यक्ष भी और गुप्त भी और वे मुनाफ़िक थे। तो अल्लाह ने उन (शियों) के दिलों को सच से फेर दिया। वे पृथ्वी में अकारण अभिमान कर रहे हैं, यह दावा करते हैं कि हम आले रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रेम करते हैं। हालांकि वे प्रेम करने वाले नहीं हैं।

वे चाहते हैं कि अपनी क़ौम को (सहाबा किराम को) गालियां दे देकर प्रसन्न रखें। हालांकि यदि वे मोमिन होते तो अल्लाह उसका अधिक अधिकारी था कि वे उसे प्रसन्न रखते। सुनो कि वे झूठ पर हैं और सुनो कि वे फ़साद करने वालों में से हैं। पक्षपात ने उनको अच्छी तरह से ढका हुआ है। इसलिए

فلن يكون منهم وليُّ الرحمن أبدًا، ولهم عذاب أليم فى الآخرة، وهم من المحرومين إلا الذين تابوا وأصلحوا وطهّروا قلوبهم وزكّوا نفوسهم، وجاء وا ربَّ العرش مخلصين، فلن يضيع الله أجرهم ولن يُلحقهم بالمخذولين وتجدون أنوار عشق الله فى جباههم، وآثار رحمة الله فى وجوههم، وتجدونهم من المحبين الصادقين كُتب فى قلوبهم الإيمان، وحِيْلَ بينهم وبين شهواتهم، فلا يتبعون النفس إلا الحق، وخرّوا على حضرة الله متضرعين وبنوا لمحبوبهم بنيانا فى قلوبهم، وبرزوا له متبتلين يتبعون أحسنَ ما أُنزلَ إليهم من ربّهم، ويتقون حق التقاة، فتراهم كالميّتين يجتنبون سبَّ الناس

वे अंधों की भांति हो गए है। उनमें से कोई भी कभी कृपालु (रहमान) ख़ुदा का दोस्त नहीं होगा। और उन के लिए आख़िरत में कष्टदायक अज़ाब निश्चित है और वे वंचित रहने वालों में से हैं। उन लोगों के अतिरिक्त जिन्होंने तौब: की और सुधार किया और अपने दिलों को पवित्र और शुद्ध किया और अपनी आत्मशुद्धि की और अर्श के रब्ब के पास निष्कपट होकर आए। तो उन का प्रतिफल अल्लाह हरगिज़ व्यर्थ नहीं करेगा और उन्हें निराश्रय गिरोह में सम्मिलित नहीं करेगा। ऐसे लोगों के मस्तकों पर तुम अल्लाह के प्रेम के प्रकाश तथा उन के चेहरों पर अल्लाह की रहमत के लक्षण पाओगे तथा उन्हें सच्चे प्रेमियों में से पाओगे। उनके दिलों में ईमान अंकित हो गया है तथा उनके और उनकी कामवासना संबंधी इच्छाओं के बीच रोक डाल दी गई है। अत: वे सच के अतिरिक्त नफ़्स के पीछे नहीं चलते और वे गिड़गिड़ाते हुए ख़ुदा की चौखट पर गिर गए, अपने दिलों में अपने प्रियतम के लिए घर बनाया और सन्यास धारण करते हुए उस के सामने उपस्थित हो गए और जो उनके रब्ब की तरफ़ से उन पर उतारा गया वे उस में से जो उत्तम है उसका अनुकरण करते हैं। वे संयम धारण करते हैं जैसा कि संयम धारण करने का हक़ है।

وغيبتـهم، ويتّقـون الفواحـش مُسـتغفرين ويتبعـون الرسـول حـق الاتبـاع فتراهـم فيـه كالفانـين وكذالـك تعـرف الفاسـقين بسـيماهم وشِـركهم ونَتَـنِ كذبـهم، ومـا للإسـود والثعالـب يـا معشـر السـائلين؟

ثـم اعلمـوا أن معرفـة الإوليـاء موقوفـة عـلى عـين الاتقـاء، فـلا تجترئـوا ولا تعجلـوا علىٰ أحـد، فتنـقلبوا مجرمين وسـارِعوا إلى حسـن الـظن مـا اسـطعتم، وأحسـنوا والله يحـب المحسـنين ولا يجرِ مَنّكـم شـقاق أحـد أن تعـادوا قومًـا صالحـين إن الله يمـنّ عـلى مـن يشـاء مـن عبـاده، ولا يُسـأل عمـا يفعـل، فـلا تنكـروا كالمجترئـين ولا تسـتخفّوا سـبَّ أوليـاء الله، إنـهم قـوم يغضـب الله لـهم، ويصـول

तो तू उन्हें धिक्कारे हुए लोगों की तरह पाएगा। वे लोगों को गाली देने और उनकी चुग़ली करने से बचते हैं और (ख़ुदा से) अपने पापों की क्षमा मांगते हुए अश्लील बातों से बचते हैं। वे रसूल का पूर्ण रूप से अनुकरण करते हैं। तू उनको रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में लीन (फ़ना) पाता है और इसी प्रकार तो पापियों को उन के चेहरे, उनके शिर्क और उनके झूठ की दुर्गन्ध से पहचान जाएगा। हे मांगने वालों के गिरोह! भला शेरों और लोमड़ियों का क्या मुक़ाबला?

फिर यह भी जान ले कि वलियों की पहचान तक़्वा (संयम) की आंख पर निर्भर है। इसलिए किसी के विरुद्ध न तो साहस करो और न ही जल्दबाज़ी से काम लो, अन्यथा स्वयं अपराधी बन जाओगे तथा जितना भी तुम्हारा सामर्थ्य हो सुधारणा में जल्दी करो तथा उपकार करो और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है। किसी मनुष्य की शत्रुता तुम्हें इस बात पर तत्पर न करे कि तुम नेक लोगों से शत्रुता करने लगो! अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उपकार करता है और उस से पूछा नहीं जाता जो वह करता है। इसलिए दुस्साहस करने वालों की तरह इन्कार न करो। ख़ुदा के वलियों को बुरा-भला

علی معادیھم، و إنھم من المنصورین ولا تجاوروھم إلا بالتی ھی أحسن، ولا تجترئوا ولا تعتدوا إن کنتم متقین ومن عادیٰ صادقا فقد مسّتہ نفحۃ من العذاب، فیا حسرۃ علی المستعجلین و إن کان أحد منکم یُعادی الصادق فأَعِظُہ أن یعود لمثلہ أبدًا إن کان من المتورّعین

ومن جاءہ الحق فلم یقبلہ وزاورَ ذاتَ الشمال فسیبکی أسفا، وما کان اللہ مُھلِکَ قوم حتی یُتمّ حجتہ علیھم، فإذا أبوا فیأخذھم ملیکٌ مقتدر، فاتقوہ یا معشر الغافلین

कहने को तुम कोई मामूली बात न समझो, क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जिनके लिए अल्लाह प्रकोप करने वाला होता है और उनके शत्रुओं पर आक्रमण करता है और वह निस्सन्देह सहायता प्राप्त लोगों से है। उन से अच्छी ही संगत पैदा करो। यदि तुम संयमी हो तो न धृष्टता (गुस्ताख़ी) करो न सीमा से बाहर जाओ। जिसने भी सच्चे से शत्रुता की उसे अज़ाब की लपट ने आ लिया। अतः अफसोस है जल्दबाज़ी पर। यदि तुम से कोई सच्चे से शत्रुता रखता है ऐसे व्यक्ति को यदि वह संयमियों में से है मैं यह नसीहत करता हूं कि वह भविष्य में ऐसा करने से रुका रहे।

और जिस के पास सच आया और उसने उसे स्वीकार न किया और बाईं और फिर गया तो वे अवश्य निराशा से रोएंगे। और अल्लाह किसी क़ौम को तबाह नहीं किया करता जब तक कि वह उन पर अपने समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण न कर दे। फिर जब वे इन्कार कर दें तो सम्पूर्ण क़ुदरतों का मालिक ख़ुदा उन्हें पकड़ लेता है। अतः हे लापरवाहों के गिरोह! तुम उस से डरते रहो।

المكتُوب إلىٰ عُلمَاء الهند

فمنهم المولوي عبد الجبار الغزنوي، والمولوي عبد الرحمان اللكوكوي، والمولوي غلام دستكير القصوري، والمولوي مشتاق أحمد اللودهيانوي، والمولوي محمد إسحاق البتيالوي، والقاضي سليمان، والمولوي رشيد أحمد الكنكوئي، والمولوي محمد بشير البوفالوي، والمولوي عبد الحق الدهلوي، والمولوي نذير حسين الدهلوي، والشيخ حسين عرب البوفالوي، والحافظ عبد المنان الوزيرآبادي، والمولوي شاه دين اللودهانوي، والمولوي عبد المجيد الدهلوي، والمولوي عبد العزيز اللوديانوي، والمولوي عبد الله تلوندوي، والمولوي نذير حسين الانبيتوي السهارنفوري

بسم الله الرحمٰن الرحيم الحمد لله الذى يُطلع القمر بعد دُجى المحاق، ويُغيث بعد المحل بالبُعاق، ويرسل الرّياح بعد

हिन्दुस्तान के उलेमा की ओर एक पत्र

इन (उलेमा) में मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी, मौलवी अब्दुर्रहमान लखूकवी, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी, मौलवी मुश्ताक़ अहमद लुधियानवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी मुहम्मद बशीर भोपालवी, मौलवी अब्दुल हक़ देहलवी, मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी, शेख़ हुसैन अरब भोपालवी, हाफ़िज़ अब्दुल मन्नान वज़ीराबादी, मौलवी शाहदीन लुधयानवी, मौलवी अब्दुल मजीद देहलवी, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ लुधियानवी, मौलवी अब्दुल्लाह तलवंडवी, और मौलवी नज़ीर हसन अंबेटवी सहारनपुरी सम्मिलित हैं।

अल्लाह का नाम लेकर जो असीम कृपा करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है। सच्ची प्रशंसा उस अल्लाह को योग्य है जो चन्द्रमा को घोर

الاحتباس، ويهديى عباده بعد وساوس الخنّاس، ويُظهر نوره عند إحاطة الظلمات، وينزل رُشدًا عند طوفان الجهلات؛ والصلاة والسلام على سيد الرسل وخير الكائنات، وأصحابِه الذين طهّروا الارض من أنواع الهنات والبدعات، وآلِه الذين تركوا بأعمالهم أسوة حسنة للطيبين والطيبات، وعلٰى جميع عباد الله الصالحين

أمّا بعد فيا عباد الله، إنكم أنتم تعلمون أن ريح نفحات الإسلام كيف ركدت، ومصابيحه كيف خبَتْ، والفتن كيف عمّت و كثُرت، وأنواع البدع كيف ظهرت وشاعت، وقد مضٰى رأس المائة الذى كنتم ترقبونه، ففكِّروا لِمَ ما

अंधकारमय रातों के बाद निकालता, सूखा पड़ने के बाद मूसलाधार वर्षा बरसाता, घुटन के बाद हवाएं भेजता, खन्नास शैतान के भ्रमों के बाद अपने बन्दों का मार्ग दर्शन करता, अंधकारों के छा जाने के समय अपना प्रकाश प्रकट करता और मूर्खताओं के तूफ़ान के अवसर पर हिदायत उतारता है। दरूद और सलाम हो समस्त रसूलों के सरदार और कायनात के श्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उन समस्त सहाबा पर जिन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार की बुराइयों और बिदअतों से समस्त पृथ्वी को पवित्र एवं शुद्ध कर दिया। और (दरूद तथा सलाम हो) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल (सन्तान) पर जिन्होंने अपने कर्मों से पवित्र पुरुषों और पवित्र स्त्रियों के लिए उत्तम नमूना छोड़ा तथा अल्लाह के सम्पूर्ण नेक बन्दों पर भी दरूद-व-सलाम हो।

तत्पश्चात् हे अल्लाह के बन्दो! तुम जानते हो कि इस्लाम की सुगंधित हवाएं किस प्रकार थम गईं और उस के दीपक किस प्रकार बुझ गए और फ़ित्ने किस प्रकार सार्वजनिक तथा प्रचुर हो गए और कैसे भिन्न-भिन्न प्रकार की बिदअतें प्रकट हुईं और फैल गईं। और उस सदी का सर गुज़र गया जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे थे। अत: विचार करो और सोचो कि क्यों वह मुजद्दिद प्रकट नहीं हुआ

ظهر مجدد كنتم تنتظرونه؟ أظننتم أن الله أخلفَ وعده أو كنتم قومًا غافلين فاعلموا أن الله قد أرسلنى لإصلاح هذا الزمان، وأعطانى علم كتابه القرآن، وجعلنيى مجددًا لاحكم بينكم فيما كنتم فيه مختلفين فلِمَ لا تطيعون حَكَمَكُم ولِمَ تصولون منكرين؟ وما كنتُ من الكافرين ولا من المرتدين، ولكن ما فهمتم سرَّ الله، وحار فهمكم، وفرط وهمكم، وكفّرتمونى، وما بلغتم معشار ما قلتُ لكم، وكنتم قومًا مستعجلين ووالله إنى لا أدّعى النبوة ولا أجاوز الملة، ولا أغترف إلا من فضالة خاتم النبيين وأؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله، وأصلى وأستقبل القبلة، فلِم

जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे थे। क्या तुम विचार करते हो कि अल्लाह ने वादे को पूरा नहीं किया है या फिर तुम स्वयं लापरवाह क़ौम हो? अत: भली भांति जान लो कि अल्लाह ने मुझे इस युग के सुधार के लिए भेजा है। और उसने अपनी किताब क़ुर्आन का ज्ञान मुझे प्रदान किया है और मुझे मुजद्दिद बनाया है ताकि मैं तुम्हारे बीच उन बातों का फैसला करूं जिनमें तुम परस्पर मतभेद रखते हो। फिर तुम अपने हकम की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते और इन्कार करते हुए क्यों आक्रमणकारी होते हो। हालांकि न तो मैं काफ़िर हूं और न ही मुर्तद। परन्तु तुम अल्लाह के भेद को समझ नहीं पाए। तुम्हारी बुद्धि जाती रही और तुम्हारा भ्रम बढ़ गया और तुम ने मुझे काफ़िर ठहराया। और जो कुछ मैंने तुम से कहा उसके दसवें भाग तक भी तुम नहीं पहुंच सके। तुम तो बहुत जल्द बाज़ क़ौम हो और ख़ुदा की क़सम मैं (स्थायी) नुबुव्वत का दावेदार नहीं और (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मिल्लत से बाहर नहीं जा रहा। मैंने तो केवल ख़ातमुन्नबिय्यीन की अनुकम्पाओं से चुल्लू भरा है। मैं अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों तथा उसके रसूलों पर ईमान रखता हूं। नमाज़ पढ़ता हूं और किब्ल: की तरफ़ मुंह करता हूं फिर तुम मुझे क्यों काफ़िर ठहराते

تكفّرونني؟ ألا تخافون الله رب العالمين؟

أيها الناس لا تعجلوا عليّ، ويعلم ربّي أني مسلم، فلا تُكفّروا المسلمين وتدبَّروا صحف الله، وفكِّروا في كتاب مبين وما خلقكم الله لتكفّروا الناس بغير علم، وتتركوا طرق رفق وحلم وحسن ظن، وتلعنوا المؤمنين لِمَ تخالفون قول الله وأنتم تعلمون؟ أخُلقتم لتكفير المؤمنين أو شققتم صدورنا، ورأيتم نفاقنا وكُفرنا وزورنا؟ فأيها الناس، توبوا توبوا وتندموا، ولا تغلُوا في ظنكم ولا تُصرّوا، واتقوا الله ولا تجترئوا ولا تيأسوا من روح الله، وإنه لا يُضيع أمة خير المرسلين خلَق الناس ليعبدوا، وأرسل الرسل ليعرفوا،

हो? क्यों तुम अल्लाह रब्बुल आलमीन से नहीं डरते?

हे लोगो! मेरे विरुद्ध फ़ैसले में जल्दी न करो। मेरा रब्ब जानता है कि मैं मुसलमान हूं। अत: तुम मुसलमानों को काफ़िर न ठहराओ। अल्लाह की किताबों पर विचार करो और किताबे मुबीन (क़ुर्आन) पर विचार करो। अल्लाह ने तुम्हें इसलिए तो पैदा नहीं किया था कि तुम जानने के बिना ही लोगों को काफ़िर ठहराओ और नर्मी, सहनशीलता और सुधारणा के मार्गों को छोड़ दो और मोमिनों पर लानतें डालते रहो। जान-बूझ कर अल्लाह के कथन का विरोध क्यों करते है। क्या तुम्हें मोमिनों को काफ़िर ठहराने के लिए ही पैदा किया गया था, या (फिर) तुम ने हमारे सीनों को चीर कर देखा है और उनमें हमारे कपट, हमारे कुफ्र और हमारे झूठ को तुम ने देखा है। अत: शर्म करो तथा अल्लाह से डरो और गुस्ताख़ी न करो और अल्लाह की रहमत से निराश न हो। निस्सन्देह वह रसूलों में सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को नष्ट नहीं करेगा। उसने लोगों को इसलिए पैदा किया है ताकि वे इबादत करें। और रसूलों को भेजा ताकि वे मारिफ़त पैदा करें और ताकि वह (अल्लाह) उनकी नैतिक बातों में फैसला करे और उसने समस्त आदेश खोल-खोल कर वर्णन कर दिए ताकि वे

وليحكُم فيما اختلفوا، وبيّن الاحكام ليطيعوا ويُوجَروا، وبعث المجددين ليُذكّر الناس ما ذهلوا، ودقّق معارفهم ليُبتلوا، وليعلَم الله قومًا أطاعوا وقومًا أعرضوا، وشرع البيعة لاهل الطريقة ليتوارثوا فى البركات ويتضاعفوا، وأوجب عليهم حسن الظن ليجتنبوا طرق الهلاك ويُعصَموا، وفتح أبواب التوبة ليُرحَموا ويُغفَروا، والله أوسع فضلا ورحما وهو أرحم الراحمين وما كان لى أن أفترى على الله، والله يُهلك قوما ظالمين

وإنى سُمّيتُ عيسٰى ابن مريم بأحكام الإلهام، فما كان لى أن أستقيل من هذا المقام بعدما أقامنى عليه أمر

फ़र्माबर्दारी करें और प्रतिफल पाएं। और उसने मुजद्दिदों को भेजा ताकि वह लोगों को भुलाई जा चुकी (शिक्षा) याद कराए और उनको बारीक मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) प्रदान करे ताकि वे सन्यास धारण करें और ताकि अल्लाह आज्ञाकारी क़ौम और विमुख होने वाली क़ौम को प्रकट कर दे। और उसने सूफ़ी लोगों के लिए बैअत की व्यवस्था जारी की ताकि वे बरकतों के वारिस बनें और बढ़ते चले जाएं। और उसने उन पर सुधारणा को अनिवार्य किया ताकि वे तबाही के मार्गों से बचें और सुरक्षित किए जाएं तथा उसने तौब: के दरवाज़े खोल दिए ताकि उन पर रहम किया जाए तथा वे क्षमा किए जाएं। और अल्लाह कृपा तथा दया में बहुत विशाल है और सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है। मेरे लिए यह संभव नहीं कि मैं अल्लाह पर झूठ बांधूं। अल्लाह अत्याचारी क़ौम को मार देगा।

इल्हामी आदेशों के अनुसार मेरा नाम ईसा इब्ने मरयम रखा गया है और मेरे लिए यह संभव नहीं कि मैं इस पद से पृथक हो जाऊं इसके बाद कि सर्वज्ञ ख़ुदा के आदेश से मुझे इस पद पर खड़ा किया गया है। और मैं उसे ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेशों और ख़ैरुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि

اللّٰہ العلام، وما أراہ مخالفا لنصوص کتاب اللّٰہ ولا آثار خیر المرسلین بل زلّتْ قدمکم، وما خشیتم ندمکم، وما رجعتم إلی القرآن، وما أمعنتم فی الآثار حق الإمعان، وترکتم طرق الرشد والسدد، وملتم إلی التعصب واللدد، وغشِیتکم ھوی النفس الإمّارۃ، فما فھمتم معانیی العبارۃ، ووفقتم موقف المتعصبین یا حسرۃ علیکم إنکم تنتصبون لإزراء الناس، ولا ترون عیوب أنفسکم من خدع الخناس، وتمایلتم علی الدنیا وأعراضھا غافلین وواللّٰہ إن جمع الدنیا والدین أمرٌ لم یحصل قط للطالبین، وإنہ أشد وأصعب من نکاح حُرّتَین ومعاشرۃ ضرّتَین، لو کنتم متدبّرین

اعلموا أن لباس التقوٰی لا ینفع أحدًا من غیر حقیقۃ

वसल्लम की हदीसों के विरुद्ध नहीं पाता बल्कि तुम्हारा पांव फिसल गया है और तुम्हें अपने शर्मिन्दा होने का भी कुछ डर नहीं। न तो तुम ने क़ुर्आन की तरफ़ रुजू किया है और न ही हदीसों पर यथोचित विचार किया है। तुम ने हिदायत और सीधे मार्गों को छोड़ दिया है और पक्षपात तथा झगड़े की ओर झुक गए हो और तामसिक वृत्ति की इच्छाओं ने तुम्हें ऐसा ढक लिया है कि तुम ने पक्षपात करने वालों जैसी पद्धति को अपनाया। हाय तुम पर अफ़सोस कि तुम लोगों के तिरस्कार के लिए तो हर पल तैयार रहते हो परन्तु शैतान की धोखेबाज़ी के कारण तुम्हें स्वयं अपने दोष दिखाई नहीं देते और तुम लापरवाह होकर दुनिया और उसके सामान की ओर झुक गए हो और ख़ुदा की क़सम दुनिया और दीन (धर्म) का एक स्थान पर इकट्ठा होना तो ऐसी बात है जो इच्छा रखने वालों को कभी प्राप्त नहीं हुई और यह दो आज़ाद स्त्रियों के साथ निकाह और दो सौतों के मिल जुल कर साथ रहने से कहीं कठिन और दुष्कर है। काश तुम इस पर विचार करते।

जान लो कि संयम का लिबास उस वास्तविकता के बिना जिसे केवल

يعلمها المولى، وما كلُّ سوداءَ تمرةً ولا كلّ صهباءَ خمرةً، وكم مِن مزوّر يعتلق برب العباد، اعتلاق الحرباء بالأعواد، لا يكون له حظ من ثمرتها، ولا علم من حلاوتها وكذلك جعل الله قلوب المنافقين؛ يصلّون ولا يعلمون ما الصلاة، ويتصدقون وما يعلمون ما الصدقات، ويصومون وما يعلمون ما الصيام، ويحجّون وما يعلمون ما الإحرام، ويتشهدون وما يعلمون ما التوحيد، ويسترجعون ولا يعرفون مَن المالك الوحيد، إنْ هم إلّا كالانعام بل من أسفل السافلين وأما عباد الله الصادقون، وعشّاقه المخلصون، فهم يصلِون إلى لُبّ الحقائق، ودُهن الدقائق، ويغرس الله في قلوبهم شجرة عظمته ودوحة جلاله وعزّته، فيعيشون بمحبته ويموتون لمحبته، وإذا جاء

अल्लाह ही जानता है किसी को लाभ नहीं दे सकता। हर काली वस्तु खजूर नहीं होती और हर लाल पीने की वस्तु शराब नहीं होती और कितने ही धोखेबाज़ हैं जो बन्दों के रब्ब से ऐसे चिमटते हैं जिस प्रकार गिरगिट वृक्षों से चिमटा होता है, परन्तु उसे न तो उस वृक्ष के फल से कुछ मिलता है और न ही उसे उस फल की मिठास का ज्ञान है। अल्लाह ने मुनाफ़िकों (कपट रखने वालों) के दिलों को ऐसा ही बनाया है। वे नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु नहीं जानते कि नमाज़ की वास्तविकता क्या है, वे हज करते हैं परन्तु वे नहीं जानते कि अहराम क्या चीज़ है? वे कलिम-ए-शहादत पढ़ते हैं परन्तु नहीं जानते कि तौहीद (एकेश्वरवाद) क्या है और वे इन्ना लिल्लाह पढ़ते हैं परन्तु वे नहीं पहचानते कि एकमात्र मालिक कौन है? वे केवल जानवर हैं बल्कि सब से घटिया मख़्लूक़ (सृष्टि) हैं और जहां तक अल्लाह के सच्चे बन्दों और उसके निष्कपट प्रेमियों का संबंध है तो वे वास्तविकताओं के मर्म और बारीकियों के निचोड़ तक पहुंचते हैं। और अल्लाह उनके दिलों में अपनी महानता और प्रताप तथा सम्मान का महान वृक्ष लगाता है। अत: वे उसके प्रेम में जीवित रहते हैं और उसके प्रेम में ही मरते

وقت الحشر فيقومون من القبور فى محبته قوم فانون، ولله موجَعون، وإلى الله متبتّلون، وبتحريكه يتحركون، وبإنطاقه ينطقون، وبتبصيره يبصرون، وبإيمائه يُعادون أو يُوالون الإيمان إيمانهم، والعدم مكانهم، سُتِروا فى ملاحف غيرة الله فلا يعرفهم أحد من المحجوبين يُعرفون بالآيات وخرقِ العادات والتأييدات مِن ربّ يتولاهم، وأنعمَ عليهم بأنواع الإنعامات يدركهم عند كل مصيبة، وينصرهم فى كل معركة بنصر مبين إنهم تلاميذ الرحمان، واللّٰهُ كان لهم كالقوابل للصبيان، فيكون كل حركتهم مِن يد القدرة، ومِن مُحرِّكٍ غاب من أعين البريّة، ويكون كل فعلهم خارقا للعادة، ويفوقون الناس فى جميع أنواع

हैं। और जब हश्र (कयामत) की घड़ी आएगी तब भी वे उसके प्रेम में डूबे हुए क़ब्रों से उठेंगे। वे ख़ुदा में फ़ना लोग हैं। वे अल्लाह के लिए कष्ट सहन करते हैं और ख़ुदा की तरफ़ अलग हो जाने वाले हैं उस के हरकत देने पर वे हरकत करते और उसके बुलाने पर बोलते हैं और उसके दिखाए देखते हैं और उसी के इशारे पर दुश्मनी या दोस्ती करते हैं। असल ईमान तो उन्हीं का ईमान है और नास्ति (नेस्ती) उन का स्थान है। वे अल्लाह के स्वाभिमान (ग़ैरत) के पर्दों में ऐसे छुपे हुए है कि कोई महजूब (छुपा हआ) व्यक्ति उनको पहचान नहीं सकता। वे निशानों, चमत्कारों और प्रतिपालक (परवरदिगार) के समर्थनों से पहचाने जाते हैं जो उन से दोस्ती रखता है और जिसने उन पर नाना प्रकार के इनाम किए, हर संकट के समय वह उनकी सहायता करता और हर युद्ध में वह स्पष्ट सहायता के साथ उनकी सहायता करता है। वे कृपालु ख़ुदा के शिष्य हैं। अल्लाह उनके लिए ऐसा ही है जैसे बच्चों के लिए दाइयां। उनकी प्रत्येक गतिविधि क़ुदरत के हाथ से और एक ऐसे प्रेरक अस्तित्व (अल्लाह) की तरफ़ से होती है जो सृष्टि की निगाहों से ओझल है। उनका वह कार्य विलक्षण होता है और नेकी के समस्त प्रकारों में वे दूसरे लोगों से श्रेष्ठ होते

السعادة؛ فصبرهم كرامة، وصدقهم كرامة، ووفائهم كرامة، ورضائهم كرامة، وحلمهم كرامة، وعلمهم كرامة، وحيائهم كرامة، ودعائهم كرامة، و كلماتهم كرامة، وعباداتهم كرامة، وثباتهم كرامة؛ وينزلون من الله بمنزلة لا يعلمها الخلق و إنهم قوم لا يشقى جليسهم، ولا يُرَدُّ أنيسهم، وتجد ريّا المحبوب فى مجالسهم، ونسيم البركات فى محافلهم، إن كنتَ لست أخشَمَ ومن المحرومين وينزل بركات على جدرانهم وأبوابهم وأحبابهم، فتراها إن كنتَ لستَ من قوم عمين

أيها النّاس قد تقطعت معاذيركم، وتبينت دقاريركم، وأقبلتم علىّ إقبالَ سفّاكٍ، ولكن حفظنى ربّى من هلاك، فأصبحتُ

हैं। उन का सब्र चमत्कार, उनका सच चमत्कार, उनकी वफ़ा चमत्कार, उनकी ख़ुशी चमत्कार, उन की सहनशीलता चमत्कार, उनका ज्ञान चमत्कार, उनकी लज्जा चमत्कार, उनकी दुआ चमत्कार, उनकी वाणी चमत्कार, उनकी इबादतें (उपासनाएं) चामत्कार और उनका अपने संकल्प पर सुदृढ़ रहना चमत्कार होता है और वे अल्लाह की तरफ़ से ऐसे पद पर आसीन होते हैं जिसे सृष्टि नहीं जानती, वे ऐसे लोग होते हैं जिन के साथ बैठने वाला दुर्भाग्यशाली नहीं रहता और न ही उनका प्रिय धिक्कारा जाता है। तू उनकी मज्लिसों में प्रियतम की ख़ुशबू और उनकी सभाओं में बरकतों की प्रात:काल की समीर का आन्नद महसूस करेगा बशर्ते कि तू सूंघने की योग्यता से रिक्त तथा वंचित रहने वालों में से न हो और उनके दरवाज़े तथा दीवार पर और उनके दोस्तों पर बरकतें उतरती हैं और यदि तू अंधों में से नहीं तो तू उन बरकतों को देख लेगा।

हे लोगो! तुम्हारे बहाने समाप्त हो चुके हैं और तुम्हारे बुरे झूठ प्रकट हो गए और तुम बेरहम आक्रमणकारी की तरह मेरी ओर बढ़े किन्तु मेरे रब्ब ने मुझे मरने से बचा लिया। तो मैं सफल और विजय पाने वालों में से हो गया। हे लोगो! तुमने बहुत अन्याय किया, इसलिए तुम बहुत जानने वाले और खबर रखने

مظفـرًا ومـن الغالبـين أيهـا النّـاس قـد اعتديتـم اعتـداءً كبـيرًا فاخشـوا عليمًـا خبـيرًا، ولا تجعلـوا أنفسـكم بنَخِّهـا وجَخِّهـا كعِظـام اسـتخرجت مخُّهـا، ولا تعثـوا فى الارض معتديـن وإنّى امـرؤٌ مـا أبـالى رفعـة هـذه الدنيـا وخفضهـا، ورفعهـا وخفضهـا، بـل أحِنّ إلى الفقـر والمتربـة، حنـينَ الشـحيح إلى الذهـب والفضـة، وأتـوق إلى التذلـل توقـانَ السـقيم إلى الدواء، وذى الخصاصـة إلى أهـل الثـراء، وأتـوكل عـلى الله أحسـن الخالقـين ومـا أخـاف حصائـد ألسـنة، وغوائـل كلِـمٍ مزخرفـةٍ، ويتـولانى ربى ويعصمـنى مـن كل شـرّ ومـن فتـن المعانديـن

أيهـا النّـاس لا تتبعـوا مَـن عـادىٰ، وقومـوا فـرادىٰ فـرادىٰ، ثـم فكـروا إن كنـتُ عـلى حـق، وأنتـم لعنتمـونى وكذّبتمـونى

वाले ख़ुदा से डरो और स्वयं को मेरे विरोधी प्रयासों में उन हड्डियों की तरह मत बनाओ जिन से उनका गूदा निकल चुका हो और अत्याचार करते हुए पृथ्वी में बरबादी न करो। मैं एक ऐसा मनुष्य हूं जो इस दुनिया का सम्मान, समृद्धि और दुनिया के सम्मान देने और उसकी खुशहाली की परवाह नहीं करता, बल्कि दरिद्रता और विनीतता का ऐसा मोहित हूं जैसा एक लालची मनुष्य सोने-चांदी का मोहित होता है और मैं विनम्रता का ऐसा शौक़ रखने वाला हूं जैसे एक रोगी दवा की ओर आकर्षित होता है और मुहताज धनवान की ओर। और मैं स्रष्टाओं में सर्वोत्तम स्रष्टा अल्लाह पर भरोसा करता हूं। मैं गाली-गलौजों तथा छल पूर्ण बातों के भयावह कष्टों से नहीं डरता मेरा रब्ब मुझे दोस्त रखता है और वह मुझे हर बुराई और दुश्मनों के फ़ित्नों से बचाता है।

हे लोगो! उस व्यक्ति का अनुकरण न करो जिसने विरोध किया और एक-एक करके खड़े होकर सोचो कि यदि मैं सच पर हूं और तुम ने मुझ पर लानत की, मुझे झुठालाया, मुझे काफ़िर ठहराया तथा मुझे दुख दिया तो फिर उन अत्याचारियों का अंजाम क्या होगा? मैंने स्वयं अपनी तरफ़ से नहीं बल्कि केवल

و كفّرتمونى وآذيتمونى، فكيف كانت عاقبة الظالمين؟ وما اقتبلتُ أمر الخلافة إلا بحُكم الله ذى الرأفة، وإنى بيدَى ربى الدابل، كصبيٍّ فى أيدى القوابل، وقد كنت محزونا من فتن الزمان، وغلبةِ النصارى وأنواع الافتنان، فلما رأى الله استطارةَ فَرَقى واستشاطةَ قلقى، ورأى أن قلبى ضجر، ونهر الدموع انفجر، وطارت النفس شعاعًا، وأُرعدت الفرائص ارتياعا، فنظر إلىّ تحننًا وتلطفًا، وتخيَّرنى ترحما وتفضلا، وقال إِنِّى جَاعِلُكَ فى الأَرْضِ خَلِيفَةً، وقال أَرَدْتُ أَنْ أَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ آدَمَ، فهذا كله من ربى، فلا تحاربوا الله إن كنتم متقين يفعل ما يريد، أأنتم تعجبون؟ وإنى قبلتُ أنى أذَلُّ الناس وأنى أجهَل الناس كما هو فى قلوبكم، ولكن كيف أردّ فضل أرحم الراحمين؟ وما تكلمتُ

मेरहबान (कृपालु) ख़ुदा के आदेश से ख़िलाफ़त के मामले का प्रारंभ किया है। मैं अपने प्रशिक्षण देने वाले रब्ब के हाथों में ऐसे ही हूं जैसे एक बच्चा दाइयों के हाथों में। मैं युग के फ़ित्नों, ईसाइयों के आधिपत्य और भिन्न-भिन्न प्रकार के फ़ित्नों के कारण शोकग्रस्त था। फिर जब अल्लाह ने मेरी अत्यन्त घबराहट और अत्यधिक बेचैनी देखी और यह देखा कि मेरा दिल बेचैन हो गया है और आंसुओं का दरिया वह निकला है और जान पर बन आई है तथा अत्यन्त घबराहट से पट्ठे (स्नायु) कपकपाने लगे हैं तो उस (अल्लाह) ने मुझ पर मेहरबानी और प्रेम की दृष्टि डाली और अपनी कृपा एवं दया से मुझे चुना और फरमाया कि मैं तुझे पृथ्वी में ख़लीफ़ा बना रहा हूं तथा फ़रमाया कि मैंने यह इरादा किया कि मैं ख़लीफ़ा बनाऊं। इसलिए मैंने आदम को पैदा किया। तो यह सब कुछ मेरे प्रतिपालक की ओर से है। तो यदि तुम संयमी हो तो अल्लाह से न लड़ो वह जो चाहता है वही करता है। क्या तुम आश्चर्य करते हो। माना कि जैसा तुम्हारे दिलों में है कि मैं लोगों में सब से तुच्छ और सब से कम ज्ञान रखता हूं परन्तु मैं सब दयालुओं में से सर्वाधिक दयालु के फ़ज़्ल को कैसे रद्द कर सकता हूं। इस बारे

قبلا فی ھذا الباب، بل عندی شھادۃ من الآثار و الکتاب، فھل أنتم تقبلون؟ أما ترون کیف بیّن اللّٰہ وفاۃ المسیح، و صدّقہ خیرُ الرسل بالتصریح، ورَدِفَھما تفسیرُ ابن عباس کما تعلمون؟ أیھا الناس ثم أنتم تنکرون وتترکون قول اللّٰہ ورسولہ ولا تخافون، وتُکِبّون علی لفظ النزول وتعلمون معناہ من زُبر الاوّلین وما قصّ اللّٰہ علیکم قصّۃً إلّا ولہ مثالٌ ذُکر فی صحف السابقین فکیف الضلال وقد خلت لکم الامثال؟ أتذرون سبل الحق متعمدین؟ وقال اللّٰہ ورزقکم فی السماء، وأخبرکم عن نزول الحدید واللباس والانعام و کل ما ھو تحتاجون

में मैंने यह बात बिना छान-बीन के नहीं की बल्कि मेरे पास हदीसों और ख़ुदा की किताब (क़ुर्आन) की गवाही मौजूद है क्या तुम उसे स्वीकार करते हो? क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि अल्लाह ने किस प्रकार मसीह की मृत्यु को खोल कर वर्णन कर दिया है और ख़ैरुर्रुसुल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस की स्पष्टतापूर्वक पुष्टि की। और जैसा कि तुम जानते हो हज़रत इब्ने अब्बास[रज़ि०] की तफ़्सीर ने इन दोनों (क़ुर्आन तथा हदीस) का समर्थन किया। हे लोगो! फिर भी तुम इन्कार करते हो और अल्लाह तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कथन को छोड़ते हो और डरते नहीं। और नुज़ूल के शब्द पर गिरे पड़े हो, हालांकि तुम उसके अर्थ पहली ख़ुदाई किताबों से ख़ूब जानते हो। अल्लाह ने तुम्हारे सामने ऐसी कोई बात वर्णन नहीं की कि जिस का उदाहरण पहली पुस्तकों में वर्णन न किया गया हो। फिर यह पथभ्रष्टता कैसी? जबकि तुम्हारे लिए ये सब उदाहरण गुज़र चुके हैं। क्या जान-बूझ कर तुम सच के मार्गों को छोड़ रहे हो? अल्लाह ने फ़रमाया है कि तुम्हारी आजीविका आकाश में है और उसने लोहे, लिबास, पशुओं और समस्त वे चीज़ें जिन की तुम्हें आवश्यकता है और यह तुम जानते हो कि ये सब वस्तुएं आकाश से नहीं उतरतीं बल्कि पृथ्वी से निकलती हैं। ये तो केवल प्रभावकारी सामान ताप, प्रकाश, वर्षा और हवाओं के प्रकारों के उतरने की तरफ़

إليـه، وتعلمـون أن هـذه الاشـياء لا تنـزل مـن السـماء بـل يحـدث فى الارضـين فمـا كان إلا إشـارة إلى نـزول الاسـباب المؤثـرة مـن الحـرارة والضـوء والمطـر والاهويـة، فمـا لكـم لا تتفكـرون وتسـتعجلون؟ تعلمـون ظاهـر الاشـياء وتنسـون حقائقهـا وتمرون عـلى آيـات الله غافلـين وإن كنتـم فى شـك مـن قـولى فانتظـروا مـآل أمـرى وإنى معكـم مـن المنتظريـن وكـم مـن علـوم أخفاهـا الله ابتـلاءً مـن عنـده، فاعلمـوا أن السـر مكنـون، ومـا فى يديكـم إلا ظنـون، فـلا تكفـرونى لظنونكـم يـا معشـر المنكريـن انتهُـوا خـيرًا لكـم، وإنى طبـتُ نفسـا عـن كل مـا تفعلـون مـن الإيـذاء

संकेत है। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सोच-विचार नहीं करते और जल्दबाज़ी करते हो परन्तु उनकी वास्तविकताओं को भुला देते हो और अल्लाह के निशानों से लापरवाही करते हुए गुज़र जाते हो। यदि तुम्हें मेरी इस बात के संबंध में कोई सन्देह हो तो मेरे बारे में अंजाम की प्रतीक्षा करो। मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करूंगा और कितनी ही ऐसी विद्याएं हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी तरफ़ से परीक्षा में डालने के लिए छुपा कर रखा हुआ है। इसलिए जान लो कि यह राज़ भी छुपा हुआ है। और तुम्हारे पास गुमानों के अतिरिक्त रखा ही क्या है। इसलिए हे इन्कार करने वालों के गिरोह! अपने गुमानों के कारण मुझे काफ़िर मत कहो। रुक जाओ यही तुम्हारे लिए अच्छा है, कष्ट देने, तिरस्कार, झुठलाने और काफ़िर कहने के जो भी कार्य तुम करते हो उसको खुशी से स्वीकार करता हूं। मैं अपनी शिकायत केवल अल्लाह के सामने प्रस्तुत करता हूं। बल्कि जब मैंने तुम्हारे मन के भारीपन को देख लिया और तुम्हारा उपेक्षा करना खुल कर मेरे सामने आ गया तो मैंने जान लिया कि यह मेरे रब्ब की तरफ़ से एक परीक्षा है। असल प्रसन्नता उसी की है यदि वह प्रसन्न हो जाए और वह सब दयालुओं से अधिक दयालु है। तो मैंने महान रब्ब को याद किया और उत्तम धैर्य का प्रदर्शन किया, परन्तु तुम हो कि तुम ने हिदायत न पाई, तुमने अन्याय किया और अत्याचार किया, अल्लाह ने तो

والتحقير والتكذيب والتكفير، وما أشكو إلا إلى الله، بل لما بصرتُ بانقباضكم وتجلّى لى إعراضُكم، علمتُ أنه ابتلاء من ربى، فله العُتبى حتى يرضى، وهو أرحم الراحمين فذكرتُ ربًّا جليلا، وصبرتُ صبرًا جميلًا، ولكنكم ما اهتديتم، وظلمتم واعتديتم، قال الله، فنبزّتم، وقال، فسخرتم، وقال يا عيسٰى إنّى مُتَوَفِّيكَ، فأنكرتم، وقال، فظننتم و كفّرتمونى ولعنتم، وقال، فتجسّستم، ثم صعّرتم وعبستم، وقال

لَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا

وقال۔ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا

यह फ़रमाया था कि किसी के नामों को न बिगाड़ो फिर भी तुम ने नाम बिगाड़े। उसने तो फ़रमाया था कि कोई क़ौम दूसरी क़ौम का मज़ाक न उड़ाए फिर भी तुम ने मज़ाक उड़ाया। उसने यह फ़रमाया था कि हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा तो तुम ने उसका इन्कार किया। उसने फ़रमाया था कि गुमानों की अधिकता से बचो तुम ने फिर भी कुधारणा की और मुझे काफ़िर ठहराया और लानत की। और (ख़ुदा ने) फरमाया जासूसी न करो फिर भी तुम ने जासूसी की। फिर तुम ने अंहकार किया और अप्रसन्नता से माथे पर बल पड़ गए और उसने फरमाया

لَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا (अलहुजूरात–13)

अनुवाद - तुम में से कोई दूसरे की चुग़ली न करे। क्या तुम में से कोई यह पसन्द करेगा कि वह अपने मुर्दा भाई का मांस खाए।

और फ़रमाया –

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا (अन्निसा – 95)

अनुवाद - तुम ऐसे व्यक्ति को जो तुम्हें सलाम करता है यह न कहो कि तू मोमिन नहीं।

फिर भी तुम ने चुग़ली की और काफ़िर कहा और इस समय तक मैंने तुम्हें रुक जाने वाला नहीं पाया। क्या तुम ने अल्लाह की पकड़ और क़ब्र की

فاغتبتم و كفّرتم، وما أراكم إلى هذا الحين منتهين
أنسيتم أَخْذَ الله وضغطةَ القبر، أو لكم براءة فى الزبر، أو أُذِنَ
لكم من الله رب العالمين فكروا ثم فكروا، أتفتى قلوبُكم
أن الله الذى يعينكم عند كل تردُّد هو أقوَى مثلَ هذا الزمان
عن مجدد؟ وقد كنتم تستفتحون من قبل، فلما جاء نصر الله
صرتم أول المعرضين ولويتم عنى عِذاركم، وأبديتم ازوراركم،
وصرفتم عنى المودّة، وبدلتم بالبغض المحبة، وذاب حسن
ظنكم واضمحلّ، ورحل حبكم وانسلّ، وصرتم أكبر المعادين
فلما رأيتُ أعراض التزوير وانتهاء الأمر إلى التكفير، علمتُ

तंगी को भुला दिया है या तुम्हारे लिए (आकाशीय) किताबों में बरी होने की कोई गारंटी है। या समस्त लोकों के प्रतिपालक अल्लाह की ओर से तुम्हें खुली इजाज़त है। सोचो और बार-बार सोचो! क्या तुम्हारे दिल फ़त्वा देते हैं कि वह अल्लाह जो हर दुविधा के अवसर पर तुम्हारी सहायता करता है वह इस जैसे फ़ित्नों से भरकर युग को मुजद्दिद से खाली रखेगा जब कि इस से पहले तुम विजय की दुआ करते थे। फिर जब अल्लाह की सहायता आ गई तो सर्वप्रथम तुम मुंह फेरने वाले बन गए और तुम मुझ से विमुख हो गए और अपनी विमुखता की अभिव्यक्ति की और मित्रता का मुंह मुझ से फेर लिया और प्रेम को वैर से बदल दिया और तुम्हारी सुधारणा पिघलते-पिघलते ग़ायब हो गई। तुम्हारा प्रेम कूच कर गया और खामोशी से खिसक गया तथा तुम सबसे बड़े शत्रुता करने वाले बन गए। फिर जब मैंने यह छल पूर्ण मुंह फेरना देखा और देखा कि यह मामला तो काफ़िर कहने की सीमा तक पहुंच गया है तो मैंने समझ लिया कि इस प्रकार के दोस्तों से सम्बोधित होना सर्वथा बदनामी का कारण है। फिर मैंने अरब के सम्माननीय और विद्वानों की ओर ध्यान दिया और मेरा विचार है कि वे मुझे स्वीकार करेंगे, मेरे पास आएंगे तथा मेरा सम्मान करेंगे। अत: उन मुबारक चेहरों के दर्शन ने मुझे प्रसन्नता प्रदान की और शुभ शकुन ने इस आनन्ददायक

أن مخاطبتی بهذه الإخوان مجلبة للهوان، فوجهتُ وجهی إلی أعزّة العرب والمتفقهین وإنی أری أنهم یقبلوننی ویأتوننی ویعظّموننی، فسرَّنی مرأی هذه الوجوه المبارکة، ودعانی التفاؤل بتلك الاقدام المبشرة إلی أن عمدت لتنمیق بعض الرسائل فی عربی مبین فهمَمْتُ لنفع تلك الإخوان بأن أکتب لهم بعض أسرار العرفان، فألفتُ التحفة و الحمامة، و نور الحق و الکرامة، ورسالة إتمام الحجة وهذه سِرّ الخلافة، وفیها منافع للذین وردتُ منهم مورد الکافرین وأرجو أن یغفر ربی لکل من یأتینی کالمقترفین المعترفین ألا تنظرون وما بقیی مِن حُلل الدین إلا أطمارًا مخرَّقة، وما مِن قصره إلا أطلالا محرَّقة، و کُنا مُضغة للماضغین أتعجبون مِن أن اللّٰه

कार्य करने के इरादे से अग्रसर होने को मुझे इतनी प्रेरणा दिलाई कि मैंने सुबोध अरबी भाषा में कुछ पुस्तकें लिखने का संकल्प कर लिया। तब मैंने उन भाइयों के हित के लिए यह इरादा किया कि उनके लिए कुछ मारिफ़त के रहस्य लिखूं। तो मैंने तुहफ़-ए-बग़दाद, हमामतुल बुश्रा, नूरुलहक़, करामातुस्सादिकीन, इत्मामुल हुज्जत और यह सिर्रुलख़िलाफ़त लिखीं तथा इन पुस्तकों में उन लोगों के लिए बहुत लाभ हैं जिन्होंने मुझे कुफ्र का पात्र ठहराया है। और मैं आशा रखता हूं कि अल्लाह मेरा रब्ब हर उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा जो अपने गुनाह करने का इक़रार करते हुए मेरे पास आएगा। क्या तुम देखते नहीं कि धर्म के लम्बे चोग़े पुराने चीथड़े होकर रह गए हैं और उस का महल केवल जले हुए खंडरों के रूप में शेष रह गया है, और हम शत्रुओं के लिए लुक़्मा (कौर) बन गए हैं। क्या तुम इस पर हैरान हो कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल और उपकार से तुम्हारी सहायता के लिए आ गया है और उसने तुम्हें अपनी दया की छाया से वंचित नहीं किया। क्या इस युग के लिए दज्जाल की आवश्यकता थी और वे कर्मठ प्रतिपालक (फ़अआल रब्ब) की सहायता के मुहताज न थे। तुम्हें क्या हो गया है? तुम किन

أدرككم بفضله ومنّته، وما أضاحكم عن ظل رحمته؟ أكانت لهذا الزمان حاجة إلى دجال، وما كانوا محتاجين إلى نصرة رب فعال؟ ما لكم كيف تخوضون؟ أين ذهبت قوة غور العقل وفهم النقل، وأين رحلت فراستكم، وأى آفة نزلت على بصيرتكم، أنكم لا تعرفون وجوه الصادقين والكاذبين؟ وقد لبثتُ فيكم عُمُرًا من قبله أفلا تعقلون؟ وإن رجلا يبذل قواه وكل ما رزقه الله وآتاه، لإعانة مذهب يرضاه، حتى يُحسب أنه أهله وذراه، وقد رأيتم مواساتى للإسلام، وبَذْلَ جهدى لملّة خير الانام، ثم لا تبصرون وعرضتُ عليكم كل آية قُبُلًا، ثم لا تنظرون وإنى جئتكم لأُنجيكم من مكرٍ مُرمِض وروعٍ مُومِض، ثم أنتم لا تفكرون وعزوتم إلىّ ادعاء النبوة، وما خشيتم الله عند هذه

बातों में पड़े हुए हो? तुम्हारी विचार शक्ति और तुम्हारी प्रतिभा कहां कूच कर गई? और तुम्हारे विवेक पर ऐसी कौन सी विपत्ति आ पड़ी कि तुम सच्चों और झूठों के चेहरे पहचान नहीं रहे। इस से पहले मैंने तुम्हारे अन्दर आयु की (एक लम्बी अवधि) गुज़री है क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते। एक मनुष्य जो अपनी सम्पूर्ण शक्तियां और जो कुछ उसे अल्लाह ने प्रदान किया है और दिया है वह उसके प्रिय धर्म की सहायतार्थ व्यय कर देता है, यहां तक कि वह उसका वास्तविक पात्र और शरण-स्थल एवं रक्षा-स्थल गिना जाता है। इस्लाम के लिए मेरी हमदर्दी और ख़ैरुलअनाम की मिल्लत के लिए मेरे (निरन्तर) प्रयास को तुम देख चुके हो, परन्तु फिर भी विवेक से काम नहीं लेते। इस से पहले भी मैंने प्रत्येक निशान तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया किन्तु तुम फिर भी विचार नहीं करते। और निस्सन्देह मैं तुम्हें कष्टदायक छल और कम्पन छा जाने वाले भय से मुक्ति देने के लिए तुम्हारे पास आया हूं फिर भी तुम सोच-विचार नहीं करते। तुम ने मेरी ओर (स्थायी) नुबुव्वत का दावा सम्बद्ध किया है और यह झूठ गढ़ते समय तुम अल्लाह से न डरे और तुम डरने वाले ही नहीं। तुम मेरी बात नहीं

الفرية، وما كنتم خائفين ولا تفهمون مقالى، وتحسبون أُجاجًا زلالى، ولا تعقلون و كيف يفهم الاسرار الإلهية مَن سدل ثوب الخيلاء، وعدل عن الحق بجذبات الشحناء، ورضى بالجهلات، ومال إلى الخزعبلات، وأعرض عن الصراط كالعمين؟

وتقولون إعراضا عن مقالتى، وإظهارًا لضلالتى، إن الملائكة ينزلون إلى الارض بأجسامهم ويُقْوُون أما كنَ مقامهم، ويتركون السماوات خالية، وربما تمرّ عليهم برهة من الزمان لا يرجعون إلى مكان، ولا تقرَبونه لتمادى الوقت علىٰ وجه الارض لإتمام مهمات نوع الإنسان، ويضيعون زمان السفر بالبطالة كما هو رأى شيخ البطالة؛ وإنه قال فى هذا الباب مجملا، ولكن لزمه ذلك الفساد بداهة، فإن الذى محتاج

समझते और मेरे मीठे शुद्ध पानी को कड़वा समझते हो तथा बुद्धि से काम नहीं लेते। वह मनुष्य ख़ुदा के भेदों को कैसे समझ सकता है जो अभिमानी हो, वैर और शत्रुतापूर्ण भावनाओं के कारण सच से हटा हुआ हो और अंधों के समान (सीधे) मार्ग से मुंह फेर रहा हो।

मेरी बात से मुंह फेरना और मेरी गुमराही की घोषणा करते हुए तुम कहते हो कि पृथ्वी पर अपने शरीरों सहित उतरते हैं। अपने स्थानों को ख़ाली कर देते तथा आकाशों को रिक्त छोड़ देते हैं और कभी उन पर युग का कुछ समय गुज़र जाता है और वे अपने स्थान पर वापस नहीं जाते और मानव जाति के कठिन कार्यों को पूर्ण करने के लिए पृथ्वी की सतह पर लम्बा समय व्यय हो जाने के कारण वे अपने स्थान के क़रीब नहीं जाते और सफ़र के समय को यों ही बेकार नष्ट कर देते हैं, जैसा कि शेख़ (मुहम्मद हुसैन) बतालवी का विचार है। उस ने इस बारे में संक्षिप्त तौर पर कहा है परन्तु यह खराबी व्यापक तौर पर उसी के साथ अनिवार्य है। क्योंकि वह अस्तित्व जो किसी कठिन कार्य पूर्ण करने के लिए गति का मुहताज हो तो निस्सन्देह वह इस अहम सफर में दूरी

إلى الحركة لإتمام الخطة، فلا شك أنه محتاج إلى صرف الزمان لقطع المسافة و إتمام العمل المطلوب من هذا السفر ذى الشأن، فالحاجة الأُولٰى توجب وجود حاجة ثانية، فهذا تصرُّف فى عقيدة إيمانية ثم من المحتمل أن لا يفضُل وقت عن مقصود، و يبقى مقصود آخر كموءود؛ فانظر ما يلزم من المحذورات وذخيرةِ الخزعبلات، فكيف تخرجون من عقيدة إيمانية إلى التصرفات والتصريحات، وأنتم تعلمون أن وجود الملائكة من الإيمانيات، فنزولهم يشابه نزول الله فى جميع الصفات أيقبل عقلٌ إيمانىٌّ أن تخلو السماوات عند نزول الملائكة ولا تبقى فيها شيء بعد هذه الرحلة؟ كأنّ صفوفها تقوضت، وأبوابها قُفلت، وشؤونها عُطّلت، وأمورها قُلّبت، و كل سماء ألقت ما

तय करने और उस बांछित कार्य को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए समय को व्यय करने का भी मुहताज होगा। क्योंकि पहली आवश्यकता दूसरी आवश्यकता के अस्तित्व को अनिवार्य है। ऐसा करना तो ईमान की आस्था में अनुचित हस्तक्षेप है। फिर इस की भी तो संभावना है कि एक उद्देश्य को पूर्ण करने से समय न बचे और दूसरा उद्देश्य एक जीवित दफ़्न होने की तरह पड़ा रह जाए। अत: देखो इस से कितने ख़तरे और अनर्गल बातों के ढेर अनिवार्य होते हैं, तो तुम एक ईमानी आस्था से निकलकर हस्तक्षेपों और स्पष्टीकरणों की ओर किस प्रकार जा सकते हो। और यह तो तुम जानते हो कि फ़रिश्तों का अस्तित्व ईमानी बातों में से है। इसलिए उन (फ़रिश्तों) का उतरना अपनी समस्त विशेषताओं में अल्लाह के उतरने के समान है। क्या ईमान रखने वाली बुद्धि यह स्वीकार कर सकती है कि फ़रिश्तों के उतरने के समय सम्पूर्ण आकाश खाली हो जाएं और उनमें उनके उस सफर पर खाना होने के पश्चात् कुछ भी शेष न रहे जैसे कि उन की पंक्तियां (सफ़ें) अस्त-व्यस्त हो गईं और उनके दरवाज़ों पर ताले पड़ गए और उन के कार्य निलंबित हो गए तथा उनके मामले उलट-

فیھا و تخلّتْ إن کان ھذا ھو الحق فأَخرِجوا مِن نصٍّ إن کنتم صادقین ولن تستطیعوا أن تخرجوا ولو متم، فتوبوا و اتقوا اللّٰہ یا معشر المعتدین اعلموا أن الدرایۃ والروایۃ توأَمانِ، فمَن لا یراھما بنظر واحد فیقع فی ھوۃ الخسران، ویُضیع بضاعۃ العرفان، ثم بعد ذلک یُضیع حقیقۃ الإیمان و یلحق بالخاسرین ومن خصائص دیننا أنہ یجمع العقل مع النقل، والدرایۃ مع الروایۃ، ولا یترکنا کالنائمین فنسأل اللّٰہ تعالٰی أن یُعطیَنا حقائق الإیمان، ویُوطننا ثری العرفان، ویرزقَنا مَرْأَی الجِنان بأنوار الجَنان، ویُمْطِیَنا قَرَا الإذعان، لنقتریَ قِری مرضات رب

पुलट हो गए और प्रत्येक आकाश ने जो उस में मौजूद है उसे बाहर निकाल दिया और ख़ाली हो गया। यदि यही सच है तो कोई नस्स (कुर्आनी आदेश) प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो। यदि तुम मर भी जाओ फिर भी तुम उस नस्स को हरगिज़ प्रस्तुत करने की शक्ति नहीं रखते। तो हे अत्याचारियों के गिरोह। तौबः करो और अल्लाह से डरो और जान लो कि बुद्धिमता और रिवायत जुड़वां हैं। इसलिए जो इन दोनों को एक नज़र से नहीं देखता तो वह घाटे के गड्ढे में गिरता है और इर्फ़ान की पूंजी को नष्ट कर देता है। फिर वह इस के बाद ईमान की वास्तविकता को भी नष्ट कर देगा और हानि पाने वालों में सम्मिलित हो जाएगा। हमारे धर्म की विशेषताओं में से यह भी है कि वह अक़्ल (बुद्धि) को नक़्ल के साथ और दिरायत★ को रिवायत के साथ जमा करता है और हमें गहरी नींद में पड़े रहने वालों के समान नहीं रहने देता। अत: हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें ईमान की वास्तविकताएं प्रदान करे। इर्फ़ान की मिट्टी को हमारा देश बनाए और दिल के प्रकाशों द्वारा हमें स्वर्ग के दृश्यों से हमें प्रसन्न करे, फ़र्माबरदारी (आज्ञापालन) की पीठ कर सवार करे ताकि हम कृपालु रब्ब की प्रसन्नता के अतिथि-सत्कार से लाभान्वित हों और ख़ुदा के दरबार में तम्बू लगाएं और अपने देशों को भूल जाएं और ख़ुदा की प्रसन्नता के

★ वह उसूल जिनका उद्देश्य किसी रिवायत को बौद्धिक तौर पर परखना है। अनुवादक

الرحمن، ونتخيم بالحضرة ونسلَى عن الإوطان ونُغلّس غاديًا إلى مرضاة المولى، ونحفِد إلى ما هو أنسب و أولى، ونخترق فى مسالك العرفان، وننصلت فى سِككِ حُبِّ الرحمٰن، ونأوى إلى حصون وثيقة، ومَغانٍ أنيقة من صول الشياطين، باتباع النبيّ الامّىّ خاتم النّبيّين اللّٰهم فصلّ وسلّمْ عليه إلٰى يوم الدّين وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

بقلم احقر عباد الله الاحد غلام محمد الامرتسرى من المريدين لحضرة المسيح الموعود والمهدى المسعود ادام الله بركاتهم وقد فرغت من هٰذا فى ۱۴ جولائى ۱۸۹۴ء يوم السبت

लिए सुबह-सुबह मुंह अंधेरे सफर पर चल पड़ें और हर चीज़ की ओर जो अधिक उचित और अधिक उत्तम हो तेज़ी से दौड़ कर जाएं। और इर्फ़ान के मार्गों को तय करते चले जाएं तथा कृपालु (रहमान) ख़ुदा के प्रेम के कूचों में तीव्र गति से भाग कर एक-दूसरे से आगे बढ़ें और उम्मी (अनपढ़) नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अनुकरण करके शैतानों के आक्रमण से बचने के लिए सुदृढ़ क़िलों (दुर्गों) और नेत्रप्रिय मकानों में शरण लें। हे अल्लाह! प्रतिफल एवं दण्ड के दिन तक तू आंहज़रत पर दरूद और सलाम भेज। हमारी अन्तिम पुकार यह है कि प्रत्येक वास्तविक प्रशंसा अल्लाह ही को शोभनीय है जो सम्पूर्ण कायनात का प्रतिपालक है।

लिपिक – खुदा के बन्दों में से सबसे अधिक तुच्छ एक बन्दा ग़ुलाम अहमद अमृतसरी हज़रत मसीह मौऊद-व-महदी मौऊद अल्लाह तआला उन पर हमेशा बरकतें क़ायम रखे का एक मुरीद

इसको लिखकर 14,जुलाई 1894 ई. शनिवार के दिन निवृत हुआ।

اَلْقَصِیْدۃ للمؤلف
क़सीद:

نفسِی الْفِداءُ لبدرٍ ھاشمی عربی　　وَدادُہ قُربُ ناھیك عن قُرَبِ

मेरे प्राण न्योछावर हों उस पूर्ण चन्द्रमा पर जो हाशमी अरबी है। आपका प्रेम सानिध्यों का ऐसा माध्यम है जो तुझे शेष सानिध्य के माध्यमों से नि:स्पृह कर देने वाला है।

نجّی الوری مِن کل زور و معصیۃٍ　　ومِن فسوق ومن شركٍ ومن تَبَبِ

आप ने सृष्टि को हर झूठ और पाप से तथा बुराई से शिर्क से तबाही से भी मुक्ति प्रदान की।

فنوّرتْ ملّۃٌ کانت کمعدومٍ　　ضعفا و رجمت ذراری الجان بالشھب

अत: प्रकाशमान हो गई वह मिल्लत जो कमज़ोरी में न होने के समान थी और शैतान की सन्तान उल्काओं के पत्थरों से मारी गई।

وزحزحتْ دُخُنًا غشّی علی مِللٍ　　وساقطتْ لؤلوءًا رطبا علٰی حطب

और इस मिल्लत ने अल्लाह की याद के वृक्ष को हरा भरा कर दिया ऐसे अकाल के समय में जो लोगों के दिलों को खेल कूद से मुर्दा कर रहा था।

ونضّرتْ شَجَرَ ذکر اللّٰہ فی زمنٍ　　محل یمیت قلوب الناس من لعب

और इस मिल्लत ने अल्लाह के ज़िक्र की वृक्ष को शादाब कर दिया ऐसे सूखे के समय में जो लोगों के दिलों को खेल कूद से मुर्दा कर रहा था।

فلاحَ نورٌ علی أرض★مکدّرۃٍ　　حقا ومزّقت الاشرار بالقضب

फिर एक प्रकाश अंधकारमय पृथ्वी (दिलों) पर निश्चित तौर पर प्रकट हुआ और काटने वाली तलवारों से बुरे लोग टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए।

وما بَقٰی أثرٌ مِن ظلمٍ وبدعاتٍ　　بنور مھجۃ خیر العجم والعرب

और अत्याचार तथा बिदअतों का कोई निशान अरब-व-अजम (ग़ैर अरब) में से सर्वश्रेष्ठ पुरुष की जान के प्रकाश के कारण शेष न रहा।

★ ای عَلٰی قُلُوْبٍ

وكان الورىٰ بصفاء نيّاتٍ مع ربهم العلىٰ فى كلّ منقلب

और सृष्टि नीयतों की शुद्धता के कारण अपनी हर अवस्था में अपने बुलन्द शान वाले रब्ब के साथ हो गई।

له صحب كرام راق ميسمهم وجلّت محاسنهم فى البدء والعقب

आपके आदरणीय सहाबा हैं जिनकी ख़ूबियां मनमोहक हैं और उनकी विशेषताएं प्रारंभ और अन्त में शानदार हैं।

لهم قلوب كلَيثٍ غيرِ مكترثٍ وفضلُهم مستبينٌ غيرُ محتجبِ

उनके दिल एक बेपरवाह शेर की तरह हैं और उनकी खूबी प्रकट है छुपी हुई नहीं है।

وقد أَتَتْ منه فى تفضيلهم تترًا من الاحاديث ما يغنى من الطلب

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से उनकी खूबियों के बारे में निरन्तरता के कारण ऐसी हदीसें आती हैं जो अधिक जांच-पड़ताल से निःस्पृह कर देती हैं।

وقد أناروا كمثل الشمس إيمانا فَإِنْ فخَرنا فما فى الفخر مِن كَذِبِ

और वे सूर्य के समान ईमान से प्रकाशमान हो गए। फिर यदि हम उन पर गर्व करें तो इस गर्व में कोई झूठ नहीं।

فتعسًا لقوم أنكروا شأن رُتبِهِم ولا يرجعون إلى صحفٍ ولا كتبِ

अतः बुरा हो उन लोगों का जिन्होंने उनके उच्च प्रतिष्ठित पद का इन्कार कर दिया और पवित्र क़ुर्आन तथा (हदीस) की पुस्तकों की ओर नहीं लौटते।

ولا خروجَ لهم من قبرِ جهلاتٍ ولا خلاصَ لهم مِن أمنَعِ الحجبِ

और उनके लिए मूर्खताओं की क़ब्र से निकलना संभव नहीं और न उन्हें अति कठोर पर्दों से छुटकारा संभव है।

واليوم تسخَر بالاحباب من قومٍ وتبكِيَنْ يومَ جدَّ البينُ بالكُربِ

आज तू क़ौम के मित्रों का मज़ाक उड़ा रहा है और निश्चित वियोग के दिन तू दुखों के साथ अवश्य रोएगा।

ومن يؤثِرَنْ ذنبًا ولم يخشَ ربّه فلا المرءُ بل ثورٌ بلا ذَنَبِ

और जो व्यक्ति गुनाह (पाप) को पसन्द करे और अपने रब्ब से न डरे तो वह आदमी नहीं है बल्कि पूंछ रहित बैल है।

انظُـرْ معارفنـا وانظُـرْ دقائقنـا فعـافِ كـرَمًا إن أخللتُ بـالإدبِ

तू हमारे मआरिफ़ को भी देख और बारीकियों को भी देख यदि (तेरे नज़दीक) मैंने आदर में कुछ विघ्न डाला है तो कृपया क्षमा कर।

و أعـانني ربّي لتجـديد ملّـتهِ وإن لـم يُعِنْ فمَـن ينجـو مِن العطبِ

और मेरे रब्ब ने मुझे धर्म के नवीनीकरण के लिए सहायता दी है और यदि वह सहायता न करे तो मरने से कौन मुक्ति पा सकता है।

و قلتُ مرتجلا ما قلتُ من نظمٍ و قلمى مستهل القطر كالسّحب

और जो पद्य मैंने कही है बिना सोचे कही है इस हाल में कि मेरा क़लम बादलों की तरह वर्षा लाने वाला है।

و كفـا لنـا خالـقٌ ذو المجـد منّـانٌ فما لنا فى رياض الخـلق مِن أَرَبِ

हमारे लिए स्रष्टा बुज़ुर्ग और और उपकारी ख़ुदा पर्याप्त है फिर हमें सृष्टि (मख़्लूक़) के बागों की कोई आवश्यकता नहीं।

وقد جمع هذا النظم مِن مُلحٍ و من نُخبٍ بيمن سـيدنا و نجومه النُجب

और निस्सन्देह इस पद्य ने मनमोहक मायने और उत्तम रहस्य हमारे सरदार रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम की बरकत के कारण और आप के कुलीन सितारों (सहाबा) की बरकत से एकत्र कर लिए हैं।

وإنى بـأرض قـد علَـتْ نارُ فتنتها والفتن تجرى عليها جَرْىَ مُنسـرِبِ

और मैं ऐसे देश में हूँ जिसमें उसके उपद्रव की आग भड़की और उसमें उपद्रव इस प्रकार चल रहे हैं जिस प्रकार तेज़ रफ़्तार पानी चलता है।

و مـن جفـانى فـلا يرتـاع تَبعـتَهُ بمـا جفا بل يراه أفضـلَ القُـرُبِ

और जो व्यक्ति मुझ पर अत्याचार करता है वह उस अत्याचार (ज़ुल्म) के अंजाम से नहीं डरता उस अत्याचार के कारण जो उसने किया बल्कि उसे बड़ी श्रेष्ठता वाला सानिध्य समझता है।

فأصبحتْ مُقْلتى عينينِ ماؤُهما يجرى من الحزن و الالم و الشجب

(मेरी) दोनों आंखों की दो पुतलियों की यह हालत हो गयी कि शोक, दुःख और कष्ट से उन दोनों का पानी जारी था।

मैं अत्याचार से पैदल कर दिया गया जबकि मेरे प्रियतम का देश दूर है। काश कि मैं ऊंट के कोहान और पालान पर सवार होता।

इति

★★★